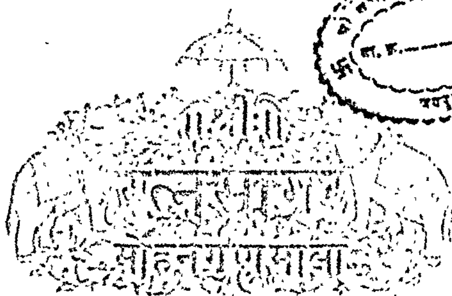


दूसरा भाग.

आचाररत्नाकर.

युग प्रधानजी श्री १०८ श्री श्री श्री श्री

लक्ष्मी प्रधानजी गणिः

(संगृहीत मुख्य)

पंडित मोहनलाल मुनिना

[illegible]

(मुद्रितं)

॥ॐ॥ कलकत्ता ॥ मुंबई, ॥ॐ॥

तत्वदीपक मोहनमंडली सहायेन प्रकाशितं

॥ॐ॥ मुंबई. जैनपाठशाला ॥ॐ॥

सं। १९४९ इ। स। १८९२

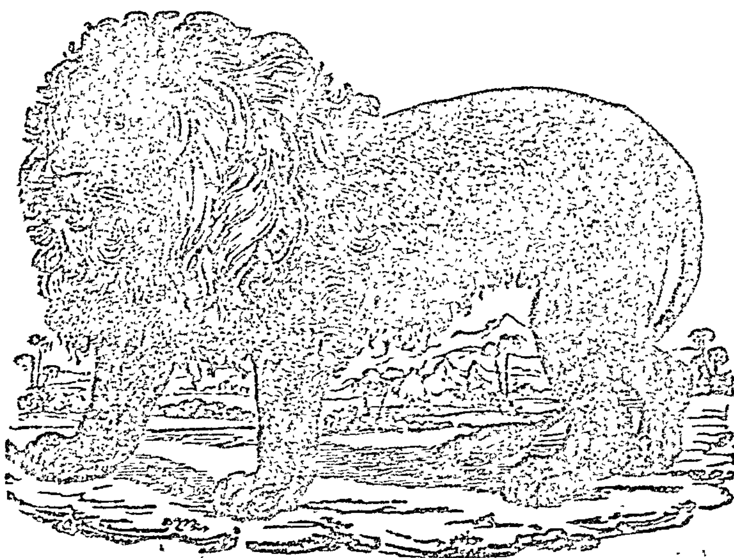
मुंबई इंडियन प्रींटिंग प्रेस.

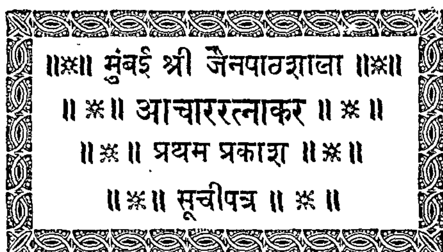
॥ ॐ ॥ प्रशस्ति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्री महावीर जिनेंद्र तीर्थ तिलकः सद्भूत संपन्निधिः । संजज्ञे सुगुरुः सुधर्म गणभृत्तस्यान्वये सर्वतः । पुण्ये चांद्रकुलेऽन्ववंतु सुविहिते पक्षे सदाचारवान् । सेव्यः शोभन धीमतां सुमति मानुद्द्योतनः सूरिराट् ॥ १ ॥ आसी त्तत्पद पंकजैक मधुकृत् श्री वर्द्धमानाभिधः । सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्य गणभृज्जातो विनेयोत्तमः । यः प्रापत् नभ सिद्धि पंक्ति सरदिः (१०८०) श्री पत्तने वादिनो जित्वा सद्बिरुदं कृती खरतरे त्याख्यं नृपादे मुखात् ॥ २ ॥

॥ ॐ ॥ गच्छे चारुतरे बृहत्खरतरे श्री चंद्रसूरिश्वराः । राजंते मनुजेंद्रसेवित पदाः शास्त्रार्थ वागीश्वराः । स्तत्पादाब्ज पराग पान मधुपा लक्ष्मीप्रधानावराः । सच्छीलादि गुणैर्युता सुगुरवः संतीह सद्धीवराः ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन । संपूर्ण आचार विचार गर्भ्भा संकीर्त्तितेयं खलु बाल शिक्षा । सिद्धांत सारार्थ विदांमुदेवै ॥ १ ॥





॥※॥ संख्या ॥ ※ ॥ प्रकरण ॥ ※ ॥ ॥※॥ पत्रांक ॥※॥

॥※॥ इति आचाररत्नाकर दीपिका ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ आचाररत्नाकर १६ संस्कार विधि ॥ ※ ॥

(तथा) कोई जैन आचार (कोई) अन्य मत आचार करनेसें, नहिं जैन, नहिं विष्णुं, आस्थाविगर एककेई फलकों प्राप्त नहिं होते हैं (क्युं कि) जैनसिद्धांतोंका सार यहीहै, और असल जैनीकी श्रद्धा ऐसी होतीहै (कि) अपना जैनधर्मी देव, गुरु, धर्मकोंही वंदन पूजन करना (परंतु) अन्यमती कुदेव, कुगुरु, कुधर्मकों, वंदन पूजन न करना (फेर) दिलकी आस्थाविगर जन्म विवाहादि संसारी मंगलीक कामोंमें, अपना धर्ममुजब आचार छोडके, अन्यधर्ममुजब आचार करना (कैसें) शुभ फल दायक हो सकेगा ॥ (जैसें) दो देशके दो राजाहै । एक धर्मराजा । एक अधर्मराजा ॥ (जिसमें) जो प्रजा धर्मराजाकों मानते हैं (सो) जहांतक धर्मराजाकी आग्यामुजब संपूर्ण काम करते रहेंगे (तहां तक) संपूर्ण शुभ फलकों प्राप्त हुवेंगे (इसी हेतुसें) वर्त्तमानमें प्राय बहुतसे जैन लोक, धर्मसें, धनसें, परिवारसें, विद्यासें, आचारसें, हीन होते जाते हैं (इस उपरांत) अन्य मतवाले मिथ्यात्वी लोक, बहुत जैनधर्मकी हांसी करते है (और) अनेक तरहके विकल्प करते हैं (कोई कहते है) जैनधर्मवाले शुद्रके समान होते है। इनके कोई धर्मसंबंधी आचार नहीं है। कहते तो है (कि) हम जैन हैं (और) आचार कोई जैनका करतेहै, कोई अन्यमतका करतेहै(इससें) एककी गिणतीमें नहिं आते है (और) जन्मसें मरणपर्यंत आचारका जैनमें कोई ग्रंथभी मालुम न पडता है (इत्यादि) अनेक तरहके विकल्प करनें लगगए हैं (इससें) अहो सर्व जैन बांधवो ॥ आप समें गछ मतका, कदाग्रह छोडके, एकेकसें द्वेष, निंदा छोडके, एक्यतापणो धारण करो (तथा) कोई प्रकार जैनधर्मकी उन्नति करो ॥ बडे बडे सर्व ठिकाणें, बडी २ सभा भेली करके, बडे बडे विद्वज्जनोंकी संमत्ति लेके, पक्षपात रहित, आपसमें विचार करके, कितनेक प्रकारके ऐसे नियम बांधो (जिससें) जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा हुवै ॥ (और) अन्यमतका आचार छोडके, अपना धर्ममुजब आचार करे (और) जैनविद्याकी वृद्धी हुवै (इस कालमें) जैनविद्याकी बहुतसी हानी हो रही है । सर्व मतवाले, अपना धर्मकी विद्या प्रथम सीखते हैं (पीछे) सर्व कला सीखते है (और) आजके जैनलोक, अपना लडकांको, प्रथमसेंही अन्यमतके

गुरुवोंकेपासे, अन्यधर्म आश्रित कला सिखातेहै । जिससें दोपैसा कमाकर लावे (परंतु) अनंतभवोंमें प्राप्त होना दुर्लभ, ऐसा मनुष्यपणा पायके, आत्माकों अक्षयसुख मिले, ऐसा जैनधर्मकों नहिं सिखाते है (और) अपना धर्म जाणेविगर, प्रथमसेंही अन्यधर्मकी कला सिखानेसें, बहुतसे जैन धर्माचारसें भ्रष्ट हो जाते है (और) हाथमें चिंतामण रत्न आया हुवा गमायके, फेर दलद्रीकेमुजब, नरक निगोदादिक गतिमें, अनंतभव परिभ्रमण करते है (इससें) अहो जैन भाइयो, अनेक कामोंमें, हजारों रुपिया वे अर्थ लगा देते हो । सो कोमके विद्यावृद्धीके काममें लगावो (और) जैन आचारके, नीतिके, जोतिषके, जो जैनशास्त्र विच्छेद होते जाते है (उसकों) लिखायके प्रशिद्ध करो (क्युं कि) बहुतसे जैन आचार, नीतिके ग्रंथ, विच्छेद होगए है (इससें) जो ग्रंथ मिलसक्ते है उनोंको तो प्रशिद्ध करो । नहिंतो यहभी विच्छेद हो जायगा (और) जो कोई सर्वोपयोगी ग्रंथ अपनी उमेदसें महनत करके प्रशिद्ध करे (वा) प्रशिद्ध किया चाहै, उसकों संघ मिलके मदत देवो (और) साधु, श्रावक, गंध्रप, भोजक, महात्मा, इनमें जो कोई, विद्या पढनें, पढानेंमें उमेदवान् होय, अछा वुद्धीवान् होय । उनको वनें जहांतक सारी मदत देवो (जो कोई) धर्म उन्नतिका काम करै, उसकों संघ मिलके मान देवो । मदत करो । (इत्यादि प्रकारसें) कोईप्रकार जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा करो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवानुप्रियो, में कुछ ऐसा पंडित नहिं हुं, और संघकी मदत विगर, विशेष खरच करके, पाठशाला पुस्तक प्रगट करनेंमें शक्तिमान् नहिं हुं (तथापि) में मेरी अल्पमति, अल्प शक्ति प्रमाणें धर्मका तत्व जो ज्ञान, जिसकों उद्दीपन करनेंवाले, कितनेक साधु श्रावकोंका, दिलमें आश्रय विचारके, आज पांच वरष आसरे हुवा. ग्यान उद्दीपन करनेंको; तत्वदीपक मोहन मंडली, स्थापन करी है ॥ इसका मुख्य नियम यही है (कि) जैन पाठशाला स्थापन करके विद्याकी वृद्धी करना (और) सर्वोपयोगी जैन पुस्तक छपायके प्रगट करना । (इससें) कलकत्ता, मुंवईमें, जैनपाठशाला स्थापन करी है ॥ ए पाठशालामें ऐसा नियम रक्खा है (कि) सवेर, सांझे, जो अपना धर्मकृत्य

शीखनेकों आवे, उनकों कुछभी मासिक पगार लिये विगर, शिखाते रहना (और) देश परदेशके, सर्व साधु श्रावकोंके बारैमाश उपयोगमें आवे (ऐसा) संपूर्ण धर्मकृत्योंका संग्रह करके ज्ञानवृद्धीके अर्थ रत्नसागर प्रथम भाग छपायके प्रसिद्ध किया है । (और) अभी रत्नसागरका दूसरा भागमें, आचाररत्नाकर नामें ग्रंथका, दो प्रकाश हिंदीभाषामें छपाय के प्रसिद्ध किया है ॥ इसका प्रथमप्रकाशमें जैनलोकका जन्मसें मरण पर्यंत कुल आचारविधिका संग्रह किया है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (और दूशरा प्रकाशमें) जैनइतिहास छपाया है (इस वास्ते) सर्व जैनके यह दोनुं पुस्तक उपयोगी है । जिसकों जैनधर्मका संपूर्ण आचार (तथा) संपूर्ण जिन धर्मका स्वरूप, संखेपमें जाणनेंकी इच्छा होय (तथा) खरतर गच्छ तपगच्छादिकका, बारै मास उपियोगमें आवै, ऐसा धर्मकृत्य करना, करावना होय, शीखना, शिखावना, होय (तो) अवश्य, रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) रत्नसागर दूसरा भागकी एकेक पुस्तक लेके अपनें पास रक्खो, जो धर्मरागी (तथा) सर्व विद्या जाण नेंकी इच्छावाले सुज्ञ पुरुष एकेक पुस्तक लेके (तथा) साधू, वा साधर्मी भाइयोंकों ज्ञानवृद्धीनिमित्त देनें खातै, पांच पचीस पुस्तक लेकर पाठशालाकों मदत देवेंगे (तो) मेरा परिश्रम किया सफल होगा (और) उनकेभी एक पुस्तकसें, पचीस पुस्तकका काम सरैगा ॥ बारै मास उपगार होता रहैगा॥

॥ ※ ॥ (अब) संघसें बीनती करता हूं (कि) आचार दिनकर, विधि प्रपादि, आचार ग्रंथोंसें, कितनेक आचारका हिंदी भाषामें संग्रह करके, मैंनें यह, आचाररत्नाकर ग्रंथ बनाया है (इसमें) जो कोई आगम विरुद्ध मंदमतिपणासें (वा) छपेके दोषसें, (वा) भाषाके दोषसें ओछे, अधको, हीन अक्षर, लिखनेंमें आयो होय (तो) सर्व संघके सन्मुख, में मिच्छामि डुक्कडं देता हूं॥ (और) मेरी आशा है (कि) सुज्ञ विद्वज्जन पुरुष, श्रेणक राजाके तुल्य गुणग्राहीपणा धारन करके गुण ग्रहण करेंगे (और) उपगार निमत्त सर्व ठिकाणें एकेककों प्रेरणा करके पुस्तक प्रवर्त्तन करेंगे (और) बनें जिस मुजब विद्यावृद्धीके निमत्त पाठशालाकों मदत देवेंगे ॥ इत्यलंविस्तरेण ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ॥※॥

॥※॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप पदेभ्यो नमः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीँऽर्हं श्री गौतमस्वामिने नमः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी वागेश्वर्यै नमः ॥※॥

॥※॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्रीँऽर्हं श्री जिन कुशलसूरिभ्योनमः ॥※॥

॥※॥ अथ आचार रत्नाकर दीपिका लिख्यते ॥※॥

॥※॥ मंगलाचरण ॥※॥

तत्वज्ञान मयो लोके । यः आचारं प्रणीतवान् ॥
केनापि हेतुना तस्मै । नमः आद्याययोगिने ॥ १ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ ग्रंथकारक प्रथम मंगलाचरण कर्त्तेहैं ॥ नमस्कारहुउ आद्ययोगीश्वरकुं, कैसाहै वो आद्य योगीश्वर, कि तत्वज्ञानमयहैं (अर्थात्) केवलज्ञान केवलदर्शनसें लोकां लोकके भावकुं जाणनें वालेहैं ऐसे आद्य योगीश्वर, श्रीआदिनाथ स्वामी। लोकके विषे (केनापि हेतुना) कोईभि कारणें, गृहिधर्म्म, यतिधर्म्म, लोकाचार रूप, आचारप्रतं कहतेभए, क्यूं कि लोकमध्ये सर्व कार्यकि सिद्धि आचारमैं चालने सैं हीज होती है, इसके लिये भगवान्‌ने प्रथम आचार वर्णनकरा (ऐसे प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभ देव, आदि योगीश्वरकुं मेरा नमस्कार हुउ) ॥ १ ॥

॥ आत्मांतर्ध्यान हेतो र्वा। कारुण्यादथ देहिनां ॥
॥ यः आचारं स्वयं चक्रे । तंवंदे ऽर्हंतमादिमम् ॥ २ ॥

(व्याख्या) ॥ श्री भगवान्‌ने आचार किस हेतुसें कहा है (सो अब हेतु लिखते हैं)—आत्माके अंतरध्यान उतन्न करनेके लियें (अर्थात्) सुध आचारमैं चलनेसैं आत्माका हृदयके वीचमैं ध्यान हो सकताहै, इस हेतुसें (अथवा) सब भूत प्राणिमात्रकी दयाकेलिये, श्रीभगवान् आप आचारकु धारण कराहैं (ऐसे आदि तीर्थंकर श्रीऋषभदेव स्वामीकुं में नमस्कार कर्त्ताऊं ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ तत्प्रसादा त्सुखालोक्ये । पथि तत्वो पयोगिनः ॥
॥ यो लोकाचार माचख्यौ । तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ३ ॥

(व्याख्या) ॥ तिस आचारके प्रसादसें (सुखालोक्य पथि) सुखे देखनें में आवे जो मोक्ष मार्ग, तिसमें चलनेंवाले जो तत्व उपयोगी पुरुष है, तिसके लिये भगवान् आचारकुं कहतेभए (तिस सर्वात्मा चिदानंद परमेश्वर कों मेरा नमस्कार हुवो.) ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ अनादितत्व ज्ञातापि । स्वस्थ मोक्षप्रदो पिच ॥
॥ स्वयं चचाराचारं यो । नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥ ४ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ भगवान् आप अनादिकाल तत्वके जाणकारहे, और स्वस्थ निश्चल चित्तके धरनेवाले हैं, और मोक्षके देनेवाले हैं (तथापि) भगवान् स्वयं आचारकुं आचरण कर्त्तेभए (ऐसे स्वयंभु कहिइं स्वतः प्रतिबोध पामनेवाले भगवान्‌कुं मेरा नमस्कार हुउ ॥ ४ ॥)

॥ यस्य श्रुतपरा वाणी । पूजनात् परमा श्रियः ॥
॥ तत्वालोकः परंध्याना । तस्यै अर्हद्गिरे नमः ॥ ५ ॥

—॥ (व्याख्या) ॥ जिस भगवानकी श्रुत सिद्धांतरूप वाणीके पूजनें सेती उत्कृष्टी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती हैं (और) तिनहीज वाणीके ध्यानसें तत्व ज्ञानका देखना होताहै (ऐसी तिस अर्हतवाणीकुं नमस्कार हुउ) ॥ ५ ॥

॥ सर्वर्द्धयः शुभं ज्ञानं । कीर्त्ति र्यस्याः प्रसादतः ॥
॥ प्राप्यते क्षणमात्रेण । तामंबां प्रणमाम्यहं ॥ ६ ॥

॥ (व्याख्या)॥ जिस अर्हंतकी वाणीके प्रसादसेती सर्वऋद्धि, शुभज्ञान,

और कीर्त्ति, क्षणमात्रसैं (अर्थात्) तत्काल प्राप्ति होतीहैं (तिस अंबा मातारूप अर्हंतकी वाणीकुं मैं नित्यप्रति नमस्कार कर्त्ताऊं ॥ ६ ॥)

॥ विद्वत्पर्षत्सु गर्जंति । मादृशा यत्प्रसादतः ।
॥ नमोस्तु गुरुपादेभ्य । स्तेभ्यःएव प्रतिक्षणं ॥ ७ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ अब गुरुकुं नमस्कार कर्त्तेहै, जिस गुरुके चरणकमलकी कृपासैं, मेरे सरीखेभि मनुष्य, विद्वज्जनोंकी सभाके बीचमें गाज रयेहै, (तिस गुरुके चरणारविंदकुं क्षण २ प्रति मेरा नमस्कार हुवो) ॥ ७ ॥

॥ उपाय कोटिभि नैंव । प्राप्यं यत्तत्वमुत्तमं ।
॥ सुप्राप्यं यत्प्रसादात्त । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ क्रोडों उपायसें जो उत्तम तत्व प्राप्ति नहि होता है, (सो तत्व) जिस गुरुप्रसादसें सुखपूर्वक प्राप्ति हो जाता हैं, (तिस श्री युक्त गुरुकुं मेरा नमस्कार हुवो) ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ सत्पज्ञानात्सुखालोक्यः । पंथा कैवल्यकारणं ॥
॥ तच्चाचारवतां नृणा । मुन्मीलति विशेषतः ॥ ९ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ सत्यज्ञानसेंति सुखसुं देखनेमें आवै, ऐसो कैवल्य मुक्तिरोहेतु पंथामार्ग हैं । सो मार्ग आचारवान् पुरुषोंके विशेष करकें प्रगट होता हैं ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※ ॥

॥ आगर्भवासात्ज्ञानात्मा । ऋषभःपरमःपुमान् ॥
॥ प्रविवेश यदाचारं । तत्सप्रामाण्यमंचति ॥ १० ॥

॥ (व्याख्या) ॥ गर्भावाससैं लेकें, ज्ञानवान् परमपुरुष श्रीऋषभदेव स्वामी, जिस आचारकुं स्थापित करते भए, तिससेंती यह आचार निश्चैसें प्रामाण्यभूत हैं, और पूजनें योग्य हैं ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ अब आचारकी विशेष प्रामाण्यता देखाते है ॥

(इस जगत्मैं) के इक दर्शनमोहनीय करके मुर्खबुद्धिवाले, आर्हत १ सोगत २ वैशेषिक ३ नैयायिक ४ सांख्य ५ चार्वाक ६ (इत्यादिक) जो तत्व ज्ञानके परमार्थकुं न जाणनेंवाले, केवल नामानुसारी, अपनें हृदयसंहीज

कुयुक्तियां उपार्जन करके आचारकुं तिरस्कार कर्त्ते हे (एसे पुरुषोंका वचन सत्पुरुषोंकुं प्रमाण करना योग्य नही हैं) क्युं कि सर्व जगत्के परमार्थकुं जाणनेंवाले अरिहंत भगवान्ने पण गर्भाधानसें लेकें राज्याभिषेकपर्यंत संस्कारोंकुं आप धारण करे हैं (और तैसेंही) देशविरतिरूप गृहिधर्मके विषै सम्यक्तका आरोपण, व्रतादिकका धारण, प्रतिमोद्वहनादिक, आचारकुं आचरण किये हैं (तथा) केवल ज्ञान तो निमेषमात्र शुक्ल ध्यानकरके प्राप्य है (तथापि) साधु मुद्रा धारण करके तपश्चरणादिक दीर्घ कालतक किये है (और) जव केवल ज्ञान प्राप्ति हुवा तव चिदानंदरूप हुए, अरु अन्यकी अपेक्षारहित हुये (तो पण) देवादिकोंके किया हुवा छत्र चामरादिक अतिशययुक्त सिंहासनपर वैठके, धर्मका उपदेश करना, गणधरादिक पदकी स्थापना करनी, विहार करना, सव जीवोंके शंसयादिक छेदन करना, इत्यादिक आचारकुं धारण करेहे और सवकुं आचारमें चलनेका उपदेश दिये है (तदनंतर) भगवान्के निर्वाण कल्याण होयेवाद, ६४ इंद्रादिक देवता सर्व मिलके, प्राणरहित कर्त्ता कर्म रहित तिस भगवानके शरीरका अग्नि संस्कार करना, रत्नमइ स्तूपवनाना, दाढां प्रमुख आपापके विमानमें लेजाना, अठाई महोत्त्व करना, इत्यादिक आचार करते है (इस्सैं) अर्हतमतमें पण निश्चेसेती मोटा पुरुषोंनें आचारकुं आचीर्ण कस्या, इनसें आचार मुख्य प्रमाण है ॥ (और तत्वानु वादेपि) आश्रव, संवर, यह दोनु तत्व आचाररूप है ॥ (यथा) आश्रवके विषै मन वचन कायासें शुभाशुभ आचरणमें चलनेसैं शुभाशुभ कर्मकुं वांधते हैं, इस्सें आश्रवतत्व आचाररूप भया (तथा) संवरतत्वमें द्रव्य भाव भेदसें तिस शुभाशुभ कर्मके त्याग करनेसें यह संवरभि आचार रूप है, इससेति जैनधर्मम आचार मुख्य प्रमाण है (अर्थात्) निश्चें, व्यवहार, ज्ञान, क्रिया, ७ नय, ४ निक्षेपा, सप्तभंगी, इत्यादिक अनेकांतिक भेदोसैं आचार उद्यम मुख्य प्रमाण है ॥ १ ॥ (और) वौद्धके मतमे पण सुखकी आशा प्रमुखसें शरीरके आचारकर्त्ते हैं, आपके वुद्ध देवकी अर्चनरूप क्रिया मंत्र स्मरणादिक करते हैं, ऐसे क्षणकमति वौद्ध मतमेंभी आचार प्रमाण है ॥ २ ॥ और वैशेषिक मतमें विशेष परीक्षारूप आचार है

(अर्थात्) वैशेषिक मतकी क्रिया करनेंवाले पुरुषांकों परीक्षा विगर को इन्नि विशेष नहि मानते हैं, जो अच्छी क्रिया आचारमें चलते हैं उसीकुंहीज प्रमाण मानते हैं, इससेती वैशेषिक मतमेंन्नी आचार प्रमाण है ॥३॥ (और) नैयायिक मतमें प्रमाणोपलंभरूप अनेक तत्व कहे हैं (जिसमैं) क्रियाहीज मुख्य प्रमाणहै, इससे नैयायिक मतमेंन्नी आचार प्रमाण है॥ ४ ॥(और) सांख्यादिकके मतमे प्रकृतिकुं आदिलेके २५ तत्वकुं मानते हैं (परंतु)सा प्रकृति पुरुषके संयोगसैं शुन्न आचारादिकमें प्रवर्त्तमान होती है, अंध पंगु न्यायसें (जेसें) पंगुके अंध पुरुषके संयोगसें चलनरूप क्रिया होय तबक ष्टसें पार उतर जाते हैं, ऐसें सांख्य मतमें पण आचार प्रमाण है ॥ ५ ॥ (और) चार्वाकके मतवाले नास्तिक हैं (अर्थात्) जीवादिकका परलोका दिकमे जाणा आणा नहि मानते है (तथापि) प्रत्यक्ष प्रमाण मानता हुवा केवल शरीरके सुखनिमित्त, आचार आचरण कर्त्ते है, अच्छा खाना, अच्छा पीना, जेसैंशरीरकुंसुखहोय ऐसी क्रियामेंचलनां ऐसे कहतेहैं, इससें चार्वाक मतमे पणआचार प्रमाण है ॥६॥ इस रीतिसैं–षट्दर्शनमें आचारहीज मुख्य प्रमाण है, तत् परमत चिंतनेनअलं ॥ ॥ इस प्रस्तुत कार्यके करनेंके लिये स्वमतहीज प्रामाण्यताकुं प्रतिहोते हैं–(यडुक्तमागमे-) नाणं सदत्थ मूलंच । साहा खंधो अ दंसणं । चारित्तंच फलं तस्स । सग्गे मुक्खोजिणो इनु ॥१॥ अब सिद्धांत समुद्रके कल्लोलरूप, चारित्रोपाख्यानकुं कोन केणेकुं सामर्थ है (तथापि) श्रुतकेवली प्रणीत शास्त्रार्थके लेशकुं अवलंबन करके, किंचित् आचार योग वचन कहतेहैं ॥॥ प्रथम ऋषन्नादिन्नगवान् दो प्रकारके आचारकहे हैं–यतिके आचार १ तथा गृहस्थके आचार २–॥ अब साधुश्रावकका आचार स्वरूप लिखतेहैं ॥ ॥

(यडुक्तं–) सावज्ज जोग परिवज्जणाउ । सव्वुत्तमो जई धम्मो । बीउ सावग धम्मो । तइउ संविग्ग पक्खपहो ॥ १ ॥

॥ व्याख्या॥ गुणस्थान चौथा, पांचमा, छठादिककी; अपेक्षायें जैनधर्म धारन करनें वालांके तीन नेदकहेहैं, ॥ सर्व सावद्य योगके त्यांग करनेंसें, छठा गुणस्थानसें १४ मा· गुणस्थान पर्यंत, रत्नत्रयी धारक,

सबसें उत्तम (प्रथम साधु धर्म कहा) ॥ १ ॥ (दूसरा) ५ मा गुणस्थान वर्त्ती, देशे व्रत पचरकाणादि चारित्र पालन करनें वाला (श्रावकधर्म कहा) ॥२॥ (तीसरा) चौथे गुणस्थान वर्त्ती, व्रत पच्चक्खाणादि चारित्र रहित, निकेवल सुद्ध सम्यक्त गुण धारक (संवेग पक्षी कहा) ॥३॥ (अत्र तीनो भेदका किंचित विस्तारसें स्वरूप पाठक गणके हितार्थ लिखते हैं ॥ ❀ ॥ जो भव्य मोटे पुन्य योगसें, अपनें सुद्ध भावसें, गृहस्थावास, संसार संबंधी संपूर्ण सावद्य योगका त्याग करके, छठा प्रमत्त गुणस्थानसे लेके १४ मा अयोगी गुणस्थान पर्यंत, अधिक २ शांतिवृत्ति, सुभयोग, आचार, धारनेवाले सुसाधु होते है ॥ तिकेसाधु एक विधि दया धर्म पालनें वाले, द्विविध राग द्वेष कों जीतनें वाले, ३ तत्वकों जाणनें वाले (तथा) तीन गुप्तीकों धारन करनें वाले, ४ कषाय जीतनें वाले, ५ महाव्रत, ५ सुमतिकों, धारन करनें वाले, (तथा) ५ प्रमादकों दूर करनें वाले, छकायजीवोंकी रक्षा करनें वाले (तथा) षट् द्रव्यकों जाणनें वाले, सप्त नयकों भंजन करनें वाले, अष्ट मदकों जीतनें वाले, नववाडि ब्रह्म चर्य कों पालनें वाले, (तथा) नव तत्वका स्वरूप जाणनें वाले, दशविध यती धर्म सुद्ध पालनें वाले, ११ श्रावक प्रतिमा स्वरूप जाणनें वाले १२ अंग,१२ उपांगका उपदेश करनें वाले, १३ काठिया दूर करनें वाले; १४ विद्याका स्वरूप जाणनें वाले, १५ भेदे सिद्धोंका स्वरूप जाणनें वाले, १६ कषाय भेदकों छेडनें वाले, १७ भेदे संजम पालनें वाले, १८ भेदे शील व्रत पालनें वाले (इत्यादि) अनेक गुण संयुक्त होते हैं (गामे एगराइयं नगरे पंचराइयं) ऐसे अप्रतिवद्ध विहारी, कोई स्थानकमें वहुत परिचय दुकान दारी नहिं जमातेहैं (तथा) मानोपेत सपेद वस्त्र धारन करते हैं (नारंगिज्झा नाधोइज्झा) नहिं केसरा दिकमें रंगते हैं, नहिं साजी सावण लगाय धोते हैं, अप्रमादी भए थके, रात दिन स्वाध्यायादि धर्म कार्यमें मग्न रहते हैं, सव भव्य जीवोंकों, उपगार वुद्धीसें, अक्षय सुख दायक, अनेकांतिक श्रीजिन धर्मका उपदेश करते हे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, मुजव, वनें जहांतक पापपंकसें अन्य जीवोंकों निर्मल करते हे (तथा) कोई जीवसें द्वेष कलहादिक न करते हे, स्वधर्मियोंके ऊपर प्रमोद

भाव (अन्य मति) पापीजीवोंपर मध्यस्थ भाव धारन करते हे, इनसाधु वोंमें गछ समुदायकी सारणा वारणादि करनेंवाले, निस परयही छत्र चाम रादि आमंवर रहित, आचार्य, उपाध्याय, वाचक, प्रवर्त्तक, थिवर, गणाव छेदक, गणिः, मुनिः, ऋषि, साधू, यती, संवेगी, अनगारं, निग्रंथ, ऐसे नाम गुण धारक होते हैं ॥ (इत्यादि) अनेक गुण संयुक्त, चारित्र पात्र, चिंताम णि रत्नके समान, सर्व गुण निधान, जिनाज्ञा युक्त, रत्नत्रयी गुण धारक केवल ग्यान पायके जलदी मोक्ष जानें वाले होते हें, (इससें) साधु मुनि राज सवसें उत्तम हे ॥ ५ भरत-५ऐरवत, ५ महा विदेह, एवं १५ कर्म भूमि क्षेत्रोंमें, होते विचरते रहते हें (ऐसे सव साधु मुनि राजकों मेरा नमस्कार हुवो, ॥※॥ यह साधु पदका स्वरूप किंचित् कहा ॥ १ ॥※॥ अव दूसरा श्रावक धर्मका स्वरूप किंचित् लिखते हें ॥ ※ ॥ प्रथम श्रावक दो प्रकार के होते हें, १ अविरती श्रावक, कृष्णश्रेणिकादिक (जिसका स्वरूप ती सरा भेदमें लिखेंगे) ॥ और दूसरा विरतिश्रावक होते है, ॥ तिके सर्व सावद्ययोग त्यागके दशविध यतीधर्म धारन पालन नहिं कर सक्ते हे, (परंतु) जिन वचनोंसें, सुद्ध सम्यक्त गुण पायके, देश व्रत पच्चक्खाण सुद्धश्रद्धासें धारण करनेंवाले होते हे । तिके श्रावक ४ अनंतानवंधी । ४ अप्रत्याख्यानी, एवं ८ कषाय भेदके क्षयोपशमपणासें देशविरति पांचमा गुणस्थान धारक होते हे, (ऐसे विरति श्रावकभी दो प्रकारके होते हें) १वृद्ध श्रावक (दूसरा) लघुश्रावक (वृद्धश्रावक उनकों कहते हें) जो खेतीवाणिज्यादिक महा पापकारी व्यापारादिकर्म छोमके । जिनोपवीत व्राह्मणवर्णके संस्कार धारन करें । निकेवल यथाशक्ति धर्मकार्य उद्दीपन करें । रातदिन जैनविद्याका अभ्यास करें । अन्य जैनीयोंकों विद्याअभ्यास करावें । धर्मउपदेश करते रहे । जन्मसें मरन पर्यंत १६ संस्कार, गृहस्थाचार (तथा) पूजा प्रतिष्ठा दिक शास्त्रोक्त विधिसंहित करावे । आपभी सुद्ध श्रावकधर्म देशचारित्र पाले । (यह वृद्धश्रावकभी दो प्रकारके होते हे) १ गृहस्थी जैनव्राह्मण स्त्री धारक होते हे, तिके तो मंदर उपासरामे, देव गुरुकी सेवा पूजा भक्ति वेयाव च्चमें हमेशां रहते हे ॥ जैनगृहस्थीके घरका जन्मसें विवाहादिपर्यंत संस्कार शांतिक पौष्टिक संपूर्ण आचार जैनपंमिताचार्य गुरूकी आग्यासें करातेहें,

जैनी गृहस्थके घरका दानपुन्य लेतेहैं (ऐसे) कुलगुरु, महात्मा, गंध्रप, सेवग, जैनब्राह्मणादि होते है ॥ १ ॥ (और दूसरा) सुद्धाचार धारक, ग्यान गुणमें अधिक, ब्रह्मचारी होते है (जिनोंमे) जो छत्र चामरादि आडंबर धारक आचार्य उपाध्याय पदधारन करनवाले होतेहैं, तिके श्रीपूज, महाराज, पत्रपति, भट्टारक, जैनपंडिताचार्य, परमकुलगुरु, (इत्यादि नामसें) अनेकांतिक गुणग्राही जैनीयोंके अत्यंत मान्यनीक पूज्यनीक होते है (जिनोकी आग्या मुजब) जन्मसें मरणपर्यंत १६ संस्कार, जैनशास्त्रोक्त विधिसे, धारन करते कराते हैं। विवाहादिकके उपरांत, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि सब संस्कार, पूजा, प्रतिष्टादिक, आचार्य, उपाध्याय, यति, संवेग पक्खी, ब्रह्मचारी, पदाधिकारी, कराते है (जिसमें कईतो) पुर्वानुपुर्वियें सम्यक्त, देशविरतिचारित्र पालके, फेर सुभकर्मो दयसें, उत्तम साधुआचार्य पदकों प्राप्तहोते है, सो उत्कृष्ट धन्य होते हे (तथा) कई भोगावल्यादि असुभ कर्मके उदयसें साधुपदकों विराधके देशचारित्रधारक जैनपंडिताचार्य हो जाते हे ॥ (परंतु जो) सम्यक्तगुणसें भ्रष्ट न होय, और सुद्धअनेकांतिक धर्मके दीपन करनेंवाले होय, (तहांतक) निस्संदेह, वंदन, पूजन, सत्कार, सन्मानसें, गुणग्रहण करनेके योग्य होते हे (अब वृद्धश्रावकोंका पहरवेस व्यवहार कहतेहैं) ॥ मस्तक मुंडादि मुंडरक्खे (वा) एक चुटैके माफक केसरक्खे। वस्त्र रेसमी (वा) सूतू, पीला केसरिया (वा) सपेद, धारन करै,। धोतीकी एक लांग खुली रक्खे। गलेमें, मोती मुंगा चांदी सोनेंकी १०८ दाणारी माला रक्खे। (तथा) सुद्धाचारसें जिनोपवीत सोनेंकी (तथा) सूतकी धारन करे,। लोह जङ्घा खालका जूता नपहरै। तिलक छत्रो (तथा) गोल मेरूके समान, केसरचंदनको करै (जिसमें जो गृहस्थी जैन ब्राह्मण होय) सो मस्तकपरचोटी रक्खे, सोनेली मुगुटके समान टोपी (तथा) केसरिया, लाल, सपेद, फेंटा रक्खै भोजन साधर्मी श्रावकके घरका (तथा) अपनें कुल जातीके घरका (तथा अपनें हाथका करे। अपना खरच दान पुण्य साधर्मी जैन लोकोंकेपास लेवे। याचना करे। (परंतु) अन्य मिथ्यात्वीयोंके पास दान पुन्य न लेवे, याचना न करे। जिनेश्वर देवका वंदन पूजन (तथा) धर्म्म उद्दीपन, हमेसां करते रहे। अरिहंतादिक नवपद (तथा) नवपदके अधिष्टायक स

स्यकी देव टाल, अन्य मिथ्यात्वि देव गुरुवादिकका स्मरण पूजन (तथा) देषभावे निंदन कदापि काले न करे। (तथा इनोंके) माहण ब्राह्मण, वृद्धश्रावक, जैनपंमित, सिद्धपुत्र, सर्वज्ञपुत्र, महात्मा, कुलगुरु, पन्नाकड, क्षुल्लक, यति, संवेग पक्खी, आचार्य, उपाध्याय, पदाधिकारी, कम्मांधि कारी (इत्यादि नाम पद कहे हैं) इन सर्वका अने कांतिक विवेकी जैनी लोक यथायोग्य मान्य करते है। (इन वृद्धश्रावकोंकी आदमें उत्पत्ति) श्री ऋषभदेव स्वामीकों केवल ज्ञान हुए वाद। भरतचक्रवर्तिनें। सौधर्म इं द्रके वचनोंसें। धर्म्म वृद्धीके अर्थ करीहे॥ (सो अधिकार) दूसरा प्रकाश, जैन इतिहासमें लिखेंगे॥ ऐसे गुणयुक्त आचारवान वृद्धश्रावक होते हे॥ इनोंमें जिके सम्यक्तसें भ्रष्ट, एकांती मिथ्यात्वी. निन्हवादी ही नाचारी होय (तिके) जैनियोंमें अवंदनीक होते हैं॥ यह प्रथम वृद्ध श्रावकोंका स्वरूप कहा॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अब दूसरा लघुश्रावक कैसे होते है सो लिखते हैं ॥※॥

॥ ※॥ जो क्षत्री, वैश्य, सुद्र, अपनें शुभ कर्मोदयसें, (तथा) स्या द्वादी जैन गुरूके उपदेशसें, सुद्ध श्रावक धर्म अंगीकार करै॥ अपनें व र्ण मुजव, जिनोपवीत, उत्तरासण, सम्यक्तादि व्रत, सुद्धाचारसें धारण कर के, अंतरंग सत्य श्रद्धासें पालै (और) सुद्धविणज वोपार (तथा) रा ज्यपद, मंत्रीपद, सेठ, सेनापती, मंमलीक, पदादि, धारन करके। धर्म, अ र्थ, काम, दान पुन्यादिककों साधन करै॥ देवभुवनके समान, अनुपम जि नमंदर वनावै॥ द्रव्ये, भावे, अनेकप्रकारसें। देव, गुरु, धर्मका, वंदन, पूजन, महोत्सवादिक करे॥ धर्मशाला, पाठशाला, दानशाला, पुस्तकशा ला, स्थापन करै॥ यथाशक्ति धर्मके सात क्षेत्रोंमें अपना धन खरच करै (तथा) धर्म उद्दीपन निमत्त, जैन विद्या जो पढै (तथा) पढावै। जिनों का वहुत मान्य करे। तन, मन, धनसें, मदत देवे। (और) जन्मसें मरणपर्यंत पूजा प्रतिक्रमणादिक सर्व आचार, जैन शास्त्रोक्त विधिसें, जै न पंमितों पासे। विनय संयुक्त शीखै, धारन करै॥ प्रथम विद्या पढनेकों (तथा) जिनोपवीत, सम्यक्तव्रतादिक, धारन करनेंकों। यथाशक्ति वम्हे उत्सवकेसाथ, गुरुकेपास जावे॥ द्रव्ये, भावें, गुरुपूजा करे (ऐसे लघु श्रा

वक होते हें) अभी वर्त्तमानकालमें अनेक जैनी लघुश्रावकके कुलगोत्र प्रसिद्ध है (तिके सर्व) सुद्ध सांधु आचार्य महाराजोंके प्रतिवोधकहे (जैसें) सं। २–२२ केशी आचार्य संतानी, श्रीरत्नप्रभसूरिजी, महाप्रभावीक आचार्य ज़ए (सो) उसियां नगरीके राजादिक क्षत्री वैश्य सर्व लोकोंनें प्रतिवोधके जैनी किये ॥ तवसें उशवाल ज़ए (तथा) कोटिक गणी खरतर विरुध धारक। श्री जिनचंद्र सूरिजी, दिल्ली शहरमें। सं। १०,९१ श्रीमाल महतियाण गोत्रकों प्रतिवोधके जैनी किये (तवसें) श्रीमाल गोत्रीय श्रावक ज़ए (तिसपीछे) सं। ११६९ खरतरगछी महा प्रभावीक युगप्रधान आचार्य श्रीजिनदत्तसूरजी पद धारक ज़ए (जिणोंनें) प्रथम तो सवाक्रोड ह्रींकारजीको जाप करकै। ५२ वीर, ६४ योगणीयादि, बहुतसे देवगणकों सेवक किये (और) पंजाव, जेशलमेर, मारवाड़ादि देशोमें विहार करते। क्षत्री, ब्राह्मणादिककों प्रतिवोधके (सवालाख जैनी श्रावक किये) जिनोंका। सावण सुक्खा, गोलछा, छाजेड, राखेचा, नाहटा लूणिया, भडकतिया, वाफणा, चोरडिया, पारख, डागा, वेगवाणी ढड्डा, डुघड, लालाणी, गणधर चोपड़ा, कोठारी, मूंणोंत, (इत्यादि) अनेक गोत्र प्रसिद्ध ज़ए (जिसपीछे) सं। १२८५ चित्रवालगछके चैत्यवासी, जगच्चंद्राचार्यजी, सुभकर्मके योग, वड़ेतपस्वी साधु ज़ए (जवसें) तपागछ प्रसिद्ध ज़वा (इनोंके) वस्तुपाल तेजपालादि दश श्रावक ज़ए (इसी तरे) ओशवाल श्रीमाल पोरवाड़ादिक जैनी लघु श्रावक ज़ए ॥ सो वर्त्तमानमें प्रसिद्ध हे (ऐसे लघु श्रावक होते हें) ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अब वृद्ध, लघु, दोनुं श्रावक, जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, तीन प्रकारके होतेहें ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ जो सुद्ध सम्यक्त गुण पायके। नवकारसी आदिक (किंचित) ब्रत पच्चक्खाण भावसे धारन करनें वाला होय (सो जघन्य श्रावक होते हें) १ (तथा) सुद्ध १२ ब्रत धारक। २१ गुण संयुक्त होय (सो मध्यम श्रावक होते हें) २ ॥ (तथा) अतीचार रहित १२ ब्रत, ११ प्रतिमा धारक होय। सर्व सचित्तके त्यागी, साधर्मियोंके (तथा) अपनें जात भाईयोके घरोंसें भिक्षा वृत्ति करनें वाले होय ॥ साधुके तुल्य मोटा

अभिग्रह पच्चरकाण धारन करनें वाले होय ॥ सर्व संसारी कार्य छोडके आनंदादिककी परे धर्म कार्य स्वाध्यायमें रातदिन मग्नरहे (सो उत्कृष्ट श्रावक होते हें) ३ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अब सामान्य प्रकारे गुण लिखते हें ॥ ※ ॥

॥ ॥ ※ ॥श्रावक कैसे होय। यथाशक्ति सुद्ध श्रावक धर्म पाले । एकांत पक्षपात, कलहादि रहित, विनयादि गुण धारके, अनेकांतिक सुद्ध गुरु धर्माचार्यकी सेवना करे (तथा) भवो भवमें नरक निगोदादिकके दुख देनें वाली, असुचि विष्टाके समान, कालकूट जहरसें अधिक, ऐसी परनिंदा छोडे (और) स्वर्ग मोक्ष सुख दायनी, कृत कर्म विध्वंसनी, आत्म निंदा करता रहे (तथा) १३ काठिया प्रमाद रूप महा शत्रुवोंको दूर करके, सुद्ध साधु, श्रावक, संवेग पक्खी) सबके गुण ग्रहण करे । साधमीजाणके यथा योग्य भक्ति बहुमान करे ॥ श्रीजिनेश्वरदेवका, विनय मूल, दया मूल, चारित्र मूल, धर्मका उद्योत करता रहै (इत्यादि गुण युक्त श्रावक धर्महे (सोपिण सुगम पणासें दूर रस्ते मोक्ष जाणेंका वीज भूतहै ॥ ※ ॥ यह दूसरा देश चारित्र धारक श्रावक धर्मका स्वरूप कहा ॥

॥※॥ अब तीसरा संवेग पक्षी श्रावकोंका स्वरूप आचारलिखते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अनादि कालसें मिथ्या मोहादि कर्मोंकिवस, चिदानंदनें जन्म मरण करते, आपना गुण न पाया (सो) काल, भावी, भव्यत्व स्वभावादिक, पांच सम वाय मिले थके । यथा प्रवृत्ति१, अपूर्व २, अनिवृत्ति ३, (यह) तीन करण, शुभानु योगसें, सर्व कर्मोंकी बहुतसी स्थिति खपाके, किंचित् न्यून एक कोडा कोडि सागरो पम प्रमाण शेष रक्खे (तब) रागद्वेषकी महा सचिक्कण निगड गांठ भेदन करे (और (अनंतानुबंधी) क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, कषाय चार (तथा मोहनी ३) सम्यक १, मिथ्यात्व २, मिश्र ३, ॥– यह सात प्रकृतिकों क्षयोपशम करके। उप शमादि ज्ञान दर्शन गुणकों प्राप्त होताहे (जब ऐसा ज्ञान, दर्शन, अपना गुण प्राप्त होनेंसे) अनंता पुद्गल परावर्त्त भव भ्रमण

दूर होके । जघन्य अंतर महूर्त्त (उत्कृष्ट) अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त, भव स्थिति, रहै (तिस पीछे अवश्य मुक्ति पदकी प्राप्तिहोय (ऐसा) अक्षय सुखदायक, चिंता मणि रत्नवत्, (ज्ञान, दर्शन, गुण) गुरूके उपदेशसें (तथा) अपनें स्वभावसें (जो) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्रके, सुभकर्म सुमताके योगसें प्राप्त होय (तब) राग, द्वेषादि, रहित। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, श्रीजिनेश्वर देवके वचन अंतरंग श्रद्धासें सत्य मानें। श्रीजिन धर्मकी अनेक प्रकारसें उन्नति करे (संसारमें) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, (यह) तीन तत्व पदार्थ सत्य जानके परमभक्ती करता रहै ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अब तीन तत्वकी श्रद्धा लिखते हैं ॥❋॥

॥ ❋ ॥ (प्रथम सुदेव किसकों कहिये) ॥ (जो) राग द्वेषादि १८ दूषण रहित, सर्व देव इंद्रोंके पुज्य, ३४ अतिशय, ३५ वचनगुण सोभित, मोक्ष ऊणवाद, संसारमें आवा गमन रहित, (ऐसे) जिन, सिद्धादिक, ब्रह्मा, विष्णुं, महादेव, अल्ला, अलखादि, जो होय। (उनकों) संवेग पक्खी, अनेकांती, (ईश्वर, परमात्मा, मानें) और ऐसे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, लोका लोक भाव प्रकाशक, अरिहंत, सिद्धकों, सुदेव, ईश्वर, भगवान, कहियै (परंतु) राग द्वेषादि सहित, पूर्वोक्त गुणां रहित, कोईभि दलद्रीनें, अपना ईश्वर नाम, (तथा) रातदिन आप काम बिटंबणामें फस रहाहे (उसनें) अपना ब्रह्मचारी नाम, (तथा) छाणा चुगनें वालीहे (उसने) अपना लक्ष्मी नाम, स्थापन किया (इसीतरै) निगुर्ण नाम धारककों, ईश्वर, भगवान, सुदेव, न कहियै (क्युंकि) जो आपभी राग द्वेशादिक संसार विटंवनामे फस रहे हे। कोईकों बर देरहेहे, कोइकों मार रहेहें (सोकभी) ईश्वर मोक्षदायक न होते हें ॥ (जहां तक) जो बहुल संसारी जीव मोह मदिराके नस्सेमें व्याप्त होतेहें (तहांतक) चौथी गतिवाले १८ दूषण सहित (और) कुकर्म करनें वाले। भय देखानें वालेकों। ईश्वरावतार, भगवान तुल्य, मोक्ष दायक जानते हें ॥ (औरजब) मोह मदिराका नस्सा उतरताहे (तव) अपना सुद्ध ग्यान गुण, बिबेकसें, मुद्रा, कृत्य, वचन, सिद्धांतादिक, देखके। राग द्वेषादि रहित, श्री अरिहंत देवकों, ईश्वर मोक्ष दायक जाणतेहें। ध्याते, पूजतेहें ॥ ॥ ॥❋॥

॥ ※ ॥ भगवानका स्वरूप लिखतेहैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रशम रस निमग्नं दृष्टि युग्मं प्रशन्नं । वदन कमल मंकः का मनी संगसून्यः । करि युग मपि धत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तृदश जगति देवो वीतराग स्त्वमेवः ॥ १ ॥ ※ ॥ भववीजां कुरु जनना । रागाद्याक्षय म पा गता यस्य । ब्रह्मावा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नम स्तस्मैः ॥१॥ (ऐसे) गुण स्वरूपयुक्त , ईश्वर परमात्माको । नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव, चारुं निक्षेपै । अनेकांती जैनी, त्रिकालै, त्रिकरण सुधे, ध्यावन, पूजन, करै(तथा) ईश्वर परमात्माके आग्या कारी सम्यक्ती, इंद्रादिक सर्व देवगणकों, अप ना मुख्य साधर्मी जाणके । बहुत मान्यसें, जन्मादिक संस्कारोमें (तथा) पूजा प्रतिष्टादिक सर्व धर्म कार्योंमें, निमंत्रण पूजन नमस्कारादि करै ॥ (क्युंकि श्रेयांसी बहु विघ्नानि) कल्याण कारक धर्म कार्य करते । मि थ्यात्वी देवादिक अनेक उपद्रव करतेहैं (इसवास्ते) अवश्य संपूर्ण धर्म कार्यमें । साधर्मी देवकी, निमंत्रण, भक्ति, बहु मानादि करै । सहाय्यलेवै ॥ (परंतु) प्रथम गुण स्थान वर्त्ती । हरि, हरादि, मिथ्यात्वी देवका । वंदन, पू जन, निमंत्रणादि, कोईप्रकार न करै (और) अन्य देवकी द्वेषसें निंदना भी न करै (इसी तरे) सुध देव तत्वकी श्रधा धारन करे ॥१॥ ॥※॥

॥※॥ अब गुरुतत्वकी श्रधा लिखते हैं ॥※॥

॥※॥ (तथा गुरु ऐसे मानें) जो श्रीजिनेश्वरदेवकी आज्ञा संयुक्त, अनेकांतिक सुद्धधर्म प्ररूपक, छकाय जीवोंकी दया करनेंवाले, कालानुसा रे सुसाधु होय । आपतिरे अन्यकों तारै (तथा) प्रथम जिसकेपास जैन धर्म सुद्ध पाया है । धर्म शीखा है । जिसके प्रसाद, अनादि भव दुःखदाय क मिथ्या मोह दूर होके। थोडे कालमें अक्षय सुखदायक सम्यक्तरत्न, ग्यान रत्न मिला है ॥ ऐसे परम उपगारी । जैन पंडिताचार्यादि, श्रावक, संवेग पक्षीकोंभी । सुसाधु धर्माचार्यसें अधिक जाणके । वंदन, पूजन, भक्ति, बहुमा नादि करे ॥ कृतज्ञपणासें अपना धर्म गुरु मानें ॥ (कृतज्ञ उसकों कहतेहैं) जो किये उपगारको जाणें। आप पीछा उपगार करे ॥ सो श्रीपालजीके समान उत्तम कृतज्ञ पुरुष कहिये ॥ (तथा) ॥ किया कोईका उपगार भूले नहिं । परंतु । आप उसका प्रतिउपगार कर शक्ता नहिं ॥ सो

द्ध भावसें कुभी उदय न आया (निकेवल) जिनेश्वर देव, गुरु, धर्म, की अंतरंग भक्तिसें। तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया ॥ आवती चौवीसीमें भगवान हुवेंगे ॥ ऐसे गुण ग्राही, क्षायक सम्यक्त गुण धारक, निश्चल जैन धर्मी हुए(जिनोंकी)सौधर्म इंद्रनें सर्व देवगणके सन्मुख प्रसंसा करी(जव) कोई मिथ्यात्वी देवतायें इंद्रका वचन सत्य न माना। (सो देव) द्वारका नगरी आयके। गलित अंग स्वानके रूपसें। श्रीकृष्ण महारायकी परिक्षा करके (सत्य गुणग्राही जाना) सो दृष्टांत इहां भावन करना (तथा) इसी तरे कोई देव श्रेणिक राजाके वखतमें इंद्रकी करी प्रसंसाकों सत्य न मानके राजग्रही नगर आया। उहां मछीगर साधु (और) गर्भधारक साध्वीका स्वरूप देखाके। श्रेणिक राजाकों (निश्चल सम्यक्ती जाना) सो दृष्टांत इहां भावन करना ॥ (इसीतरे) व्रत प्रत्याक्षानादि रहित। निकेवल चतुर्थ गुण स्थान सम्यक्त रत्न गुणधारक (जो) इंद्रादि सर्व देवगण (तथा) राजादि मनुष्य गणमें होय (सो) जैन धर्मका तीसरा भेद, संवेगपक्षी श्रावक धर्मका छोटा भाईके तुल्य जाणना (क्युंकि) यह संवेगपक्षी भी मोक्ष मार्गके वीजभूतहे ॥ निश्चय जिन वचन प्रमाणसें अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तके भीतर मोक्ष जाणें वाले हे ॥ सम्यक्त विगर कठिन चारित्र भी पाला हुवा। अभवी (तथा) जमाली आदिक कीपरे भवनाशक न होताहे (यडक्तं आगमे) दंशण भट्टो भट्टो। दंशण भठस्स नत्थि निव्वाणं। सिझंति चरण रहिया। दंशण रहिया न सिझंति ॥ १ ॥ (इससें) साधु श्रावक, संवेग पक्षी, तीनों भेद (यथा) अपना कर्म क्षयोपशम प्रमाणें मोक्षमार्ग साधक है (इस्सें) स्यादवादी जैन धर्मियोंके अत्यंत मान्यनीक है ॥ वंदन, पूजन, साधर्मी वात्सल्यादि करनें योग्यहे (यडक्त मागमे) विसमोवि नियडगमणो। मग्गो मुक्खस्स इह जइधम्मो। सुगमोवि दूरगमणो। गिहत्थधम्मोवि मुक्खपहो ॥ १ ॥ इतिवचनात्, सुद्ध साधुधर्म, श्रावक धर्म, दोनुं मोक्षदायक है (तथापि) साधू धर्म, श्रावक धर्मके, महान् अंतर हे (जैसें) मेरु पर्वत, और, सरसुंका दाणाके। सूर्य, और, खजुवा जानवरके। चंद्रमा, और, तारांके। जैसा मोटा अंतर है ॥ ऐसा साधु धर्म, श्रावक धर्मके अंतर हे (यडक्तं) जह मेरु सरिसवाणं। खज्जोअ रवी

ण चंद ताराणं । तह अंतर महंतं । जइधम्म गिहत्थ धम्माणं ॥ १ ॥ इति वचनात् साधु धर्म मोटा हे । महा कठिन मार्ग है । वीस विस्वा दया पाल नेवालाहे । निकट भवी जलदी मोक्ष जाणें वाले जीवोंके, महा पुन्य योगसें द्रव्ये, भावे, सुध्द चारित्र उदयमें आवैहै । सिंहकीपरे धारणकरे सिंहकीपरै पालै (तथा) स्यालकी परे धारन करै । सिंहकीपरे पालै, ऐसा साधु धर्म धारन पालन वाला, महाधन्यहे, कृतपुन्यहे (परंतु) भोगावली कर्मोंके उदय प्रवलतासें, जहांतक, सर्व सुध्द चारित्र उदय न आवे (अथवा) सूरवीराई सें प्रथम साधु धर्म धारन कियाहै । कठन वृत्तिसें पालेहे (तथापि) भोगावली कर्मोंके उदयसे, नंदिखेणजी, (तथा) आद्रकुमर जीकी परे सर्व सुध्द चारित्र न पालसके (तब) सुध्द श्रावक धर्म गृहस्थ आचार तो अवश्य धारन करना चाहिये (क्युंकि) ऐसाही कर्म उदय होय । तब जीव आपही भोगवता हे । क्या सुःख । क्या दुःख (तथापि) सर्वतो भ्रष्ट न होना चाहियै । ११ मा उपशांत मोह गुण ठाणें तक चढाहुवा जीव, कषाय कर्मोंके वस, पीछा पडताथका (कदास) चौथा गुणस्थान परभी, जीव स्थिर रहजाय । तो सर्वतो भ्रष्ट कभी न होय । (और) सम्यक्त गुणस्थानमें रहते । नरक निगोदादिक हीन गतिका वंध कभी न होय ॥ ज्ञान, दर्शन, गुण, जहांतक सुध्द हे । तहांतक सर्व सुध्द हे (परंतु) चउनाणी चउगइया ॥ ऐसाभी कहाहे ॥ ४ ज्ञान १४ पूर्वके धरनें वाले ११ गुणस्थान तक चढे हुवे साधुभी । कषाय, प्रमाद, कर्मोंकेवस, पीछा गिरताथका । पहला मिथ्यात्व गुणकों प्राप्त होके । नरक निगोदादिक गतिमें भमतेहें । तिके सर्वतो भ्रष्ट हो जाते हें । (परंतु) ऐसे जीवभी । ग्यान, दर्शन, चारित्र, रत्न त्रयी गुण फरसा हुवा हे (इस्सें) उसी भवमें (वा) अन्य भवमें । अवश्य रत्नत्रयी गुण प्राप्त होते हें ॥ सम्यक्त, मिथ्यात्व, कोई जात कारण नहीं हे ॥ सुध्द, असुध्द, गुण, परिणाम, कारण हे ॥ (इहां) नंदी खेणजी, आद्र कुमरजी, का दृष्टांत भावन करना ॥ (इस्सें) श्रावक धर्महे सो साधु धर्मके पूर्व साधन भूत है ॥ देखो । सुभा चार धारण करनें वालाहे (तथा) सुरासुर सेवित अरिहंता दिक साधु पदके आराधकहे । वस्त्र, पात्र, सुध्द आहारादिक सें, विनय, वे.

यावच्च, अत्यंत भक्तिका करने वाला हे (तथा) भगवान श्री जिनेश्वर देव कों। चारुं निक्षेपै सत्य मानके। द्रव्ये, भावे, अनेक प्रकारसें वंदन, पूजन, करके। जैनधर्म दीपानें वाले है (तथा) साधू १। साध्वी २श्रावक ३। श्राविका ४। जिनमंदर नवीन (तथा) जीर्णोद्धार ५। धर्म शाला (तथा) ज्ञानभंमार६ । जीव दया, (तथा) दान शाला ७॥ ऐसे ७ धर्म क्षेत्रोमें। दान पुन्यादिक करनें वाले । संप्रतिराजा, कुमारपाल राजाके तुल्य, महा प्रभावीक होते है॥ अनंता भवमें दश दृष्टांते डुर्लभ। आर्य देश। उत्तम कुल। पंचेंद्री परगमी। लंवा आयुष्य। जैनधर्म। गुरु संयोग युक्त मनुष्य जन्म पायके। देवपूजा दिक सत्कर्म करके सफल करनें वाले होतेहें॥

॥※॥ अब सत्कर्म लिखतेहें ॥※॥

॥※॥ देव पूजा १ दया २ दानं ३। तीर्थयात्रा ४ जप। ५ स्तपः ६। श्रुतं ७ परोपगारश्च ८। मर्त्य जन्म फलाष्टकं ॥ १ ॥ (इहां जैसें) कोटिक गणीय, आर्य सुहस्थिसूरि प्रतिबोधक, संप्रति राजा। (और) मलधार गच्छी हेमाचार्यजी प्रतिबोधक, कुमारपाल राजा हुवा (सो) अनेक जिन मंदर, जीर्णो द्धार, ग्यान शाला, दान शालादि, सत्कर्म करके महा प्रभावीक हुए। सो दृष्टांत भावनकरना (इसी कारणसें), भगवान श्रीऋषभ देव स्वामी प्रमुख जिनेंद्रोनें। पूर्वानुपूर्वियें। प्रथम गृहस्थ श्रावक धर्म, चौथे, पांचमें, गुणस्थान वर्त्ती जीवोंका। जन्मसें मरण पर्यंत षोमश संस्कार, धारनरूप सुभाचार कहा हे (तीस पीछे) साधु धर्मका षोमश संस्कार धारन रूप सुभाचार कहा हे ॥ ※॥ प्रथम गृहस्थ धर्मका सुभाचार कहनेंसें व्यवहार धर्मभी प्रमाण हुवा (यडुक्तं आगमे) समणस्सणं भगवउ महावीरस्स। अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइ पमिकमणं करंति। तइये दिवसे चंदसूर दंसणं कुणंति। छठे दिवसे धम्म जागरियं जागरंति। संपत्ते वारसाहे दिवसे विरए—इत्यादिक व्यवहार कर्म भगवानके माता पितायें (तथा) भगवान आपपिण आचर्ण कियेहें (पुनः आगमे वि निर्दिष्टं) विवहारो विहु वलवं। जंवंदइ केवलीवि छउमत्थं। आहा कम्मं भुंजइ। तो ववहारं पमाणंतु ॥ १ ॥ (अन्य मतेपि कथितं) चतुर्णा मपि वेदानां। धारका यदि पारगा। तथापि लोकिका चारं। मनसा

पि न लंघएत् ॥ १ ॥ (यद्यपि) आवश्यकादि आचार प्रदर्शक ग्रंथ व ज्ञतसेहे (तथापि) खरतर गच्छीय श्री वर्द्धमान सूरीके रचाज्ञवा । मोहांधकारकों दूर करनें वाला । साधु धर्म, श्रावक धर्म, प्रकाश करनें में सूर्यके समान । (औसा) आचार दिनकर ग्रंथ प्रसिद्धहै (जिसमें) ४० उदय आचारके विस्तारसें वर्णन कियेहै (तिके) ४० उदय प्रथम पीठिकामें नाम मात्र लिखे है, (उसी मुजब) नाम मात्र ४० उदय, मैंन्नी यह आचार रत्नाकरकी दीपकामें लिखताऊं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम गृहस्थ धर्मके षोडस संस्कार लिखतेहैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गर्भाधानं १ पुंसवनं २ । जन्म ३ चंद्रादि दर्शनं ४। क्षीरासनं ५ चैव षष्ठी ६ । तथाच शुचि कर्मच ७ ॥ १ ॥ तथाच नाम करणं ८ । अन्न प्राशन ९ मेवच । कर्ण वेधो १० मुंडनं ११ च । तथोपनयनं परं १२ ॥ २ ॥ पाठा रंभो १३ विवाहश्च १४ । व्रता रोपं १५ त कर्मच १६ । अमी षोडश संस्काराः । गृहीणां परि कीर्त्तिता ॥ ३ ॥ यह १६ संस्कार गृहस्थ जैनीकों अवश्य धारनेंका कहा हे ॥ ॥ ※ ॥

॥ अब साधुके योग्य १६ संस्कार लिखते हैं ॥

॥ ※ ॥ ब्रह्मचर्यं १ क्षुल्लकत्वं २ । प्रव्रज्या ३ स्थापना ४ तथा । तथाच योगो द्वहनं ५ । वाचना ग्रहणं ६ तथा ॥ ४ ॥ ततश्च वाचनानुज्ञा ७ । सोपाध्याय पदस्थिति ८। आचार्य पदयुक्तिश्च ९ । प्रतिमो द्वहनं १० तथा ॥ ५ ॥ व्रतनी व्रत दानंच ११ । प्रवर्त्तनी पदक्रमः १२ । महत्तरा पदाचारो १३ । दिन रात्रि स्थितिर्द्वयो १४ ॥ ६ ॥ ऋतु स्थितिश्च साव्याख्या १५ । मरणस्य विधि १६ पुनः । द्वाराणि षोडशौ तानि । यत्याचारे प्रदर्शिताः ॥ ७ ॥ यह १६ संस्कार साधुवोंके धारनें योग्य कहेहै ॥

॥※॥ अब साधु (और) जैन पंडित श्रावकके समान आचरणें योग्य ८ उदय लिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रतिष्टा बिंब चैत्यादेः१ । शांतिकं२पोष्टिकं वलिः३ । प्रायश्चित्त विधिश्चैव। आवश्यक विधि ६स्तथा ॥८॥ तपोविधि ७ स्त्रिविधोपि । पदारोपण ८ मेवच । गृहिसाध्वोः समानानि । द्वारान्यष्ट प्रकीर्त्तिताः ॥९॥ ※ ॥

यह आठ उदय साधु श्रावकके समान कहेहै ॥ इतना विवेक, विनय गुण अवस्य चहियै (कि) अपना गुरू आचार्य उपाध्यायकी आग्या विगर कोईभी धर्म कार्य नकरै । जो ग्यान गुणमें अधिक होय, सव विधीके जाण कार होय । आचार्य उपाध्यायादि पद धारक होय । जिस गुरूसें धर्म कार्य विधि जाणनें धारनेंमें आई होय । (ऐसे) गुरू आचार्यादिककी आज्ञा सें सर्व धर्म कार्य विधि करनी चाहियै (आवस्यकादिक आचार सिध्धांतोमें) प्रथम अपना धर्म गुरु, कुलगुरुकी, आग्यासेंही सर्व कार्य करना कहा हे सोप्रसिद्धहै ॥ कोईभी विद्या, गुरूके पास विनय संयुक्त धारन करनें सें फलदायक होतीहै ॥ (जैसें) श्रेणकराजा, एकचंडालके पास आक र्खणी विद्या, अविनयसें होकम करके सिंहासण पर वैठा सीखनें लगा (त थापि) फलदायक नहिं हुई (तव) उत्पातकी१, विनयकी२, धर्मानकी, कर्मानकी, ऐसी चारबुद्धिके निधान । अभय कुमारजी कहनें लगे (कि महा राज) इस विद्या दाताकों, ऊंचा सिंघासण पर वैठाय खुसीकरके विनय संयु क्त विद्या ग्रहण करिये । तव फलदायक हुवेगी (क्युंकि) विद्या आनेंका, व धनेंका, फल दायक होनेंका, तीन प्रकार कहा हे (यदुक्तं) ॥ गुरु शुश्रूषया विद्या । पुष्कले न धनेनवा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैवकारणं ॥ १ ॥ तव श्रेणक राजा, उसकों वहुतसा खुसी करके, विनय संयुक्त स न्मुख वैठके, विद्या ग्रहण करी, तव फलदायक हुई ॥ (इहां श्रेणक राजा, अभय कुमारजीका दृष्टांत भावन करना) ॥ यह ४० उदय आ चारके नाम मात्र कहे हें ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अव इन ४० उदयोंमें जो साधुवोंके १६ संस्कार कहेहें । सो प्रायें सव विधि साधुवोंमें होती है । साधु अपना आचार छोडके अन्यमत आचार न करतेहें (इससें) जो साधु होते हें (सोतो) प्रथम अपना गुरूके पास, अपना आचार ग्रंथ सीखते हें (परंतु) वर्त्तमान कालमें प्रायें जैन गृहस्थाचार शास्त्रोक्तरीति मुजब दिनदिन विलुप्त होता जाताहै ॥ इस हुं डा अवसर्पणी दुखमा कालके प्रभाव, चालनी प्राय धर्म होनेंसें, मन मा फक आचार करनें लगगए हें । (इससें दिन दिन) धनसें, धर्मसें, परि वारसें, विद्यासें, सर्व ठिकाणें हीन पडते जातेहैं ॥ हीनाचारी हुवाथका

इस न्नवमें दलिद्रताका डुख देखते है । परन्नवमें निगोदादिकका डुखदे खते है ॥ (इसीसें) अनेकांती सर्व जैनी न्नाइयोंके, हित सुःखार्थे, अ वश्य, जाणनें, धारण करनें लायक, जन्मसें मरण पर्यंत, जैन गृहस्था चारके पोम्शि उदय (इस) आचार रत्नाकरके प्रथम प्रकाशमें किं चित् विस्तारसें प्रसिद्ध करुंगा ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ आदौ षोम्स उदय नाम मात्र लिखताऊं ॥※॥

॥ ※ ॥ आद्य गर्न्नाधान संस्कार (जब) गर्न्न उत्पत्ति होय, उससमय आचार विधि मंत्रादि कथनरूप प्रथम उदयः ॥ १ ॥ ※ ॥ (तथा) गर्न्ना धानसें आठमें मासका कृत्य (देशविशेषसें) सीमंत आघरणी कहते हैं॥ उसका आचार मंत्रादि कथन रूप द्वितीय उदयः ॥ २ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्महुवे वाद, जन्मका संस्कार, जन्मो न्नव प्रमुख किस विधीसें करना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त, कथन रूप तृतीय उदयः ॥ ३ ॥ ※ ॥ (तथा) ज न्मसें तीसरे दिवस, चंद्र, सूर्यके, दर्शन कराणा ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप चतुर्थ उदयः ॥ ४ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें तीसरे दिवस माताके स्तनका संस्कार कराके, वालककों स्तन पान कराणा ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप पंचम उदयः ॥ ५ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें छठे दिवस संध्या समय, मातृका देवी पूजन रूप, षष्टी संस्कार कराना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप छठा उदयः ॥ ६ ॥ ※ ॥ (तथा) ज न्मसें १० दिवस उपरांत सुन्न महुर्त्ते शुचिकर्म रूप संस्कार कराना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप सप्तम उदयः ॥ ७ ॥ ※ ॥ सुची कर्म कियेवाद, नाम कर्म संस्कार कराणा । तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप अष्टम उदयः ॥ ८ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें छठे मास वालककों (और) पांचमें मास कन्याकों, अन्न प्राशनके संस्कार करायके, जो विधिसें मु खमें अन्नदैना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप नवम उदयः ॥ ९ ॥ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें तीसरे, ५ में, ७ में, वरष निर्दोष दिवसे कर्ण वेध न करणा । तद्विधि मंत्रादि कथन रूप दशम उदयः ॥ १० ॥ ※ ॥ (तथा) मास दिवस महुर्त्त सुन्न देखके चूमा कर्म करना (अर्थात्) मुंमन क रना ॥ तद्विधि मंत्रादि कथन रूप एकादशम उदयः ॥ ११ ॥ ※ ॥(तथा)

जन्मसें, ८ में वर्ष ब्राह्मणकों, १० में वर्ष क्षत्रीकों, १२ में वर्ष वैश्यकों, शुभ मुहूर्त्तें जिनो पवीत धारन कराना (तथा) जिनो पवीत बनाना, व्रत उपदेश देना, व्रत विसर्ग कराना, भूम्यादि दानादिक दैना, चारुं वर्णका संस्कार कराना, सुद्रकों उत्तरासन रूप जिनोपवीत धारन कराना (तथा) वटु करण विधि (अर्थात्) संस्कारसें ब्राह्मण करना ॥ इत्यादि अधिकार विधि मंत्रादि कथन रूप द्वादशम उदयः ॥ १२ ॥ ॥ (तथा) सुभ मुहूर्त्तें, प्रथम पुत्रकों, जैनी पंडितके पास विद्याध्ययन कराना। तद्विधि मंत्रादि कथन रूप त्रयोदशम उदयः ॥ १३ ॥ ॥ (तथा) जन्मसें ८ में वर्ष उपरांत, ११ में वर्ष पर्यंत कन्याका विवाह, (और) जन्मसें १६ वर्ष उपरांत पुरुषका विवाह करना (तिसमें) वेदी स्थापन विधि, ७ कुलकर गणपति स्थापन पूजन विधि (तथा) अग्निकी स्थापना अग्नीका तर्पण, दानादिक दैना, लाजा कर्म, ॥ इत्यादिक विधि मंत्रादि कथन रूप चतुर्द्दशम उदयः ॥ १४ ॥ ॥ (तथा) साधु (वा) जैन पंडिताचार्यके पास सम्यक्त धारन करना, १२ व्रत उचरना, उपधान तपस्या करनी, संघमाला पहरनी (तथा) किस विधिसें भगवानके मंदर जाणा,। भगवानकी पूजा करना,। शांतिक पोष्टिक पूजाकरना (तथा)सरस रागणीके गायन युक्त, १२ व्रत पूजा, पांच कल्याणक पूजा, । १४ स्वप्न पूजा, ९ ग्रह, १० दिग्पाल पूजा । श्रावकका सविस्तर दिन कृत्य, ॥ इत्यादिक विधि मंत्रादि कथन रूप, पंचदशम उदयः ॥ १५ ॥ ॥(तथा) अंत्य संस्कारके विषे श्राद्ध आराधना, चतुःशरण क्षामणा, तद्विधि मंत्रादि कथन रूप षोडशम उदयः ॥ १६ ॥ ॥ इसी क्रमसें षोडस उदय सविस्तर प्रथम प्रकाशमें वर्णन करुंगा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अब गृहस्थीके १६ संस्कार साधु (वा) कुलगुरु, किसको कराना उचित है (सो लिखता हुं) ॥ ॥

॥ ॥ जो संसारकर्म परिग्रह छोडके । द्रव्ये, भावे, सुद्धसाधु हुए हें। जिनोंकों तो एक व्रतारोप संस्कार (अर्थात्) धर्मोपदेश दैना, सम्यक्तादि व्रत धारण कराना उचित है ॥ शेष १५ संस्कार कराना उचित नहिं।

(यडुक्तमागमे) ॥ व्रतारोपं परित्यज्य । संस्कारा दशपंचच ॥ गृहीणां नैव कर्त्तव्या । यतिभिः कर्मवर्जितैः ॥ १ ॥ विझयं जोइसं चैव । कम्मं संसारियं तहा । विझा मंतं कुणंतोअ । साझहोइ विराहउ ॥ २ ॥ (इसवास्ते) दूसरा देसविरति कुलगुरु, जैन ब्राह्मण, क्षुल्लकादिककों, गृहस्थका १५ संस्कार कराणा उचित है ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अब संस्कार कराणेवाले कुलगुरु कैसे आचारवान चहियै (सो लिखते है) ॥※॥

॥※॥ जो अर्हन् मंत्रसें पवित्रित, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि, धारन किया थका होय (तथा) विनयवान्, बुद्धिवान्, शौचवान्, आचारवान्, दयावान्, शरल स्वभावी, शांति परिणामी, दृढ सम्यक्ती, अनेकांती, अर्हंत साधुकी आग्या धारक, विधि मार्गका जाणकार, अल्प कषाई, त्रिकालै देव वंदन, सामायक, करनेवाला । अनेक प्रकारसें धर्मवृद्धी करनेवाला, (इत्यादि) अनेक गुण धारक होय ॥ ※ ॥ ऐसे कुलगुरु जैन पंडित ब्राह्मणोंकेपासे । जैन गृहस्थोंको सर्व संस्कार विधि, विनय संयुक्त धारन करनी चाहियै ॥ कोईभी विद्या विनयसें लीवी फलदायक होतीहै ॥ यह प्रथम प्रकाशका अधिकार दीपन करा ॥※॥

॥ ※ ॥ और दूसरा प्रकाश मध्ये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन इतिहास, (तथा) ५५ बोलगर्भित, ऋषभादि २४ भगवानका दृष्टांत स्वरूप (तथा) १२ चक्रवर्त्ति, ए वासुदेव, ए प्रतिवासुदेव, ए बलदेव, (इत्यादिकके) माता, पिता, नाम, नगर स्वरूप (तथा) भगवान महावीरस्वामीसें लेकर, वर्त्तमान काल तक, सुध्द कोटिक गच्छ परंपरा आचार्यादिकके स्वरूप, मत मतांतरके स्वरूप, (तथा) सर्वके उपयोगी । स्वप्न, सुकन, महूर्त्तादिक, विचारण स्वरूप (इत्यादि) अधिकार दूसरा प्रकाशमें किंचित विस्तारसें वर्णन करुंगा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब हितोपदेश लिखताहूं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवाणुप्रियो । अहो प्यारा सर्व जैन भाइयो । अहो स्याद्वाद धर्म रागियो । अहो सज्जन पुरुषो । प्रेरणा मदत करके । सर्व

स्थानके । बनैं जिस मुजब धर्म वृद्धी करो । धर्म वृद्धी ग्यान सेती होती है (इससेती) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्र, (जो) जैन विद्या, पढै पढावै, (तथा) जैन आचार धारन करै, करावै, जिसकों मदत देवो । जिसका बहुत मान्यकरो । (और) जो निराश्रई होय (उसकों) वस्त्र आहारादिकका सहाय्य करके विद्या पढाउ ॥ एकेकका गुण ग्रहण करो । एकेकका गुण वधाउ ॥ कोई प्रकार जैन विद्याकी वृद्धी करो । अपना धर्म गुरु, कुलगुरुके पास, विनय संयुक्त धर्म कृत्य आचार शीखो । जन्मसें मरण पर्यंत जैन आचार धारन करो । शक्ति मुजब आचार व्यवहारमें चलो । शक्ति मुजब व्रतपच्चक्खाण धारन करो । सर्व नाश कारक निंदा द्वेष छोडो । सर्व गछ, सर्व जैनीभाई आपसमें समता स्वभाव धारण करो। सबुद्धिसें विचार करके । एकांत दृष्टिराग पक्षपात छोडो ॥ एकेकके द्वेषस । पर्वतिथीका नाश करके । लीलोती आदिक अनंता जीवांरा घाण मति करो ॥ जीव दया सुद्ध पालो । सत्य वचन बोलो ॥ अदत्त वस्तु ग्रहण मति करो । परस्त्री अभिलाषा कुशील छोडो। अंगीकार करी हुई अपनीस्त्रीपर संतोष धारन करो । परिग्रहकी मूर्छा अल्पकरो । तृष्णा अल्प करके परिग्रहका प्रमाण करो (तथा) पांचुं व्रतकों गुणकारी दिग्दिश परमाण करो । मद्य, मांशादि अभक्ष अनंत काय अवस्य त्यक्त करो । (तथा) १५ कर्मादानादि महा सावद्य व्यापार त्यक्त करके । निरवद्य व्यापार करो ॥ भोगोपभोग वस्तुका प्रमाण करो । (अहो भाइयो) अनर्थ दंड त्यक्त करो (अर्थात्) बे अर्थ कोई पापका भागी मतिहुवो । (तथा) सामायक, पोषध, प्रतिक्रमण, देव पूजन, दान, पुन्य, उपगारकों। करते, कराते, करनें वालांको अनुमोदना, करते रहो ॥ अछे अछे चित्त आल्हाद कारक जिन मंदर बनवाउ (तथा) संप्रतिराजा, कुमार पाल राजा दिकका कराया हुवा जीर्ण मंदिरोका उद्धार कराउ । (और) कोईस्थानके भिन्नवादिकके प्रसंगसें जिन मंदर अपूज (वा) बंध रहता होय (तो) ऐसा मंदरोंकी अवश्य संभाल रक्खो । जिन द्रव्यकों वधाउ । देव, गुरु, द्रव्यका भक्षण मति करो । मांगके खाना दलद्री होना फरभी अछा है (परंतु) देव गुरु द्रव्यका भक्षण करके अनं

तान्नव नरक निगोदा दिकमें भ्रमणा अच्छा नहिं है ॥ (अहो देवाणु प्रियो) जूवा, चोरी, मांस, मदरा, वेश्या गमन, परस्त्री गमन, जीवहत्या, आहेडीपणा ७ । (ऐसा) महा दुःख दायक सात व्यसन छोडो । धर्म नीति, कुलनीति, राज्यनीति, अनुसार चलो ॥ रथजात्रा तीर्थयात्रा करो साधर्मी वात्सल्य करो । (तथा) देव, गुरु, धर्मकों, तत्वपदार्थ जानके, अंतरंग प्रीति रक्खो ॥ (तथा) कर्मोंकी विचित्र गति जानके (कोई) संसारी जीवकी निंदा मतकरो । बुद्धी कर्मानु सारणी है । अपना कर्मोंकें प्र साद, सुःख दुःख सर्वजीव भोगवते हे ॥※॥ (यडुक्तं) ॥※॥ कृतकर्म क्षयो नास्ती । कल्प कोटि शतैरपिः । अवस्य मेव भोक्तव्यं । कृत कर्मः सुभासुभं ॥ १ ॥※॥ (पुनः) ॥※॥ जं जं समयं जीवो । आवस्सइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधएक म्मं ॥ २ ॥※॥ (पुनः) ॥※॥ नीचै गोत्रावतार श्वरम जिनपते मल्लिनाथा वलात्वं । अंधत्वं ब्रह्मदत्ते भरत नृप जयः सर्वनाशश्च कृष्णे । निर्वाणं नारदेपि प्रशम सुख रति स्या चिलाती सुतेपि । इत्थं कर्मानु वीर्योः स्फुट मिह जयतां स्पर्द्धया चिंत्यरूपे ॥ ३ ॥※॥ (पुनः) ॥※॥ ब्रह्मा येन कुलाल व न्नियमितो ब्र ह्मांण्ड भांमोदरे । विष्णुर्येन दशावतार गहने क्षिप्तः महासंकटे । रुद्रो येन कपाल पाणि पुट के भिक्षाटनं कारितः । सूर्यो भ्राम्यति नित्य मेव गगने तस्मैनमः कर्मणेः ॥ ४ ॥※॥ (पुनः) ॥※॥ प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वन्हि । उदयति यदिभानुः पश्चिमायां दिशायां । विकशति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां । तदपि नचलनीयं भाविनी कर्मरेखा ॥ ५ ॥※॥ (पुनः) ॥※॥ एककै पाय अनेक परे पुनि एक अनेकके पाय परेहै । एक अनेक कि चिंतहरै अरु एक न आपनो पेटभरेहै । एक खुस्याल सूञै सुख पालमें एककुं कंथन खाट जुरै है । देखहु यार कहै धमसी जगि पुन्यरु पाप प्र तिक्ष फिरै है ॥ ६ ॥ (पुनः) ॥※॥ ऐऐ देखो दई गतिया वतिया कछुही न कहीसी परै है । रंककों राउरु राउकों रंक पलकमें ऐसी हलक करै है । एक विचित्र ही चित्र वनावत एककों भंजन एक घरै है । वात धर म्मसी वाहीके हाथ है टारयोन काहूकों ईस टरेहै ॥ ७ ॥ (पुनः) ॥※॥ लंछन चंदमें तापदिनंदमें चंदन मांहिं फणिंदको वासो । पंमित निर्द्धन सद्ध

न है सठ नारि महाहठको घरवासो। हीम हिमाचल खार है वारधि केत कि कंटक कोटिको पासो । देखो धरम्मसी है सबकों डुख कोऊ करो मति काऊको हासो ॥ ८ ॥ ※ ॥ (इसवास्तै) अहो देवाणु प्रियो । कर्मोंकी ८ मूल प्रकृति (तथा) १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप जाणके सम भावसें आत्म लघुता करते रहो ॥ ※ ॥ अब कर्मोंकी ८ मूलप्रकृति (तथा) १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप किंचित ॥ मात्र इहां लिखता हुं ॥ ※ ॥ (मूलकर्म भेद ८) ग्यानावरणी १। दर्शना वरणी २ । वेदनी ३। मोहनी ४। आऊ ५ । नाम ६ । गोत्र ७। अंतराय ८ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अब १ ज्ञाना वरणी कर्मका स्वरूप लि० ॥※॥

॥※॥ इसकी उत्तर प्रकृति ५ ॥ मति ज्ञानावरण १। श्रुत ज्ञानावरण २। अवधि ज्ञानावरण ३ मन पर्यव ज्ञाना वरण ४ । केवल ज्ञाना वरण ५ ॥※॥

॥ ※ ॥ अब सात प्रकारसें जीवोंके ज्ञानावरणी कर्म बन्ध होय (सोलिखते है) ॥ सिद्धांत शास्त्र वेचके आजीवका करै ॥ १ ॥ कुदेवकी प्रशंशाकरै २ ॥ ज्ञानके विषय संदेह करै ३ । कुशास्त्रकी, कुगीतकी, प्रशंशाकरै ४ । सिद्धांतका मूल अर्थ उत्थापन करै ५ । पर पुरपका दूपण प्रकाशकरै ६ । मिथ्या शास्त्रका उपदेश करै ७ ॥ ※ ॥(इस)ज्ञाना वरणी कर्मकी ३० कोडा कोडि सागरोपम उत्कृष्ट स्थिती होय ॥ यह कर्म नेत्रांके पाटे समान होताहै (जैसें) ८ पुट वस्त्रका पट्टा बांध्यां थकां । नेत्रांसें कुछभी न दीखताहै (इसीतरे)ज्ञानावरणी कर्मके उदय, जगत्र स्वरूपका ग्यान न होताहै ॥ ज्ञायते परिछिद्यते वस्त्व नेनेति ज्ञानं ॥ आव्रियते आछाद्यते अनेने त्यावरण ॥ ज्ञानस्या वरणीयं ज्ञानावरणीयं ॥ (इति समासः) ॥ यह ज्ञानावरणी कर्मका स्वरूप कहा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ अब २ दर्शना वरणी कर्मका स्वरूप लि० ॥※॥

॥※॥ (इसकी उत्तरप्रकृति) ९ ॥ चक्षु दर्शनावरण १ । अचक्षु दर्शनावरण २ । अवधि दर्शना वरण ३ । केवल दर्शनावरण ४ ॥ सुखे जागे (सो) निद्रा ५ । डुखे जागै (सो) निद्रा निद्रा ६ । बैठां ऊभां निद्रा आवे (सो) प्रचला ७ । मार्ग चालतां निद्रा आवे (सो) प्रचला

प्रचला ८ (तथा) जिस निद्रामें वासु देवसें अर्द्ध पराक्रमहोय । छहै मास आवै । दिनका चिंत्या रात्रकों कार्य करै । शत्रुकों जीतके पीछा आय सोवे (तवभी) निद्रा जागृत न होय (सो) स्त्यानर्द्धि निद्रा ए ॥ इस निद्रावाला अवश्य सातमी नरक जाय ॥ ※ ॥ यह ए प्रकृति कही ॥ ※ ॥ (अब) दश प्रकारसें जीवोंके दर्शना वरणी कर्म बन्ध होय (सो लिखते है) ॥※॥ कुदेवकी प्रसंशा करै १। कुतीर्थकी स्तुतीकरै २। कुगुरु हीनाचारीकी प्रशंशा करै ३ । जीव हिंसा करै ४ । कुशास्त्रकी प्रशंशा करै ५ । मिथ्यात्व वुद्धी धारन करै ६ । शोक दुःख अधिक धारन करै ७ । सम कितकों दूषण लगावै ८ ॥ मिथ्या आचार व्रत धारन करै ए ॥ मिथ्या वुद्धीयें अन्याय झूठ वोलै १० ॥ ※ ॥ यह १० वोले जीव दर्शनावरणी कर्म बांधै ॥※॥ (इसकी) ३० कोमा कोमि सागरो पम स्थिति (यह) कर्म प्रोलियैके समान है (जैसें) प्रोलियो, राजाकेपास कोईकों जानें न देवै (इसीतरै) यहकर्म दर्शन राजासें मिलनें न देवै ॥ दर्शना वरणी कर्म खपायां विना दर्शनगुण उदय न आवै ॥ दृश्यते अनेनेति दर्शनं । तस्या वरणीयं, आच्छादनीयं, दर्शना वरणीयं (इति समासः) ॥ ※ ॥ यह दर्शना वरणी कर्मका स्वरूपक हा ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अब ३ वेदनी कर्मका स्वरूप कहते है ॥※॥

॥ ※ ॥(इस कर्मकी उत्तर प्रकृति)२॥ सातावेदनी, सुःख भोगावना१॥ असाता वेदनी, दुःख भोगावना २ ॥ ※ ॥ (अब) १४ वोले जीव सातावेदनी कर्म वन्ध करै (सो कहते है) ॥ दयावंत १ । दानवंत २ । क्षमावंत ३। व्रतवंत ४। शीलवंत ५ । दमवंत ६ संजमवंत ७ । ज्ञानवंत ८ । जिन पूजावंत ए। जिन वंदनवंत १०। जिन शास्त्र विचारवंत ११। दया धर्म उपदेशक १२ । दीन पर अनुकंपा धारन करै १३ । सत्य वचन वोलै १४ ॥※॥ यह १४ प्रकारे जीव साता वेदनी कर्म वांधै। संसारका सुख भोगवै ॥ ※ ॥ (अब) १५ वोले, जीव असाता वेदनी कर्म वन्ध करै (सोकहतेहै) मनुष्यकों मारै १ । जीवाकों वंध करै २ । जीवांकों छेदन करै ३ । जीवांकों भेदन करै ४। चामी करै ५ । परकों दुःख उप जावे ६ । जीवांकों त्रास देवै ७ । आक्रंद करावै ८ दुःख शोक धारन करै ए । परद्रोह

थापण मोसो करै १० । असत्य वचन बोले ११ । वैर करावै १२ । युद्ध करावै १३। क्रोध, मान, उपजावै १४ पर निंदा करै १५ ॥※॥ (यह) १५ प्रकारे जीव असाता वेदनी बांधै ॥ संसारमें भ्रमतां महा दुरक भोग वै ॥ (इसकी) ३० कोम्राकोम्रि सागरोपम स्थिति ॥ (यह कर्म,) मधुलिप्त खड्ग धारासमान है (जैसें) खांमेकी धारके ऊपर, मधु लगाया हुवा चाट णेंसें, प्रथम मिष्ट लगै (सो साता वेदनी) पीछे खांमेकी धारासें जीभ क टै दुःख पावै (सो असाता वेदनी) ॥ वेद्यते आल्हादि रूपेण यदनुभूयते तद्वे दनीयं ॥ ३ ॥ (इति समासः) ॥ ※ ॥ यह वेदनी कर्मका स्वरूप कहा ॥

॥※॥ अब चौथा मोहनी कर्मका स्वरूप कहते हैं ॥※॥

॥ ※ ॥ इसकी उत्तर प्रकृति २८ ॥ (अनंतानुवंधी) क्रोध १, मान २। माया ३। लोभ ४ ॥ जावज्जीव रहै। समकित उदय नहिं आवै ॥ (अप्रत्या ख्यानी) क्रोध ५। मान ६। माया ७। लोभ ८ ॥ उदय आ यां उत्कृष्ट १ वछर रहै ॥ इस कषाय चौकमी के उदय समकित गुण पा वै (परंतु) देश विरति श्रावक गुण न पावै। व्रत प्रत्याख्यान उदय न आवै ॥ (प्रत्याख्यानी) क्रोध ९। मान १०। माया ११। लोभ १२ ॥ उदय आयां उत्कृष्ट ४ मास रहै ॥ इस कषाय चौकमीके उदय श्रावक गुण पावै (परंतु) साधुपणा उदय न आवै ॥ (संजलना) क्रोध १३। मान १४। माया १५। लोभ १६। उदय आयां उत्कृष्ट १५ दिन रहै ॥ इ स कषाय चौकमीके उदय, यथा ख्यात चारित्र उदय नहिं आवै। केवल ग्यान नहिं पावै ॥ (यह १६) कषाय प्रकृति कही ॥ (अब ९ नोकषाय प्रकृति क०)। हास्य १७। रति १८। अरति १९। भय २०। शोक २१। दुगंछा २२। पुरष वेद २३। स्त्री वेद २४। नपुंसक वेद २५ ॥ इति ९ नोकषाय प्रकृति कही ॥ (तथा मोहनी ३) सम्यक्त मोहनी २६। मिथ्यात्व मो० २७। मिश्र मोहनी २८ ॥ मोहनी कर्मकी २८ प्र कृतिकही ॥ इस २८ प्रकृतिमें। २५ कषाय प्रकृति चारित्र मोहनीकी ॥ शेष ३, दर्शन मोहनीकी जाणनी ॥※॥ अब ६ बोले जीव, दर्शन मोह नी कर्म वन्ध करै (सो कहते है) केवल ग्यानकी निंदा करै १। अरि हंत वचनकी निंदा करै २। सिद्धांत वाचककी निंदा करै ३। जिन धर्म

की निंदा करै ४। गुरू (तथा संघकी निंदा करै ५। कुमार्ग प्रकाशै करै ६ ॥※॥ अब दोबोले चारित्र मोहनी कर्म बन्ध करै ॥ तिव्र कषाय के करनेंसें १। हास्यादिकके करनेंसें २ ॥ इस प्रकारसें जीवके मोहनी कर्म बन्ध होय ॥ (इसकी) ७० कोमाकोमि सागरोपम स्थिति ॥ (यहकर्म) मदिरा पान समान है, (जैसें) मदिरा पान करनेंसें मनुष्यकों भली बुरी बातका विवेक न होय। (तैसें) मोहनी कर्मके उदय सत् असत्का ज्ञान न होय। पर पुद्गलकों माहरो माहरो कहतां। संसारमें भ्रमतारहे (और) महा दुःख देखता रहै ॥※॥ इति मोहनी कर्मका स्वरूप कहा ॥ ४ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अब ५ आयु कर्मका स्वरूप कहते है ॥※॥

॥※॥ (इसकी उत्तर प्रकृति ४)॥ देवायु १। मनुष्यायु २। तिर्यंचायु ३। नरकायु ४ ॥※॥ अब किस प्रकारै जीवके देवायु बन्ध होय ॥ (तद्यथा) ॥※॥ क्रोधादि कषाय अल्प धारन करै १। सदा समकित पालै २। सुद्ध श्रावक धर्म पालै ३। मरनेंका (तथा) गत वस्तुका शोक न करै ४। तीर्थंकरकी भक्ति करै ५। दया, दानकी, निरंतर बुद्धि रहै ६। सुद्ध साधु धर्म पालै ॥ ७। जिन धर्मको अत्यंत रागी ८। बाल तपस्वी ९। महा काया कष्ट करै ॥ १० ॥※॥ यह १० प्रकारे जीव देवगतिका आयु बन्ध करै। देव गतिमें जावे। महा सुख भोगवै ॥ १ ॥※॥ अब ९ प्रकारे जीवके मनुष्यायु बन्ध होय ॥※॥ (तद्यथा) ॥※॥ देव गुरुकी पूजा भक्ति करै १॥ जीवपर दया धारन करै २ ॥ शास्त्र सिद्धांत पढै, पढावै ३ ॥ न्यायसें लक्ष्मी उपार्जण करै ४ ॥ चित्त प्रशन्नतासें अन्न वस्त्रादि दान देता रहै ५ ॥ चामी (तथा) निंदा कोईकी न करै ६ ॥ परका उपगार करै ७ ॥ कोई जीवकों पीडा न उपजावै ८ ॥ आरंभ न करै ॥ (अर्थात्) सरल परिणामसें, अर्थे आरंभ करताभी संकता रहै ९ ॥※॥ यह नवप्रकारे जीव उत्तम मनुष्य भव पावै। मनुष्यका सुख भोगवै। उत्तम धर्म पावै ॥ (इहां) मेघ कुमारजीका दृष्टांत भावन करना ॥※॥ अथ २० प्रकारै, जीव तीर्यंच गतिका आऊ बन्ध करै ॥ (तद्यथा) शील भंग करै १॥ जीवांकों ठगै २। मिथ्यात्व कर्म समाचरै ३। कुकर्मका

उपदेश करै ४ । तोल, माप, लेनेका अधिक, देनेंका उंग करै ५ । कपट वृत्ति धारके लोककों ठगै ६ । असत्य वचन बोलै ७। झूठी शाख भरै ८। सुगंधमें दुर्गंध मिलावे ९। कपूरादिकमें भेल करके वेचे १० । कस्तूरीमें भेल करके वेचे ११। सोना रूपा मध्य भेल करै १२। कलह करै १३। निंदा करै १४। चोरी करै १५। अणजांती बात वनावे १६। घृत तेल मांहि भेल करै १७। नील लेश्या परिणाम धारै १८। कापोत लेश्या परिणाम धारै १९। आर्त्त ध्यान करै २०॥ ※॥ यह २० बोलै तिर्यंचायु वन्ध करै ॥ निगोदादिक तिर्यंच गतिमें जावै । महा दुख भोगवै ॥ ※ ॥ अथ २० प्रकारै जीव नरक गतिका आऊ वन्ध करै ॥ ※ ॥ (तद्यथा) वहुत लोभ करै १। मद मछर वहुत करै २। क्रोध वहुत करै ३ । मिथ्यात्व कर्म आचरै ४ । जीव हिंसा करै ६। असत्य वचन बोलै ७ । चौरी करै ८ । शील भंग करै ९। अति रक्त होके संसार सुख भोगवै १० । मर्म भेद करै ११। पंचेंद्री विषयादिककों सार मानें १२। जिन, संघकी घात करै १३। जिन वचन उत्थापै १४। जिन तीर्थंकरकी पूजा न करै, न करावै १५। मदिरा पान करै १६। मांश भक्षण करै १७। रात्री भोजन करै १८। अभक्ष अनंत काय भक्षण करै १९। रोद्रध्यान, कृष्ण लेश्या धारण करै २०॥ ※ ॥ यह २० बोले जीव मरके नरक गतिमें जावै ॥ छेदन भेदनादि महा दुःख भोगवै ॥ ※ ॥ (इस) आयु कर्मकी उत्कृष्ट ३३ सागरोपम स्थिति॥ (इसका) स्वभाव खोडे समान है (जैसें) खोड़ेमें पुरुषका पांव दिया हुवा निकल सके नही (इसीतरै) अपना वन्ध किया आयु कर्म विन भोगव्यां छूटे नही ॥ (तथा) एति आगछति प्रतिवंधकतां स्वकृत कर्म वन्ध नरकादि कुगति निक्रमितु मनसो जंतो रित्यायु ॥१॥ (अथवा) आसमंता देती गछति भवा भवांतर संक्रांतौ विपाकोदय मित्यायु ॥ (इति समासः) ॥ ※ ॥ इति५ आयु कर्मका स्वरूप कहा ॥५॥

॥ ※ ॥ अब ६ नाम कर्मका स्वरूप लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (इसकी) उत्तर प्रकृति मूल ४२ ॥ भेदांतरै ६७॥ तथा ९३ ॥ विस्तारे १०३॥※॥ अव१०३प्रकृति नाम मात्र लिखते है ॥※॥(गति४,) नरकगति १। तिर्यंचगति २ । मनुष्यगति ३। देवगति ४। (इंद्रिय ५)

एकेंद्री जात ५। बे इंद्री ६। ते इंद्री ७। चौ इंद्री ८। पंचेंद्री ९। (शरीर ५) औदारिक १०। वेक्रिय ११। आहारक १२। तेजस १३। कार्मण १४॥ (अंगोपांग ३) औदारक अंगोपांग १५ वेक्रिय अंगोपांग १६। आहारक अंगोपांग १७। (बंधन १५) औदारिक २ बंधन १८। औदारक तेजस बंधन १९। ऊदारिक कार्मण बंधन २०। औदारक तेजस कार्मण बंधन २१। वेक्रिय वेक्रिय बंधन २२। वेक्रिय तेजस बंधन २३। वेक्रिय कार्मण बंधन २४। वेक्रिय तेजस कार्मण बंधन २५। आहारक २ बंधन २६। आहारक तेजस बंधन २७।आहारक कार्मण बंधन २८। आहारक तेजस कार्मण बंधन २९। तेजस २ बंधन ३०। कार्मण २ बंधन ३१। तेजस कार्मण बंधन ३२॥ (संघातन ५)॥ औदारक ३३। वेक्रिय सं० ३४। आहारक सं० ३५। तेजस सं० ३६। कार्मण संघातन ३७॥ (संघयण ६) वज्र रिषभ नाराच ३८। ऋषभ नाराच ३९। नाराच ४०। अर्द्ध नाराच ४१। कीलका ४२। छेवट्ठो संघयण ४३। (संस्थान६)। सम चौरंस ४४। निग्रोध४५। सादि ४६ वामन ४७। कुब्ज ४८। हुंमक संस्थान ४९॥ (वर्ण ५) कृष्ण ५०। नील ५१। पीत ५२। रक्त ५३। स्वेत ५४। (गंध २) सुरभि गंध ५५। डुरभि गंध ५६॥ (रस ५) तीक्ष्ण ५७। कटुक ५८। कषायलो ५९। खट्टो ६०। मधुररस ६१॥ (फरस ८) भारी ६२। हलको ६३। सुंहालो ६४। खरखरो ६५। शीत ६६। उष्ण ६७। लूखो ६८। सचिकण ६९। (आनुपूर्वी ४) देवा नु० ७०। मनुष्या नु० ७१। तिर्यंचा नु० ७२। नरकानुपूर्वी ७३॥ (त्रसादि १० नामः) त्रसपणो पावै ७४। बादर पणो ७५। पर्यातपणो ७६। प्रत्येक पणो ७७। थिरपणो ७८। शुभपणो ७९। सौभाग्यपणो ८०। आदेयपणो ८१। जसपणो ८२। सुस्वरपणो पावै ८३॥ (थावरादि १० नामः) थावर पणो पावै ८४। सुक्ष्मपणो ८५। अपर्याप्तिपणो ८६। साधारण पणो ८७। अथिर पणो ८८। अशुभ पणो ८९। दौभाग्य पणो ९०। डुस्वर पणो ९१। अनादर पणो ९२। कुजसपणो ९३॥ (तथा) पराघात नामकर्म ९४। उद्योत नाम० ९५। आतप नाम० ९६। ऊसास नाम० ९७ अगुरु लघु नाम० ९८। तीर्थ

कर नाम० एए । निर्माण नाम० १०० ।उपघात नामकर्म १०१ ।शुभ विहायो गति १०२ । असुभ विहायोगति १०३ ॥ ※ ॥ यह नामकर्मकी उत्तर प्रकृति १०३ कही ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ३ प्रकारे जीव उत्तम नामकर्म बन्ध करे (तद्यथा) श्री जिन धर्ममें रक्त होय १ । दयावंत दानवंत होय २ । मुक्तिकी अभिलाखा करे ३ ॥※॥ अथ ८ प्रकारे जीव मध्यम नाम कर्म बन्ध करै (सो लिखते हें) ॥ ※ ॥ मिथ्यात्व उपदेश करै १ । कु धर्म मार्ग ग्रहण करै २ । दान आप नही देवै (तथा) दूसरेकों दान देतां मनाकरै ३ । धर्म स्थानक गिरावे हानि करै ४ । कठोर असत्य वचन बोलै ५ । महा पापारंभ करै ६ । पर निंदा करै ७ । सबजीव पर द्रोह धारन करै ८ ॥ ※ ॥ यह आठ प्रकारै नीच नामकर्म बांधै ॥ ※ ॥ (इस)नामकर्मकी २० कोमाकोमी सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति ॥ संसारमें भमावे ॥ (यहकर्म)चित्रकार समांन है (जैसें) चित्रकार अनेक प्रकारका, अछा, वुरा, चित्रबनावे (तेसें) नामकर्मके उदय, अछा, वुरा, अनेक नाम उपार्जन करै ॥ ※ ॥ (तथा) नामयति गत्यादि पर्यायानुभवनं प्रति प्रवणयति जीव मिति नाम । (इति समासः) इति नामकर्म स्वरूप कहा ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अब ७ गोत्रकर्मका स्वरूप कहते है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गोत्र कर्मकी उत्तर प्रकृति २ ॥ उचै गोत्र १ । नीचै गोत्र २ ॥ ※ ॥ प्रथम १६ प्रकारे जीव उच्च गोत्र बन्ध करै (सोकहते है) समकितवंत १ । विनयवंत २ । शीलवंत ३ । अदत्त अग्राही ४ । यथा शक्ति दान देवै ५ । निरंतर संवेगगुण, सरल परिणाम, धारन करै ६ । तीर्थंकरकी भक्ति करै ७ । आचार्य, उपाध्याय, साधुकी, भक्ती करै ८ । बहुश्रुतकी भक्ति करै ए । जिनागमकी भक्ति करै १० । साधुवोंकी वेयावच्च करै ११ । गुरु साधुका दास होके रहै १२ । अनेकांत जिनधर्म आदरै १३ । उभयटंक प्रतिक्रमण करै १४ । यथाशक्ति पापकर्म दूर करै १५ । साधर्मी वात्सल्य करै १६ ॥ ※ ॥ यह १६ प्रकारे जीव तीर्थंकरादि उच्च गोत्र पावै ॥ ※ ॥ लोकमें मान्यनीक, पुज्यनीक, हुवै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब ५ प्रकारै जीव नीच गोत्र कर्म बन्ध करै सो (कहते है)

तिव्र क्रोधादि कषाय धारके, परगुण न जाणें १ । परकी निंदा करै। अव गुण प्रकासै २ । लोककी चाम्ी चुगली करै ३ । अणसुनीकों सुनीबात कहै । अण देखीकों देखी कहै । झूठी शाख न्नरै ४ ॥ जीव हिंसादि महा पाप कर्म करै ५ ॥※॥ यह ५ प्रकारै जीव। म्लेछ, कसाई, इत्यादिक नीच गोत्र वांधै । लोकमें निंदनीक ऊगंछा योग्य ह्रवै ॥※॥ (इस) गोत्र कर्मकी ३०कोमा कोडि सागरोपम स्थिति ॥ (यह) गोत्र कर्म कुंनकार समान है (जैसें) कुंनकार मट्टीका न्नाजन मोटा छोटा अनेक प्रकारका अपनी बुद्धी माफक वनावै (तैसें) गोत्र कर्म उदय। उच्च, नीच, न्नेदांतर अनेक गोत्र पावै ॥ (तथा) गूयते शब्दते उचा वचैः शब्दैर्य त्तत्गोत्रं ॥ ※॥
इति गोत्र कर्मका स्वरूप कहा ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अब ८ अंतराय कर्मका स्वरूप कहते है ॥※॥

॥※॥ अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति ५ ॥ दानांतराय १ । लान्नांतराय २। न्नोगांतराय ३ । उपन्नोगांतराय ४ । वीर्यांतराय ५ ॥ ※॥

॥※॥ अथ १८ प्रकारे जीव अंतराय कर्म बन्ध करै ॥※॥

॥※॥ करुणा दया रहित ह्रवै १ । दीन दयामणा जीवोंके अंतराय देवै २। असमर्थ जीवोंपर कोप करै ३ । अनेकांति गुरूकों वंदन पूजन निषेध करै ४ । तपस्वीकों नमस्कार न करै (तथा) वंदन, पूजन, निषेध करै ५ । जिन न्नक्ति निषेध करै ६ । जिन सिद्धांत उत्थापै ७ । जिन धर्म धारतां विघन करै ८ । सिद्धांतकी अवहीलना आशातना करै ९ । सुत्रार्थ न्नणतां अंतराय करै १०। दान न देवै, (तथा) औरको देतां निषेध करै ११। अपना धर्मके मार्ग चालतां अंतराय करै १२ । परमार्थ कहतां हासीकरै १३। विपरीत उपदेशकरै १४। असत्यवचन वोलै १५। अदत्त वस्तु ग्रहण करै १६ । कोईजीवके । दान, लान्न, न्नोग, उपन्नोग, वीर्यमें, अंतराय करै १७। कोई जीवका गुण छिपावै। दूषण प्रकास करै१८ ॥※॥ यह१८ प्रकारसें जीव अंतराय कर्म वांधे । संसार दलिद्रताका महा ऊख न्नोगवै ॥ ॥ (इस) अंतराय कर्मकी तीस कोमाकोडि सागरोपम स्थिति (यह) कर्म न्नंमारी समान है (जैसें) राजारै हुकमसें न्नंमारी देवे जब मिलै.

पूजत । सज्ज गुण धार सुदेव नमो । जिन गुण ग्राहक श्रीवर पावत मुक्ति मोहन जयकार नमो ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति आदि जिनस्तुतिः ॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । पंडित मुक्तिकमल मुनिः वड्ड आचार ग्रंथात् संग्रहीता । विरचिता । आचार रत्नाकर दीपका ॥सं०॥

॥※॥ अथ प्रथम गर्भाधान संस्कार विधि लि०॥※॥

॥※॥ (यथा) संजाते पंचमे मासे । गर्भाधाना दनंतरं । गर्भाधान विधि कार्यो । गुरुभिः गृह मेधिभिः ॥※॥ गर्भाधानके अनंतर पांचमें मासे । सुभतिथी, चंद्रवलादि, सुभ मुहूर्त्त देखके । पूर्वोक्त गुण धारक, ग्रहस्थ देशविरति कुलगुरु, स्नान करै । अछा सपेद वस्त्र पहरै । नवकार मंत्रसें पवत्रित करके चोटीके गांठ देवे । केसर चंदनको तिलक करै । सुवर्ण मुद्रिका अंगुलीमें धारन करै । पंच परमेष्ठी मंत्रसें पवत्रित करके, पंचग्रंथी युक्त, । मोली भाग्नको कंकण वनाके, दहिणें हाथमें लेवे ॥ शीलव्रत (तथा) निवी, एकासण आदिक, व्रत धारन करै ॥ इसी तरै अंग पवत्रित (तथा) मंगल कार्य करके । गृहस्थीके घरे आवै (तदा) गर्भणी स्त्री (तथा) उसका पति, नख सिखांत सुध्द जलसें स्नान करै । अछा सुची वस्त्र पहिरै । अपना वर्णानुसार, जिनो पवीत, उत्तरासण धारन किया हुवा पवित्र करै । केसरा दिकका तिलक करै (इसी तरै) अंग सुध्द करके । गुरूके पास आवे ॥ (तव) गुरू, आदिजिन की प्रतिमा (तथा) नव पद पट्टा स्थापन करके । विधि संयुक्त वृहत् स्नात्र पूजा करावै । (पीछे) स्नात्र जल । जूदा भाजन में स्थापन करके । अष्टप्रकारी पूजा करावै । (पूजांते) गुरू, स्नात्र जल लेके । गर्भणी स्त्रीके सिंचन करै (तदनंतर) सर्व जल स्थानकका जल में, सहस्र उषधी चूरण मिलाके, शांतिदेवीके मंत्रसें ७ वेरमंत्रै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ शांतिदेवीका मंत्र लिख्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ नमो निश्चित वचसे । भगवते । पूजा मर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकल महासंपत्ति समन्विताय । त्रैलोक्य पूजिताय । सर्व सुरासुर स्वामी पूजिताय । अजिताय । भुवन जन पाल नोद्यताय । स

र्व दुरितौघ नाशन कराय। सर्वा शिव प्रशमनाय। दुष्टग्रह भूत पिशाच। शाकनीनां प्रमथनाय। तस्येति नाममंत्र स्मरण तुष्टा भगवती। तत्पद भ त्तया विजया देवी। ॐ ह्रीं नमस्ते भगवति विजये। जय२ परे। परापरे। अ जिते। अपराजिते। जयावहे। सर्व संघस्य भद्र कल्याण मंगल प्रददे। साधू नां शिव तुष्टि पुष्टि प्रदे जय२। भव्यानां कृतसिद्धे। सत्वानां निर्वृति निर्वाण जननी। अभय प्रदे। स्वस्ति प्रदे। भक्तानां जंतूनां। शुभ प्रदानाय नि त्योद्यते। सम्यग् दृष्टीनां। धृति रति मति बुद्धि प्रदे। जिन शासन रतानां। शांति प्रणतानां जनानां। श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो वर्द्धनी। शलिला द्रक्ष २। अनिलाद्रक्ष २। विपात् रक्ष२। विषधरे भ्यो रक्ष २। राक्षसे भ्यो रक्ष २। मारिभ्यो रक्ष २। ईतिभ्यो रक्ष २। स्वापदे भ्यो रक्ष २। शिवं कुरु २। शांतिं कुरु २। तुष्टिं कुरु २। पुष्टिं कुरु २। स्वस्तिं कुरु २॥ भगवति गु णवति। जनानां शिव, शांति, तुष्टि, पुष्टि, स्वस्तिं कुरु २। ॐ नमो न मो ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् स्वाहा ॥※॥ (इस मंत्रसें) सर्व स्थानकके जल कों ७ वेर मंत्रके, पुत्रवती सधवास्त्रीके हाथमें देवै। (तव) सधवा स्त्रियां मंगल गीत गावै। गर्भवंतीकों स्नान करावै। केशरादिक सुगंध वस्तुका विलेपन करै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै (पीछे) पतिकेसाथ वस्त्रांचलसें गांठ बांधके, गुरूके सन्मुख आवै। नमोस्तु २ कहके सुभासण पर बैठे। पतिके वाम पासे स्त्री बैठे। स्वस्तिक करै॥ (तव) गुरू ग्रंथि योजन मंत्र पढै ॥※॥ (ग्रंथि योजन मंत्रो यथा) ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ॐ अर्हं स्वस्ति संसार संवंधः। वध्वयोः प्रतिभार्ययोः। युवयोर वियोगोस्तु। भववासांत माशिषा ॥ १ ※॥ यह मंत्र ७ वेर पढै ॥ एक विवाहको वर्जके, सर्व स्थानक (इसीमंत्रसें) स्त्री, भरतारके, वस्त्रमें गांठवांधे (पीछे) गुरू, पद्मासणसें बैठा थका। स्वर्ण, रुप्य, पात्रमें जिन स्नात्र जल (तथा) सर्व स्थानकको जल लेके। कुशाग्रसें, आर्य वेदमंत्रसें मंत्रके। गर्भ वतीप्रतें सिंचन करै ॥※॥— (आर्य वेद मंत्रो यथा) ॥※॥

॥※॥ ॐ अर्हं जीवोसि। जीव तत्व मसि। प्राणयसि। जन्यसि। जन्मवानसी। संसारादी संसरन्नसी। कर्म्मवानसी। कर्म्म वद्धोसी। भव भ्रां तोसी। भव विभ्रमिपुरसी। पूर्ण पिंडोसी। जातोपांगोसी। जायमानो

मोहनलाल मुनिः। आचार ग्रंथा त्संग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । द्वितीय पुंसवन संस्कार उदयः ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय जन्मसंस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ जन्म कालके संपूर्ण मास दिनके विषै । सूतिका घरके नजीक घरमें (जहां) स्त्री, बाल, पशु, प्रचार रहित । एकांत स्थानमें । पंच पर मेंष्टी जाप संयुक्त रहै ॥ घडीकों देखता रहै । (जिस वखत) बालकका जन्म होय (जब) गुरू, जोतषी, लग्न ग्रहा दिकका प्रमाण सुद्धतासे माता पिता दिकके सन्मुष प्रकट करै । (तब) माता पिता दिक नाल छे दनसें पहले । गुरू, जोतषीकों, यथाशक्ती वस्त्र आभूषणादिक दान देवै (पीछे) नाल छेदन करै (जब गुरू) बालकके माता पितादिक कुल वालांकों (इस माफक) आशीर्वाद देवै (सो लिखैहै) ॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । कुलंवो वर्द्धतां संतु । शतशः पुत्र प्रपोत्राः । अक्षीण मस्त्वायु र्द्धन यशः सुःखंच । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ (इति वेदाशी ॥ ※ ॥ (तथा वृत्तं) आदित्यो, रजनी पति, क्षितिसुतः, सौम्य, स्तथा वाक्पतिः । शुक्रः, सूर्य सुतो, विधुं, तुद इव, श्रेष्टाः ग्रहाः पातुवः । अश्विन्यादिक मंम्लं तद परो मेषादि राशि क्रमः । कल्याणं पृथुकस्य वृद्धि मधिकी संतान मप्यस्यचः ॥ १ ※ ॥ (पुनः) यो मेरु श्रृंगे त्रिदशादि नाथै । दैत्यादि नाथै स्म परिछिदेश्च । कुंभा मृतै स्तं स्नपित स्सदैव । आद्यो विदध्यात् कुल वर्द्धनंच ॥ १ ॥ ※ ॥ ऐसा आशीर्वाद देवै ॥ (पीछे) गुरू अपनें घरे जाके । सूतिका कर्म करणें वाली कुल वृद्ध स्त्रीयां कूं । वालकके स्नान कराणेंके अर्थ जलमंत्र के देवै ॥ ※ ॥ (जलमंत्रो यथा)॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । नमो र्हत्सिद्धा चार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ (वृत्तं) ॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले । यै मैरुश्रृंगे स्नपितो जिनेंद्रः । स्नानोदकं तस्य भवन्विदंच । शिशो र्म्महा मंगल पुन्य वृद्धचै ॥ १ ॥ ※ ॥ इस मंत्रसें ७ वेर जलमंत्रै । इस जलकों लेजाके कुल वृद्धा स्नान करावै । अपनें कुलाचार रीति नालछेदन करै (पीछे) गुरू अपनैं स्थानक रहा थका । चंदन, रक्त चंदन, बिल्व काष्ठादिक, जलाके भस्मी करै ॥ (उस) भ

स्मीमें स्वेत सरसुं, लवण, मिलाके पोटली करै (और) लोह खं म, रक्तचंदन खंम, वरुण मूल खंम, कोमी, सहित । कृष्ण सूत्रसें गलैमें बांधनें लायक मोरा करके । रक्षा मंत्रसें मंत्रै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ रक्षाभिमंत्रण मंत्रः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्री अंबे । जगदंबे । शुभे । शुभं करे । अमुं बालं । भूतेभ्यो रक्ष २ । ग्रहेभ्यो रक्ष २ । पिशाचेभ्योरक्ष २ । वैतालेभ्योरक्ष२। शाकनीभ्योरक्ष २। गगन देवीभ्योरक्ष २। दृष्टि दोषेभ्योरक्ष २। जयंकुरु२ तुष्टिंकुरु २। पुष्टिंकुरु २। कुल वृद्धिंकुरु २। श्री ह्रीं ॐ भगवती श्री अं विके नमः ॥ ※॥ (इस मंत्रसें) ७ वेर पूर्वोक्त राखमी मंत्रके कुलवृद्धा स धवाके हाथमें देवै । कुलवृद्धा ले जाके वालकके गलैमें बांधे ॥ (कदा चित्) अश्लेषा, जेष्टा, मघा, मूल, गंमांत, भद्राके विषे । वालकका जन्म होय (तो) वालकका पिताकों (तथा) कुल वालांकों शोक, संताप, दालीद्र कारक होय (इस वास्ते) पिता (तथा) कुल में वमेरा होय (सो) वालकका नाम निकाले (जहांतक) मुख नहिं दे खै (और) शांतिकर्म पूजा पाठ करावे ॥ विस्तारके भयसें नक्षत्रादिक शां ति प्रक्रम विधि इहां नलिखी है ॥ सो आचार दिनकरसें (तथा) गुरूके मुखसे जाण लैनी ॥※॥ इत्यु पाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । पं । मुक्ति कमल मुनिः । आचार ग्रंथा त्संग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । तृतीय जन्म संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ३ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ४ सूर्य चंद्र दर्शन संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें तीसरे दिवस, कुलगुरू, सूतिकाघरके नजीक घरके विषे (प्रथम) जिन प्रतिमा स्थापन पूजन करके। जिन प्रतिमा सन्मुख स्वर्ण ताम्र मई (वा) रक्तचंदन मयी सूर्यकी प्रतिमास्थापन करै । (पीछे) अष्ट द्रव्यसें पूजन करै ॥ ※ ॥ (पूजन मंत्रोयथा) ॥ ※ ॥ ॐ घृणि २ नमः ॥ श्री सूर्याय सहस्रकिरणाय । रत्ना देवी कांताय । वेदगर्भाय । यम यमुना जनकाय । जगत्कर्म्म साक्षिणे । पुण्य कर्म प्रभावकाय । पूर्वदिगधी शाय । स्फटिकोज्वलाय । रक्तवस्राय । कमल हस्ताय । सप्ताश्व रथ वा

हनाय । श्री सूर्यः सायुधः । सवाहनः । स परिछदः । इह जन्म महोछवे आगछ २ । इदमर्घ्यं, पाद्यं, बलिं, चरुं, आचमनीयं गृहाण २ । सन्निहितो भव २ । स्वाहा ॥ जलंगृहाण २ । गंधं० । पुष्पं० । अक्षतान्० । फलानि० । मुद्रां० । धूपं० । दीपं० । नैवेद्यं० । सर्वोपचारान्० । शांतिंकुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । ऋद्धिं० । वृद्धिं० । सर्व समीहितं देहि२ स्वाहा ॥ ॥ इसी तरे सूर्यकी पूजा करके । माता पिता, पुत्रकों हाथमें लेके । सूर्यका दर्शन करावै (तव) गुरू सूर्य मंत्र पढै ॥ ॥ (सूर्यमंत्रोयथा) ॥ ॥ ॐ अर्हँ सूर्योसि । दिनकरोसि । सहस्र किरणोसि । विभाव सुरसि । तमोपहोसि । प्रियं करोसि । शिवं करोसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोसि । मुनिवेष्टितोसि । वितत विमानोसि । तेजमयोसि । अरुण सारथी रसि । मार्त्तंडोसि । द्वाद शात्मासि । चक्र वांधवोसि । नमस्ते भगवन् । प्रसीदास्य कुलस्य । तुष्टिं, पुष्टिं, प्रमोदं कुरु २ । शांति हितोभव । अर्हँ ॐ ॥ ॥ इस मंत्रकों पढके । वालककों सूर्यका दर्शन करावै (पीछे) माता पुत्र गुरूकों नमस्कार करै (तव) गुरू, सपुत्र माताकों आशीर्वाद देवै ॥ (आशीर्वाद श्लोकः) सर्व सुरासुर वंद्यः । कारयिता सर्व धर्म्म कार्याणां । भूयात्रि जगच्चक्षुः । मंगलस्तसपुत्रदः ॥ १ ॥ ॥ (इहां) सूतकमेंगुरूदक्षिणा नलेवै । (पीछे) गुरू जिनप्रतिमा स्थापन (तथा) सूर्य प्रतिमा स्थापन विसर्जन करै ॥ सूतकसेती माता पिताकों प्रतिमा छूणे देवैं नही ॥ (इति सूर्यपूजाधिकारः) ॥ ॥ (पीछे) उसीदिन संध्यासमें । जिनप्रतिमा स्थापन, देववंदन कर के । प्रतिमासन्मुख, स्फटिक, रुप्य (वा) चंदनमयी चंद्रमूर्त्तिस्थापन करै । (पीछे) अष्टद्रव्यसें चंद्र पूजाकरै ॥ ॥ (चंद्र मंत्रोयथा) ॥ ॥ ॐ नमो चंद्राय । शंभुशेखराय । षोडस कला परिपूर्णाय । ताः रागण धीशाय । श्वेत दशवाजि वाहनाय । सुधाकुंभ हस्ताय । श्रीचंद्रः सायुधः । सवाहनः । स परिछदः । इह जन्म महोछवे आगछ २ । इदं अर्घ्यं, पाद्यं, बलिं, चरुं, आचमनीयं, गृहाण २ । सन्निहितोभव २ स्वाहा ॥ जलं गृहाण २ ॥ सर्व पूर्ववत् ॥ ॥ इसमंत्रसेती अष्टद्रव्यसें पूजा गुरू करावै ॥ (पीछे) चंद्रोदय हुवां । मातापुत्रकों चंद्रमाका दर्शन करावै । ॥ (तब) गुरू चंद्र मंत्र पढै (चंद्रमंत्रोयथा) ॥ ॐ अर्हँ । चंद्रोसि । निशाकरोसि ।

सुधाकरोसि । चंद्रमाअसि । गृहपति रसि । नक्षत्रपति रसि । कौमुदी प ति रसि । निशापति रसि । मदना मित्र रसि । जगजीवन मसि । जैवात्रिको सि । क्षीरसागरोद्भवोसि । स्वेतवाहनोसि । राजासि । राज राजोसि । औ षधी गर्भोसि । वंद्योसि । पूज्योसि । नमस्ते भगवन् । अस्य कुलस्य ऋ द्धिं कुरु २ । वृद्धिं कुरु २ । तुष्टिं० । पुष्टिं० । जयं० । विजयं० । कुरु २ भद्रंकुरु २ । वृद्धिंकुरु २ । प्रमोदं० । श्री शशांकायनमः । अर्हं ॐ ॥※॥ (इस) मंत्रकों पढके । स पुत्र माताकों चंद्रदर्शन करावै । (पीछे) माता पुत्र, कुलगुरुकों, नमोस्तु २ कहके । नमस्कारकरै ॥ (तव) गुरू आशीर्वाददेवें ॥ (आशीर्वादवृत्तं) ॥ सर्वौषधी मिश्र मरीचि जालं । सर्वा पदां संहरण प्रवीणः । करोतु वृद्धिं सकलेपि वंसे । युष्माक मिंदु सततं प्रसन्नः ॥ १ ॥ ※ ॥ (पीछे) गुरू, जिन प्रतिमा, चंद्र प्रतिमा, विसर्जन करै ॥ (इतना विशेष है) जो कृष्णपक्षकी १४ (तथा) अमावस हो य (तथा) वद्दल होय । चंद्रोदय ऊसरावकों मालूम न होय (तो) पूज न तो तीसरे दिवस संध्याकों हीज करावै (और) चंद्र दर्शन, दूसरै दिन चं द्रोदय होय जब करावै ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ इत्यु पाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानगणिः । तत्सिष्य । पं । मोहनलाल मुनिः । आचार ग्रंथा त्संग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । चतुर्थ सूर्येंदु संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ क्षीराशन पंचम संस्कार विधिः लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें तीसरै दिवस । चंद्र सूर्यका दर्शन कराके (पीछे) वा लककों स्तन पान संस्कार विधि करावै (पूर्वोक्त) गुण वेष धारी कुल गुरू गंगादिक सुद्ध जलकूं १०८ वेर मंत्रके । वालककी माता का स्तन धोवावे (अमृत मंत्रो यथा) ॥ ॐ अमृते । अमृ तो द्भवे । अमृत वर्षणी । अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥※॥ (इस) मंत्रसें १०८ वेर जलमंत्रकै स्तन धोवावै (पीछे) माता । अपनो जीमणो (वा) डावो, जो स्वर वहतो होय । सो स्तन वाल ककों पहले पिलावे । वालक दूध पीते । गुरू, इसमाफक आशीर्वाद देवै (यथा जैन वेद मंत्रः) ॥ ॐ अर्हं जीवोसि । आत्मासि । गुरवोसि । शब्दो

सि । रसज्ञोसि । गंधज्ञोसि । स्पर्शज्ञोसि । सदाहारोसि । कृता हारोसि अन्यस्ताहारोसि । कावलिका हारोसि । लोमा हारोसि । औदारक शरीरोसि अनेनाहारेण नवांगं वर्द्धतां । बलं वर्द्धतां । तेजो वर्द्धतां । पाटवंवर्द्धतां । सौ ख्यं वर्द्धतां । पूर्णायु भव । अर्हं ॥ ❊ ॥ इस मंत्रसें ३ वेर आशीर्वाद देवै ॥ ❊ ॥ इत्यु पाध्याय श्री० (पंचम) क्षीरासन संस्कारोदयः संपूर्ण ॥❊॥

॥ ❊ ॥ अथ षष्ठी संस्कार विधिः लि० ॥ ❊ ॥

॥ ❊ ॥ जन्मसें छठे दिवस संध्याके समय (पूर्वोक्त) गुण वेष धारी गुरू। प्रसूतिका घरमें आके। षष्ठी पूजन विधि प्रारंभ करावै । षष्ठी पूजनमें सूत क न गिणें ॥❊॥ (यदुक्तं) ॥❊॥ स्वकुले तीर्थ मध्येच । तथा वश्ये वला दपि । षष्टी पूजन कालेच ।गणये नैव सूतकं ॥ १ ॥ (इति वचनात्)॥ (प्रथम) सधवा स्त्रीके हाथसें । सूतिका घरमें । गोबर मिट्टीका चौका दिरावै । सपेद खडी मिट्टीसें पोतावै । अंगणमें चोखूणो मंडल करै । सपेद पोती भई भीतके ऊपर। केसर, चंदन, हिंगलू, आदि सुगंधी द्रव्यसें । सूती वैठी, ऊभी, तीन प्रकारे। अष्ट माताका स्वरूप आलेखन करै॥ (पीछै) सधव स्त्रीयां सें मंगल गीत गवायके। जूदे ३ मंत्रसें ८ देवीकी। अष्ट द्रव्यसें पूजा करावै

॥ ❊ ॥ ॐह्रीं नमो भगवती ब्रह्माणी । वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करै हंस वाहने । श्वेत वर्णे । इह षष्टी पूजने आगच्छ २ स्वाहाः ॥ १ ॥ इस मंत्रकों ३ वेर पढके। पुष्पोसें आव्हान करै ॥ (फेर) इसी मंत्रकों ३ वेर आगच्छ २ के स्थानक (सन्नहितोभव २) कहके। फूलोंसें सन्निधी करण करै ॥ इति सन्निधी करण मंत्रः ॥ ❊ ॥ (तथा) इसी मंत्रकूं ३ वेर, आ गच्छ २ के स्थानक (षष्ठी पूजने तिष्ट २) स्वाहा ॥ इतिदेवी स्थापन मंत्रः (पीछै) इसी मंत्रकों । एकेक वेर पढके। जलचंदनादि एकेक द्रव्य चढावै। जि सका नाम उच्चारण करै (यथा) गंधं गृन्ह २ । पुष्पं गृन्ह २ । धूपं गृन्ह २ । दीपं गृन्ह २ । अक्षतान् गृन्ह २ । नैवेद्यं गृन्ह २ । फलं गृन्ह २ । जलं गृन्ह २ ॥ (इसीतरै) आठुं माताकी पूजन विधि करावै ॥ ❊ ॥

॥ ❊ ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती माहेश्वरी । त्रिशूल, पिनाक, कपाल, खट वांग करे । चंद्रार्द्ध ललाटे । गजचर्म्मावृते । शैशाहि वहे । कांची कलापे ।

त्रिनयने । वृषनवाहने । स्वेतवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ (वा) संन्नि हिता नव २ ॥ तिष्ट २ ॥ गंधं गृन्ह २ (इत्यादि पूर्ववत्) ॥※॥ २ ॥※॥

। (तथा) । ॐ ह्रीं नमो नगवती कौमारी । षएमुखि, शूल, शक्तिधरे । वरदा । अन्नयंकरे । मयूरवाहने । गौरवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ । (शेषंपूर्ववत्) ३ ※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमो नगवती वैश्नवी । शंख, चक्र, गदा, सारंग, खड्ग करे । गरुम्वाहने । कृष्णवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ (शेषंपूर्ववत्) ॥ ४ ॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमो नगवती वाराही । वाराहमुही । चक्र खड्ग, हस्ते । मेषवाहने । श्यांमवर्णे । इहषष्टीपूजने आगच्छ २ ॥ (शेषं पूर्ववत्) ॥ ५ ॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमो नगवती इंद्राणी । सहस्र नेत्राय । वज्रहस्ते । सर्वा नरण नूषिते । गजवाहने । सुरांगना कोटि वेष्टिते । कांचनवर्णे । इह ष ष्टी पूजने आगच्छ २ । (शेषंपूर्ववत्) ६ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमो नगवती चामुंमे । शिरा, जाल, कराल शरीरे । प्रक टित दशने । ज्वाला कुंतले । रक्तत्रिनेत्रे । शूल कपाल खड्गे । प्रेत केश कारे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ ॥ (शेषंपूर्ववत्) ७॥

॥※॥ ॐ ह्रीं नमो नगवती त्रिपुरे । पद्मपुस्तके । वरदान्नयकरे । सिंह वाहने । स्वेतवर्णे । इह षष्टीपूजने आगच्छ २ । (शेषंपूर्ववत्) ८ ॥ ※ ॥

(इसी तरेंसें) सूती, वैठी, ऊन्नी, तीनुं प्रकार ८ देवी स्थापनकी पूजा करावै (पीछे श्लोक पढै) व्रह्माद्या मातरोप्यष्टौ । स्वस्वास्त्र वल वाहना षष्टी संपूजना त्पूर्वं । कल्याणं ददतांशिशोः ॥ १ ॥ (तदनंतर) मातृ स्थाप न अग्र नूमीमें । केसर चंदनादिक सुगंधी द्रव्यसें । षष्टी माताकों स्थापन करै ॥ (तिस षष्टीकी) दधि, चंदन, अक्षत, दोव करके पूजा करावै । (पीछे) गुरू पुष्प हाथमें लेके । षष्टी मंत्र पढै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ ह्रीं षष्टि आम्र वनासीने । कदंव वन विहारे । पुत्रद्वय युते । नरवाहने । श्यामांगी । इहआगच्छ २ स्वाहा ॥※॥ इसी मंत्रसें अष्ट माता के पूजन विधि तुल्य । अष्टद्रव्यसें पूजा करवावै ॥ (पीछे) गुरू अपनें स्थानक जावै (और) माता सहित सधव स्त्रीयां मंगलगीत गावै । षष्टी रा त्री जागर्ण करै ॥ (जव) सवेराहोय (तव) गुरू आके अष्ट देवी (तथा)

लमें बमेरा होय। उसके हाथमें सांपे ॥ (तव) यथाशक्ती गुरू जो तषीकों, वस्त्र सुवर्णादि दान देवै (पीछे) गुरु। जन्म नक्षत्रानुसारैं। सर्वके सन्मुख। नाम प्रकाश करके। अपनें स्थानक जावै (जोतषी गुरु, इतनी विधि कीयां पीछे। (कुलगुरू) माता, पिता दिक, सर्व कुल वालोंकों सन्मुष वैठावे। दोव हाथमें लेके। पंच पर मेष्टी मंत्र गुण के। जाति गुणोचित नाम प्रकाश करै। (पीछे) गुरू, पालखी आदि स वारीमें (वा) पैदल, वालककों लेके। पुरुष स्त्रीयां सर्व परिवार सहित। वा जित्र वाजते। गीत गान करते। भगवानके मंदर जावै॥ विधि संयुक्त २४ महाराजकी पूजा करै। (और) स्वर्ण, रुप्य, मुद्रा, फल, वस्त्रादिक, सर्व चौवी स २ चढावै। ऋषभमंमल पूजा, विधि (रत्नसागरके) प्रथम भागमें लिखी है। उहांसें जानलेना। पूजा, आरती, कीयां पीछे। कुल वृध्दा स्त्री, भगवानके सन्मुख वालकका नाम प्रकाश करै (कदाचित्) मंदर कोई स्थानक न होय (तव) घर देरासरके सन्मुख सव विधि करावै। फिर इसी रीतिसें पोषध शाला आवै (उहां) भोजन मंमली स्थानके। मंमली पट्ट स्थाप न करके पूजा करै॥ मंमली पट्ट पूजा विधि कहेहै॥ लमके की माता (श्री गौतमायनमः) ऐसा मंत्र उच्चारण करती थकी। गंध। अक्षत। पुष्प। धूप। दीप। नैवेद्य। फल। जलसें। मंमली पट्टकी पूजाकरै॥ मंमली पट्ट ऊ पर। स्वर्ण मुद्रा १०। रुप्यमुद्रा १०। नालिकेर १०। इत्यादिक स्थापन करके नमस्कार करै॥ (पीछे) पुत्रसहित स्त्री प्रदक्षिणा देके। यती गुरू प्रतें नमस्कार करै। नव स्वर्ण मुद्रा, करके। नवांग पूजा करै॥ क्षमा श्र मण पूर्वक दोनुं हाथ जोमके कहै॥ भगवन् वासक्षेपंकरेह ॥ (तव) गुरू। काम धेनुं मुद्रा करके। ॐकार, ह्रींकार, पूर्वक। वर्द्धमान विद्यासें। वासचूर्ण मंत्रके। माता पुत्रके मस्तक ऊपर माले (और) माता पुत्रके मस्तक ऊपर, ॐ ह्रींश्रीं, यह अक्षर सन्निवेष करै॥ वालकके चंदन अक्षत को तिलक करै (पीछे) जो धर्म शालामें साधुका जोग होय (तो) इसी तरै। सर्व साधु मुनिराजके पास जावै। प्रदक्षिणा देके नमस्कार करै। खप मुजव सुध्द अन्न, वस्त्र, पात्रादि, दान देवै॥ (और) गृहस्थी कुल गुरूकों, यथाशक्ती अलंकार वस्त्रादि दान देवै॥ (पीछे) उसीतरे वा

जित्रादि महोत्त्वसहित अपने घर जावै । उचित व्यवहार कार्यमें प्रवर्त्तै ॥
॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्री० अष्टम नामसंस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (९) अन्न प्राशन संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें छैमास पुत्रकों, पांचमें मास कन्याकों । सुन्न मङ्गुर्त्त चंद्रवलादि देखके अन्नप्राशन विधि करावै ॥ पूर्वोक्त गुण वेषधारी जैन पंम्ति, गृहस्थके घरे आके । सर्व देशका आया ज्ञवा धान्य (तथा) फल (तथा) घृत तेलादिक विगय (इत्यादि) जो चीज मिलती होय (सो) इकठी करावै ॥ पूजाकी सामग्री सव तैयार करावै (पीछे) वालकका पिता, वम्मेरादिक, स्नान करके अंग सुचीन्नूत करै । अछा वस्त्र पहरै (पीछे) गुरू, मोटा मंदिर होय (तवतो) मोटा मंदरमें (नहीं तो) घरदेरासरमें । विधि संयुक्त । वृहत्स्नात्र महोत्त्व करावै (क्रमसें) जूदे जूदे पात्रमें, नैवेद्य, फलादि संपूर्ण नक्ष चीज चढावै (तदनंतर) स्नात्रजल, गुरू लेके । वालकके अंगोपांगपर सिंचन करै ॥ (पीछे) श्री गौतमस्वामीकी । अष्ट द्रव्यसें पूजा करावै (तथा) अष्टद्रव्यसें । क्षेत्र देवता, कुलदेवताकी पूजा करवावै (पीछे) सधव स्त्रियां मंगलगीत गाती थकी (कुलवृद्धा) वालकके मुखमें अन्न कवल देवै (जव) गुरू वेद मंत्र पढै ॥ ※ ॥

(वेद मंत्रो यथा) ॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । नगवान्हन् त्रिलोक नाथ । त्रिलोक पूजितः । सुधारित शरीरोपि । कावलिका हार माहारित वान् । तपस्यन्नपि पारणा विधा विक्षुरस परमान्न नोजनात्परमानंदा दाप केवलं तद्देहिन्नो दारिक शरीरमाप्तः त्वमप्या हारय । आहारंतते दीर्घमायु रारोग्य मस्तु । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ इस मंत्रको ३ वेर पढै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (पीछे) साधुका योग होय (तो) शुद्ध आहार वहिरावै ॥ जैन पंडिताचार्यादि यती गुरूकों । परमान्नसें नराज्ञवा । सुवर्ण, रूप्य, पात्र दान देवै ॥ (और) गृही गुरूकों । सर्व धान्य, घृत, तेल, गुड, लवणादि (तथा) कांश्यथाल, वस्त्र युग्म, दान देवै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इत्यु पाध्याय श्री० अन्न प्राशन संस्कारो दयः संपूर्णम् ॥ ९ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१०) कर्ण वेध संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें तीसरै, पांचमें, सातमें, वर्ष शुभ महूर्त्त देखके। कर्ण बेध संस्कार विधि प्रारंभ करै ॥ प्रथम कुल गुरू अंग सुचीकर अच्छा वस्त्र पहरके गृहस्थके घर आवै। पूजा सामग्री सर्व तैयार करावै (पीछे) माता पुत्रकों मंगल गीत गान पूर्वक सधवास्त्रीके हाथसें स्नान करवावे। अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै। विधि पूर्वक भगवानकी स्नात्र पूजा करावै। अष्टद्रव्य चढावै (पीछे) अपना कुलाचार मुजब कर्णवेध प्रारंभ करै ॥ बालककों सुखासन ऊपर। पूर्व दिशातरफ मुख करके वेठावे ॥ कर्णवेध करती वखत गुरू इसमाफक वेद मंत्र पढै ॥ ※ ॥ (वेदमंत्रो यथा) ॥ ※ ॥

॥ ॐ अर्हं। श्रुते। अंगै। उपांगै। कालिक। उत्कालिक। पूर्वगते चूलिकाभिः सुत्रैः। पूर्वानुयोगैः। छंदोभि लंक्षणै निरुक्तै। धर्म्मशास्त्रै र्विद्ध कर्णौ भूयात्। अर्हं ॐ ॥ (सुद्रादेस्तु) ॐ अर्हं। तवश्रुति दयाय हृदयं धर्म्माविद्धमस्तु ॥ (इत्येवं वाच्यं) ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढै (पीछे) मातापुत्र स्त्रीयांके साथमें धर्मशाला आवै। पूर्वोक्त विधि मुजब मंडली पट्टपूजा करै। गुरूकों नमस्कार करै (तब) गुरू, मातापुत्रके मस्तकपर वासक्षेप करै। (पीछे) अपनें घर आके। सुद्ध साधु मुनिराज होय (तो) निर्दोष आहार वस्त्र पात्रदान देवै (और) गृही गुरूके गलेमें, कणवीर पुष्पोंकी माला पहराके। वस्त्र, स्वर्ण, दान देवै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्री० दशमा कर्णवेध संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ १० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (११) चूडाकर्म संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभतिथी चंद्रबलादि शुभ महूर्त्त देखके। अपना कुलाचार मुजब। ग्राम, वन, पर्वत (तथा) घरके विषै। प्रथम गुरू अंगसुद्धी कर अच्छा वस्त्र पहरके आवै (पीछे) माता पिता दिक स्नान करके अंग सुचीभूत करै। पुत्रका अंग सुचीभूत करै। षष्टी संस्कारमें कहे मुजब, षष्टीपूजा वर्जके (और) अष्ट मातृपूजन (तथा) पोष्टिक विधि करै। (पीछे) विधि संयुक्त भगवानकी बृहत्स्नात्र पूजा करावै। अष्टद्रव्य चढावै (पीछे) कुल गुरू जिनस्नात्रोदककों। पूर्वोक्त गर्भाधान संस्कारमें कहा हुवा। शांतिदे

वीके मंत्रसें मंत्रके । वालकके अंगोपांग पर सिंचन करै ॥ (तिस पीछे) कुल क्रमागत नापितके पासे मुंमन करावै ॥ ब्राह्मणादि तीन वर्णके, शिरके मध्य भागे चोटी रखावै (और) सुद्रके सारो मस्तक मुंमन करावै । (उस वखतमें) कुलगुरू वेदमंत्र पढे ॥ ※ ॥ (वेद मंत्रो यथा)॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । ध्रुवमायु । ध्रुवमारोग्यं । ध्रुवाश्रियो । ध्रुवं कुलं । ध्रुवं यशो । ध्रुवं तेजो । ध्रुवंकर्म्म । ध्रुवाच गुण संततिं रस्तु । अर्हं ॐ ॥

॥ ※ ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढै । (पीछे) गीतगानसहित वालकके मस्तकपर, कुलगुरू, तीर्थोदकसिंचन करे । पंचपरमेष्टी मंत्र पढके । आसनसें उठाके । वालककों स्नान करावै। चंदनादिकका विलेपन करावै । अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै । (पीछे) पूर्वोक्त रीति गीतगान गाते धर्मशाला आके, आचार्य उपाध्यायादि गुरूकों नमस्कार करै । पूर्वोक्त विधिसें मंमली पदपूजा करै । (पीछे) पुत्रके मस्तकपर वासक्षेप कराके । अपनें घरे आवै ॥ साधुकों वस्त्र पात्र आहारादिक देवै । पंमित गुरुकों वस्त्र आभूषण दान देवै ॥※॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥इत्युपाध्याय श्री० इग्यारमा चूमाकर्म संस्कारोदयः संपूर्ण ॥११॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (१२) उपनयन संस्कार विधि लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उपनीयते वर्णक्रमा रोहयुक्तया प्राणी पुष्टिंनीयते (इत्युपनयनं) उपनयन (नाम) मनुष्यांको वर्ण क्रमारोह युक्तियें करके पुष्टीकों प्राप्त करे तिसकों उपनयन संस्कार कहियै (अर्थात्) स्व, स्व, गुरु उपदिष्ट वेष मुद्राकों धारके, धर्ममार्गमें प्रवेश करे । क्युंकि वेषहै (सो) धर्मकी रक्षा करनेंको (तथा) अकृत्यकार्य आचरतां लज्जा उत्पन्न होनेंको (मूल) कारणीभूत है ॥ यदुक्तं आगमे) ॥ ※ ।. धम्मायरें चरीए । वेशो सव्वत्थ कारणं । संजम लज्जाहेऊ । सङ्घाणं तहय साहूणं ॥ ※ ॥ तथाच श्रीधर्मदास गणि विरचिते उपदेश मालाया मप्युक्तं ॥ ※ ॥ धम्मं रक्खइ वेशो संकइ वेशेण दिक्खिओमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइरायो जिणवंवव ॥ १ ॥ ※ ॥ (इसवास्ते) इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, प्राच्य, उदीच्यादिवंशी ब्राह्मण वर्णवाले (जिनोपवीत) जिनकी ग्रहस्थ मुद्रा धारण करै (तथा)

इक्ष्वागुवंश, हरिवंश, सूर्यवंश, चंद्रवंश, क्षत्रिय वंशा, दिकमें उत्पन्न हुवा जिन, चक्री, बलदेव, वासुदेव, श्रेयांस, दशार्ण भद्रादि, क्षत्रिय वर्ण वाले, गृहस्थ पणामें जिनोपवीत धारन करे ॥ जिन, चक्री, बलदेव, वासुदेव, अवश्य पूर्वोक्त क्षत्रिय वंशोंमें उत्पन्न होतेहै। (परंतु) अंत, प्रांत, तुच्छ, दलिद्र, भिक्षाचर कुलांमें, उत्पन्न न हुवा। न हुवै। न हुसी॥ॐ॥ (यदुक्तमागमे) ॥ देवाणुप्रिया। नएयं भूयं। नएयं भव्वं। नएयं भविस्सइ। (जन्हं) अरिहंतावा। चक्क वट्टीवा। बल देवावा। वासु देवावा। अंत कुलेसुवा। पंतकु०। तुच्छकु०। दरिद्द कुले०। भिक्खायरकु०। नाई सुवा। नाइंतिवा। नाइस्संतिवा। एवं खलु अरिहंतावा। चक्कवट्टीवा बलदेवावा, वासुदेवावा, उग्ग कुलेसुवा, भोग, राइन्न, नाय, खत्तिय, इक्खागु, हरिवंश कुलेसुवा। अन्नयरे सुवा। तहप्पगारेसु विसुद्धजाइ कुलवंशेसुवा। आयंसुवा। आयंतिवा। आयस्संतिवा। (इत्यादि) सुत्र पाठसें। अवश्य जिन, चक्री, आदिक क्षत्रिय वंशमें होय (तथा) कामदेव, कार्त्तिक, सुदर्शन सेठ आदि, वैश्यवर्णवाले। जिनो पवीत धारन करै (तथा) आनंद, सद्दाल पुत्रादिक, सुद्रवर्णवाले। जिनोपवीतके स्थानक. उत्तरासंग धारनकरै॥ यह जिनोपवीतहै (सो) जिनकी गृहस्थ मुद्राहै (इसवास्ते) जैन गृहस्थांकों जिनोपवीत धारन करना अवश्य चाहियै॥ (और) (जो) बाह्य, अभ्यंतर, ग्रंथीरहित। द्रव्ये, भावे, सुद्ध साधूपणा धारनकरना (सो) भगवानकी साधु मुद्राहै॥ (जिसनें) साधु मुद्रा धारनकरी है (उसकों) जिनो पवीत धारन करना उचित नहिं (क्युंकि) ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रत्नत्रयकों (तथा) नव ब्रह्मचर्य गुप्तिकों। सर्वे सुद्धपणें धारन किया है। (और) अहो निशि तद्भावना भावित तन्मई जिनोंका चित्त होरहाहै (इससेती) संसार कर्म सर्व त्यक्त करके (जो) सर्वे गुण धारन कियाहै (सो) समुद्रके, सूर्यके, तुल्यहै॥ (जैसें) समुद्रके जल पात्र रखनेका प्रयोजन नहिं (और) सूर्यके दीपक रखनेंका प्रयोजन नहिं। (इसीतरे) साधुवोंकों जिनो पवीत धारन करनेंका प्रयोजन नहिं (यदुक्तं) अग्नि देवोस्ति विप्राणां। हृदेः देवास्ति योगिनां। प्रतिमा स्वल्प बुद्धीनां। सर्वत्र विदितात्मनां ॥ १ ॥ (इससेती) जो देशविरति श्रा

वक तीन रत्न, नव ब्रह्मगुप्तिकों। लेशमात्र सुणनें, धारनें, सेती। सूत्र मुद्रा रूप (जिनोपवीत) बाह्य हृदयमें धारन करै॥ (प्रतिमा स्वल्प बुद्धीनां) इति वचनात्॥ ※॥ ॥ ॥ ※॥ ॥※॥ ॥ ※॥

॥ ※॥ अब जिनो पवीत वनानेंका (तथा) धारन करनेंका परमार्थ कहते हैं॥ ※॥

॥ ※॥ अपनी हथेली ऊपर। सुत्रका ८४ आंटा दैनेंसें। जितना लंवा सुत्रहोय तिसकों त्रिगुणा करै। जब २८ हाथरहै (तथा) त्रिगुणा किया हुवाकों और त्रिगुणा करै (तव) नवहाथ किंचित् उपरांत सुत्र रहै। (इसकोंवटके) तीन लर्मी जिनोपवीत वणावै। जिसके नव तंतू गर्भित, त्रिसूत्र मई एक ग्रग्रदेवे। (ऐसी तीन गांठकी जिनोपवीत ब्राह्मण धारण करै॥ (इसका परमार्थ यहहै)। जैनी ब्राम्हण, नव ब्रह्मगुप्ति युक्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रूप ३ रत्न। आप धारन करै। अन्यपुरषांकों धारन करावै। (तथा) अन्यपुरषांकों। जिनोपवीतादि धर्म धारन करनें कों। आज्ञा उपदेश करै॥३॥ (इसवास्ते) ब्राम्हणके जिनो पवीतमें ३ग्रंथी कही (और) क्षत्री वर्णके जिनोपवीतमें दोय गांठ होय॥ आपधारण करै। अन्यकों धारन करावै (परंतु) आग्या उपदेशका अधिकार क्षत्रीकों नहिं (और) वैश्यके एक गांठकी जिनोपवीत होय। (निकेवल) ज्ञान दर्शनकी भक्तीसें श्रावक आचार आपधारन करै (परंतु) असामर्थ्यपणें सेती अन्यकों धारन करानेंका (वा) आग्या करनेंका अधिकार नंही (और) सुद्रांकों निकेवल ग्रंथी रहित उत्तरासण रखनेंकी आग्या है (किसवास्ते) अग्यानपणें सेती निसत्वपणें सेती अधम जातित्व सेती (निकेवल) भगवानकी आग्या प्रमाण करै (परंतु) ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप, रत्नत्रयी आपभी धारन करनेंकों असमर्थ है (इसवास्ते) उत्तरासण धारण करनेंकी आज्ञा है (और) अन्य मतमें यज्ञोपवीतका प्रमाण युगां ऊपर कहा है (यथा) कृते स्वर्णमयं सूत्रं। त्रेतायां रौप्य मेवच। द्वापुरे ताम्र सूत्रंच। कलौ कार्पांश मिष्यति॥ १॥ (जिनमतेतु) सर्वकाले जैन ब्राह्मण ३ लर्मी सोनेंकी जिनोपवीत धारन करै॥ असमर्थ होय (तो) सूत्रादिककी धारण करै (और) क्षत्री, वैश्य, सुद्र, सदा सूत्रमयी जिनोप

शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगांमें पडके नमस्कार करै ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ मुंजमेखलाको प्रमाण कहतेहै ॥ ※ ॥

॥※॥ ३ तंतुकी वणी हुई। मुंज ८१ हाथ लेके। ए लडी वटै (ऐसी) मुंजमेखला ब्राह्मणके कम्मियामें वंधावै (तथा) क्षत्रीके ५४ हाथ मुंज कों ६ लम्मी वटके वंधावै (तथा) वैश्यके २७ हाथ मुंजकों ३ लम्मीवटके वंधावै। (ऐसें) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यके। ए गुणी, ६ गुणी, ३ गुणी, मुंजमेख लाको प्रमाण जाणनो (और) जिनोपवीत, कोपीन, मुंजमेखला, धारन करनेका उत्त्सव। गीत गान मंगल रात्री जागर्ण पहलै दिनकरै (पीछे) गुरू, १ वेंतन्नर चौम्मी। दैढ हाथ लंबी। कोपीन दोनुं हाथमें लेके। (वेद (मंत्र पढै)। (यथा) ॐ अर्ह आत्मनः देहिनः। मति ज्ञानावरणेन। श्रुत ज्ञानावरणेन। अवधि ज्ञानावरणेन। मन पर्याया वरणेन। केवला वरणेन। इंद्रिया वरणेन। चित्तावरणेन। आवृतोसि। तन्मुच्यतां तवावरण मनेनावरणे न। अर्ह ॐ ॥ ※॥ इस वेदमंत्रको ७ वेर पढके, उपनयी शिष्यके कडीमें को पीन वंधावै (तव) उपनयी शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगामें पम्मै नमस्कार करै (पीछे) तीन २ प्रदक्षिणा देकर चारुं दिश तरफ आ दीश्वर स्तवना पूर्वक शक्रस्तव पढै। देववंदन करै॥ (पीछे) शुन्नलग्नकी वखत आएंसें (पूर्वोक्त) जिनो पवीत अपनें हाथमें लेके। उपनयी शिष्य दोनुं हाथ जोम्मके ऐसा वचन कहै॥ हेन्नगवन् में वर्ण रहित हुं। ज्ञानरहि तहुं। क्रिया रहितहुं। (इसवास्ते) मेरेकों ज्ञान क्रियाके विषे आरोपण करो (ऐसा कहके) नमोस्तु २ कहतो गृही गुरूके पगांमे पम्मै (तव) गुरू परमेष्टी मंत्र पढके, शिखा छालके क्षम्मो करै (और) जिनो पवीत अपनें हाथमें लेके। गुरू बेद मंत्र पढै॥ (वेद मंत्रो यथा) ॐ अर्ह नव ब्र ह्म गुप्तीः। सकरण। कारणानुमती। धारयो। तदक्षय मस्तु॥ तेच्च तं स्व पर, तरण तारण समर्थो न्नव। अर्ह ॐ ॥ ※॥ (क्षत्रियकों) करण, कारणा न्न्यां, धारवे स्वस्य तरण समर्थो न्नव (वैश्यकों) करणेन धारये स्वस्य कंठे जिनो पवीतं संस्थाप्य तरण समर्थो न्नव॥ ※॥ इति। (तिस पीछे) उप नयी शिष्य तीन प्रदक्षिणा देके। नमोस्तु २ कहतो पावोंमें पम्मै। नमस्कार करै। (तब) गुरू, नित्थारग पारगो न्नव। ऐसा आशीर्वाद देवै (और)

पूर्व दिशाके सन्मुख वामपासे स्थापन करके । सर्व जगतमें सारभूत । चिं तामणि रत्नके समान । वांछित पूरण हार । मोक्ष सुखदैण हार । (ऐसा) पंच परमेष्टी मंत्र, ३ वेर, सुगंधी द्रव्यसें पूजित दहिणें कानमें सुणावै । जिनो पवीत धारकके मुखसें भी उचारण करावै ॥※॥ (यथा)॥ णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं । णमो उवझायाणं । णमो लोए सव्व सा हूणं ॥ इतिपरमेष्टीमंत्रः ॥ (पीछे) इस परमेष्टी मंत्रकी अचिंत्य महिमा गुरू सुनावै (ऐसा कहै) हे शिष्य । इस मंत्रका, सदैव संपूर्ण मंगलका र्यमें, अवश्य ध्यान करते रहणा (.जिससें) तुमारै संपूर्ण सिद्धी होगा (यडुक्तं) ॥ नवकार इक्क अक्खर । पावं फेडेइ सत्त अयराणं । पन्नासं च पएणं । सागर पणसय समग्गेणं ॥ १ ॥ जोगुणइ लक्खमेगं । पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं । तित्थयर नाम गोत्रं । सो बंधइ नत्थिसंदेहो ॥२॥ अठेवय अठसया । अठसहस्संच अठकोडीउ । जो गुणइ भत्ति जुत्तो । सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ सिद्धांतो दधि निर्म्मथा । नवनीत मिवोद्धु तं । परमेष्टी महामंत्रं । धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ४ ॥ सर्व पातिक हर्त्तारं । सर्व वांछित दायकं । मोक्षा रोहन शोपानं । मंत्रं प्राप्नोति पुण्यवान् ॥५॥ अनेन मंत्र राजेन । जातस्त्वं विश्वपूजितः । प्राणांतेपि परित्याग । मस्य कुर्यान्न कुत्र चित् ॥६॥ गुरु त्यागे भवेदुःखं । मंत्र त्यागे दलिद्रता । गुरु मंत्रे परित्यागे। सिद्धोपि नरकं व्रजेत् ॥ ७ ॥ इति ज्ञात्वा सुगृहीतं । कुर्या न्मंत्र ममुंसदा । सिद्ध्यंति सर्व कार्याणी । तवास्मा न्मंत्रतो ध्रुवं ॥ ८ ॥ (इत्यादि) पंच परमेष्टी नवकार मंत्रकी अचिंत्य महिमा सुनके, अंतरंग भक्तिसें धारनकरै । (और) बहुत खुसी होके । तीन प्रदक्षिणा देके । न मोस्तु २ कहता। गुरूकै पगांमें पडै । नमस्कार करै । (यथाशक्ती) सोनें की जिनो पवीत (तथा) वस्त्रादिक भेट करै । (यथाशक्ती) साधर्मी वात्सल्य करै । सर्व संघकी, आहार तांबूलादिकसें भक्ती करै । साधु मुनि राजकों, सुद्ध आहारादिक दान देवै ॥※॥ इति उपनयन व्रत बंध विधिः॥

॥ ※ ॥ अथ व्रतादेश विधि कहतेहै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनोपवीत धारन कियांके अनंतर (उसी समय) वाजित्र, मं गल गीत गान पूर्वक, समवसरण चौमुख जिनकै सन्मुख, संघ समुदाय

के योग थके, व्रतादेश प्रारंभ करै (तिसका यहक्रमहै) गृही गुरू, उप नीत पुरुषका रेशमी, सूतू, वस्त्र, दूरकराके (और) मुंजमेखला, कोपीन, जिनो पवीत, वल्कल वस्त्र, धारनकराके स्थापन करै। हाथमें पलाशादि का दंड देवै ॥ वेदमंत्र पढै—(वेद मंत्रोयथा)—ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि। ब्रह्म चार्योसि। अवधि ब्रह्म चर्योसि। धृत ब्रह्मचर्योसि। धृत जिन दंमोसि। बुद्धोसि। प्रबुद्धोसि। धृत सम्यक्तोसि। दृढ सम्यक्तोसि। पुमानसि। सर्व पूज्योस्ति। तदवधि ब्रह्मव्रतं। आगुरु निर्देशं धारयेः। अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ ऐसा मंत्र पढके काष्ट (वा) माडके आशण पर, उपनेयी शिष्यकों स्था पन करै। तिसके दहिणें हाथमें (सुवर्ण मुद्रिका) पहरावै। मंत्र पढै (मुद्रिका मंत्रो यथा) पवित्रं डुर्लभंलोके। सुरासुर नृवल्लभं। सुवर्णंहंति पापानि। मालिन्यंच नशंशयः ॥१॥※॥ (पीछे) गुरू परमेष्टी मंत्र पूर्वक अष्टद्रव्यसें भगवानकी पूजा करवावै (पूजांते) उपनीत शिष्य। तीन प्रदक्षिणादेके। नमोस्तु २ कहतो थको। गुरूकों नमस्कार करै (और) दोनुं हाथ जोडके शिष्य प्रश्न करै ॥ गुरू उत्तरदेवै (यथा)

शिष्य—हे भगवन् उपनीतोहं ॥ ※ ॥ गुरू—सुष्टु उपनीतोभव ॥

शिष्य— कृतोमे व्रतबंधः ॥ ※ ॥ गुरू—सुजातोस्तु ॥

शिष्य—जातो अहं ब्राह्मणः (वा) क्षत्रियः (वा) वैश्यः ॥

गुरू—दृढव्रतोभव। दृढसम्यक्तोभव ॥ दृढाचारोभव ॥

शिष्य—हे भगवन् आप ब्राम्हण कियो (तो) मेरे लायक आदेश दीजै ॥

गुरू—भगवानकी आज्ञा मुजब आदेश देताऊं ॥

शिष्य—भगवन् मया स्वयं करणीयं ॥※॥ गुरू—करणीयं ॥

शिष्य—भगवन् मया अन्यै कारतव्यं ॥ ※॥ गुरू—कारतव्यं ॥

शिष्य—भगवन् मया अनुज्ञातव्या ॥※॥ गुरू—अनुज्ञातव्या ॥

(इसमाफक) ब्राम्हण शिष्यकों। करणा, करावणा, आज्ञा उपदेशदैणा, ॥ ३ आदेश देवै॥ (और) क्षत्रिय वर्णवालेकों, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करके। करणा, कराणा, दो आदेश देवै ॥ क्षत्रियकों, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहिं (और) वैश्यकों, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करके। करणा, ऐसा एक आदेश देवै। समादेश, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहि ॥ इतना बिशेष समझणा॥

॥ ※ ॥ अथ ब्राह्मण वर्णादेशः कथ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गुरू—परमेष्टी नवकार मंत्रका सदैव स्मरण करते रहणा । कभी नवकार मंत्रसें विमुख न होना ॥ तीनुं कालमें अवश्य जिनेश्वर देव की, यथा शक्ति द्रव्ये भावे पूजा भक्ती करते रहणा ॥ निग्रंथ साधू, आचार्यादिककी, वेयावच्च भक्ती करते रहणा ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि धर्म कृत्य सेवन करते रहणा ॥ जैनाचार्यके पास अपना धर्म कृत्य विनय संयुक्त सुणना, शीखना ॥ जीव दया, सत्य वचनादि, व्रत, पचक्खाण धारन करना ॥ परस्त्री, परधनका, त्याग करना ॥ मदरा, मांश, अभक्ष, अनंत कायादिक, वस्तूका त्यागकरना ॥ रात्री भोजन (तथा) विदलचीजका त्याग करना ॥ जिनो पवीत (तथा) स्वर्ण मुद्राकों कभी त्याग न करना (प्रायें) क्षत्री वैश्यांके घरमें अन्यहाथका किया भोजन न करना ॥ साधर्मी स्ववर्ण वालैके घरे । स्व वर्ण, स्व धर्म वालैके हाथका (वा) अपनें हाथका किया भोजन करना ॥ नीच, सुद्रादिक, अन्यधर्मीके पास याचना न करना ॥ शुद्ध सम्यक्त व्रतादि गुण धारन करना ॥ मिथ्या शास्त्र मिथ्या मत को परिचय त्यक्त करणा ॥ नाना आर्य देशांमें गयां थकां, त्रिकरण सुद्धै शौच मार्गमें चलना ॥ गृही संस्कार, जिन पूजा, शांति कर्मादिक, जैनाचार, धारन करते, करातें रहना ॥ स्वधर्मी जैनी भाइयोंकों वियाभ्यास कराते रहना । स्वधर्म आग्या उपदेश देते रहना ॥ विनय गुणधारके स्वधर्म वृद्ध्यर्थ आत्म लघुता करना ॥ (परंतु) कपायादिक धारके, कभी परनिंदा नकरना ॥ सर्वका गुण ग्रहण करना । औगुण त्यक्त करना ॥ कर्म, चेतनका, यथा वस्थित स्वरूप भावन करते रहना ॥ ※ ॥ ॥
इति ब्राह्मण वर्णा देशः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ क्षत्रिय वर्णा देशः कथ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ परमेष्टी नवकार मंत्रका स्मरण करना ॥ तीनुंकाल देव वंदन भगवंतकी पूजा भक्ती करना ॥ सम्यकादि बारै व्रत धारन करना । यथा शक्ती अतीचार रहित शुद्ध पालना ॥ रात्री भोजन, मदिरा मांश, अभक्ष, अनंत काय, का त्याग करना ॥ जिनोपवीत कभी त्यक्त न करना ॥ जै

न साधु, जैनाचार्य, जैन पंमित, श्रावक, सम्यक्तीका आदर करना। यथा शक्ती धर्म कृत्य सेवन करना, सुणना, सीखना, ॥ अन्य लिंगी ब्राह्मण (तथा) अन्य देवादिककों वाह्य व्यवहार नयसें नमस्कार करना (परंतु) धर्म समझके नमस्कार परिचय न करना। डुष्ट निग्रह, युद्धा दिककों वर्जके (प्रायें) जीवहिंसादिक पापकर्म न करना, नकरावना ॥ (क्षत्रियांको आचारहै) श्रेष्टकों पालै (और) डुर्ज्जनका निग्रहकरै ॥ देवके अर्थ, गुरूके अर्थ। धर्मके अर्थ। अपनादेश नंगादिकके अर्थ। युद्धादिकमें। मृत्युका नय न गिणके, वीर्य रस धारन करै। सर्व जीवोंपर अनुकंपा धारके। अपनें देशमें, दान शाला, उषध, शाला, स्थापन करना॥ शुद्ध श्रावकका गुण धारन करना ॥ सर्व स्थानक धर्मका उद्योत, धर्म्मकी प्रनावना करते रहना ॥ ॥ इति क्षत्रिय वर्ण व्रता देशः कथितः ॥ ॥

॥ ॥ अथ वैश्यवर्ण व्रतादेशः कथ्यते ॥ ॥

॥ ॥ पंच परमेष्टी नवकार मंत्रका ध्यान करना ॥ त्रिकालें देव वंदन देवपूजा, द्रव्यै, नावै करते रहना ॥ सम्यक्तादि द्वादश व्रत, अतीचार रहि शुद्ध पालना ॥ निर्ग्रंथ साधु आचार्यादिककी सेवा नक्ती करना॥ जैन विद्याचार्य, जैन पंमित, ब्राह्मणोंकी, सेवा नक्ती करना। सामायकादि धर्म कृत्य (तथा) जैन विद्यान्यास करते रहना। विनय गुण शरलपणा, धारन करना। आत्मनिंदा करना (परंतु) परनिंदा कन्नी न करना ॥ पनरै कर्म्मां दान रहित उत्तम विणज वौपार करना ॥ परधन परस्त्रीका (तथा) मांश मदरादि अन्नक्ष वस्तुका त्याग करना। जिनो पवीत धारन किया हुवा कन्नी त्यक्त न करना ॥ जिन मंदर, रथ यात्रा, तीर्थयात्रादिक, करके सदा धर्म उद्योत करते रहना। स्वधर्मियोंपर अंतरंग प्रीति रखना ॥ यथा शक्ती अन्न वस्त्रादिक दान देता रहना ॥ शरल परिणाम धारके सर्व जीवों पर दया धारन करना (क्युंकि) दया है, सो, धर्म्मकों पालन वृद्धी करनेंमें माताके समान है ॥ ॥ (यडुक्तं) ॥ ॥ जयणाय धम्म जणणी। जयणा धम्मस्स पालनीच्चेव। तह बुद्धिकरी जयणा। एकांत सुहावहा जयणा ॥ १ ॥ (पुनः) दया है सो संपूर्ण सुखकी देनेंवाली है (यथा) आयु दीर्घतरं, वपुर्वरतरं, गोत्रं गरीयस्तरं। वित्तं नूरितरं, वलं बहुतरं, स्वा

मित्व मुच्चैस्तरं । आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगत श्लाघत्व मत्यैस्तरं । संसारां वुनिधिं करोति सुतरां चेतः कृपाद्रांतरं ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चातुर्वर्णस्य समानो व्रतादेशः कथ्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ निज पूज्य गुरू प्रोक्तं । देव धर्म्मादिपालनं । देवार्चनं साधु पूजा । प्रणामो विप्रलिंगिपु ॥ १ ॥ धनार्जनंच न्यायेन । परनिंदा विवर्ज्ज नं । अवर्णवादो नकापि । राजादिपु विशेपतः ॥ २ ॥ स्वसत्वस्या परित्या गो । दानं वित्तानु सारतः । आयोचितो व्यय श्चैव । काले कालेच नोज नं ॥ ३ ॥ नवासेत्य जले देशे, नदी गुरू विवर्जिते । न विश्वासो नरेंद्रा णां । नागनीच नियोगिनां ॥ ४ ॥ नारीणांच नदीनांच । लोभिनां पूर्ववैरि णां । कार्यं विना स्थावराणां । मह्निंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥ नासत्याऽहित वाक्चैव । विवादो गुरुनि र्नंच । माता पित्रौ गुरो श्चैव । माननं परतत्व वत् ॥ ६ ॥ शुनशास्त्रा कर्णनंच । तथा नानक्ष नक्षणं । अत्याजानां न चत्यागो । परहत्या नामघातकं ॥ ७ ॥ अतिथींच तथा पात्रे । दीनेदानं यथाविधि । दरिद्राणां तथा धानां । मापन्नार नृतामपि ॥ ८ ॥ हीनांगानां विकलानां । नोपहासः कदाचन । समुत्पन्न क्षु त्पिपाशा । घृणा क्रोधादि गोपनं ॥९॥ अरिषद्वर्ग विजयः । पक्षपातो गुणेपुच । देशाचारा चरणंच । नयं पापा पवादयोः ॥ १० ॥ नद्वाहः सदृशाचारै । सम जात्यन्य गोत्र जैः । त्रिवर्गा साधनं नित्य । मन्योन्या प्रतिबंधनः ॥ ११ ॥ परिज्ञानं स्व पर यो । देश कालादि चिंतनं । सौजन्यं दीर्वदर्शित्वं । कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ ॥ १२ ॥ परोपकार करणंच । परपीमन वर्जनं । पराक्रमः परनवे । सर्व्व त्र क्षांति रन्यदा ॥ १३ ॥ जलाशय स्मशानानां । तथा दैवत सद्मनां । निद्रा हार रतादीनां । संध्यासु परिवर्जनं ॥ १४ ॥ प्रदेशोल्लंघनंचैव । तटे शयन मेवच । कूपस्य वर्ज्जनं नद्या । लंघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥ गुर्वा शनादि सद्मासु । तालवृते कुन्नूमिपु । डुर्गोष्टीपु कुकार्येपु । सदैवा शन वर्ज्जनं ॥ १६ ॥ न लंघनं न गर्त्तादे । संडुष्ट स्वामि सेवनं । न चतुर्थेड नग्नस्त्री । शक्र चाप विलोकनं ॥ १७ ॥ हथ्यश्व नखिनां चाप । वादिनां दूरि वर्ज्जनं । दिवा संन्नोग्य करणं । वृक्षस्यो पाशनं निशि ॥ १८ ॥ क लहे तत्समीपंच । वर्ज्जनीयं निरंतरं । देश काल विरुद्धंच । नोज्यं कृत्यंग

मागमौ ॥ १९ ॥ असत्यं व्यवसायश्च । कर्त्तव्यानि नकर्हिचित् । चातुर्व र्णस्य सर्व्वस्य । व्रतादेशोय मुत्तमं ॥ २० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥
इति चातुर्वर्णस्य समानोव्रतादेश कथितः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (इसीतरे) गुरू, वर्ण मुजब, व्रता देश करके । उप नयी शिष्यकों समवसरण भावके तीन प्रदक्षिणा दिरावै । पूर्वदिश भगवानके सन्मुख शक्रस्तव, पढावै । देव वंदन कराके गुरू शुभाशन वेठे । (तव) उपनयी शिष्य, नमोस्तु २ कहतो । गुरूके, पगांमें पडै । नमस्कार करके (ऐसा वचन कहै) ॥ भगवन्, मम व्रता देशोदत्तः। तत्सुगृहीतोस्तु । सु र क्षितोस्तु । (गुरू कहै) संसार सागरात् स्वयंतर, परंतारय ॥ (पीछै) गुरू, और उपनेयी शिष्य, (दोनुं) भगवानकों तीन प्रदक्षिणा देके, चैत्य वंदन करै (तिस पीछै) ब्राह्मण वर्णवालातो, क्षत्री, वैश्यांके, घर भिक्षा मांगे (तथा) क्षत्री वर्णवाला शस्त्र धारन करै । वैश्य वर्णवाला अन्नदान देवै ॥ ※ ॥
इति व्रता देशविधिः ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ व्रत विसर्ग विधिः कथ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ब्राह्मण वर्ण वाला । आठमें वर्ष जिनोपवीत, दंम, कोपीन, ब्रह्मचर्य धारके । १६ मा वर्ष पर्यंत, गुरूके पासरहै (तथा) क्षत्री, १० मावर्षसें लेके, पूर्वोक्त विधिसें १६ मा वर्ष पर्यंत रहै (वैश्य) पूर्वोक्त विधि १२ मा वर्षसें लेके, १६ मा वर्ष पर्यंत रहै ॥ (यह उत्तम पक्ष कहा) ॥ (कदाश) अथिर चित्तसें उत्तम पक्ष मुजब, गुरू कुलवासमें नहिं रह सक्ता होय (तो) छम्माश (वा) एक माश (वा) तीन दिवश गुरूके पासरहै (कदाचित्) तीन दिवशभी न रहसके (तो) उसीदिन व्रत विसर्जनकरै (सो विधि लिखतेहैं) कुलगुरू, उपनयी शिष्यकों, तीन प्रदक्षिणा दिराके । समवसरण भाव, चतुर्मुख जिनकी पूजा करावै । चारे दिशतरफ शक्र स्तव पढाके देववंदन करावै (पीछै) उपनयी शिष्य, नमोस्तु२ कहके, गु रूकों नमस्कार करै । हाथ जोमके कहे (भगवन्) देश, काला, पेक्षया व्रत विसर्गः आदिष्टः ॥ (गुरूकहै आदिष्टः) ॥ (पुनः) शिष्य नमस्कार करके कहै (भगवन्) व्रत वंधो विश्रृष्टः (गुरूकहै) जिनो पवीत धार णेन अविश्रृष्टोस्तु ॥ (अर्थात्) जिनो पवीत, नित्य नेमका त्याग न क

रना ॥ (पीछे) शिष्य, नवकार मंत्र । ३ वेर पढके । कटि मेखला, कोपी न, दंम, वल्कल वस्त्रादि, ब्रह्मचारी चिन्ह, गुरूके सन्मुख रक्खे ॥ आप श्वेत वस्त्र जिनोपवीत धारन करके (गुरूकों) नमस्कार करै । (तव गुरू) शिष्यके पूर्वोक्त मंत्रसें पवत्रित चंदनसें, तिलक करे (और) जिनो पवीत वर्णन उपदेश करै ॥※॥(यथा)॥※॥ गर्भका माश अंतर्भू त करके (ब्राह्मणकों) आठमें वर्ष (क्षत्रीकों) दशमें वर्ष (वैश्यकों) वार मेंवर्ष जिनोपवीत धारन कराना । जिनोपवीत (अर्थात्) जिनकी गृहस्थ मुद्रा । नव ब्रह्मगुप्ती गर्भित, रत्नत्रयी रूप (इसका) प्रथम श्री आदिना थ स्वामी गृहस्थाश्रम युक्त । ब्राम्हण, क्षत्री, वैश्य, तीनोंवर्णकों धारन कर नेंका उपदेश कियाहे (जवसें) जिनोपवीत, सुत्र मुद्रा, धारन करनेंका व्यवहार प्रचलितहुवा (तीस पीछे) वहुत कालके वाद । मिथ्यात्व मो हित (पर्वतादि) ब्राम्हणोंने । चारुं वेदमें हिंसा प्ररूपण करके (वसु राजादि) राजावोंसें मिथ्या पथ यज्ञ मार्ग प्रवर्त्तन किया (और) जिनो पवीतका नाम स्थानक यज्ञोपवीत नाम रक्खा (तवसें) लोकीकमें यज्ञो पवीत, इसका नाम कहतेहें—मिथ्या दृष्टी यथेच्छा कहो (जिन मतमें तो,) पूर्वोक्त सूत्र मुद्राका, जिनोपवीत नामहै (ऐसी) जिनो पवीत मुद्राकों, हे शिष्य, तुमनें धारन किया है । (सो) माश २ प्रति नवीन धारन करते रहना । प्रमादादिकसें कभी त्यक्त न करना (कदा चित्) कोई वेर टूटजाय, गिरपडे, (तो) उसीवखत नवीन जिनो पवीत धारन करना (और) तीन उपवासका दंम भरना (तथा प्रेत क्रि या) किसीकी मृत्यु होनेसें स्मशानमें जाना पडै (तव) जिनोपवीतकों दक्षिण स्कंधके ऊपर, वामकक्षाके अधो भागमें धारन करना (यह) मृतक, विपरीत कर्महे (इससें) जिनोपवीत विपरीत धारना (साधुपण) मृतक साधूके परित्याग समें । विपरीत वस्त्रकों धारतेहें (तत्वंतु) जन्म ना जायते सुद्रः । संस्कारा द्विज मुच्यते । वेद पाठ भयो विप्रः । ब्रम्ह जा नंति ब्राम्हणः ॥ (यथा) जन्मसें सुद्रहै (सो) संस्कार विशेषसें उत्तम वर्णकों प्राप्त होतेहें । ब्रम्हगुप्तिके धारनसें ब्राम्हण कहीयै । अन्यकों प्र हार लगनेंसें त्राण रक्षा करै उसकों, क्षत्रिय कहियै ॥ न्याय धर्म्मोपदेश

सें, बैश्य कहियै ॥ तीनों वर्ण क्रिया सहितहै। एतज्जिनोपवीतं सुगृहीतं कुर्याः। सुरक्षितं कुर्य्याः। अस्तुते क्षयरहितः। सद्धर्म वसनं उपनयन विधिः॥ ऐसा उपदेश करके। नवकार मंत्रपढके। भगवानके सन्मुख चैत्य वंदन करावै (पीछे) शिष्य, साधू गुरूकों, वंदन नमस्कार करै ॥ ॥ ॥

इति जिनोपवीत संस्कारे व्रत विसर्ग विधिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ सुद्रके उत्तराशन धारन बिधिः॥ ॥

॥ ॥ प्रथम सप्त दिन पर्यंत, तैलाभिषेक, स्नान महोच्छव, मस्तक मुंमन। चतुष्कोण वेदी करण। जिन प्रतिमा स्थापन। शांतिक पोष्टिक कर्म, सर्व जिनोपवीत तुल्य करै (पीछे) गृह्य गुरू, अष्ट प्रकारी पूजा करावै। चारे दिशामें शक्रस्तव पाठ करायके। गुरू शुभाशनवेठै (तव) शिष्य, श्वेतवस्त्र उत्तराशण धारके। समवसरण, गुरूकों, तीन प्रदक्षिणा देवै। गुरूके सन्मुख, नमोस्तु२ कहता। हाथ जोमके वीनती करै ॥ (हे भगवन्) में, आर्यदेश, आर्यकुलमें मनुष्यजन्म पायाहुं (मेरेकों) बोधीरूप जिनाज्ञा दीजै (गुरू कहै, ददामि) पुनः शिष्य, नमस्कार करके कहै। में, जिनोपवीत धारन करनें योग्य नहीहुं (इससें) मेरेकों जिनाज्ञा दीजियै (गुरू कहै ददामि) पीछे गुरू। द्वादश गर्भ तंतू रूप कार्प्पास (अथवा) कौशेय उत्तराशन, जिनोपवीत समान दीर्घ करके। नवकार मंत्र पढता थका। जिनोपवीत वत् उत्तराशन पहिरावै। पूर्वदिश, भगवानके सन्मुख वैठाके, चैत्य बंदन करावे। (पीछे) शिष्य नमस्कार करके हाथ जोमके, गुरूकों, कहे (हे भगवन्) उत्तरीयक न्यासेन जिनाज्ञां आरोपितोहं (गुरू कहै) सम्यक् आरोपितोसी। तर भव सागरं (तव) शिष्य नमस्कार करै ॥ (गुरू) उपदेश करै (यथा) ॥ ॥ सम्यक स्वनुष्टितव्यानि। व्रतानि द्वादशैवहि। धार्याणि भवतानैव। कार्यः कुल मद स्त्वया ॥ १ ॥ जैनर्षीणां तथा जैन। ब्राम्हणानां मुपाशनं। विधेयं चेव गीतार्था। चीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥२॥ न निंद्यः कोपि पापात्मा। नकार्यं स्वप्रशंसनं। ब्राह्मणभ्यो स्त्वयाह्मन्नं। दातव्यं हित मिच्छता ॥ ३ ॥ शिक्षा चतुर्षु वर्णेषु। श्लोक व्याख्यान माचरेत्। उत्तरीय परिभ्रंशे। भंगेवा प्युपवीत वत् ॥ ४ ॥ कार्यं व्रतं प्रेतकर्म। कारणं वृषलस्त्वया। युक्ति रेषोत्तरा सं

गा नुज्ञायांचविधीयते ॥५॥ क्षत्राणांमथवैश्याणां। देशकालादियोगतः। त्यक्तो पवीतानांकार्य। मुत्तरासंगयोजनं ॥६॥ धर्म्मकार्येगुरोर्दृष्टौ। देवगुर्वालयेपिच। धार्यस्तथोत्तरासंगः। सुत्रवत्प्रेतकर्मणि ॥७॥ अन्येषामपिकारूणां। गुर्वानुज्ञां विनापिहिः। गुरुधर्मादिकार्येषु। उत्तरासंगइष्यते॥ ८॥ (एसेउपदेशकरके) गुरु शिष्यकुं चैत्यवंदनकरावे। नवकारमंत्रका उचारण (अरु) मंत्रका व्याख्यान सर्वपूर्ववत् (इतनाविशेषहै) शुद्रादिककुं नमोस्थाने णमोपदउच्चा रणकरणो') पीछे शिष्यसहित गुरु उत्सव कर्त्तेथके धर्मस्थानमेंआवे। उहां मंगली पूजादिकविधि पूर्वोक्तकरके गुरुकों नमस्कार कराके वासक्षेप दिरावे तदनंतर मुनियोंकुं, अन्न वस्त्र पात्रका दान (अरु) चतुर्विधसंघकी पूजा सामीवछलादिककरै (इसरीतसें) जिनोपवीतकेस्थानमे शुद्रादिकनकुं उत्तरा सनरखना.कहा। ब्राह्मण क्षत्री वैश्यके जिनोपवीतमें तीन, दोय, एक, क्रमसें ग्रंथि लगतीहे (अरु) तंतूकाप्रमाण पण जुदा जुदा कहाहे। परंतु शुद्रके वारै सूत्रतंतुगर्भित ग्रंथिरहित उत्तरीकन्यासरूप जिनोपवीतकहा ॥ ※ ॥ इतिशुद्रउत्तरीयकन्यासविधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ भूम्यादि दानविधि लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ व्रत विसर्ग किये पीछे शिष्य सहित गुरू तीनवेर प्रदक्षिणा दे के पूर्ववत् चारे दिशामे शक्रस्तवका पाठ करै ॥ तदनंतर गृह्यगुरुः आशन पर बैठें (पीछे शिष्य) गुरूकों तीन प्रदक्षिणा दे के, दोनुं हाथ जोम नम स्कार करके वीनती करै—हे भगवान् तारितोहं निस्तारितोहं उद्यमकतोहं स त्तमःकृतोहं पूतःकृतोहं- तद्भगवान् आदिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्मे मम किं रहस्यभूतं सुकृतं ॥ (तवगुरु कहे) हे वत्स, सुष्टु अनुष्टितं, सुष्टु पृष्टं, तत्श्रूयतां ॥ (श्लोकाः) ॥ दानंहि परमोधर्मो। दानंहि परमाक्रिया। दा नंहि परमोमार्ग। स्तस्माद्दानेमनःकुरु ॥ १ ॥ दयास्यादभयंदान। मुपकार स्तथाविधः। सर्वोहि धर्म्मसंघातो। दानांतर्भाव मर्हते ॥ २ ॥ ब्रह्मचारीच पाठेन। भिक्षुश्चैव समाधिना। वानप्रस्थस्तुकष्टेन। गृही दानेन शुध्यति॥३॥ ग्यानिनो परमार्थज्ञा। अर्हंतो जगदीश्वराः। व्रतकाले प्रयच्छंति। दानंसां वत्सरव्रते ॥ ४ ॥ गृह्णतां प्रीणनां सम्यक्। ददतांपुण्यमक्षयं। दानतुल्यस्ततो लोके। मोक्षोपायोस्तिनापरः ॥ ५ ॥ (इससेती हेवत्स) ब्राह्मण, (वा)

क्षत्री, (वा) वैश्य, वर्ण पायके। गृहस्थाश्रमको मंम्ननभूत, मोक्षसोपान रूप, अक्षयफलदायक दानधर्मको प्रारंभकर (तव नमस्कार करके शिष्य कहै) हे भगवन् दानकी विधि कहो (गुरुकहै हेवत्स दानकीविधि तुं सुण) ॥ (यथा श्लोकः) ॥ गावो भूमि सुवर्णंच। रत्नान्यन्नंच कन्यका। गजाश्वा इतिदानंत। दशधा परिकीर्त्तितं ॥ १ ॥ एतच्चाष्टविधंदानं। विप्राणां गृहमेधिनां। देयं नचापियतयो। गृहंत्ये तच्चनिस्पृहाः ॥ २ ॥ यतिभ्यो भोजनं वस्त्रं। पात्रमौषध पुस्तके। दातव्यं द्रव्यदानेन। तौद्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥ इसप्रकार दानकीविधि सुणके, शिष्य उपनीत हुवो थको प्रथम गौदान करै ॥ अच्छा वर्ण लक्षणयुक्त गायकों स्नान करवाके सोनेका सींग रूपैका खुर आदि आभूषण (तथा) वस्त्रादिकसें सोभित करके, गुरुके पास लावै (तवगुरु) गायको पुंछ हाथमें धारनकरके ऐसा मंत्रपढै (तथा) ॥ ॐ अर्हंगौरियं धेनुरियं प्रशस्य पशुनियं सर्वोत्तमक्षीर दधिघृतेयं पवित्र गौमयमूत्रेयं सुधाश्रावणीयं रसोद्भावनीयं पून्येयं। हव्येयं। अग्निवाय्येयं। तदत्तेयं। त्वयाधेनुःकृतपुन्योभव। प्रातपुन्योभव। अक्षयं दानमस्तु। अर्हं ॐ ॥꣼॥ (इत्युक्ता) गृह्यगुरू, धेनुकों ग्रहणकरै (तव) शिष्य, तिसगौके साथ। द्रोणमात्र सातधान्य (और) तुलामात्र, षट्रस (इत्यादि) यथाशक्ती दान देवै- इससें, दूसरा भूमि, रत्नादिकका दान आचार्यादिक गृही गुरूकों देवै (तवगुरू) ऐसा वेदमंत्र पढै ॥ (वेदमंत्रो यथा) ॥꣼॥ ॐ अर्ह्रं एकमस्ति दशकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतमस्ति। कोटिसहस्रमस्ति। कोट्ययुतमस्ति। कोटिलक्षमस्ति। कोटिप्रयुतमस्ति। कोटाकोटिरस्ति। संख्येयमस्ति। असंख्येयमस्ति। अनंतमस्ति। अनंतानंतमस्ति। दानफलमस्ति। तदक्षयं दानमस्तुते अर्ह्रं ॐ ॥ ꣼ ॥ गौदानसें अन्यदानोंका यहीमंत्र है ॥ जिनोपवीत धारनसमय तो गौदान दैनेकाही निश्चय है। अन्यदान कोईभीसमे देना ॥ गौदानादिक जैन पंडिताचार्यादि सपरिग्रही गृही गुरू जैनब्राह्मणोंकों दैना चाहिये (परंतु) निस्परिग्रही निस्प्रही साधु यतीकों नदेवै। साधुकों निकेवल अन्न पात्र वस्त्र भेषज वसति पुस्तकादि दान देवै (तथा) साधुवांके अन्नपात्रादिदाने धर्मलाभ एवमंत्रः ॥ (गृह्यगुरुः) उपनीत शिष्यकेपास गौदान लेके शिष्यकों

वर्णमुजव अनुज्ञा आदेश देवै ॥ भगवानके सन्मुख चैत्यबदन करावै (पीछे) सब संघकेसाथ मंगलगीत गान वाजित्रादि महोत्सव सहित, यती साधुकेपास ले जावै (तत्र पूर्ववत्) मंग्मली पदपूजा करके यथाशक्ति ज्ञान खाते दान देवै। साधुकों वस्त्रपात्रादिक दान देवै। सर्व संघकी यथा शक्ति आहारादिकसें भक्ती करै ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वटूकरण विधि लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम जिसनें जिनोपवीत धारन किया है (सो) जिनोपवीतके आचार मुजब चलै। अपना धर्मकृत्य खटकर्मका अभ्यास करता रहै। मृतक सूतकादि कुत्सितदान न लेवे। साधर्मीटाल अन्यजातीका (तथा) अन्य हाथका भोजन न करै (तथा) संपूर्ण गृहस्थके संस्कार पूजादिक क्रियाकांमकों धारन करै, करावै (तथा) खेती, रसोई, चाकरी, आदि कर्मन करै। यजमानकों नमस्कार कियेविगर आशीर्वाद न देवै (ऐसे) आचारवान् ब्राह्मण होतेहै (और) जो खेती, चाकरी आदिक नीचकुलके योग्य कर्म करै। सुद्रादिकके हाथका भोजन खावै। और अपना आचार खट्कर्मसे रहित (तथा) तीनतत्वकी श्रद्धारहित हुवै (सो) आचारहीन सुद्रादिक समान होते है ॥ ऐसे आचारहीन पुरुष कालांतरै शुभकर्मानुयोग पुनः जिनोपवीतादि शुद्धाचार धारनकरके शुद्ध ब्राह्मणपणो धारन करै। जिसकों वटुकरण विधि कहियै (यदुक्तं) ॥ ※ ॥ च्युत व्रतानां ब्राह्मानां। तथा नैवेद्य भोजिनां। अकर्मणा मवेदानां। अजपानांच शस्त्रिणां ॥ १ ॥ ग्राम्याणां कुलहीनानां। विप्राणां नीचकर्मणां। प्रेतान्न भोजिनां चैव। मागधानांच वंदिनां ॥ २ ॥ घंटिकानां सेवकानां। गंधतांबूल जीविनां। नटानां विप्रवेषाणां। परशुरामान्वयायिनां ॥ ३ ॥ अन्यजात्युद्भवानांच। वंदिवेषोपजीविनां। इत्यादि विप्ररूपाणां। वटुकरण मिष्यते ॥ ४ ॥ ऐसे कुलहीन आचारहीन ब्राह्मणादिककों शुद्ध करनेकेलियै वटु करणकर्म करना चाहिये (अन्यमतेपिउक्तं) जन्मनो जायते सुद्रः। संस्कारा द्विजमुच्यते। वेदपाठभयो विप्र। ब्रह्मजानंति ब्राह्मणः ॥ १ ॥ स्वपाकी गर्भसंभूतो। पाराशर महामुनिः। तपसा ब्राह्मणोजातः। तस्माज्जातिरकारणं ॥ २ ॥ कैवर्त्ती गर्भसंभूतो। व्यासोनाम महामुनिः। तपसा ब्राह्मणोजातः तस्माज्जातिरकारणं

॥ ३ ॥ विश्वामित्रंच चांमाली । वशिष्टं चोर्वसी तथा । विप्रजाति कुला भावे । एते तेवै द्विजोत्तमा ॥ ४ ॥ शीलं प्रधानं नकुलं प्रधानं । कुलेन किं शील विवर्जितेन । वहवेनरा नीचकुलेषु जाताः । स्वर्गंगताः शील मुपेत्य धीरा ॥ ५ ॥ इत्यादि अन्यमत भारतादिक ग्रंथोमें कहाहै ॥ तपस्या, ब्रह्म चर्य, संस्कार, धारन करनेंसे ब्राह्मण होता है । जातिका कुछ कारण नहीं

॥ ※ ॥ अथ बटुकरण संस्कार विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिसकों वटुकर्म करना होय । उसके घरमें गृह्यगुरु. प्रथम यथोक्तविधिसें शांतिक पौष्टिक पूजादिक कृत्य करै (पीछे) शिष्यका म स्तक मुंमन करावै । मंत्रा हुवा तीर्थोदकसें स्नान करवावै ॥ (तीर्थोदक मंत्र यथा) ॥ ॐ वरुणोसि । वारुणमसि । गांगेयमसि । यामुनमसि । गोदा वर्यमसि । नार्मदमसि । पौष्करमसि । सारस्वतमसि । शातद्रवमसि । वैपाश मसि । सैंधवमसि । चांद्रभागमसि । वैतस्तमसि । ऐरावतमसि । कावेरमसि । कारतोषमसि । गोमतमसि । रौप्यकूलमसि । सुवर्णकूलमसिः शालीलमसि । रक्तवतमसि । नैमग्नमसि । रत्नमसि । अनघसलिलमसि । पद्ममसि । महा पद्ममसि । तैगहमसि । कैशरमसि । पौंमरीकमसि । ह्रादमसि । नादेयमसि । कौपमसि । सारसमसि । कौंममसि । नैर्झरमसि । वाप्यमसि । तैर्थमसि । अमृतमसि । जीवनमसि । पवित्रमसि । पावनमसि । तदमुं पवित्रय । कुलाचार रहित मपिदेहि ॥ ※ ॥ इसमंत्रसे ७ वेर जलमंत्रके कुशाग्रसें ७ वेर शिष्य कों शिंचन करै ॥ (पीछे) गुरू पूर्वोक्तप्रमाण मुंजमेखला हाथमें लेके ७ वेर मंत्रसें मंत्रके शिष्यके वंधावे (मेखला वंधन मंत्रः) ॐ पवित्रोसि । प्रा चीनोसि । नवीनोसि । सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि । तदमुंदेहिनं धृतव्रत मव्रतंवा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणंकुरु ॥ इसमंत्रसें मुंजमेखला वंधावै ॥ (पीछे) कोपीन हाथमें लेके वेदमंत्रपढै ॥ (कोपीन मंत्र) ॥ ॐ अब्रह्मचर्य गुप्तोसि । ब्रह्मचर्य धरोपिवा । इतःकोपीन वंधेन । ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥ ※ ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके कोपीन पहिरावै ॥ (पीछे) गुरु, पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण शदश जिनोपवीत हाथमें लेके वेदमंत्र पढै ॥ (जिनोपवी तमंत्रः) ॥ ※ ॥ ॐ सधर्मोसि । अधर्मोसि । कुलीनोसि । अकुलीनोसि । सब्रह्म चर्योसि । अब्रह्मचर्योसि । सुमनाअसि । दुर्म्मनाअसि । श्रद्धालूरसि । अश्र

द्वालूरसि । आस्तिकोसि । नास्तिकोसि । आर्हतोसि । सौगतोसि । नैयायिकोसि । वैशेषिकोसि । सांख्योसि । चार्वाकोसि । सलिंगोसि । अलिंगोसि । तत्व ज्ञोसि । अतत्वज्ञोसि । तद्भव ब्राह्मणः अमुनो पवीतेन भवंतु ते सर्वार्थ सिद्धयः ॥※॥ इस मंत्रसे ए वेर जिनोपवीत मंत्रके शिष्यकों धारन करावै हाथमें पलाशादि लकडीका दंड देवै ॥ वल्कलचीरादि वस्त्र धारन कराके भिक्षा मंगावै (पीछे) गुरू, एक जिनोपवीत रखके (अन्य) मुंजमेखला, कोपीन, दंडादिकका मंत्र पढके त्याग करावै (तदपनयनमंत्रो यथा) ॥※॥ ॐ ध्रुवोसि । स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ इस मंत्रसें वल्कलवस्त्र दंडादिकका त्याग कराके स्वेतवस्त्र पहिरावे (पीछे) शिष्य नमोस्तु २ कहतो गुरूके पगांमें पडै । नमस्कार करके, सन्मुख वैठे ॥ (तव) गुरु, ऐसी शिक्षा करै ॥ (उक्तंच) ॥ परिनिंदा परद्रोहं । परस्त्री धन वांछनं । मांसाशनं म्लेछ कंद । भक्षणं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥ वाणिज्ये स्वामिसेवायां । कपटं माकृथा कचित् । ब्रह्मस्त्री भ्रूण गोरक्षा । देवर्षि गुरुसेवनं ॥ २ ॥ अतिथीनां पूजनंच । कुर्याद्दानं यथाधनं । अघात्यघातं माकुर्या । मावृथा परतापनं ॥ ३ ॥ उपवीतमिदं स्थाप्य । माजन्म विधिवत्वया । शेषः शिष्याक्रमः कथ्य । आनुवर्णस्य पूर्ववत् ॥ ४॥ इत्यादि आदेश पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण सदृश करै ॥ इहां विशेष विधही सो लिखी है और सर्व विधि पूर्वोक्त जिनोपवीत संस्कार मुजव जाणनी (पीछे) शिष्य, धेनु अन्न वस्त्रादि गुरुकों दान देवै (इतना विशेष है) अत्र वटुकरणे । वेदिचतुष्किका । समवशरण । चैत्यवंदन । व्रतानुज्ञां । व्रत विसर्गादिनास्ति ॥ ※ ॥ (श्लोका) पौष्टिकस्योपकरणं । मौंजी कौपीन वल्कलं । उपवीतं स्वर्णमुद्रा । गावः संघस्यसंगमः ॥ १ ॥ तीर्थोदकानि वस्त्राणि । चंदनं गर्भएवच । पंचगव्यं वलिकर्म । तथा वेदि चतुष्किका ॥ २ ॥ चतुर्मुखस्य प्रतिमा । दंड पलाश एववा । इत्यादि वस्तुसंयोगो । व्रतबंधे विधीयते ॥ ३ ॥ ※ इति वटुकरण विधिः ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः पं । मोहनलाल मुनिः० जिनोपवीत संस्कार संपूर्णम् ॥

॥ ※ ॥ अथ विद्याध्ययनारंभ संस्कार विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शुभदिन शुभघडी मुहूर्त्त देखके यथाशक्ति लडकेकों वडे

महोत्सवसें मंगलगीतगान पूर्वक स्नान मज्जन करावै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहरावै। (पीछे) हाथी घोडादिक असवारी पर चढाके (अथवा) प्यादल सर्व सज्जन लोक साथमें होकै। जैनपंडित यती गुरूकेपास लावै खारक खोपरा बिदाम मिश्री आदि सुखडीका भरा हुवा थाल और यथा शक्ति रोकनाणो गुरूके भेट करै विनयसंयुक्त वंदन नमस्कार करै (तबगुरू) अपनें बामपाशे कुशाशनपर शिष्य लडकैकों बैठाकै तिसके दक्षिण कर्णकों केशरादिक सुगंधी द्रव्यसें पूजन करके सरस्वतीका मंत्र तीनवेर सुनावै पढावै॥ (सरस्वतीदेवी मंत्रोयथा)॥ ※॥ ॐ ह्रीँ श्रीवद्वद् वाग्वादनी वागीश्वरी श्री सरस्वत्यैनमः॥ ॐ ह्रीँ ऐं हंसवाहन्यैनमः॥ ※॥ इस मंत्रकों सातवेर पढाकै सरस्वती देवीकों नमस्कार करावै पूजन करावै (पीछे) काव्यादिकसें गुरूकी स्तवना सुनावै पढावै (यथा)॥ अग्यान तिमिरांधानां। ज्ञानांजन शलाकया। नेत्रमुन्मीलितंयेन। तस्मै श्रीगुरवेनमः॥ १॥ यासां प्रसादा दधिगम्य सम्यक्। शास्त्राणि विंदंति परंपदज्ञा। मनीषितार्थ प्रतिपादकास्यो। नमोस्तुताभ्यो गुरु पादकाभ्यः॥ २॥ इति मत्वात्वयावत्स। त्रिसंध्योपासनं गुरौः। विधेयं येनजायंते। गीर्धीः कीर्त्ति धृति श्रियः॥ ३॥ ऐसीशिष्या गृहीगुरू जैनपंडित देके आचार्य उपाध्यायकेपास लावै (तब) जैनगुरु आचार्य उपाध्यायादि शिष्यके मस्तकपर वर्द्धमान विद्यासें मंत्रके वासक्षेप करै (और) तीनवेर कानमें नवकार मंत्र सुनावै (पीछे)॥ ॐ नमःसिद्धं॥ अ आ इ ई—इत्यादिक अक्षर विन्यासका भेद समजावै अर्थ सुनावै हाथसें लिखावै (प्रथम स्वर) १४ अ। आ। इ। ई। उ। ऊ। ऋ। ॠ। ऌ। ॡ। ए। ऐ। ओ। औ। अं। अः॥ ※॥ (व्यंजन ३३) क् ख् ग् घ् ङ् इत्यादिक अक्षरोंमें अ आ इ ई आदि स्वर मिलानेंसें तथा पूर्वस्वर देनेसें बोलनेमें आता है (यथा)॥ क्, अ। क॥ क्, आ। का॥ क्, इ। कि॥ क् ई। की॥ क्, उ। कु॥ क्, ऊ। कू॥ क्, ऋ। कृ॥ क्, ए। के॥ क्, ऐ। कै॥ क्, ओ। को॥ क्, औ। कौ॥ क्, अं। कं॥ क्, अः। कः॥ ※॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः॥ इसीमाफक सर्व अक्षरोंकी बाराखडी ह्रस्व दीर्घ भेदसें समझावै ऌ ॡ समेत १६ स्वरमें अ। इ। उ। ऋ। ऌ। यह

पांच स्वर निकेवल (वा) व्यंजन अक्षरमें मिला हुवा ह्रस्व कहिये। शेष ११ स्वर दीर्घ कहिये ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ भोले कक्कानो अर्थ लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम दोय लिंटी लिखते है, जिसकों (रिद्धी सिद्धी) बोलते है॥ हे भव्य इसका अर्थ जीवनी दोय राशी है। एक सिद्धनाजीव निरकर्मा, दूसरा संसारीजीव सकर्मी, जाणना ॥१॥ (ॐ भले) अरे जीवतुं सिद्धजीवों की राशीमें मिलनेंकी इच्छा रखना ॥ २ ॥ (मींडुं०) संसाररूप गोलाकारे एक ऊंमो गहरो कूपहे तिसमेंसे निकलनेंका एक छिद्र है जोतुं संसाररूप छिद्रसें निकलैगा ॥ तो सिद्धोंमें मिलैगा ॥ ३ ॥ (विलामी) सोजेसें कूवेंमें पमी हुई वस्तु लोहेकी विलामी सेती निकाले, तैसे इहां संसारी जीवोंकों संसाररूपी कूपमेंसें निकालनेंकी। प्रथम देशविरति, दूसरी सर्व विरति रूप विलामी दोजाणनी (अब सिद्धोंके जीव कहां रहतेहै) सो कहतेहै (उ गण चोटियो, माथे पोटियो, ॐ) चवदे राजलोकका तीन भाग, अधो लोक पाताल, मध्यलोक मनुष्यक्षेत्र, ऊर्ध्वलोक वैमानिकदेव, एवं ऊर्ध्वलो कके चोटीके स्थानके बारा योजन विस्तारकी तनु पभारानामें पृथ्वी है तहां एक जोजनके चोवीसमें भाग ३३३ धनुष, ऊपर वत्तीस अंगुल, इतनें विस्तारमें सिद्धोंका सब जीव अलोकसें भिडके रहेहै (ननोवीटालो) हे जीव तुं संसारके काम भोगमें मग्न होके मोहजालमें फसा हुवा रह ताहे जिससेती अधोगति नरकगतिकों प्राप्त होताहे (ममो माउलो) यह संसार जीवनो अनादि घरहे जिसमें मोहनामें माउलो (नाम) मामो है ॥ ७ ॥ (ममा हाथे दो लाडुवा) जो मोह नामें मामोहे सो जी वांकुं काम भोग रूप दोय लाडू हाथमे देके भोलायके अपनें वसमें रख ताहे ॥ (सिद्धीराणी चोकमी) क० सिद्धीरूप राणीके मंदर चढने मोह राजायें चार कषायरूप चोकमी पहारायत रक्खी है। इससें कोई जीव ऊंचो चढे (तोपिण) जीवकों ऊंचो सिद्धिगति जानें न देवे ॥ ए ॥ (पाछी चार कुंभावली) सा कषाय चोकडी जीवकों इग्यारमें गुणठाणेंसें पीछे संसाररूप मिथ्यात गुणठाणेंमें लायनाखे ॥ १० ॥ ढाउं ढाउं ढोकलो माथे भेकरो) रे जीव तुं संसारमें वेर वेर जन्ममरण करनेंसें ढोकलाकी

तरे सीझतो थको महादुख भोगवतो रहेगो और पुत्र पुत्री आदिककंविटी वना तुमारे मस्तकपर पमेगी (इसवास्ते) सद्धर्म चक्रवर्ती महाराजको जासि द्धिनगरहे सो देखनेंकी इच्छा होय तो प्रथम महामंत्रीश्वर श्रीसम्यक्तकेसाथ मिलापकर(सो)तुमकों धर्म महाराजासें मिलाप कराय देगा (परंतु) सम्यक्त मंत्रीश्वरके मकान जातां थकां रस्तेमें कषायादिक बहुत विघ्न करनेंवाला रहताहे उसकों जीतनेका उपाय कहताहुं ॥११॥ (हाथमां दो भांगमी) क० धर्मकथा सुनके, यथा प्रवृत्ति करण तथा दूसरो अपूर्वकरण सुभपरि णामरूपी भांगडी अर्थात् मुद्गर हाथमें लेके चलना (आईमा दोभाईमा वमो भाइकांनो) जो रस्तेमें विघ्नकरनेवाला राग, द्वेष, रूप दोभाईमा मि ले जिसको पछाडके दूर करना (फेर) अनंतानुवंधी क्रोध, मान माया, लोभ, मिथ्यात, मिश्र, सम्यक्त मोहनी ॥ यह सात प्रकृतिरूप चोरोंकाक्षय करना इसमाफक अपूर्वकरण मुद्गर सेती रागद्वेष कषायादिक मिथ्यातकी गांठ भेदनकरके आगे चलिये सो तुमकों सद्गुणनिवासमे महामंत्री स्वर सम्यक्त नामें पांचरूप करके वैठाहे उसका दर्शन मिलेगा (पीछे) तुं सदैव सुद्ध दर्शनकी सेवामे रहेगा तो कोईवेर तुमारी योग्यता देखके जो चारित्रधर्म राजाकी दो पुत्रीयों है (इकडी वाई तनुअंगी, वडी इकमी स्वीकारो) लघुपुत्री देशविरति और वमी पुत्री सर्व विरति इन दोनोंमें जिसपर तुमारा अंतष्करण खुसी होगा उसी कन्याकेसाथ विवाह करदेगा परंतु एकाग्र चित्तसें सम्यक्त मंत्रीश्वरकी आग्यामें चलतो रहिये सो सद्दर्शन तुमारेपर सदैव खुसी रहै (उकार केवल आंकोमा, वमे ऊकार फांकोडा) जो शंका कंखा, विति गिच्छा. कषायादिरूप आंकमा फांकमाकी संगत करेगा तो स द्धर्म मंत्री तुमारेपर नाराज होगा (इसवास्ते) शंका कंखादि सव दूषणोसें अ लग रहिये (ऊकार वाई नाचणी, वमी ऊकार पांचणी) फेरममता माया, रूप दोय जहरकी वेलहे जिसमें विषय, रूप (अथवा) काम, भोगरूप, दोय सर्प सूताहै जिनांकों कभी जगाना छेमनामत (जिससें) तुमारेपर सद्धर्म मंत्री प्रशन्न होकर सिद्धिनगर जाते अच्छे सथवारेकोसाथ करदेगा (ऐन वैन दोगामी, वमी गामीमात्रा) और सुमति, गुप्ति, रूप दोयगामी चढनें वावत देवेगा (उरखवाला वलदिया, वमे वेगम जोतिया) सो दोनुं

गामीके ज्ञान, चारित्र, रूप दोवलध जोतेगा (अं अः दो रासमी) जिनोके संवर निर्ज्जरा रूप दो रासमी लगाके सिद्धिनगरके मार्गकों चलावजे ॥ २० ॥ (कक्को केवलो) परंतु केवल ग्यानरूप बोलावे विगर सिद्धिनगर पोंहच शका नहिं (इसवास्ते) केवल ग्यानकों साथ लेनेंका उद्यम करजे । सो केवलग्यान सुद्भाव (तथा) इछा रोधन तप करनेसें साथ चलेगा ॥ २१ ॥ (ख कखो खाजूलो) इससेती सुद्भावसें तपस्या करणा परंतु चार प्रकारके आहारको स्वादी तथा रसनेंद्रियको लोलुपी होणा मति ॥ २२ ॥ (गगा गुरुजन पायपसार्यें) संपूर्ण धर्मकार्यका वतानें वाला गुरुमहाराजकुं मोटा उपगारी समझके । सेवा, भक्ति, वहुमान करतो रहिये ॥२३॥ (घग्घो घरट पलाएयोजाय) अरे जीव तुं घरको धंधो आरंभ समारंभरूप भार सेती रातदिन पलाएयो थको डुख भोगवेहैं । इस डुख सेती गुरूमहाराज छोडावेगा ॥२४॥ (ननि ड आमण दूमणो) परंतु संसारका डुख मिटानेंकों गुरुमहाराज पांच अणुव्रत, (अथवा) पांच महव्रतरूप, अभिग्रह नियमादिक अंगीकार कराया होय । उस व्रतोंकों पालन करनेंमें आमण दूमणो (अर्थात्) पश्चात्ताप मति करजे ॥ २५ ॥ (चचा चितनी चोंपडी) निरंतर गुरुदत्त चारित्र धर्म पालनेंको चितमें चोंप राखजे ॥ २६ ॥ (छछा विद्या पोटलो) छद्मस्थपणामें चारित्र पालतां, गुरूकेपास श्रुतज्ञान चउदपूर्वका वहुत अभ्यास करके विद्याको पोटलो वांधिये (अर्थात्) विद्याको संचय करजे ॥२७॥ (जज्जो जे शल वाणिज) क० विद्याको संचय करतां, मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यादंशण शल्य, रूप तीन वैरियोंको दिलसें दूर करनेंका वणिज वोपार करजे ॥ २८ ॥ झझो झारी सारिखो) क० निरंतर झारीके समान स्वभाव धारन करजे (जैसें) जल भरनेंकी झारी होती है जिसका मुंहतो सांकमा होताहै । और पेट मोटा होताहै ॥ (तैसें) तुं पिण मुहकों संकोचमें रखिये (अर्थात्) वेविचारसें असत्य मर्मभेदक वचन मतवोलिये (और) पेट मोटो रखजे । सर्व कीवात पेटमें धारन करजे ॥ २९ ॥ न नीयो खांमोचांदे) क० अर्द्धचंद्रके समान लोकके चोटीके स्थानक सिद्ध शिलाहै । उहां जानेकेवास्ते निरंतर उद्यम करतो रहजे ॥ ३० ॥ (टट्टा पोली खांडेपु): व्रत

पच्चक्खाण रूप प्रौल दरवाजेकों दृढ राखिजे (अर्थात्) जो गुरूकेपास व्रत पच्चखाण धारन किया (वा) करै। सो निश्चल चित्तसें पालिये। जाव जीव खंमनमति करजे ॥ ३० ॥ (ढ्ढा ढोवरगाडुढ) क० तुं भागा हुवा घमाकेसमान मति हुइए (अर्थात्) गुरूके दीवीभई शिख्यारूप जलकुं हृदयरूप घटमें स्थिर राखिजे ॥ ३२ ॥ (मम्मा मामर गांठ) तुं बाह्यसें फूटा आमंवर करके अभ्यंतर कर्म्मकी गांठ मति बांधजे ॥३३॥ (ढद्वा श्वानको पुंढमो) क० स्वानकै पूंढडा समान वक्र स्वभाव धारन मत करजे ॥ ३४ ॥ णाणो ताणो सेले) क० ग्यान, दर्शन, चारित्र, (तथा) त्रिण गुप्तिरूप शेला हाथमें लेके मोहराजाकेसाथ युद्ध करजे ॥ ३५ ॥ (तत्तो तावै तेले) क० तप, जप, करतां कोईका कठोर वचन सुनके तपा हुवा तेलकीपरै क्रोधसें तप्तवान् मति हुइए (क्युंकि) क्रोमवरस तपस्या करी भई। क्रोधादिकषाय संजोग खिणमे निःफल होजातीहै। इससेती कषायादिकसें दिलकों तप्त मति करजे ॥ ३६ ॥ (थत्था थिर तन बोल) क० कदाचित् थारो, मन, एकस्थान न रह सके (तथापि) वचन, काया कोंतो थिर रखजे (अर्थात्) वचन कायासें कुकर्ममति करजे ॥ ३७ ॥ दद्दीयो दीवटो) क० हृदयरूप अपनें घरमें समकितरूप दीपक अखंम रखजे (क्युंकि) दर्शन सहचारी ज्ञान है। ज्ञान सहचारी दर्शन है (यह) दर्शन, ज्ञानके, अखंम ज्योतसें संपूर्ण धर्ममार्ग प्रकाश होता रहेगा (यडुक्तं) दानं दया दमद्रीणां। दर्शनं दैवपूजनं। दकारापंचकुर्वंति। दुर्गतिं नैवगच्छति ॥ ३८ ॥ (धद्धीयो धाणको) क० परिग्रहादि संचयकारक। नरक निगोदादि दुःखदायक। आर्त्तध्यान, रोद्रध्यानकों दूरकरके। शिवसुखदायक धर्मध्यान, शुल्कध्यान, दिलमें धारन करजे ॥ ३९ ॥ (ननियो पुलायरो) क० निरंतर जीवास्तिक बुद्धी धारनकरके नास्तिक मति दूरकरजे (अर्थात्) नास्तिक बुद्धीकों दूर करके समकित निर्मल करजे ॥ ४० ॥ (पप्पा पोली पाटं) क०। पाप आनेंका पांच आश्रवद्वारकों संवररूप कपाट लगाके बंधरखिये (परंतु) खुला मतरखिये। जो पांच आश्रवद्वारकों खुला रखेगा तो अठारै पापस्थानक रूप चौर। थारै हृदयरूप घरमें आयके धर्म धनकों नाशकर दैगा ॥ ४१ ॥ (फप्फा फगमे जोडे जाय) क० मिथ्यामत फा

सीमें फसानेवाले । अविनीत, अनाचारी,एकांती, पुरुषोंकी संगत करैगा (तो) तेरा धर्मधन छीनके हीनगतिमें भमावैगा (इससें) दुष्ट अधर्मी जनकी संगत मति करजे ॥ ४२ ॥ (बब्बा मांहे चांदणो) क० हृदयरूप घरमें बोध बीज गुणकी वृद्धी करजे । बोधबीजकी वृद्धी होनेसें चंद्रकलावत् दिन दिन ज्ञानका प्रकाश वृद्धीमान् होता रहैगा ॥ ४४ ॥ (भभ्भो भारी भेंसको) कंद, मूल, मांश, मदरादि, अभक्ष, अनंतकायादिक, भक्षण क रके भेंसाकी तरै पुष्ट शरीर मति करजे (जो मांश मदरादिक अभक्ष वस्तु भक्षण करैगा (और) वे अर्थ अनंत जीवोंका घाण करैगा (तो) अं तमें महादुःखदायक नरक निगोदादिक गतियोंमें परिभ्रमण करता महा दुःखी होगा (तथा, भभीयो भाट चूलेतरो) क० जैसें भभ्भुंजेकै चूलेकी भाट धगधगती जलती रहतीहै (इसीतरै) तुं व्रत नियम पालतां तपस्या करतां कोईका आक्रोश असह्य मर्म वेधाला वचन सुनके। कषायाग्निसें आत्माकों तप्तवान् मतिकरजे (कदाचित्) क्रोधादिक अग्निसें आत्मा त प्तवान होय (तो) उपशम क्षमादिक गुणरूप जलसें शीतल करजे (परंतु) कषायाग्निकों वधनें मति दीजे । चार कषाय जीवकों महादुःख दायक है (यदुक्तं) कोहोपीइपणासेइ । मानो विनयनासणो । मायामि त्ताणि नासेइ । लोहो सव्वविणासणो ॥ १ ॥-॥ ४४ ॥ ※ ॥ (ममयीयो मोचक) क्षमादिक गुण धारके अष्टकर्मको मुक्त करजे (अर्थात्) अ ष्टकर्मका क्षय करजे । मोक्षमार्गका आदर करजे ॥ ४५ ॥ (ययीयोजामो पेटको) कृतांत कर्मरूप यमराजको पेट मोटो है । जगत्र जीवांको ग्रास करताहै (तोभी) काल, जीवांकों भक्षण करनेंमें अप्रमादी रहता है (इस सेती) कालयमराजको जीवमें भय रखके। जिनधर्मको अप्रमादी होके सेवन करता रहना ॥ ४६ ॥ (रायरो कटारमल्ल) राग, तथा द्वेष यह दोनुं मोह राजाका मोटा मल्ल है (यह) दोनुं मल्लकों जीतेगा तो केवल ज्ञान पायके संसार कर्मसें मोक्ष होगा ॥ ४७ ॥ (लल्ला घोमो लात वावे) तथा तुं लोभरूप घोडाके लातसें दूर रहजे । जो लोभ घोमापर वडत चढैगा तोतेरैकुं भववनमें ऐसा भमावैगा (कितुं) बेरे वेर जन्म मरण कुगतीमें करतां महादुःख पावेगा (लोभमलानि पापानि) सर्व पापकामूल

अति लोभ है (इससें) अतिलोभसें सदा दूर रहजे। संतोषात्परं सुखं इति तत्वं ॥ ४८ ॥ (वव्वा विंगण वासदे) तथा अपना मन मंदरमें विवेकादिक गुण समूहकों रैवास दीजे (परंतु) निर्विवेकसें कामादिक विंग दूषणको निवासमत दीजे (जो) कामादिक व्यंग चोरोंकुं मन मंदरमें रक्खेगा (तो) तुमारा आत्मगुण सर्वकों विछिन्न कर देगा ॥ ४९ ॥ (शशाकोटा मरफिया) जैसें शिशिला जिनावर कोट नाम अपनी नशकों कांनोंसें ढकके गलियार हुवा थका पड्या रहै। तव कोईवेर अकस्मात् पारधी आयके गलामरोड मार देताहै (इसीतरै) तुं आलस्यादि १३ काठियादिक केवस गलियारहोके अपना धर्मकृत्यकों मत छोडिये (जो) अपना अवश्य धर्मकृत्य छोडके आलश्यादिकमें गलियार होगा (तो) अकस्मात् कालरूप पारधी मारके नरक निगोदादिक डुर्गतिमें पोंहचावैगा ॥ ५० ॥ (षषा खूणेंचीरिया) कभी प्रछन्नपणें खूणेंमेंभी वैठके अपना व्रतादिक धारन किया हुवाकुं दूषण मत लगाइये, सत्य वोलजे, झूठ कभी मत वोलजे। जो व्रतादिककों दूषण लगावैगा (और) असत्य वोलैगा तो क्रमसें सर्व आत्मगुण चलाजायगा (जेसे) कोथला धानका भरा हुवा होय उसका एक तरफ खुणा फाटणेंसें क्रमसें सर्वधान निकल जाता है (तैसे) एक असत्यके वोलनेंसें सर्व व्रत गुण चला जाता है (इहां) वसु राजाका दृष्टांत चित्तमें भावन करजे ॥ ५१ ॥ (सारसेर दंती) तथा सत्य शील संतोषादिक गुण धारन करके। मोहराजाकी सेन्याकेसाथ युद्ध करजे। और युद्ध करतां दंती नाम हस्तीकी परै साहसीक रहजे। कायरहोके पीछापग मतदीजे। मिथ्यात्वका क्षय करजे ॥ ५२ ॥ हाहोलो हरिणेकलो) जैसें हिरण, पारधी आहेडीकों देखके तत्काल दूर भाग जाताहै (इसीतरै) मोहरूप पारधीकों देखके दूर भागिये (परंतु) मोहपारधीके फासमें मत पडिये (जो) फासमें पडेगा तो संसारवंधनसें कभी छूटेगा नहीं ॥ ५३ ॥ (लावै लछी दोपणिहार) जो तुं मोक्षका अभिलाखी होके संसारवंधनका छेदन करेगा (तो) द्रव्य, भाव दोनुं प्रकारकी लक्ष्मी थारै पणिहार मुजव वनी रहेगा (जैसें) भरतजी अनुत्तरादिक उत्कृष्ट देवसुख तथा चक्रवर्त्ति आदिक उत्कृष्ट मनुष्य भवरूप द्रव्य लक्ष्मीको भोगके सिद्धरूप

नावलक्ष्मीकों नोगवनेंवाला हुवा (तैसें) तुं पिण दोनुं लक्ष्मीकों नोगवनें वाला होगा। अब सिद्धका सुख कोनप्रकारसें प्राप्त होय सो कहतेहैं॥५४॥ (खमिया खाटक मोर, गलेघताउ मोर, पालेबाधा दो चोर) प्राणाति पाता दि रात्री नोजनपर्यंत खट्व्रत रूपमोर सर्वे गलेमें धारके। खट् कायजीवोंकी दया पालना (और) रागद्वेषरूप चोरांकुं बांधके अंतमें क्षय करना (क्युंकि) रागद्वेष चौर है सो ग्यानादिक संपूर्ण गुणोंका चोरनेंवाला है (जिसदिन) रागद्वेपरूप दोनुं चोरुंकाक्षय करके चार घनघाती कर्मोका क्षय करैगा (उसीदिन) तेरेकों लोकालोक प्रकाशक केवल ग्यान उत्पन्न होगा (पीछे) शेशरहा चार कर्मका क्षय करकै अक्षय सुख सिद्धि अवस्थाकों प्राप्त होगा ॥ ५५ ॥ ※ ॥ (मंगल महाश्री, देविद्यापरमेश्वरी) सिद्धिस्थानमें जानेंसें परम मंगलीकरूप नावलक्ष्मीका नरतार होगा (अर्थात्) अपना आत्मगुण अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अगुरुलघु, अरूपी, अखंड, अव्यय, अजर, अमर, अविनाशी, परमानंदरूप, नावल क्ष्मीकों सादि अनंतनांगै अनंतसुख नोगवता रहेगा (इसवास्ते) जिनधर्मकुं सुनतो, पढतो, धारतो, पालतो, हरहमेश रहिये और नीतिमुजब चलजे (ज्युं) तेरा दिन दिन तपतेज वधता रहेगा ॥ ※ ॥ इसीतरें क्रमसें चारुं वर्णकों लिखना पढनादि अनेक तरेंकी कला उपाध्याय जैनपंमित सि खावै। ब्राह्मणकों वेदविद्या धर्मशास्त्र पढावै ॥ (क्षत्रीकों) धर्मकृत्य आ युर्वेद। धनुर्वेद। दंमनीति। आजीविकादि विद्या पढावै ॥ (वैश्यकों) धर्म कृत्य शास्त्र, । नीतिशास्त्र। गणितशास्त्र आजीविकादि विद्यापढावै ॥ (सुद्रकों) नीति, गणित, धर्मकृत्य, आजीवकादि कला पढावै ॥ इसीतरै लमकेकों म होत्सव संयुक्त जैनपाठशाला लायके आचार्य उपाध्यायादि जैन पंमितके पास प्रथम विद्याध्ययन प्रारंन कराके पीछै महोत्सवादियुक्त अपने घरजावै। जैन पंडिताकों यथाशक्ति द्रव्यादि दान देवै। साधु गुरुकों सुद्ध आहार वस्त्रादिक दान देवै। ज्ञान वृद्धी करै पुस्तकादि दान सर्व पाठशालाका लेशा लियानें देवै ॥ (संस्कारोपकरणं संग्रहीत श्लोकः) ॥ पौष्टिकस्योपकरणं। गीतं वादित्रमेवच। मंत्रोपदेशः पाठस्य। संस्कार वस्तु संग्रह ॥ ※ ॥ इत्यु पाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः पंमित मोहनलालमुनिः आचारग्रंथात्संग्रहे।

कृते आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाशे त्रयोदशम पाठशाला महोत्सव विद्यारंभ संस्कार संपूर्णम् ॥ ※ ॥ १३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्दशम विवाह संस्कारविधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इस जगत्के वीच जिसका कुल (और) शील समान होय उसीका परस्पर विवाह होताहै (उक्तंच) ययो रेव समंशीलं । ययौरेव समं कुलं । तयोर्मैत्री विवाहश्च । नतुपुष्ट विपुष्टयो ॥ १ ॥ (इससें) प्रथम वर कन्या, दोनुंका कुल, शील, जाति, देश, कृत्य, धर्म, समान देखके विवाह करना चाहियै (तथा) । वर, कन्या, जिसका विक्रित कुल होय । उसका त्याग करै ॥ अव विक्रितकुलका लक्षण देखातेहै ॥ जिस कन्याका पिताके रोम वहुत होय । हरस रोग होय । वहुत खाटरा होय । खर्जरोग होय । स्वेतकुष्टि नेत्र उदर आदिका मोटा रोग होय । ऐसे कुलकी कन्या ग्रहण न करै ॥ अव विक्रित कन्याका लक्षण कहतेहै ॥ जिस कन्याका कोईभी अंग न्यून अधिक होय । दूषणयुक्त होय । ऊर्ध्वदृष्टि होय । मोटे कोई रोग होय । कपिलादि कुत्सितवर्ण होय । जिसका हस्तफरस (वा) वचन प्यारा नलगता होय । (तथा) देवताका । ऋषियोंका, नदीका, अग्निका, वृक्षका ॥ कन्याका नाम रख्या होय (जैसै) लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, यमुना मथुरा, इत्यादि नाम होय । सरीरमें रोम वहुत होय । नेत्र पीला होय । घर्घरी स्वरसें वोलती होय । ऐसी कन्याकों निर्विकार कुलवाला ग्रहण न करै ॥ अव वरका विक्रितकुल देखातेहै ॥ हीन कुल होय । दारिद्र्ययुक्त होय । सातव्यशनयुक्त होय । मातापितादिकके सरीरमें मोटा रोग होय । कुलमें मिनष अल्प होय । ऐसे कुलमें कन्या न देवै ॥ अव विक्रित पुरषका लक्षण देखातेहै ॥ मूर्ख होय । निर्धन होय । दूरदेशांतर रहता होय । सूर वीर होय । मोक्षाभिलाषी तपस्वी होय । कन्याके वर्षासें त्रिगुणावरष उपरांत होय । मोटो रोग कोई होय । ऐसा वरकों उत्तम निर्दूषित कन्या न देवै ॥ अव विशेष कहतेहै ॥ (जो) वर, कन्या, दोनुंका निर्विकार कुल होय तो विवाह संवंध करै । (अथवा) दोनुंका सविकार कुल होय तो विवाहका संवंध करै ॥ (पुनः) वर, कन्याके परस्पर पांचप्रकारकी शुद्धिकों देखके संयोग करना चाहिये ॥ सो पांच प्रकार कहतेहैं ॥ राशीमेल देखना १ ॥ योनिमेल देखना २ ॥

नाडीमेल देखना ३॥ गणमेल देखना ४॥ वर्गमेल देखना ५॥ (पुनः) वरका ७ गुण देखना सो कहतेहै ॥ कुल अच्छा होय १॥ शीलस्वभाव अच्छा होय २॥ कोईभी श्रीमंतकी जिसके सहायता होय ३॥ विद्यावंत होय ४॥ धनवान ५॥ सुंदर शरीर अंगोपांग होय ६॥ वय छोटी होय ७॥ यह ७ गुणकों देखके कन्या दान करना। उपरांत कन्याका भाग होय सो काम आवे ॥ गर्भाधानसें ८ आठमा वरपसें इग्यारमा वरषपर्यंत कन्याका विवाह करदेना चाहिये (इस युगमें) बारमा वरष उपरांत कन्याकों रजस्वला संज्ञाहै (जो तपमें कहाहै) अष्टवर्षा भवेत्गौरी। नववर्षाच रोहणी। दशवर्षा भवेत् कन्या। ततऊर्ध्व रजस्वला ॥ १ ॥ बारमा वर्षसें उपरांत कन्याका विवाहमें मुहूर्त्तादिकका काम नहिं। उच्छव कियेबिगर एक चंद्रवलकों देखके विवाह कर देना (और) पुरषका १८ वरष उपरांत विवाह करना चाहिये (जो) छोटी अवस्थामें विवाह करै (तो) शरीर विद्यासंवंधी हानी होय ॥ ※ ॥ विवाह दोप्रकार केहैं। आर्य १ अनार्य २- (आर्यके ४ भेद) ब्राह्म १। प्राजापत्य २। आर्ष ३। दैवत ४। यह चार प्रकारके धार्मिक विवाह सोतो मातापिताकी आज्ञासेंहोतेहै ॥ (अनार्यके ४ भेद) गांधर्व १। असुर २। राक्षस ३। पैशाच ४। यह ४ प्रकारके पापविवाह सो वरकन्याकी स्वेछासें होतेहै ॥ ब्राह्मविवाह विधीके लक्षण देखातेहै ॥ शुभदिने। शुभलग्ने। पूर्वोक्त गुणयुक्त वरकुं बोलायके स्नानालंकृतयुक्त करके। अलंकारसहित कन्याका दान करै ॥ (मंत्रोयथा) ॥ ॐ अर्हं सर्व गुणाय। सर्व विद्याय। सर्व सुखाय। सर्व पुजताय। सर्व शोभनायतु। सवस्त्र गंध माल्यालंकारालंकृतां कन्यां ददामि। प्रतिगृह्णीष्व भद्रंभव। अर्हं ॐ ॥※॥ इ मंत्रेण वस्त्रांचलौ दंपती स्वगृहं गच्छंतः ॥ यह ब्राह्मविवाह कहा ॥१॥ अरु प्राजापत्य विवाह जगतमें प्रसिध्द है। उसीकाहीज व्यवहार चलताहै उसीका लक्षण आगे कहेंगे ॥ २ वनमें रहे ऊवे वानप्रस्थमुनि गृहस्थकी कन्याकुं परणीजतेहै। इस विवाहके मंत्र जैनके वेदमें नहीहै। किसवास्ते कि जैनमें मुनीयोंका विवाह अकल्पनी कहे ॥ ३ ॥ दैवत विवाहकेलक्षण—पिता आपके पुरोहित इष्ट व्रतकर्मके करनेवारेकुं आपकी कन्या दक्षिणाकी परें देवै ॥ ४ ॥ यह ४ धार्मिक विवाहके लक्षण कहे ॥—अब पापविवाहके लक्षण देखातेहै ॥ मातापिताकी

अप्रीतिसें (अरु) वरकन्याकी परस्पर प्रीतिसें होना (सो) गांधर्व विवाह कहिए ॥ १ ॥ पिता वरकेपास पण बंधकरै । हम तुमारेपास अमुक वस्तुकुं लेगे । ऐसा निश्चय करके कन्यादेनी । वोआसुरी विवाह कहिये ॥२॥ हठकरकें कन्या ग्रहण करना । सो राक्षसी विवाह कहिये ॥ ३ ॥ मदोन्मत्त कन्याकों करके उसका ग्रहण करना सो पैशाचिक विवाह कहिये ॥ ४ ॥ इस चारकों पापविवाह कहतेहै । माता, पिता, गुरूकी आज्ञा रहत पणासें (और) ब्राह्म १॥ आर्ष २॥ दैवत ३॥ ए तीन विवाह कलयुग डुखमा कालमें प्रवर्त्तमान नहिं है (और) चारेपाप विवाहमें अधर्मत्वपणेंसें वेदोक्त विधि नहीं है ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अब प्राजापत्य विवाहकी विधि विस्तारसें लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम वरकन्याके नामसें विवाह योग्य शुभ मुहूर्त्त देखके विवाहसें कईदिन पहले वरकन्या दोनुंपक्षके सर्व स्वजन संबंधी इकठे होके अपना जोतषी गृहीगुरूकों उत्तमासनपर बैठायके उसीके हाथसें विवाहलग्न लिखावै । (पीछे) उस लग्नकों रुप्य सुवर्ण मुद्रासें (तथा) फल पुष्प, दुर्वादिकसें, जन्मलग्नकीतरै पूजन करावै (तदनंतर) वर, कन्या दोनुं पक्षके वृद्धपुरुष अपना जोतषी गुरूकों वस्त्र, अलंकार, तांबूलादिक यथाशक्ति दान देवै (पीछे) कन्याके कुलमें जो वृद्धपुरुष होय (सो) वरके कुलमें वृद्धपुरुषकों नालेर, सोपारी, व्रीही, दूर्वा, हरिद्रादानसें (और) स्वस्वदेश कुलोचित आचारसें कन्या दान करै तब गृह्यगुरू ऐसा वेदमंत्र पढै ॥ ॐ अर्हं परम सौभाग्याय । परमसुखाय । परमभोगाय । परमधर्माय । परमयशसे । परमसंतानाय । भोगोप भोगांतराय व्यवच्छेदाय । इमां अमुक नाम्नी कन्यां । अमुक गोत्रां । अमुक नाम्ने वराय । अमुक गोत्राय । ददाति । प्रतिग्रहाण अर्हं ॐ ॥ इसीतरै वर कन्याको प्रथम विवाह संबंध करै ॥ विवाहसंबंध हुए पीछे विवाहतो कितनाही दिन पीछे होताहै । परंतु कन्याको पिता कन्याको दान जिसकेनामें कर चूको उसीकों परणावै । उसीकों छोडके कोई प्रकारका लोभ वस होकर दूसरेकों संबंध करी हुई कन्या नहिं दे शक्ताहै (उक्तंच) शकृज्जल्पंति राजानः । शकृज्जल्पंति साधवः । शकृत् कन्या प्रदीयंते । त्रएयेतानिशकृत् शकृत् ॥ १ ॥ (तथा)

वरके घरसें वस्त्र, आभरण, सुगंधी वस्तु, कांगसी, इत्यादिक वस्तु भेजें तदनन्तर स हित कन्याके घरकों भेजें (पीछे) कन्याको पिता कुटुंबसहित वरकों भोजन करावें। यथाशक्ति वस्त्राभरणादि दान देवें ॥ ※ ॥ इति विवाहसंबंध विधिः ॥

॥※॥ अथ विवाहके प्रथम कार्य करनेकी विधिः ॥ २॥

॥ ※ ॥ विवाहके प्रथम १५ (वा) १३ (वा) ११ (वा) ९ (वा) ७ दिवस पहले शुभ महूर्त्त । वधु, वरके घरमें । मंगलीकगीत वाजित्र वादन पूर्वक तैलाभिषेक स्नान विवाह पर्यंत नित्य करनेका प्रारंभ करै (प्रथम) तैलाभिषेकदिने वरके घरसें । कन्याके घरकुं । तेल, कांगसी, गंधवस्तु, द्राक्षादिखाद्यवस्तु (तथा) शुभ फल पुष्पादिक भेजावें । सर्व कुटंबके पुरुषस्त्रीयां इकठे होके । वरपक्षी कन्याके घरकुं । (और) कन्यापक्षी वरके घरकुं, तेलादि पूर्वोक्त वस्तु लेके आवै— जवतेल धान्यादि लानेंवाली स्त्रीयांकों वधू, वरके घरकी, वृद्धस्त्रीयां मालपूवादिक पक्वान्न भोजन करावें ॥ अत्र विवाहादिविधि देशाचार, कुलाचार, सें करावै (तथा) तैलाभिषेक । कुलकर, गणेशादि स्थापन । कंकणबंध । और विवाहोपचा रादिक सर्व वधु, वरके, चंद्र बलकुं देखके वैवाहिक नक्षत्रमें करावें—और धूलिभक्त, सौभाग्यजलानयन । प्रभृतिकर्म मंगलीक गीत वाजित्र सहित देशाचार कुलाचारसें करावै ॥ कोरा मृत्तिकाके पात्रमें वर, कन्या, दोनुंके घरांमें । यव धान्यको वपनकरावै (फिरगृहीगुरुः) कन्याके घरमें पूर्वेपष्टी संस्कारमें कह्यै मुजव विधिसें । मातृकादेव्योंकी स्थापना करावै (और) वरके घरमें जैसें परसमय अनुसार चलनेंवाले गणपति (तथा) काम देवकी स्थापना करतेहैं । (तैसें) जिनमतानुसार चलनेवालोंके घरोंमें । मातृका देव्योंकी (तथा) सात कुलकरोंकी स्थापना करावै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ सप्त कुलकर स्थापनविधि लिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गृहगुरू भूमिपर पंचाङ्गवा गोमय लेके पृथ्वीकुं शुद्ध करके तिनपर स्वर्णमय वा रूप्यमय वा ताम्रमय अथवा श्रीपर्णि वृक्षके काष्टमय पट्टक स्थापना करना ॥ पट्टक स्थापनमंत्र ॥※॥ ॐ आधारायनमः । आधार शक्तयेनमः । आसनायनमः । (इस मंत्रकुं) सात वार जपके पट्टस्थापित करै

(पीछे) तिस पट्टकुं ॐ अमृते अमृतोद्भवे० इस मंत्र करकें तीर्थके जलसें अभिषेक करै। चंदना कृत दूर्वासें पट्टकी पूजन करै (ततःआदौ) ॐ नमः प्रथम कुलकराय। कांचनवर्णाय। श्यामवर्ण चंद्रयशाप्रियतमा सहिताय। हाकारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय। विमलवाहनाभिधानाय। इह विवाह महोत्सवादौ आगच्छ २। इहस्थाने तिष्ट २। सन्निहितोभव २। क्षेमदोभव २। उत्सवदोभव २। आनंददोभव २। भोगदोभव २। कीर्त्तिदोभव २। अपत्यसंतानदोभव २। स्नेहदोभव २। राज्यदोभव २। अर्घं पाद्यं चरुंआचमनीयं गृहाण २। सर्वोपचारान् गृहाण २। (ततः) ॐ गंधायनमः। ॐ पुष्पायनमः। ॐ धूपायनमः। ॐ दीपायनमः। ॐ उपवीतायनमः। ॐ भूषणायनमः। ॐ नैवेद्यायनमः। ॐ तांबूलायनमः। पूर्वमंत्रेण आहूय संस्थाप्य सन्निधिकृत्य अर्घ पाद्य वलि चर्चाचमनीयदानं दद्यात्। अपरैः ॐ कारादिभिर्मंत्रै गंधतिलकद्वयं, नैवेद्यद्वयं, तांवूलद्वयं, दद्यात् ॥ १ ॥ ॥ (तदनंतर वीजे स्थानमें) ॐ नमोद्वितीयकुलकराय। श्यामवर्णाय। चंद्रकांताप्रियतमासहिताय। हाकारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय चक्षुष्मानभिधानाय इह विवाह महोत्सवे शेषंपूर्ववत् ॥ २ ॥ ॐ नमः तृतीयकुलकराय। श्यामवर्णाय। सुरूपाप्रियतमासहिताय। हाकारमात्रस्थापितन्याय्यपथाय। यशस्मानभिधानाय (शेषंपूर्ववत्) ॥ ३ ॥ ॐनमः चतुर्थ कुलकराय। स्वेतवर्णाय। श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय। माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय। अभिचंद्राभिधानाय (शेषंपूर्ववत्) ॥ ४ ॥ ॐनमः पंचमकुलकराय। श्यामवर्णश्चक्षुः कांताप्रियतमासहिताय। धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय। प्रसेनजितूअभिधानाय (शेषंपूर्ववत् ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॐनमः षष्टमकुलकराय। स्वर्णवर्णाय। श्यामवर्णश्रीकांता प्रियतमा सहताय। धिक्कार मात्र ख्यापित न्याय्य पथाय। मरुदेवा भिधानाय। (शेषंपूर्ववत् ॥ ६ ॥ ॐनमः सप्तमकुल कराय। कांचन वर्णाय। श्यामवर्ण मरुदेवा प्रियतमा सहिताय। धिक्कारमात्र ख्यापित न्याय्य पथाय। नाभ्यभिधानाय। (शेषंपूर्ववत् ॥ ७ ॥ इसीतरै सप्तकुलकरकी स्थापना करावै (सा) स्थापना विवाह हुये पीछे सात दिन पर्यंत रखा वै (पीछे) वरके घरमें शांतिक पौष्टिक पाठ कर्म करै॥ (यदि ग्रामांतरे नगरांतरे देशांतरे वर होय तिसकी आविधिहै—प्रथम दिवसे मातृपूजा पूर्वक सर्वज्ञा

तिजनाकु भोजन देवै। (दूसरे दिवस) वर अठीतरे स्नान करे । चंदनादिकको लेपन करे। वस्त्र, गंध, मालालंकृत। किरीटभूषितः मस्तक होके अश्वारूढ (वा) गजाधिरूढ (वा) पालखीपर बेसकें चले । तिसके समीप। संबंधि जन अच्छे वस्त्रकुं धारण करकें। हर्षसहित पान भक्षणकर्त्ते थके। स्वसंपदानुसारै तुरंगाधिरूढ होके (अथवा) पदाति होके वरके साथ चलें (ओर) वरके दोनुं पार्श्वमें मंगलीक गीत गाती थकी ज्ञातीकी स्त्रियां चाले (अपर गृह्य गुरु) ब्राह्मणादिक शांतिमंत्रकुं पाठ करता थका चाले॥

॥※॥ शांतिमंत्र लिखतेहैं ॥※॥

॥※॥ ॐ अर्हं आदिमोऽर्हत्। आदिमोनृपः। आदिमोदाता । आदिमोनियंता । आदिमोगुरुः। आदिमःश्रेष्ठः। आदिमोभर्त्ता । आदिमोजयी । आदिमोनयी। आदिमःशिल्पी । आदिमोविद्वान् । आदिमोजल्पाकः। आदिमःशास्ता । आदिमोरौद्रः। आदिमःसौम्यः। आदिमःकाम्यः। आदिमःशरण्यः। आदिमोदाता। आदिमोवंद्यः। आदिमस्तुत्यः। आदिमोज्ञेयः। आदिमोध्येयः। आदिमोभोक्ता । आदिमःसोढा । आदिमएकः। आदिमोऽनेकः। आदिमःस्थूलः। आदिमःकर्म्मवान् । आदिमोऽकर्म्मा । आदिमोधर्म्मवित् । आदिमोऽनुष्ठेयः। आदिमोऽनुष्ठाता। आदिमःसहजः। आदिमोदशावान्। आदिमःसकलत्र। आदिमः कुशलः । आदिमोविवोढा । आदिमःस्थापकः। आदिमोज्ञापकः। आदिमोविदुरः। आदिमःकुशलः । आदिमोवैज्ञानिकः। आदिमःसेव्यः। आदिमोगम्यः। आदिमोविमृश्यः । आदिमोविमर्शा। सुरासुरनरोरगप्रणतः। प्राप्तविमलकेवलो योगीयते सकल प्राणिगणहितः। दयालुः। परोपेक्षारहितः। परात्मा। परंज्योतिः। परब्रह्म। परमैश्वर्य भाक् । परंपरः । अपरंपरः जगदुत्तमः ।सर्वगः। सर्ववित्। सर्वजित्। सर्वीयः। सर्वप्रशस्यः। सर्ववंद्यः। सर्वपूज्यः। सर्वात्मा असंसारः अव्ययोवार्यवीर्यः। श्रीसंश्रयः श्रेयः संश्रयः विश्वावश्याय हृत् संशयहृतः। विश्वसारो। निरंजनो । निर्म्ममो । निःकलंको । निःपापः । निःपुण्यः। निर्म्मनाः निर्द्वन्द्वी। निरस्संशयो । निराधारो । निरवधिप्रमाण प्रमेय प्रमाता । जीवा जीवा श्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष प्रकाशकः। सएवभगवान् । शांतिंकरोतु । तुष्टिंकरोतु । पुष्टिंकरोतु । ऋद्धिंकरोतु । वृद्धिंकरोतु ।

सुखंकरोतु । सौख्यंकरोतु । लक्ष्मीकरोतु । अर्हं ॐ ॥ इसरीतसे आर्यवेद पाठी ब्राह्मण, वरके आगल चालै (पीछे) इसहीजविधिसें । महोत्सव करके स्वपरिपाटीसें गुरुवंदन, मंमलीपूजन, पुरदेवतादि पूजन करै । पीछे मार्गमें चालै (तैसें) इसहीज रीतिसें । कन्याधिष्ठित पुरमे पण प्रवेशविधेय करना ॥ (और) तिणहीजपुरमे विवाहके अर्थ चालते वरके पण यहहीज विधिहै (तथैव) नित्य स्नान कीये पीछे । स्त्रीपुरुषके शरीरका मान करै (पीछे) विवाहके दिन आयेसें विवाहका लसें प्रथम तिसहीज देशमे रहनेवाला (अथवा) अन्यदेशसें आया हुवा वर । तिसहीज पूर्वोक्तविधिसें पाणिग्रहणके अर्थ चले (जब) तिसवरकी भगिनी आदिक विशेषकरके लूण उतारे (इस रीतसे) वो वर, गृह्यगुरु सहित कन्याके घरकुं जावें । कन्याके द्वारपे जायके खमा रहे (उहां) सासू आके कपूर दीपादिकसें आरति करै (पीछे) दूसरी स्त्रीआयके मृन्मय पात्रमें जाज्वल्यमान अग्नीकुंलेके उसपर लूणकुंधरके वरके ऊपर तीनवेर फेरके, वरघरमे प्रवेशकरे, तिससमें वामभागमें धरे (पुनः) अन्या स्त्री, मंथान नेतरो कौसुंभवस्त्रसें अलंकृत करकें । तीनवेर वरके ललाटकुं स्पर्शकरै (पीछे) वर वाहनसें उतरके वामपादसें अग्निलवणयुक्त सरावसंपुटकुं खंमन करै (तदनंतर) वरकुं, श्वश्रू (अथवा) कन्याकी मांमी (वा) कन्याका मांमा । कौसुंभवस्त्रकुं वरके कंठमे स्थापित करके । वरकुं खेंचके, घरके भीतर लेजावे (पीछे) पूर्वाभिमुख आसनपर विभूषित होके । कौतुक मंगलादिक करके बेठी हुई । कन्याके वामपार्श्वे मातृका देवीके सन्मुख वरकुं वेसावें (पीछे) गृह्यगुरु लग्न वेलासमये । शुभनवमांशकुं देखके । चंदनके शर (अरु) पीसी हुई शमीकी त्वचा, पिप्पलकी त्वचा, मिश्रित करके स्त्री पुरुषका दक्षिणहस्तकुं युक्तकरे । (ऊपर) कौसुंभसूत्रसें बंधन करे ॥ ॥ हस्तबंधन मंत्रः ॥ ॥ ॐ अर्हं आत्मासि । जीवोसि । समकालोसि । समकर्मासि । समाश्रयोसि । समदेहोसि । समक्रियोसि । समस्नेहोसि । समचेष्टितोसि । समाभिलाषोसि । समेच्छोसि । समप्रमोदोसि । समविषादोसि । समवस्थोसि । समनिमित्तोसि । समवचोसि । समक्षुत्तृष्णोसि । समागमोसि । समविहारोसि । समविषयोसि समसब्दोसि । समरूपोसि । समरसोसि । सम

गंधोसि। समस्पर्शोसि। समेंद्रियोसि। समाश्रवोसि। समबंधोसि। समसंवरोसि। समनिर्ज्जरोसि। सममोक्षोसि। तदैकत्वमिदानीं अर्हं ॐ ॥※॥ इति हस्तबंधनमंत्रः॥ अन्यसमयांतरमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, लग्नसाधनसमये मधुपर्कका प्राशन (और) वरकुं गोयुग्मका दान। कन्याकुं वस्त्राभरणादिकका दान इत्यादिक कार्य करतेहें ॥※॥ पाणिग्रहण किये हुवे वर, वधू, मातृकाकेपास बेठेहें। उससमे कन्याके पक्षी वेदिरचना करे (जिसकी यहविधि) चोतरफ काष्टके स्तंभहे (और) ऊपर काष्टसें आच्छादित हें। ऐसे मंडपके वीचमें चतुःकोणा वेदिकरे। कितनेक कन्यापक्षी मनुष्य वेदीके चतुष्कोणमे सात सात कुंभस्थापित करतेहें। अनुक्रमसें सबके हेठेबमा। उनके ऊपर छोटा। ऊपर छोटेसें छोटा। कलश सुवर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय (अथवा) मृन्मयी लेके त्रिकोण वंशसें वंधन करे। मंडपके ४ द्वार करे ४ द्वारपर वस्त्रमय (वा) काष्टमय तोरण वांधे। आम्रके पत्रकी वंदरमाल वांधे। वीचमे त्रिकोण अग्निकुंभ करे (पीछे गृह्यगुरु) पूर्वोक्त वेषधारी वेदीकी प्रतिष्टा करें (तिसकी यहविधिः) वास, पुष्प अक्षत, परिपूर्ण हस्तहोके गुरु इसमंत्रकुंपढे ॥ ॐ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः इहविवाह मंडपे आगच्छ२। इह वलि परिभोगंगृह्ण २। भोगंदेहि। सुखंदेहि यशोदेहि। संततिंदेहि। ऋद्धिंदेहि। वृद्धिंदेहि। सर्वसमीहितंदेहि २ स्वाहा ॥※॥ (इस मंत्रकुं पढके) चारे कोणमें प्रत्येके वास, माला, अक्षत, रखावे--तोरणकी प्रतिष्टापण इसीजरीतिसें करावे॥ तिसके मंत्रः॥ ॐ ह्रीं नमो द्वारश्रियै। सर्व पूजिते। सर्व मानिते। सर्व प्रधाने। इह तोरणस्था सर्व समीहितं देहि २ स्वाहा॥ इति तोरणप्रतिष्टा॥ (तदनंतर) वेदिमध्ये त्रिकोण अग्निकुंभमे मंत्रपूर्वक अग्निकों स्थापित करें ॥※॥ अग्निस्थापनका मंत्र ॥※॥ ॐ रं रं रां रूं रौं रः। नमोऽग्नये। नमो वृहद्भानवे। नमोऽनंत तेजसे। नमोऽनंत वीर्याय। नमोऽनंत गुणाय। नमो हिरण्य तेजसे। नमो छागवाहनाय। नमो हव्याशनाय। अत्रकुंभे आगच्छ २। अवतर २। तिष्ट २ स्वाहा॥ अन्य मतमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, हस्त मेलन, वर वधू के वेदीकेपास कराते हें (और) कोइ देशकुलाचारसें ऐसें करते हें। मधुपर्क प्राशनके पीछे। हस्त मेलनके प्रथम। वर वधूकों परस्पर कुतूहल

कराते हैं। वो कुतूहल देश विशेषतः लोकांसें जान लेना। यह वार्त्ता शास्त्रोक्त नही है। इससें हमनें नहि लिखा (परंतु) सौभाग्यकी प्राप्तिके अर्थ (और) वरकुं वशीकरणके अर्थ करते हैं (तदनंतर) वर, वधू, हस्त मेलन करे हुये। नरनारीकी कटि आरूढ होके। गीत गावते मंमपके दक्षिण द्वारसें प्रवेश करके देशकुलाचारसें। काष्टके आसनपर (वा) चित्र विचित्र आसनपर (अथवा) सिंहासनपर पूर्वाभिमुख वर वधूकुं बेठावै वेदी कर्मके समय कुलाचारके अनुसारसें कोरा वस्त्र, कसुंबल वस्त्र (अरु) स्वाभाविक वस्त्र, स्वेत वस्त्र, वरवधूकुं देवै (तदनंतर गृह्य गुरुः) उत्तराभिमुख बेठके। मृगचर्मपर अग्नीकुं। शमी, पिप्पल- कपित्थ, कुटल, बिल्व, अमलक, इत्यादिकको काष्टसें प्रज्वलित करै। पीछे अग्निमें--घृत, मधु, तिल, यव, फलसें होम करै ॥ ॥ तिसके मंत्र ॥ ॥ ॐ अर्हं। ॐ अग्ने प्रसन्नः सावधानोभव। तवायमवसरः तदाहारय। इंद्रं, यमं, नैर्ऋतं, वरुणं, वायु कुबेरं, ईशानं, नागानं, ब्रह्माणं, लोकपालान्। ग्रहांश्च। सूर्य, शशि, कुज, सौम्य, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतून्, असुरांश्च, असुर नाग, सुपर्ण, विद्यु, दग्नि, द्वीपो, दधि. दिग्कुमारान्, भुवनपतीन्। पिशाच भूत यक्ष किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्वान् व्यंतरान्। चंद्रार्क ग्रह नक्षत्र तारकान्। ज्योतिष्कान्। सौधर्मेशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहश्रारान् आणत प्राणतारणाच्युत ग्रैवेयका नुत्तरभवान्। वैमानिकान्। इंद्र पार्षदसामानिक त्रायत्रिंसल्लोकपालानीक प्रकीर्णक। लोकांतिकाभियोगिक। भेदभिन्नां श्चतुर्णिकायान् अपि। सभार्यान्। सायुधबलवाहनान्। स्वस्तोपः लक्षितवहान्। अप्सरसश्च। परिग्रहीता,ऽपरिग्रहीता भेदभिन्नाः ससखीका सदासिकाः साभरणाः रुचिकवासिनी दिग्कुमारिकाश्च। सर्वाः समुद्र नदीः गिरि आकर वनदेवतास्तद्देवतान् सर्वांश्च इदमर्घ पाद्य माचमनीयं बलिं चरुं हुतं न्यस्तं ग्राहय २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हं ॐ॥ असें होम करनेसें अग्नीकुं प्रज्वलित करै (पीछे प्रसन्न होके गृह्य गुरुः। वरके दक्षिण पार्श्वमें स्थित कन्याकुं उठायके। वरके सन्मुख बेठायके (असें बोले) ॥ ॐ अर्हं इदमासन मध्यासीनौ स्वध्यासीनौ स्थितौ सुस्थितौ तदस्तु वांसनातनः संगमः अर्हं ॐ॥ असें मंत्रोच्चारण करके। दर्भके अग्रभागसें। तीर्थोदकसें वरवधू

का अभिषेक करें—(पीछें) वधूका पितामह दादा (अथवा) पिता (अथवा) काका (अथवा) भ्राता (अथवा) माता (अथवा) मामी (अथवा) कुलमें ज्येष्ट पुरुष । स्वधर्मानुष्ठान करके । अच्छे वस्त्राभरण पहिरके । वरवधूके आगे बेठें । (तदनंतर गृह्य गुरुः) ॐ नमो अर्हत् सिध्धाचार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्यः । ऐसें बोलके दूर्वाक्षत हस्तमे लेके । वधू वरके आगें वचन बोले । तुमारा दोनूका गोत्रादिक संबंध करनेसें हमने जाणा (परंतु) अब तुमारा दोनूंका गोत्र सबके सुनतें प्रकाशित करो (तब) प्रथम वरके पक्षी, आपके गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करै (पीछे) वरके मातृपक्षीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करें । (पुनः) कन्याके पक्षी स्वकीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करें (पीछे कन्याके मातृपक्षी गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयादिककुं प्रकाश करें ॥ (तदनंतर) गृह्य गुरु ऐसें वचनोच्चारण करें ॥ ॐ अर्हं अमुक गोत्रीय इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञाति। अमुकान्वयः। अमुक प्रपौत्रः। अमुक पौत्रः अमुक पुत्रः अमुक गोत्रीयः। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्रः अमुक गोत्रीयः इयत् प्रवरः अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रपौत्री अमुक पौत्री अमुक पुत्री अमुक गोत्रीय। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीय अमुकान्वयः अमुक प्रदोहित्री अमुक मात्रीय। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीय अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्री अमुका वधू । तदा तयोर्वर्या वरयो र्निर्विघ्नो विवाह संबंधोस्तु । शांतिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । बुद्धिरस्तु । धनसंतानवृद्धिरस्तु अर्हं ॐ (तदनंतर गृह्य गुरुः) वर वधूके पाससें गंध पुष्प धूप नैवेद्यादिकसें अग्नीकी पूजा करावे (पीछे) वर वधू चावलकी धाणि हाथमे लेके अग्नीमे प्रक्षेप करें (तदनंतर) पुनः वरकुं दक्षिणभागमें बेठावे । वधूकुं वामभागमें बेठायके गृह्यगुरु वेदके मंत्रकुं पढें—॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वं अनादिरात्मा अनादिकालः अनादिकर्म अनादिसंबंधो देहिनां वेदानुमतानुगतानां क्रोधाहंकार छद्म लोभैः संज्वलन प्रत्याख्यानाऽप्रत्याख्यानाऽनंतानुबंधिभिः शब्दरूप रसगंध स्पर्शैरिच्छापरि संकलितैः संबंधोऽनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हं ॐ ॥ ऐसें मंत्रकुं पढके गुरु फेर ऐसें कहें ॥ तदस्तु वां सिद्धप्र

त्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्निकाय देवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्नि प्रत्यक्षं नामप्रत्यक्ष नरनारीप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं गुरुप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्रातः सुबंधः सुसंगतः ॥ (पीछे) प्रदक्षिणा करो, अग्नीकी (अरु) सूर्यकी, ऐसें गृह्यगुरु वचनोच्चार करै तव गंठजोडा वंधे हुवे। दोनु वर वधु अग्निकी प्रदक्षिणा करे। प्रदक्षिणा करके पूर्वोक्त रीतीसें लाजधाणि हाथमें लिये थके वैठे। तीन प्रदक्षिणा करते वधू आगल रहे। वर पाछल रहै। दक्षिणभागमें वरका आसन। वामभागमें वधूका आसन ॥ इति प्रथम आजीकर्म ॥ वर वधूके आसनपर वेठे थके गुरु वेदमंत्रकुं पढै--॥ ॐ अर्हं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविम्रमस्ति दुर्छेयमस्ति अष्टाविंशति प्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति संज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्ति अनंतानुवंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति भयमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्तमस्ति सप्तति कोटाकोटि सागरस्थित्यस्ति अर्हं ॐ ॥ ऐसें वेदमंत्रकुं पढके पुनः ऐसा कहैं- तदस्तु वां निकाचित निविम्रवद्ध मोहनीयकर्मोदयकृतः स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंवद्धोस्तु आभवमक्षयोस्तु-॥ (फिर) अग्नीकी प्रदक्षिणा करो (तव) वरवधू पुनः अग्नीकी प्रदक्षिणा पूर्वोक्त रीतीसें करै ॥ इति द्वितीय लाजाकर्म ॥ चारेइ लाजाकर्ममें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वरवधू लाजकी मुष्टिकुं प्रक्षेप करै (तदनंतर) तिस दोनु वरवधूके बेठे थके। गुरु ऐसें वेदमंत्रकुं पढै॥ ॐ अर्हं कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातमस्ति सुपुंवेद्यं सातं। दुपुंवेद्यं असातं। सुवर्गणाश्रवणं सातं। दुवर्गणाश्रवणं असातं शुभपुद्गलदर्शनं सातं। दुःपुद्गलदर्शनं असातं। शुभषड्रसा स्वादनं सातं अशुभ पुद्गला स्वादनं असातं। शुभ पुद्गल स्पर्शनं सातं। अशुभ पुद्गल स्पर्शनं असातं। सर्वं सुखकृतं सातं। सर्वदुःखकृत असातं। अर्हं ॐ ॥ असें वेदमंत्रकुं पढके। पीछें असें कहैं—तदस्तु वां सातावेदनीयं माभूदसाता वेदनीयं तत्प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः। ऐसें गुरुवचन कहे। तब वरवधू पूर्वोक्तरीतसें अग्नीकी प्रदक्षिणा करके आसनपरबेठे ॥ इति तृतीय लाजाकर्म ॥ तदनंतर पुनः गृह्यगुरुः वेदके मंत्रकुं पढें ॥ ॐ अर्हं सहजोस्ति स्वभावोस्ति संबंधो

स्ति प्रतिबंधोस्ति मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति हेतुरस्ति आश्रवबद्धमस्ति क्रियाबद्धमस्ति कायबद्धमस्ति तदस्ति संसारिक संबंधः अर्हं ॐ ॥ ऐसें वेदमंत्रकुं गुरुः पढके कन्याका पिताके, अथवा काके के, अथवा भाइके, अथवा कुलमें ज्येष्ट होवे. तिसीके हाथमें । तिल यव कुश दुर्वा युक्त जलकुं देकें ऐसें कहै ॥ अद्य अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक मुहुर्ते पूर्वकर्मसंबंधानुबद्ध वस्त्र गंधमाल्यालंकृतां सुवर्ण रूप्य मणि भूषण भूषितां ददाति अयं प्रतिगृह्णीष्व । इति कथयित्वा । वर वधूके युक्त हाथके अंतर जलका निक्षेप करै । तदावर कहैं । प्रतिगृह्णामि । तव गुरुः कहैं । सुप्रति गृहीतास्तु । शांतिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु । ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु । धनसंतान वृद्धिरस्तु (तदनंतर) प्रथम तो तीनवेर अग्निकी प्रदक्षिणा करणसमें, वरका हस्त अधः था (अरु) कन्याका हस्त ऊपर था (अब) चोथी प्रदक्षिणासमें कन्याका हस्त अधः करना (और) वरका हस्त ऊपर करना (तदनंतर) वर वधू दोनुंको आसनसें उठाके । वरकुं आगल करना । वधूकुं पीछे करना । लाजकी मुष्टि अग्नीमें प्रक्षेप कराके । गृह्यगुरु कहे प्रदक्षिणा करो (तव) वर वधू अग्नीकी प्रदक्षिणा करै । तिसमें कन्याका पिता (यावत्) कुलका ज्येष्ट पुरुष । संपूर्ण वर वधूकुं देणे योग्य वस्तु । वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, दासी, गो, अश्व, पल्यंक, तूलिकोत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाक, भांम प्रभृति, सर्व वस्तु वेदीके भीतर बेठे हुवे वर वधूकों देवे (पीछे) ओरपण कन्याके बंधु संबंधि मित्रादिक स्वकीय संपदाके अनुसार पूर्वोक्त वस्तु वेदीके अंतर देवे (तदनंतर) वर वधू अग्नीकी चोथी प्रदक्षिणा देके पूर्वोक्त रीति सें आसनपर बेठे (इहां) वर जीमणेपासे । अरु । कन्या वाम पार्श्वे बेठे (तदनंतर) गृह्यगुरुः । कुश दूर्वा अक्षत सुगंधिवस्तु हाथमें लेकें ऐसें कहे येनाऽनुष्टानेना ह्यसोऽर्हन् शक्रादि देवकोटिपरिवृतो भोगाय संसारीजीव व्यवहार मार्गसंदर्शनाय । सुनंदा सुमंगले पर्याणैपीत । ज्ञातमज्ञातं वा तदनुष्टान नुष्टितमस्तु ऐसे वचनकहे (पीछे) वास दूर्वाक्षत कुशान् वर वधूके मस्तकपर प्रक्षेप करें (पीछे) गृह्यगुरुः आज्ञा दीये थके । वधूके पिता, जल यव तिल कुशांकुं

हस्तमे लेके, वरके हस्तमे देके ऐसें कहै-। दायं ददामि प्रतिगृह्हाण। वरः कथयति प्रतिगृह्णामि। प्रतिगृहीतं परिगृहीतं(गुरुः कहै)सुगृहीतमस्तु, सुपरिगृहीतमस्तु (पुनः) भूषण हस्ती अश्वादि दाय दान समय पण वधूपिता पूर्वोक्त विधि करै। ऐसें सर्ववस्तुका दान दीये पीछे। गुरु ऐसें कहै॥ वधू वरौ वां पूर्वकर्मानुबंधेन निर्विघ्नेन। निकाचित बद्धेन। अनुपवर्त्तनीये। अप्पत्तनीयेन। अनुपायेन अश्लेषेन अवश्यभोग्येन विवाहः प्रतिबद्धो बभूव। तवस्तु अखंडितो अक्षयो अव्ययो निरपायो निरावाधः सुखदोस्तु शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु धनसंतान वृद्धिरस्तु॥ ऐसे वचनबोलके तीर्थोदकका जल लेके कुशाग्रसें अभिषेक करै (पीछे गुरु) वर वधूकुं उठायके जहां मातृका स्थापित करी हुई है तहां उपवेशन कराके गुरु ऐसें कहैं॥ अनुष्ठितो वां विवाहो समस्नेहौ सभोगौ समायुषौ सधर्माणौ समदुःख सुखौ सम शत्रुमित्रौ समगुणदोषौ समवाङ्मनः कायौ समाचारौ समगुणोभवतां॥ गुरु ऐसे कहैं॥ पीछे॥ कन्याका पिता करमोचनके अर्थ गुरुकुं कहै (तब) गुरु वेदमंत्रकुं पढै ॥ ॐ अर्हं जीवस्त्वं कर्मणाबद्ध। ज्ञानावरणेन बद्धः। दर्शनावरणेनबद्धः। वेदनीयेनबद्धः। मोहनीयेनबद्धः। आयुषाबद्धः। जात्याबद्धः। गोत्रेणबद्धः। अंतरायेणबद्धः। प्रकृत्याबद्धः। स्थित्याबद्धः। रसेनबद्धः। प्रदेशेनबद्धः। तदस्तु तेमोक्षो गुणस्थानारोह क्रमेण अर्हं ॐ॥ ऐसें वेदमंत्रकुं पढके गुरु ऐसा कहैं-मुक्तयो करयोस्तु वां स्नेह संबंधो अखंडितः ऐसें कहके करमोचन करावै। कन्याका पिता करमोचनके समय जमाइको। वांछितवस्तु स्वसंपदाके अनुसार अधिक तरेसें देवें। दानकी विधि पूर्वोक्त युक्तिसें। पीछे उहांसे उठायके पुनः वर वधूकुं वेदिकेपास लाके आसनपर बेठावें(पीछे)ऐसें वृत्तका उच्चारण करै॥ उक्तंच॥ पूर्वं युगादिभगवान् विधिनैवयेन। विश्वस्य कार्यकृतये किलपर्यणैषा। भार्याद्वयं तदमुना विधिनास्तुयुग्म। मेतत्सुकाम परिभोगफलानुबंधि॥ १॥ ऐसें वचनोच्चारण करके। पूर्वोक्त विधिसे गंठ जोडा छोडायके (गुरु कहैं) अचल सौभाग्यं भवतां। ऐसें गुरुवचन कहे पीछें। दंपती स्त्री पुरुष अनेक सौभाग्यवंती स्त्रीयादिकसें वेष्टित हुवे थके शृंगार घरमें प्रवेश करै। तिस शृंगार घरमे पूर्व स्थापी हुई कामदेवकी मूर्तिकुं कुलवृद्धानुसारसें पूजन करें (पीछे) तिसी जगें वर वधू सम काल क्षीरान्न

भोजन करें। यथा युक्ति सब प्रचार करें (पीछे) जिस रीतिके उत्सवसें आये थे। उसी रीतिके उत्सवसें पीछा घरकुं जावे (पीछे) वरके माता, पिता, वर वधूके मंगलकी विधि देशकुलाचारके अनुसार करें। कंकणबंधन कंकणमोचन यूतक्रीडा वेणिग्रंथनादि कर्म्म सर्व तत्र देश कुलाचारके अनुसार करें। विवाहके पूर्व वर वधूके दोनुं पक्षमें भोजन दान करें (तदनंतर) धूलिभक्त जन्यभक्त प्रभृति देशकुलाचारसें करें तदनंतर सप्तदिन पीछे वरवधूका विसर्जन करें ॥ तिसकी विधिः ॥ सप्तदिनपर्यंत विविध भक्तिसें पूजित ऐसें जमाइकुं अनेक वस्तूका दान देवे (पीछे) बडे आडंबरसें वरकुं आपके घरे पहुचावे। पीछे सप्त रात्रिपर्यंत, अथवा मासपर्यंत, अथवा षण्मासपर्यंत, १२ मासपर्यंत, महोत्सव करें कुलसंपदा देशाचारानुसारसें सप्तरात्रि पीछे वा मास पीछे कन्याके पक्षमें कुलाचारानुसारसें मातृ विसर्जन करावें पूर्वोक्त रीतिसें और गणपति मदनादि विसर्जनकी विधि लोकप्रसिद्धः—वरपक्षमें कुलकरके विसर्जनकी विधि कहते हैं ॥ कुल करके स्थापन किये पीछे प्रतिदिन कुलकरकी पूजा करें। विसर्जन समयें कुलकरकी पूजन करके विसर्जन करावें (गुरुमंत्र पढे) ॐ अमुक कुलकराय इत्यादि पूर्ववत् संपूर्ण मंत्र पढिके पुनरागमनाय स्वाहा॥ इस रीतिसें संपूर्ण कुलकरांकुं विसर्जन करें (उक्तंच) ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं। मंत्रहीनंच यत्कृतं। तत्सर्वं कृपयादेव। क्षमस्वपरमेश्वर १॥ इति कुलकर विसर्जन विधिः॥ तदनंतर मंगलपूजा गुरुपूजा वासक्षेपादि पूर्ववत्। साधूवांकुं वस्त्र पात्रका दान। विप्रेभ्यो पूजा दान। वंदिजनांकुं तथा अपर याचकादि जनकुं यथा संपदा दान देवे। (तथैव) समयांतरमें, देशकुलाचारसें, विवाहलग्नमें वर श्वशुरके घरकुं आवे। तब उकाम करें। प्रथमें आसनदानं। श्वशुरः कथयति। विष्टरं प्रति ग्रहाण। वर कथयति। ॐ प्रतिगृह्णामि। इस रीतीसें आसनपर बेठें(पीछे)श्वशुर, वरके पादप्रक्षालन करें। पीछे अर्घदानं दधि चंदनाक्षत दुर्वा कुश पुष्प स्वेत सर्षप जलैः श्वशुरो यामाग्रे अर्घदानं ददाति। तेसें आचमनदान तदनंतर गंधाक्षतपूजा तिलककरणं तदनंतर मधुपर्कप्राशनं (ऐसें) आसन, पाद्य- अर्घ, आंचमनीय, गंध, मधुपर्क षट्कार्य(पीछे)वरके भीतर लायके वधु वरके परस्पर दृष्टिमेलन करावें। इत्यादि। शेष पूर्ववत् विधिः ॥ विवाहकी विधिके श्लोक ॥ इति देशकुलाचारे।

विवाहस्य विधिः परः.। विधेयं श्व संपत्ति। बंधः पक्षानुसारतः॥ १॥ मूलशास्त्रं समालोक्य । विधिरेषः प्रदर्शितः। स्वदेशकुलजाचार । पेक्षणीयो महात्मभिः॥ २॥ वरकार्यं रात्रिमातृ । कुलदेव्यादिपूजनं । स्वस्ववंशानुसारेण । विधेयं स्या द्यथाविधिः॥ ३॥ वेद्यानयनकस्मं पि । तथा मंमपबंधनं। कुलवृद्धादिवचनैं। विधे यं विधिवेदिभिः ॥ ४ ॥ कार्यः कंकणबंधस्तु । विवाहादौकुलोचितः । विवाहांते तस्यमोक्षः । कार्योवृद्धगिरापरं ॥ ५ ॥ ऊर्णामयं सूत्रमयं । कौशेयमयमित्य पि । परेमुंजमयंप्राहुः। कंकणं कुलयुक्तितः ॥ ६ ॥ केचिन्मातृ गृहेप्राहु। दंपत्यो करबंधनम् । मधुपर्काशिनात्पश्चा त्परैवेद्यासनस्थयोः ॥ ७ ॥ अग्नी प्रदक्षिणाकाले । शिलालोष्टोः पदेनच । वध्वास्पर्शनमित्याहुः । परैनैवचकिं चन ॥ ८ ॥ क्वचिदेशांतरेचैव । वरकन्या समागमे । विवाहमाहु कुत्रापि । तयोरंचलकर्षणात् ॥ ए॥ देशाचारे विवाहांत । रुपहासंवगानतः । मिथःकुर्व तिमहिला । ज्ञेयोदेशकुलादितः ॥ १० ॥ पितृमातृगिरायस्तु । संगमोवरक न्ययोः । ज्ञेयोविवाहधर्मोपि । विधिनायेनकेनचित् ॥११॥ वह्निनामंत्रेणापि। वह्निद्रव्य.व्ययेनच ज्ञेयःपापविवाहस्य । पितृमातृवचोविना ॥ १२ ॥ अत्रातः कथितोयस्तु । सवेदोक्तोविधिःपरं । देशान्वयव्यवहारा । दन्यत्कार्यं पृथग्विधः ॥ १३ ॥ तैलाभिषेकोवैवाह । वस्तुप्रारंभएवच । वैवाहिकेपु धिष्ण्येषु । करणीयो महात्मभिः ॥ १४ ॥ वाद्यंनार्यःकुलवृद्धा । द्वयोःस्वजनसंसदि । मंमपोमातृपू जाच । तथा कुलकरार्चनं ॥ १५ ॥ वेदिस्तोरणमर्चादि । वस्तुशांतिकपौष्टि के । वह्निभोजनसामग्री । कौसुंभेसूत्रवाससी ॥ १६ ॥ आसनंऋद्धिवृद्धिश्च । यवादिवपनंतथा । गुरुर्वस्त्रं भूषणंच । वरेदेयंगवादिच ॥ १७ ॥ पाकभोजन पात्राणि । दानशक्ति धनंतथा । इमान्यन्यानि कार्याणि । विवाहस्य विनिर्दिशे त् ॥ १८,॥ इत्युपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानगणिः पं। मोहनलालमुनिः आचार ग्रंथात्संग्रहीकृते आचाररत्नाकर प्रथमप्रकाशे चतुर्दशमविवाह संस्कारः ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (१५) व्रतारोप संस्कार विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम वरष माश दिन नक्षत्र शुद्ध देखके । समवशरणकी स्था पना करै। शांतिक पौष्टिक पूजन आदि सब विधि जैन पंमित करावै ।पीछे मंदर (वा) और धर्म्म स्थानके कालानुसारै संप्रदाई अनेकांती शुद्ध साधु आचार्य उपाध्याय होय (जहां) सम्यक्त्त व्रतग्राही पुरुष स्नानादिकसें शुद्ध

होके, अच्छा सपेद वस्त्र पहरके, उत्तराशन धारन करके चोटी बांधकै, चंदन को तिलक करके, श्मै उच्छवसें कुटुंबसाथ आवै। वर्णानुसारै जिनोपवीत धारन कियो थको, मुखवस्त्रिका हाथमें लेके, गुरुके सन्मुख वामपासे खमा रहै (तब) गुरु श्रावक दोनुं इरियावही पमिकमें (पीछे) गुरु आसनपर बैठां थकां श्रावक दोनुं हाथ जोमके कहै ॥ इच्छामि खमासमणो० । इच्छा कारेण संदिसह भगवन् तुम्ह्रे अह्मं सम्मत्तमारोवणियं नंदिकढ्ढावणियं वासक्खेवं करेह ॥ ततोगुरुः सूरि मंत्रसें (वा) गणिविद्या वर्द्धमान वियासें वासक्षेप मंत्रके । परमेष्टी, कामधेनु मुद्रा करके । अपनें वामपासे पूर्व दिशाके सन्मुख ऊनो थको व्रतग्राहीके मस्तकपर वाशक्खेप करै (पीछे) फिर व्रतग्राही समवशरणकों तीन प्रदक्षिणा देके(पूर्ववत्) गुरूके सन्मुख खमाशमण देके इच्छाका०भगवन् तुम्ह्रे अह्मं सम्मत्त मारोवणियं चेइयांइ वंदावेह (तब गुरुः) यदंक्षिनमनादेव, आदि कोई महावीर स्वामीकी चारथुई कहके चैत्य वंदन करावै । चोथी स्तुतिबाद नमोत्थुणं० । सव्वे तिविहेण वंदामि तक (पीछे) श्री शांतिनाथजी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं । वंदन वत्तियाए० (जाव) अप्पाणं वोशरामितक् कहके । एक लोगस्स (वा) च्यार नोकारको कावसग्ग करके स्तुति कहे ॥ यथा ॥ श्रीमते शांतिनाथाय । नमः शांति विधायने । त्रैलोक्य श्यामराधीश । मुकटाभ्यर्चितां ह्रिये ॥१ ॥ शांति शांति करः श्रीमान् । शांतिं दिशतुमे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ (पुनः) श्रुत देवता राधनार्थं करेमि काउसग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससियेणं० । कहके एक नवकारको कावसग्ग करै ॥ गुरुस्तुति कहै ॥ स्वसित सुरभिगंधा लीढभृंगी कुरंगं । मुख शशिन मजस्रं विभ्रती या विभर्त्ती। विकच कमल मुचैः सास्त्व चिंत्य प्रभावा । सकल सुख विधात्री प्राणिभाजां श्रुतांगी ॥१॥(पुनः) क्षेत्र देवता राधनार्थं करेमि कावसग्गं ॥ अन्नत्थु० । कहके । एक नवकारको कावसग्ग करै(पीछे) णमोअरिहताणं । नमोर्हत सिद्धा कहके स्तुति कहै ॥ यस्याक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिःसाध्यते क्रिया । साक्षेत्र देवतानित्यं । भूयाचः सुख दायनी ॥ १ ॥ (पुनः) भुवन देवता राधनार्थं करेमि काउसग्गं ॥ अन्नत्थू० । कहके । एकनवकारकोकावसग्ग करै ॥ णमो अरिहंताणं । नमोर्हत सिद्धा० कहके एक स्तुति कहै ॥ (यथा)

ज्ञानादि गुण युतानां । स्वाध्याय ध्यान संयमरतानां । विदधातु भुवन देवी । शिवंसदा सर्व साधूनां ॥ १ ॥ (पुनः) शाशनदेवता राधनार्थं करेमि काउ सग्गं ॥ अन्नत्थु० कहके । चार नवकारको काउसग्ग करै । करके । नमोर्हत सिद्धा कहके एक स्तुति कहै ॥ या पाति शासनं जैनं । सद्यः प्रत्यूह नासनी साभिप्रेत समृद्ध्यर्थं । भूयाच्छासन देवता ॥ १ ॥ (पुनः) समस्त वैया वृत्य कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके । एक नवकारको काउसग्ग करै ॥ नमो० नमोर्हत् सिद्धा० कहके एक स्तुति कहै ॥ येते जिन वचन रता । वैया वृत्योद्यताश्च ये नित्यं । ते सर्वे शांति करा । भवंतु सर्वा णु यक्षाद्याः ॥ १ ॥ (पीछे) बैठके णमोत्थुणं कहै । मोटो कोई स्तोत्र स्तवन कहै । जयवीयराय कहै ॥ इति नंदी विधिः ॥ पीछे) सम्यक्तग्राही गुरूकों खमासमण देके श्रुतसामायक सम्यक्त सामायक आराहनार्थं काउसग्गं करावेह (गुरु कहै करावेमो) (पीछे) सम्यक्त सामायक आराहनार्थं करेमि काउसग्गं ॥ अन्नत्थू० कहके ४ चार लोगस्सको काउसग्ग करावै (पारके) प्रगट लोगस्स कहै (पीछे) तीन नवकार गुणके । ३ वेर सम्यक्त दंडक उच्चरै । गुरुपाठ बोले उसकी मनमें धारणा रक्खे ॥※॥

॥※॥ सुत्रपाठ यथा ॥※॥

॥※॥ (सुत्रं) (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पभिई अन्नतीत्थिएवा । अन्नतीत्थिदेवयाणिवा । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा । वंदित्तएवा । नमंसित्तएवा । पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा । पाणंवा । खाइमंवा । साइमंवा दाउंवा । अणुप्पाउंवा । तेसिं गंधमल्लाइं पेसिउंवा । (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं । गणाभियोगेणं । वलाभियोगेणं । देवाभियोगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वित्तीकंतारेणं । तंचउव्विहं (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । तत्थ (दव्वउ) दंसणदव्वाइं अहिगिच्च । (खित्तउ) जाव भरह मज्झिमखंडे (कालउ) जावज्जीवाए । (भावउ) जावछलेणं न छलिज्जामि । जाव सन्निवाएणं नभविज्जामि । जाव केणइ उम्माइ वसेणं । एसोदंसण पोलाण परिणामो नपरिवडइ । तावमे एसो दंसणाभिग्गहो । अन्नत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्व समाहि वत्ति आ

गारेणं। वोसिरइ ॥ पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥ ※ ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकेपास हाथमें लिखाकै। जिनप्रतिमाकों वासक्षेप चढावै। नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरुप्रतें वांदे) पीछे श्रुत सामायिक थिरीकरणार्थें। सत्तावीस उस्सासप्रमाणें। एक लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स कहकै पारै। पीछे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै। अति आनन्दसें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै॥ अरिहंतो महदेवो। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिन पन्नत्तं तत्तं। इय सम्मत्तंमए गहियं ॥ १ ॥ पीछे गुरु धर्म्मदेशना देवै। मिथ्यात्व वरजै (इसीतरै) सम्यक्त ग्रहण कियेबाद जो विशेष भाव वृद्धी होय तो अपनी इच्छाप्रमाण दोय चार (अथवा) १२ वारै श्रावकका व्रत गुरूकेपास ग्रहण करै और जो केईदिन मास पीछे व्रत ग्रहण करै (तो) पूर्वोक्त संपूर्ण विधि करै। नित्य चैत्यवंदन इतनी वेरकरूंगा। इतना नवकार नित्यगुणुंगा। फल केसरादि वर्षप्रतें इतना चढावुंगा। ग्यान दर्शन चारित्रके भक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचूंगा। सीलव्रत इतनी पर्वतिथि पालुंगा। नित्य पच्चक्खाण इसमाफक करूंगा। दिनकों नवकारस्यादिव्रत (तथा) रात्रीकों चउविहार। त्रिविहार। दुविहार। प्रमुख। और। बावीस अभक्ष। वत्तीस। अनंतकाय। विदल प्रमुख। धारणाप्रमाणे। सब छोडुंगा। इत्यादि अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण। गुरुके सन्मुख करै। बारै व्रतका टीप सुणें। जिसमें लिया हुवा व्रतकों अतीचार न लगै ऐसा उपियोग सदा रखै॥ ※ ॥ इति सम्यक्त व्रतारोपण विधिः॥ ※ ॥ ॥※॥



॥※॥ अथ प्राणातिपातव्रत दंडक लि० (१) ॥※॥

॥ ※ ॥ (अहन्नंभंते। तुह्माणं समीवे। थूलग पाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए। एगविहं। एगविहेणं (अथवा) दुविहं। तिविहेणं। मणेणं। वायाए। काएणं न करेमि। न कारवेमि। तस्स भंते। पडिक्कमामि। निंदामि। गरिहामि। अप्पाणं वोसरामि॥ यह पहला व्रतका दंडक वार ३ उचरावै ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नंभंते। तुह्माणं समीवे। थूलगं मुसाइ वायं। जीहाछेया

इहेनञ्जं । कन्नालीयं । गोवालीयं । नूमालीयं । थापणमोसा । कूटसाखीयं । पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसए । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । नावउ । दव्वउणं मुसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जाव ज्जीवाए । नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । उलेणं न उलिज्जामि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवडइ । ताव अभिग्गह । डुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा नोगेणं । सहस्सागारेणं । मह० सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ २ ॥ ※ ॥ इति मृखावाद व्रतं ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते तुह्माणं समीवे । अदिन्नादाणं । खत्तखणणाइयं । चोरंकारकरं । रायनिग्गहकारयं । सच्चित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । नावउ ॥ दव्वउणं । अदिन्नादाणं । खित्तउणं । इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवं । नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । जावउलेणं नउलिज्जामि । अन्नेणकेणवि रोगाइ एसोपरिणामो न परिवडई । ताव अभिग्गह । डुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ०सहस्सा०महत्त० सव्व० वोसिरइ ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति अदत्तादान व्रतं ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते तुह्माणं समीवे । उदारिय वैक्रिय नेयं । थूलमेहुणं पच्चक्खामि । अहागहियनंगएणं । दिव्वं तिरित्यं । माणसियं । एगविहं एग विहेणं । पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । नावउ ॥ दव्वउणं मेहुणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । नावउणं । जावगहेणं न गहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० सव्व० । वोसिरइ ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते तुह्माणं समीवे परिग्गहंपमुच्च । अपरिमियपरिग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविह वत्थुविसयं । इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि । अहागहियनंगएणं । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । नावउ । दव्वउणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । नावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ ५ ॥ इति परिग्रह प्रमाण व्रतं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं नंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चक्खामि । (तंजहा) दव्वउ खित्तउ । कालउ । नावउ । दव्वउणं । दिशिपरिमाणं । खित्तउणं धारणा प्रमाणं । कालउणं जावज्जीवाए । नावउणं । जावगहेणं न

गहिज्जामि । जाव ठले०। तावअभिग्गह । अन्न० । सह०। मह०। सव०। वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति दिशिपरमाण व्रतं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । भोगोवभोगये .(भोयणउ) अनंतकाय बहुवीया राइभोयणाइं परिहरामि । (कम्मओणं) पन्नरसकम्माइयं । इं गालकम्माइयाइं । बहुसावज्जाइं । खरकम्माइयं । रायाभियोगंच परिहरामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं भोगोवभोगवयं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० । सव० । वोसिरइ ॥७ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंमं पच्चक्खामि । अवझाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदांन प्रमादचरितं । चउव्विहं अन्नत्थदंमं । जहा सत्तीए परिहरामि (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं अन्नत्थदंमं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहि० । अन्न० । सह० । मह० । सव०। वोसिरइ ॥८॥※॥

॥ ※ ॥ (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं । देसावगासियं । अतिथिसंविभागवयं । जहा सत्तीए पमिवज्जामि । इच्चेयं सम्मत्तमूलं । पंचाणुव्वयं । सत्तसिक्खावयं । दुवालसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि । अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ पट्साख । ठ ठमी । च्यार आगार सहित पालुं । ए । १० । ११ । १२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्रावककों संक्षेप बारेंव्रत उचरावणविधिः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ श्रीवीतरागायनमः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ सम्यक्तमूल बारे व्रतकी टीप लि०॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम सम्यक्तकी शुद्ध धारना करै । तहां देव अरिहंत । अठारे दोपरहित । चौतीस अतिसय पैंतीस भाषागुण संयुक्त । श्रीअरिहंत देवकों देवकरीमानें । चार प्रकारें आराधे । नामअरिहंत १ । स्थापना अरिहंत२। द्रव्यअरिहंत ३ । भावअरिहंत ४ । ए च्यार प्रकारसें अरिहंत देवकों ध्यावै पजै । और कुदेव हरि हरादिक, राक्षस, व्यंतर, देवी, खेत्रपालादिक

लीक, कन्याकै सगाईमें वरष अधिका उंग्रानकहै। इसमें द्विपदसंबंधी झूठ सर्व जाणके छोमै ॥ दूजा गौवालीक ॥ गाय भैंस घोमा हाथी इनकों वेचते लेते झूठनवोलै ॥ तीजा भोमालीक । भूमिजमीनका झूठ न बोलै। चौथा झूठी साखनभरै। कारणै जयणा॥ पांचमाथांपणमोसा ॥ थापण कहीये धरोर न पचावै। प्रथमतो किसही की धरोर न राखै। जो राखै तो धणी मांगे तब देवे। जो रखणेंवाला न होय तो धरमहेते खरचे (इस भांतिबीजाव्रतपालै) इसके पांच अतीचार हे सो कहै है ॥ प्रथम अतीचार, सहसातकारें अण विचास्यो वचन कहै ॥ १ ॥ दूजा अतीचार किसहीनें छानीवात आपणी कहीथी सो लोकमें प्रकाश करदेवै ॥ २ ॥ तीजा अतीचार, मंत्र भेद ॥ अपनी अस्त्रीका। अथवा घरका। अथवा औरही किसका । छाना गुह्य प्रकाशै ॥३॥ चौथा मृषा उपदेश। झूठो उपदेशदेवै। साचाने झूठो करै। धर्मका मार्ग झूठा प्ररूपै ॥४॥ पांचमा कूमलेख। झूठा कागद खत वणाइ कै ठगमै ॥ ५ ॥ ए पांच अतीचार टालके दूजा व्रत पालै ॥ २ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अबतीजा थूल अदत्ता दान विरमण व्रत लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ थूल कहीये मोटी अदत्त कहीये चोरी तिससे विरमनां। तहां पांच प्रकारकी चोरी न करै। प्रथम पराई पडी गिरी वस्तु न लेवे। जो चित्तकी चपलता सों लेवे तो धणीकुं देवे। वस्तुका धणी न मिलै तो पुन्यहेत खरचै जो नहिं खरचै तो चोरीको दूषण लगे । इति प्रथम दोष। दूजा विस्मृत दोष। किसीनें भूलपणे चीज गमाई होई जो पावे तो धनीकों देवै। नदेतो अतीचार लागै॥ अथ तीजा थापन दोष ॥ कोई वस्तु धरगया है तिसकी वस्तु नदे मुकर जाइ ॥ चोथास्थित दोष ॥ कोई कांही छानी वस्तु रखगया है सो निकाल लेवै ॥ पांचमा नष्टग्रहण दोष॥ किसहीकी गईवस्तु रखे पावे तोभी धणीकुं नदे ॥ ए पांच मोटा अदत्त नलेवै ॥ इस व्रतके पांच अ तीचार टालै ॥ प्रथम तेनाहृत ॥ चोरनै चुराई जोवस्तु मोल लेवै ॥ १ ॥ तत्प्रयोगदूजा अतीचार ॥ तत्कहीये चोरसों प्रयोग करै। चोरकोंभेद देवै। तीजातत् प्रतिरूप अतीचार ॥ चोरसों साझा करे पूंजी देवै ॥ चोथा दानचोरी। राजा पातस्याके हासलकी चोरी करै। कोई कारणपाके अथवा भूलिपणै छोटी मोटी वस्तु लेतां वेचतां हासल नदीजीये तेहनीजयणा। वस्तु

खरी दिखाई खोटी वेचै। (वा) भेलकरी वेचे। ए चोथा अतीचार॥पांचमाराज विरुद्धातिक्रम॥राजानैं जोदेशर्मे कार्य मन्है कीया सो करे। खोटामापा खोटातोल करे॥ ए पांच अतीचार टाल्के तीजो व्रत पालै॥ ३ ॥ अथ चोथोस्वदारा संतोप परदाराविरमन नामव्रत॥ अपनी स्त्रीऊपर संतोप। परस्त्रीका त्याग करै। तहां अपनी काया करिकैं शील व्रत पालै। देवता मनुष्य तीर्यंच के मैथुनका परित्याग करै। अपना कुटुंबके निमित्त किसहीका विवाह सगाई करावणकी जयणा। मन करि, वचन करि, हासी मसकरी करितां जो दोप लागै तिसकी जयणा॥ इस व्रतके पांच अतीचार टालै॥ प्रथम अपरिगृहीता वैश्यादिकको सेवन करै॥ १ ॥ दूजा, इतर काल परिगृहीत स्त्रीकों सेवन करै॥२॥ तीजा काम क्रीमा विशेप करै॥ ३ ॥ चोथा तीव्रकामानुराग करै॥ ४ ॥ पांचमां पर विवाह करै॥ ५ ॥ ए पांच अतीचार टालै। मन वचनकी जयणा। काया करी शील शुद्ध पालै ए पांच अतीचार टाली चोथा व्रतपालना॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पांचमा परिग्रह प्रमाण व्रत ॥ ※ ॥

॥※॥ इच्छाप्रमाण नव प्रकारका परिग्रह प्रमाणकरे। तहां प्रथम धनद्रव्यनी संख्या अपनी इच्छा मुजब करै॥ प्रथम रुपइया मोहरकी संख्या। सोनाकी संख्या। रूपाके वाशणकी संख्या॥ जवाहर जूटा गहणा॥ पीतलके वासणमण० ॥ जसदके वासणमण। सीसा रांगाके वासणमण। लोहाके राठ पीठ हथ्यार काठके वासण चोकी तखत। चीणीसंग काचके वासण मण। हाथी घोमा। वैल। गाय। भैंश। ऊंठ। वकरी। लोंमी। गुलाम। रथ। गाम्ही। पालखी। मोली। इत्यादि० अथ वस्त्रकी संख्या। रेसमकीजाति सर्व। सूतकी जाति सर्व। टसरकी जाति सर्व। घासकी जाति सर्व। ऊंनकी जाति सर्व। मखमलकी जाति। पसमकी जाति। थिरमा पावमी वनात किनारी गोटाइत्यादि॥ अथ विछावनेकी विगत॥ गलीचा जोम। मसलंद जोड। सीतलपटी जोम। सितरंजी जोम। जाजिमजोडी। इत्यादि सर्व इच्छा परमाण रक्खे॥ अथ धान २४ जातिके है तिसकी संख्या करै॥ गऊं मण। चावल मण। मोठ मण। मूंग मण। ऊमद मण। अरहड मण। चोमा मण तूवर मण। वाजरी मण। मसूर मण। जुवारि मण। तिल मण। कुलथी

मण। मंडुवा मण। मकई मण। कौणी मण। कोदू मण। झालरकी दाल मण। मटरकी दाल मण। खिसारी मण। कावलीचिणा मण। किरात मण। भुरट मण। सरसौं मण। तीसी मण। औरभी देश परदेश जाइयैंतों तहां कोई अपूर्व जातिनो नाज होइ। तेहनी संख्या करै॥ अब किरीयाणादिकनी संख्या कहेहै॥ घी वर्ष मास मध्ये मण। तेलजात मासमध्ये मण। गुडमासमैं मण। खांभि जाति मिठाई मण। लौणजाति मण। रूई मण। रेसम मण। ऊन पसम मण। सुंठि मिरच आदि करीयाणा मण। हलद मण। हरमै बहेमा आदि मण। नालेरादि फल। सुगंध अरगजादिक सर्व जाति। अतर, रंग, महिंदी मण। ओर छेटी वमी वस्तु भूल चुक लेणें देनेंमें आवे तिसकी जयणा॥ अपणै निमत्त देश परदेश मध्ये, घर मोल लेणा। नवा बणावणा। भामे लैना। घर, क्षेत्र, वाग, वामी, डुकान। ए सर्वनी यथासक्ति संख्या करै। ओर भूली चूकी छेटी वमी वस्तु मोकली नरही। और काम पमे सें लेवें। तो व्रतभंग नही होय। ए परिग्रह प्रमाण अपणी कायाका मोकला है। ओर घरमें ओर कै निमत्त लेतां देतां देश परदेश भूल चूककी जयणा॥ इस ब्रतके पांच अतीचार टालै॥ तिसकी विगत॥प्रथम धनधान्यातिक्रम। जेधन धान मोकला रक्खा है। तिससें ज्यादा वधावै॥१॥ दूजा क्षेत्रातिक्रम। जो क्षेत्र जमीन मोकली रखी है अथवा घर वागरख्याहै। तिससें अधिक वधावै॥२॥ तीजा रूप्य स्वर्ण मानातिक्रम। रूपा सोना जवाहर ग्रहणादिक मोकलाहै तिससों यादा वधावै॥३॥ चोथा द्विपद चतुष्पद मानातिक्रम। जे नफर दाशी घोमा, हाथी बैल गाय भैंस आदि जो मोकला रखाहै। तिससें अधिक रक्खै॥४॥ घरवखरी मानातिक्रम॥ जे घरकै निमित्त छेटा वमा राठ पीठ वस्त भाव रखाहै। तिसकै मानसो अधिक मांन वढावै। ए पांच अतीचार टालके पांचमा व्रत पालै। इति पंचमब्रत॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ छठा दिशिविदिशि प्रमाणव्रत लि० ॥※॥

॥※॥ तहांदिशि ४, विदिशि४, अध १ ऊर्ध्व १ एवं दश दिशीका प्रमाण, इच्छापरमाणें करै। एवं दशदिशाविषै जावणैंकी संख्या उपरांत न जाणां कागद भेजणेकी जयणा॥ जलवटैं नदी समुद्रै नाव तथा जिहाजै कार्यपमै

धके चढणेंकी जयणा। छठाव्रतना पांच अतीचार टाले । प्रथम ऊर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ १ ॥ दूजा अधोदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ २ ॥ तीजातिरछी दिशि प्रमाणातिक्रम ॥३॥ चौथाअतिचार, जे कांम पड्या दिशि विदिशि घटावै वधावे ॥४॥ पांचमा अतीचार, जे मननै विस्मृत उपनै दिशि विदिशि का प्रमाणलंघके जाणा ॥५॥ ए पांच अतीचार टालके छठाव्रतपालै ॥६॥

॥ ॥ अथ सातमां भोगोपभोग नामव्रत ॥ ॥

॥॥ इसके भेद दोय ॥ एक भोग वस्तुकीसंक्षा । दूजा कर्मादानकी संक्षा । तहां प्रथम भोगार्थे चउदै नेमकी संक्षा नित्यप्रते करै । सच्चित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ पानही ४ । तंवोल ५। वत्थ ६ । कुशमेसु ७ ॥ वाहन ८ । सयण ए। विलेवण ॥ १० । वंभ ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ यह चवदै नियमको नित्य प्रति अपनी इछामुजव प्रमाण करै । तिसकी विगत । प्रथम सचित्तकी संक्षा । दिनमै सचित्त । द्रव्य इतनो । खाणेके विगै० । जूती । जोमा । पांनकेवीमा । वस्तु वेशपहिरणा । अपणें शरीर खाते तिसकी दिनमै० । फूल सर्वजातिना तिसकी संक्षा । वाहन। असवारीकी संक्षा। दिनमै असवारी० । सिज्या चौवई । पाटला । तखत । पीढा । चौकी । आसण । एताउपरांत नरखणां । विलेपन दिनमै । अवंभ । शीलपालणा । दिनमै च्यारु दिश जाणा कोस०। दिनमै स्नान । करणां । भत्तेसु कहतां आहारकी संख्या । सो आहार चार प्रकारका । अशन १ पांण २ खादिम ३स्वादिम ४ ए च्यार प्रकारकी नित्य संक्षा करणी । ते मध्ये । प्रथम दिने नाज खाणेकोनेम करै । दिनमै अपणें पीवणें निमत्त पाणी घमो । धोवणे न्हाणेकुं घमा। व्राकी नियम। खादिम मेवाजाति दिनमै मोकला । मिठाई जाति दिनमें० मोकली । तरकारीकी जाति सूकी हरी इतनी मोकली । फलजाति दिनमै मोकला । स्वादिम मुखसोधकी जाति दिनमै मोकली। औरभी भूलेविसरेकी जयणा । इति भोगसंक्षा । भोगोपभोगके ५अतीचार । सचित्तभक्षण१॥ सचित्तप्रतिवद्ध भक्षण२॥ अपकाहार भक्षण ३॥उपकाहार भक्षण४॥ तुछोपधी भक्षण५॥ ए पांच अतिचार कहा ॥ अव पनरै कर्मादान । प्रथम इंगालकर्म । इंगाल कहीये कोइलानो व्यापार निषेध । घरनें कार्य मोललेवै । जंगल कटाइके न करावे । कारण

जयणा । इंटादिकके कार्य पजावा न पचावै । धा गलाइ । टंकसालमें न वेचै । घरके निमत्तें जयणा । औषध पचावणकी जयणा । दूजा वणकर्म तहां दिनमें अपणे निमत्त नाजमण । पीसावणा । मण दलावणा । मण । सेकावणा । पांन फूल फलादि व्यापार न करणा । घरकै निमत्त लेतां जयणा इंधण माशमें घरके खरच माफक लेणा । यादानहीं । चौथा भामी कर्म । गाभा गाभी ऊंठ वैल घोमा घोमी वकरा भामै न देणा । अपणे निमत्त भामै लेतां जयणा । पांचमाफोमी कर्म । जमीखुदाय खांनिकढाइ धात मिटी लौन पाषाण इत्यादि व्यापार निषेध । अपणे काम जमीन खुदावै तो जयणा । दांतनो व्यापार निषेध । अपणै निमत्तै कारणै लेतां जयणा । लाखका व्यापार निषेध। रसवाणिज्ज । रस घी, तेल, सहित, गुम, इत्यादिक व्यापार निषेध । घरमें मोकलाहै ते विगमै तो वेचनकी जयणा । केसवाणिज्ज । केसवाणिज्ज निषेध। अपणै अर्थे केस, सुगंध, वाल, चमरके वाल, पसम, लेणेकी जयणा । विष वाणिज्ज । विष हरताल, मञ्जरा, जहर, अफीम, इत्यादि व्यापार निषेध । आत्माके कार्य लीजीये तेहनी जयणा । यंत्र पीलण कर्म निषेध । घाणी को लु प्रमुख न चलावें ०। निल्लंछण कर्म निषेध । वालक पशु जीवना अवयव छेदवा निषेध । दवदान कर्म ॥ दवदैणा जंगल जलावणा निषेध । नदी द्रह तलाव कूआ होद प्रमुखना अवावरपाणी कलिंचवानही । असती जन पोषणया॥ वाघ सिंघ चीता कुत्ता विल्ला वाज जुररा तोता मैना इत्यादि हिंसक जीव पोषी वैचणका । निषेध । घरमें तोतादि जीव होइ तेहनें पोषणकी जयणा । औरभी कोटवाली दरोगाई अमीती इत्यादिक लोकनें पीमा ऊपजे ते कार्य व्यापार न करै ॥ इति १५ कर्मादान टालके सातमा व्रत पालै ॥७॥

॥ ॥ अथ अष्टम अनर्थ दंम व्रत लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ तहां अपणें कार्य विनाही पापदंम लगावना । तेहना ४ प्रकार है॥ प्रथम प्रमाद आचरित जे प्रमादकेवसें घी तेलप्रमुखका वासण उघामाराखे। तहां अनेक जीव मरै। अनर्थ दंम । दूजा हिंसाप्रदान । शस्त्र हथिआर छुरी कटारी जहर प्रमुख मांग्या देवै (ते न देना) तीजा पापोपदेश । निःक्कारण कूमा उपदेस देना हांसी मसकरी निंद्या आरंभका उपदेस देना (ते निखेध) भूलि चूक घरनें कार्ये जयणा । चोथा अपध्याना चरित । आर्त्तध्यान, रोद्रध्यान, ध्यावनो

ते निषेध करै यथाशक्ति । पांचमां क्रीमावलोकन । तहां चोरमारीजता सती होते देखना। औरजी हंस्याके तमासा कुं देखन जाना। तेहनो निवारण करै । उदीरणा करी तमासा देखन न जावे । मार्गमै जातां आवतां निजर पमे तहां रमा न रहै । और चूला, चक्की, ऊखली, छुरी, कैंची, इत्यादि हंस्याके कामके लाइक चीजवस्तु औरकुं मांगी न देवै । इस व्रतके पांच अतीचार है ॥ प्रथम कंदर्पचेष्टा ॥ जिस सेती काम उपजै सो चेष्टा करै। दूजा कुकथा ॥ राजकथा१ । स्त्रीकथा २। देशकथा ३ । जोजनकथा ४। ए चार विकथा करै ॥ तीजा वाचालत्व ॥ अविचास्यो वचनं जिम तिम बोलै ॥ चोथा अधिकरण ॥ पीठी मक्षन न्होपाणी आपलाइकचहिये ते और दस पांच लोकां निमत्तवणावे। सर्व पहिला चूलोजलावे । आवै जिसकों आग मांगी देवे ॥ पांचमो जोगोपजोग अतिरिक्त ॥ जीमतां नाज अधिकोलेई कूठोनाखै । तहां माखी प्रमुख जीव विराध्या जाय ते करै । यह पांच अतिचार टाली अष्टमव्रत पालन करै । अपने निमत्त जो कार्य कर नेमें आवै सो जयणा रक्खे निःकारण अन्यार्थे पापारंज उपदेशादि नकरै ॥

॥ ※ ॥ अथ नवमा सामायिक व्रत लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वर्षमध्ये जघन्यपणें सामायक ॥ १० ॥ करणा (वा) मासमध्ये सामायिक जघन्य ॥ ६० ॥ करै । दिनमध्ये सामायिक जघन्य। दोय करै (अथवा) यथा सक्तिसारुकरै ॥ इसका पांच अतीचार टालना ॥ प्रथम मनो उःप्रणिधान ॥ मनकरीनें, सामायक मध्ये संकल्प विकल्प आरति रौद्र ध्यावै (ते नध्यावणा) ॥ दूजा वचन उःप्रणिधान ॥ वचनै करी विकथा हास्य क्रोध गालि इत्यादि बोलना । तेन बोलै । अबोलपणें रहै । बोलै तो सास्त्रपाठ पढै । तीजा काय उःप्रणिधान ॥ कायाइं एक आसणें न बैठे । अंग उपांग हलावै । उठै बैठे । (ते न करे) ॥ चोथा अनवस्था अतीचार ॥ सामायकके कालसें अधिका उंछा काल घटावै चलावै ॥ पांचमविला विस्मृत अतीचार ॥ तहां सामायकनी विरीया जूल जावे व्रतविषे आदर न करै । ए पांच अतीचार टालके । नवमाव्रत पालना ॥ इति नवमं व्रतं॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दशमां देसावगासिकव्रत ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तहांदिश अथवा कालको परिमाण करै । दिशिचारुं मोकली रखी

है जिसमेंसें नित्यप्रति अपनें कार्यलायक रखै। उपरांत जाणेका त्याग (वा) जिसि जागा बैठे होय सोइ मोकली रखियै। उपरांत फिरे नही। तहां एक ठिकाणें बेठी। घमी तथा प्रहर मर्यादा तांई। धर्म ध्यान ध्यावै। ते देशा वगासिक व्रत माशमध्ये यथाशक्ति करणां। इसका पांच अतीचार। प्रथम आपकों उठणो नही। तेसेती चीजवस्तु और पासि मंगावै॥ दूजा मूका वणा॥ औरकुं कही वस्तु धरावै। तीजा साद भरणा॥ नफर चाकरको बुलाईके काम कहणा। चौथारूप देखावणा। पांचमां काकरी नाखी, तथा ताली वजाई झुंकारा करी आपोजणाईयै। ए पांच अतीचार टालके दशमो व्रतपालणा॥ इति दशमव्रतं॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ एकादशमा पोषध व्रत लि० ॥ ॥

॥ ॥ ते पौषधव्रत वर्षमे करणा। माशमें करणा। दिनका पोशा करणा। रात्रिका पोशा करणा। वलीयथाशक्ति अधिक करै ते लाभ। इसका पांच अतीचार॥ प्रथम अप्रति लेखित अतीचार॥ जेजागा पोसो करै ते विना वुहारी विना पमिलेही करै। दूजा डःप्रमार्जित सिज्यासंस्थारक॥ तहां कपमा पूंठणा सज्या विना पमिलेही वावरै॥ तीजा उच्चार पासवणभूमि विनादेखी परठवै लघुनीत वमिनीत। जमीनविनादेखी झालनां। चोथा विकथा निद्रा प्रमाद करणां॥ पांचमां॥ पोषधमांहि पारणेंका फिकर करणा॥ ए पांच अतीचार टालके इग्यारमा व्रतपालै। इति ११ माव्रत ॥ ॥

॥ ॥ बारमा अतिथि संविभाग नामव्रत लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्रावक पोशाके पारणें अतिथ कहीये साधू मुनीश्वर। तेहनें संविभाग कहीयै शुद्धदान चार प्रकारको आहार यथासक्ति सारू देवै साधुनी जोगवाई न मिले तो श्रावक श्राविका ब्रह्मव्रतधारीनें पोषणा। माश मध्ये मुनीश्वरने हीनसक्तिदान॥ दोयदिन, ४ दिन, देणा। उपरांत देणा सो लाभ। महीनामें। श्रावक २। श्रावका ४ जिमावणी। ज्यादा जिमाइयै ते लाभ॥ आहार दान १। औषधदान २ शास्त्र दान ३ अभयदान ४ ए चारूं दान यथाशक्ति करना॥ बारमा व्रतका पांच अतीचार टालके व्रत पाले॥ प्रथम मुनीश्वर आये आहार शुद्ध ऊपर सचित्त मिलावै॥ १॥

दूजा अतीचार जे शुद्ध आहारकों सचित्तसें ढांके ॥ २ ॥ तीजा अतीचार जे साधूनें कोई वस्तु मांगी ते आपणी छती परनी वस्तु कहै ॥ ३ ॥ चोथा अतीचार। जे साधुना गोचरीनी वेलाटाली आहारनो निमंत्रणा करै ॥ ४ ॥ पांचमा दूसरेकों दान देतां देखके मच्छरतासें दान देवै ॥ ए पांच अतीचार टालके बारमा व्रत शुद्ध पालणां ॥ इति बारमा व्रत समाप्त ॥※॥ (तथा) बारै व्रतधारी श्रावक ५ पांच आचार शुद्ध पालै । प्रथम ज्ञानाचार तिसका ८ अतीचार टालके ज्ञानकों आराधे ॥ दूजा दर्शनाचार तिसके ८ अतीचार टालके शुद्धदर्शनको आराधे । तीजा चारित्राचार तिसके । आठ अतीचार टालके चारित्र शुद्ध आराधै । चौथा तपाचार । तिसके बारै अतीचार टालके तपकों आराधे । पांचमा वीर्या चार । तिसके तीन अतीचार टालके आत्माके साधनें वीर्य पराक्रम फोरवै । ए पांच आचार पालै । संलेखनाके पांच अतीचार ते टालके संलेखना शुद्ध करै ॥ ※ ॥ ए बारै व्रत उचारै तब छऊंमी । आगार मोकला राखे । तिसका नाम. । प्रथम रायाभि योगेणं । राजानें अकांमयोगे करी । बलाभियोगेणं कोईके बलात्कारे करी । गणाभियोगेणं । गच्छके लाभका कामें करी । देवाभि योगेणं । कोई देवतानें अभियोगें करी ॥ ४ ॥ गुरु निग्गहेणं । गुरुके कहे लाभको कारण ऊपजेसें ॥५॥ वित्ती कंतारेणं । जंगल अटवीमध्ये प्रवेश कियां थका ॥६॥ ए ६ प्रकार माहिलो कार्य कोई ऊपजे । व्रत विराध्यो. जाय तिसको दोष नही ॥ वली चार आगार औरभी राखणा । अनत्थणा भोगेणं। सह स्सागारेणं ॥ २ ॥ महत्तरा गारेणं ॥ ३ ॥ सव्व समाहि वत्तियागारेणं वो सिरामि ॥४॥ ए व्रत उचरतांको पच्चक्खाणहै। कदाचित् व्रतमें प्रमादकेवसें जो कोई अतीचार लागै तिसकी आलोयण । चोथ भक्त उपवास१ करै । नहीं तो आंबिल दोय करे । ते न होइ तो नीवी तीन करै । नहीं तो इकासणा ४ करै । (अथवा) बीश नोकरवाली मनशुद्ध गुणै । वमा अतीचार । अनाचार लागै तो विशेष तप करै । शुभभावना भावै ।आत्माकी निंदा करै । ए प्रकार करी शुद्ध सम्यक्त सहित व्रत निश्चलपणें पालै। ते जीव पापपंक दूर करके आपणा आत्माकों निरमल करै । और देवलोक (तथा) अनुक्रमै मुक्तिका सुखपामै। यह बारै व्रतकी टीप रोज संभालै । जे कोई दूषण लागै

ते पडिक्कमणामध्ये आलोवै। नित्य नसंभारी जाय ते दिन१५ मैं संभारैं॥ इतिश्री चदशं व्रत विधान व्रतोच्चारण विधि समाप्तं ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ बार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥※॥

॥※॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत बारै आदर करी। पूजा तेर विधान। आनंदादिक संग्रही। सप्तम अंग प्रधान ॥ १॥ राग सरपदो॥ ज्योति सकल जग जागती हां०॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल जगझलहलै। हांरे अइशोक० ए। शाशन पति जिनचंद। त्रिकरण प्रणमन करिनसूं। वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ वासनी ३। हांरे ०। माल ४ दीवंच ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंडुला ए ॥ हांरे० ए० ॥ अमलं दप्पणंच १० नैवज्जं ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ एमेलियै। हां० ए। पूजा त्रिदश प्रकार। हांए। व्रत ग्रहि अनुक्रम अरचीयै। जगपति जगदाधार॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो। हांरे०। दायक गुणमणि खांण। हांए। कुशल कला कलना थकी। प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो। भेटो निज मन भर्म। दूर थकी ए परि हरो। कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण अणसण धीर वीर्य वखानियै। तपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति वार सुग्रानियै। व्रत वारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै। करित्याग राग प्रशस्त धरिमन विमल संवर मानियै॥ १॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलूहै जिनमन रंगसूरे देवा। स०। ए चाल॥ धुर समकित व्रत चित धरोरे वाल्हा। भवभय दुख दल परिहरो। परिहरो हांरे वाल्हाप०। शिवरमणी वर लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदीयैरे वाल्हा। जिम चिरकालसुं नंदीयै। नं० हांरेवा० ॥ कुमति दुरति सरकीजीयै २ ॥ चरण करण गुण मणि निलोरे। वाल्हा०। जगजन तारण सिरतिलो। सि० हां० ॥ सदगुरुचरण नमीजीयै ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुतसागरोरे वा०। भेद विविध विधि आगरो। आगरो० हांरे० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन शासन जिनधर्म नोरे वा०। रागदलन वसुकर्मनो। कर्म०। हां०। कुश लकला रसभीजीयें॥ ५ इति ॥ दुहा ॥ सकल करमदल मलहरण। पूजा धुर जलधार। जगनायक जिनतुंगनी। उरधर भगति उदार ॥ १ ॥ रागझी

छोटी ॥ निरमल होय भजलै प्रभुप्यारा । सव०॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई । छूटै जनम मरण दुखदाई । जि०। टेर ॥ खीरजलधि गंगोद कमांहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन०॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश भराई ॥ जिन०॥ २ ॥ या जिन जीके नवण करणतैं । भवभय दुखदल दावसमाई ॥ जि०॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि०॥४ ॥ यातैं भवि जनके दुख नासै । कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जि०॥ ५ ॥ इति०॥ काव्यं परमलंकृत संस्कृत श्रद्धया । स्नपति यो जिनचंद्र मिमंमुदा । भवभयं परिमु च्य सदोदयं । भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अ नंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विरमण व्रतें । थंभो जंतु विनास । इणसुं शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हमकुं छंडचले वनमा धो । राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणा म संभारोरे । भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियें । भाषै जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण भारव्यो । विन अपराध न मारोरे । भ० गो गज सैंधव महिषा दिकनें । बंधन वध न विचारोरे । कीजैं न अवयव छेद त्रिकालै । जलचारो न विसारोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीमी कुंजरनें सम गिणीयें । सुख दुख जोग विकारोरे । थावर त्रस पंचेंद्र्यादिकनो । होय रहि यें हित कारोरे ॥ भ० ॥३॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें । सुर नर गण मन प्यारोरे । तेहिज लोभ महाभटमारयो । सकल करम परिवारोरे भ०। ४ थूलथकी ए व्रत जे पालैं । तेलहै शिवसुख सारोरे । कुशल कला कलना करी प्रगटै । अनुभवरंग उदारोरे । भवि०॥ ५ ॥ दूहा ॥ भव दव दाघ सवे मिटै । पूजो परम दयाल । भावठ भंजन सुखकरण । दूजी पूजरसाल ॥१॥ (राग घाटो)। जिनराजनाम तेरा म्हाराज०। ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा । होतारो रे विकट भवजलसें । हो० । टेर ॥ हांरे घनसार चंदन वासै । हांरे सुकुरंग नाभि जासै । दुख नारकादि नासै ॥ होता० ॥ १ ॥ घसि सूकमा

दि भेली । नाना सुगंध मेली । शिवदैन कर्म ठेली ॥ होता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो । वर भावनापि भावो । शिवसौधमे समावो ॥ होता०॥३॥ विधि भाव द्रव्य धारो । हिंसाको दोष वारो । प्रभुनाम नां विसारो । होता० ॥४॥ तज पाप भार फंदा । शिवशं कलाप कंदा । साधै कपूरचंदा ॥ होता०॥५॥ इति प्रथम पुजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै । जिनपतेर्युगपाद समर्चनं । हरति सो भवदाघ मसुंदरं । रचतियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० प्राणातिपात विरमण व्रत उपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मृषावाद व्रत वासक्षेप पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॥ दूहा ॥ मृखात्याग व्रत दूसरो । कुमति दुरति हरतार । भविजन भावै आदरो । शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब अरति मथन मुदारधूपं । कर० ॥ ए चाल ॥ सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन । मृखावादन बोलरे । वाला मृखा० । टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे । वाला । कुजश० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम धमरवि । ढकण राज्ञ निटोलरे । शिवपुर नगर पथि शबर सरिखो । अरति व्यापन घोलरे । वाला । अरति० वाला० । सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कलाप करिनें । परगुपति मतखोलरे । ऋणविधौ धनधान्य निकरै । कपट कूट न तोलरे ॥ वालाक० सु० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख भरिनें । रचयमां मममोलरे । अन्य सिरसि कलंक धरिनें । चरित ग्रंनुं न बोलरे । वाला चरित० सु० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिनें । लह्यो कुगति कचोलरे । दुतीय व्रत रस राग भैरवी । कुशलसार विमोलरे । वालाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ दुहा ॥ जगदाधार जिनंदनें । पूजौ वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै । पूजा भयतम एण ॥ १ ॥ राग गरबो ॥ भवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत मी कवङ्गन कीजियै ॥ भ०। ए चाल ॥ भविभाव धरी भवसागर निस तारक जिनपति सेवियै ॥ भ०॥ टेर॥ वाचनचंदन खंमन करियै । तेहमां वलि कुंकुमरस भरियै । मृगमद परिमलता अनुसरियै ॥ भवि० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजै । तिम विवध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि निज वसकीजै ॥ भवि० ॥ २ ॥ इम वासरसैं जे जिन पूजै ॥ तिणसैं स

वि करम सबल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सुर किंनर नर सासन धारे । विनसमस्त्रां सकलसंकट वारे । ए पूजन मनवंछित सारे ॥ भवि०॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावै । जे प्रभुगुण गण भावन भावै । इम चंदकपूर सुजशगावै ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदा वर घशृण मिश्रितै । वरवरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन मंजसा । सलभते निभृतिं किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा संक्षेपं यजामहे स्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चोथी अदत्तादान व्रत पुष्प माल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ व्रततृतीय दिवसांभलो । भाखै जगतजिनंद । स्तेयकरण सब सुख हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहोरे देवा । बावन चंदन घसि कुमकुमा । चूर० । ए चाल ॥ हांहोरे वाला । परधन हरण गमन करो । धरि त्रिकरण शुद्ध विलाशए । हांहोरे वाल्हा । ए भवजल जलधर समो । व लि समकित वृंद विनास ए । व०॥१॥ हांहोरे वाल्हा ॥ कनक रजत मणि धातुनो । जल थल खज पशु पटकूलए । ज०॥ हांहोरे वाल्हा ॥ इमतनु थू ल जगतिभला । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हांहोरे वा ल्हा । कुमति डुरति रमणी तणो । छै सदन ए चोरीनो कर्मए । छे०। हांहोरे वा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासैधर्मए । स० ॥३॥ हांहोरे वा०॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए। शि० हांहोरे वाल्हा । कुशल कलायुत कीजीयै । लहियै भवजलनोपार ए । ल० ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै भक्ति वशेण । मोहति मर भर उपशमैं । प्रगटै बोध खिणेण ॥१॥ राग खंभायची । भवभय हरणा । शिवसुख करणा । सदा भजो भ्रम०मैं० एचाल ॥ भविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि । वर फूलनकी माला । मेंवारी० व०॥ ए पूजन डुरगति घरछेदी । विरचै शिवसुख साला । मैं० विर०भवि०॥१॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पाभल लालगुलाला । मेंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजै अलि मतवाला । मेंवा०। नत० भवि०॥ २ ॥ जाइ दमण जूही कोरंटक । मालति मरुक रसाला । मेंवा० मा०। ऐसें पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना

ला। मेंवा० मा० भवि०॥३॥ ए मालापूजन करीनासै। कोटि करम दुखजाला। मेंवा० को०। सुमति सुरति अनुभव वलि प्रगटै। भासै कुमति कुचाला। मेंवा० भा०। भवि०॥ ४ ॥ ए विधि संबरद्वार विकासै। पापसदन मुखताला। मेंवा० पा०। कपूरकहै प्रभुचरण सरणमें। मंगल माल विशाला। मेंवा० मं० भवि ॥५॥ इति ॥ काव्यं। सरस मुद्गर चंपक पाटलै। मरुक मालति केतकि सत्कजैः। विधि विगुंफ्यजिनं परिपूजयेत्। सज मजश्रम मीभिरजेन्द्रकः॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानं० जन्मजरा०श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत उपदेशकाय। मालं यजामहे स्वाहाः॥ इति अदत्तादांन व्रत चोथी पूजा॥४॥

॥ ※ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रत दीपपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो। भजो भविक भगवान। शीलाराधन योगसें। लहियै शर्म्म वितांन ॥१॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशी ऊजलोरे देवा। पाव०॥ ए चाल॥ मन वच काया थिरकरीरे। वाल्हा। कलुख कुशील निवारोरे। आगे। एह नरक रमणी तणोरे। वाल्हा। शोदर अति हित कारोरे। आगे ॥१॥ नर सुर पशु सङ्गजातनोरे। वाल्हा। विषिय कलित बक्कु दोषैरे। आगे। ते परिहरिनें थिररहोरे वाला०। निजदारासंतोषैरे ॥ २ ॥ आगे। लंकापति नरकै गयोरे। वाल्हा एमैथुनरस धारूरे आगे। एहनें तजकरि केइलह्यारे। वाल्हा। जीवसकल सुखसारूरे ॥ ३ ॥ आगे। शील रत्न जतनें धरोरे। वाल्हा। तसदूषण सविगमीरे आगे। कुशलकला करिनें लहोरे। शिवसुख माल प्रचंमीरे। आगे ॥४॥ इति ॥ ※ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी। करै सकल दुखनास। ज्ञायक लोका लोकनो। प्रगटै बोधविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेंकाऊं को०॥ एचाल ॥ ※ ॥ भावधरी दीपक पूज रचावो। यातें शिव सुख संपति पावो। भा०। रक्त पीत सित वरण विचित्रत। सूतनीवाट वणावो। गोघृतमांहि अधिक तरकरिनें। सुभमन दीपजणावो। भा०। दीपकनेंमिस मनमंदिरमै। ग्यांनकोदीप जगावो। जभ्रतातिमर कलापहरीनें। मंगलमालवधावो। भाव०॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें। एपूजन मनभावो। सुर नर पावनमें ततखिणही। यातें नरकनजावो ॥ भाव०॥३॥ अनुभव भावविशाल करीनै। आतमसुं लयलावो। कपूरकहै भविजनसें प्रभुके। वर गुणगण ज

श गावो ॥ जाव० ॥४॥ काव्यं ॥ आत्मप्रबोधे कविवर्धनाय । जाड्यांधकार व्रजमर्दनाय । जव्यप्रदीपं कुरुजक्तिवृंदैः । प्रजोर्गृहे वायवर्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणव्रत उपदेश काय दीपंयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ बठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ डुहा ॥ जविकीजे व्रत पंचमें । सकल परिग्रह मांन । ए मोहादिक शत्रुनो । जूधर डुखनी खांन ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मेल्यां अखंम गुणे । मेल्या० ए चाल ॥ सकल जविकजस्वा विमल गुणे वाल्हा मांन परिग्रहनो करो ए । सकल० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि जेदन । दीप दिवश पति वासरो ए । स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक पशुनो । धातु निकर तिम जाणिये ए । इत्यादिक नवजेद विधाने । दशवैकालिक जाणिये ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरे नर । तेहनें मोक्ष मिलै सहीए । सुचिर काल ग्रहवास वसें जे । तेहनें देश विधे कहिए । सक० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो । मुम्मण सेठ ते जाषिये ए । जविजन ए व्रत जावथी पालो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥ डुहा ॥ बठी पूजन धूपकी । धूवो जिनवर अंग । कुशरजि करमतणी हरै । दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारीबि ववरणी न जाय । प्यारी० । थांरे मुखमारी हो वारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥ ऐसी विधि पूजन जाई दिलधार । धुप धूम घनसार धार करि । ऐसी० । टेर ॥ या जवजीम वारिसागरमें । तरस तरंमक तरल विचार । धूप० ॥ १ ॥ चंदन देवदारु वलि अंबर । मृगमद गंधवटी घनसार । धूप० ॥ २ ॥ ऐसें सुरजिद्रव्य वज्रमेली । तिणमें सेल्हारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ मणियुत कंचन धूपदांनमैं । विमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ कपूर करत तुतिया जिन पूजा । जविजन गणकी तारणहार । धूप० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं । चाकर्षितं भ्रमरवृंद मतिर्हियेन ॥ श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालजक्त्या । धूपे जिनाधिपतिनं शिवदं मुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत उपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत बठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ※ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ बठो व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश
लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरबो । सिद्धाचलमंमण स्वा
मीरे ॥ ए चाल ॥ ※ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । जवजय डुखवार
ण करियैरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । जाव विमल दिल
धरियैरे । वाल्हा धरियै तो समरस जरियै । र० ॥ १ ॥ अथ ऊर्धनें तीरछ
वखाणोरे । दिश विदिशनै तेम प्रमाणोरे । ए छे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी०
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे । ओछै कुमति डुरति जरतारेरे । इकच
क्री लक्षी डुखजारो । रसी० ॥३॥ ए व्रत शिवसाधन चंमोरे । तुमे जविजन
एहन खंमोरे । कहै कुशलकला नितमंमो । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥
॥※॥ दूहा ॥जवियण पूजा सातमी । कीजे जक्ति विशाल । ससुरजि नाना
जातना । विमल कुशम जरथाल ॥१॥※॥ रागधन्याशरी ॥ कवठ्ठमें नीके
नाथन ध्यायो ॥क०ए चाल ॥ प्रजुजीकी फलै पूजन सारो । प्र०॥टेर॥श्रीजिन
जीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रजु०॥१॥चंपक कुंद गुलाब
केवमा । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासंति मोगरा । पामल लाल मं
दारो । प्रजु०॥२॥इम नानाविध कुशम घटा करि । जाव विमल जलकारो ।
तोलहियै जविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी जवपारो । प्रजु० ॥ ३ ॥ व्रत
धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूजत जे जगतारो । कपूर कहत जिन चंर
ए सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रजु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥
गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥
संसेवये विविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोत्र चिरात्शिवंना ॥१॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत
उपदेशकाय पुष्पंयजामहे स्वाहाः ॥ ※ ॥ ॥※॥
इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ आठमी अष्टमंगलीक जोगोपजोग व्रतपूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनजृंग । जोग अनें उप
जोगनो । एसठ्ठव्रत गिरिशृंग ॥१॥※॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । जविकासि०

ए चाल ॥※॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती। वाहन वलि तंबोल। वसन कुशम दल पानहि तिमवलि। सयण विलेवण घोलेरे। भविका। इण व्रतमें मनमंभो। शिवसुख रयण करंभोरे। भविका। इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण भत इम। नियम चतुर्दश माल। प्रतिदिन भाव हृदयधरि करियै। एहनी सार संभालरे। भवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर त्रिंशत। अखिल विपुल महिकंदो। कालखीण सज्ञ द्रव्य अजाएयो। फल निशिभोजन छेदोरे। भ० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल डुप्पोल विभेदै। अशनारंभ विशाल। इंगालादिक करण करावण। कर्मादान कुचालरे। भ० ॥४॥ इण० ॥ एठमै ते शिवसुखमंमै। खंमै कुगति डुकाल। सहजानंद शस्यसुख प्रगटै। प्रवदै त्रिजगकृपालरे। भ०। इण० ॥५॥ इण व्रतकरि चितमंदिर भरियै। तरियै भवजलपार। अनभव चंद्र सुधा ऊडमंमै। कुशलकला निरधाररे। भ०। इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥※॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी। करमदलन असिधार। करियै श्रीजिनराजकी। वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ※ ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोनखवरलै मेरीरें। तु०। ए चाल ॥ भविजन भावे श्रीजिनवरकी। मंगलपूजा कीजैरे०। वालामंग० ॥ टेर ॥ श्लीलायन शरलासन नंद्या। वर्त्त कुंभ निरमीजैरे। मीनजुगल श्रीवत्स सरावनो संपुट स्वस्ति करीजैरे। वाल्हा। संपु०। भवि० ॥ १ ॥ ए अष्टमंगल मंमन कारण। कंचन थालरचीजैरे। रुचिराखंम विमल गुणधारी। तंडुलसें लिखलीजैरे। भवि० ॥ २॥ निजमन भक्तिभाव धरि भविका। प्रभुसनमुख धरदीजैरे। तोसुखधाम मुक्तिपुट भेदन। निवसन कृत्य लहीजैरे। भवि०॥ ३ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी। कोटिकरम तम छीजैरे। प्रगट प्रताप पीनजिन चरणें। चंदकपूर नमीजैरे। भवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ यःसत्कांचनभाजने शुचितरे मएयुत्तमैर्मम्भिते। श्लीलान्यष्ट सुमंगलानि विधिना मंम्यप्रभो सन्मुखे। भक्त्यात्मा परिढोकये द्रुचिपरः सोघव्रजं नाशयेत्। भित्ते डुर्गति भूधरं च लभते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानंसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० भोगोपभोगव्रत उपदेशकाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः ॥ इति भोगोपभोग व्रत आठमी पूजा॥

॥ ※ ॥ अथ नवमी अनरथ दंडव्रते तंदुल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ भवि ए व्रत अष्टमधरो । अनरथ दंड विचार । पाप चिरंतन उपशमैं । प्रगटैं पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन श्रीसीमंदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणभवि अनरथ दंड विचार । समकित सुभटनो गंजन भंजन संवर द्वार । मनमग्र बोधविकासक शास्त्र पठन अधिकार । मुख भ्रू दग तनुथी करै भंडकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हा इयथकीवली कुवचन भाषण मुखरप्रबंध । ऊखल मूशल घरट्टादय अतिधरण उरंध । स्नानसमैं जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशन दूषणखंध । सरस वस्तुभृत पात्र मात्र विन ढादनठान। धरणकरण सुविवेक विकल तिम दानादान । इम सब अनरथ करम अवरपिण डुखनी खांन । व्यर्थ पणें मनमान्यां ठेदैं पुन्यप्रधान ॥ ३ ॥ इण करिपूर्वें केइगया नरसंकटधाम । व्रतग्रहिनें रहियैं तव लहियैं शिवसुखठाम । ए व्रत तरणी भवोदधि तारण तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरतां प्रगटै अभिनवमांम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलाश । विमलाक्षत भरिभाजनैं । भविजन करो प्रकाश ॥१॥ राग पीलू ॥ अबतों उधारो मोहि चहीयै जिनंदराय । राखुं भरोसोमें रावरें चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सारैं । सो भवभय डुख दूरनिवारैं । श्रीजि० ॥ तंडुलविमल सकलगुण मंडित । खंडितदोष रहित उरधारैं । कंचनपात्र भरी जिन आगैं । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारैं ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं बोधविदारैं । सबल करम नग भेदनहारो । सघन भवोदधि पारउतारैं ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुभव आन मिलावैं । तेपिण पद दिवशर्म समारैं । पीनमहोदय धार भावधरि । चंदकपूर सनूर निहारैं ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ यःखंडजाति गुणवृंद समन्वितानि । नाढोकयेद्विपुलनिर्मल तंडुलानि ॥ कर्म्मावलिं झटति छेद्य हिमज्जिनाग्रे । सोवैभजे ह्रिवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज० श्रीमज्जि० अनर्थदंड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नवमी अनर्थ दंड विरमण व्रत पूजा ॥ ए ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणियै । सामायव्रत सार । सुर जे हनी आसाकरै । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल बाग मैं होप्यारे जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । भविकजन । सामाय० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगै इकमऊरत। निरतीचारै चालरे । भवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तजीनें सुभमन । धरि निरवद्य विशालरे । भ० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन । स्मृति विहीनता टालरे । भ० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहरिनें । पंचम गुण वरझालरे । भ० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम धनमित्र तणीपर सीझो । कुश लकला परनालरे । भ० ॥ सा० । इति ॥※॥ दूहा ॥ दशमी दर्प्पण पूज ना । कीजै श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ नेम प्रभुजीसुं कहज्योजि म्हांरा नेम० ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहीयैरे । म्हांरा जि०। मन वंछित फल लहीयेरे । म्हां० जि० ॥ टेर ॥ कंचनमणी रतनेकरि जडियो । वर दरपण करगहीये । जिनवर सनमुख दाखन विधिसें । सकल करम वनदहीयैरे । म्हांरा । जिन०॥ १ ॥ प्रभुजीकीसेवा सव सुखदाई । भावभक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम विलूधै । अपर अधिकस्युं कहीयैरे । म्हां० ॥२॥ जि० निजकसरीर प्रमाद वसैं करि । भवदल भीतिनसहीयै । सुभमन समकित वीरसंगले । चंदकपूर निवहियैरै । म्हां० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्यं ॥ रुचिर निर्मल दर्पण दर्शनं । विनयभृधृदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा भवसंगमं । सचनिरस्य भजे शिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये ज न्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियणा । धारो धरिवर भाव। संसारा र्णव गहिरनों । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरभेट्यारे । धन्य भाग हमारां । सिद्धा० ए चाल॥※॥श्रद्धा धर मन भाजेरे । घनपाप तिहा रा । श्रद्धा० । भाजै० । टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीनें । गुरुमुख

वचन हजारा । ए व्रत सुंदर दिल धरो भविजन । देशावकास विचारारे घनपा० । अघा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसारा । पुग्गल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सङ्ग व्रतनो आगमन ए व्रतमें । गुणमणि रयण भंमारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें छेदै । चउगति गेह विहारा । अजरामर धनदैलसोनिरमल । कुशलकला करिसारारे । घनपा० ॥ ४ ॥ अघा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध भांति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्यांण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते० । एचाल ॥※॥ सेवासारो श्रावक जिन चरणै । होसे० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत झरणें । मुक्त चूर विंद्वादिक बहुतर । नैवेद्य नानावरणै । होसे० ॥१॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि । मन वय तनु थिरकरणें । करिढोकन विधि परम विनय धरी । रहियै नित प्रभु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ डुखदल नासन या पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख भरणें । चंदकपूर कहत भविजनके । कलिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शितार्प्पि समुद्भवै । विमलभक्ति समन्वित कर्प्परै । जिनपते विंदधाति विपूषनं । सलभते शिवशं प्रवराभकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० ग्यांन सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नैंवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ※ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । भावो भविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसंहरै । प्राकृतकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊभादोयराजवी । म्हांरालाल ऊभा० ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीयै । म्हां० प्र० टेर ॥ पोसहव्रत चितमाहि विनयधरि धारीयै । म्हांरा० वि०॥ ते पिण डुविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व सजै तिम सारियै । म्हां० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां० स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां० म० षटकाया संघट्ट तजीनें संचरो । म्हांरा० त० ॥ अचपल थई पचक्खांण विविधमनसंभरो ।

म्हां० ॥ २ ॥ वि० ॥ वलिसङ्ग दूखण टालिनें पापनिकंदिये । म्हां०पा०॥ चौगति च्यार कषाय करमदल छेदिये । म्हां०॥ इण विधि तारण तरण सुगुरुपदवंदिये । म्हां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनंदियै ॥ ३ ॥ म्हां० क० इति ॥ दूहा ॥ द्वादशमी धज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरियै द्वादश भावना । तरियै भवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुवजानें जादू मारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसें प्रीतलाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो । प्र० ॥ १ ॥ टेर ॥ जोयण सहस मानमणि मंडित । कंचनदंम रचानाहो । प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० । ३ ॥ ढकनाद करी तीन प्रदिक्षणा । रोहणविधि मनभानाहो । प्र० ॥ ४ ॥ या विधिसकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ जगतारण श्री जिनदरशणसें । चंदकपूरलुभानाहो । प्र० ॥६॥ इति काव्यं ॥ भव्यार्चित ध्वजवरैः सशुभैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदंम युतैः सशोभैः ॥ कर्मारि वृंदजय छम समन्वितैर्यो । वैसोभजे ऋिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ※ ॥ ॥०॥

इति बारमी पोसहव्रत ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥०॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥०॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ बादशमोव्रत सुखफलद । साधु दांनसनमान । अजरामर पदसंपजै । सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोह्यो माई आणंदझिलै आ० ॥ ए चाल ॥साधुदांन व्रत भवि हृदय धरो । हृदय धरोरेभाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेर ॥ व्रतसंयम गत परलिंगीनें । पडिलाभन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजे । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० भा० । सा० ॥ २ ॥ वलि पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० भाव० ॥ ३ ॥ सा० श्रीश्रेयांसनें चंदन बाला । अनुमानें पदनिर्वृतिवरो निवृ० भा० ॥४॥ सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । भरिभाजन कमनीय । भविक रचौ भगवाननी । भवविषधर दमनीय ॥१॥ राग ख्याल ॥ लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ※ ॥ लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पूजन

के लोभीसेणा ॥टेर॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । थिर करि मनतनु वैणा । हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफलपुंगी वीजपूरवलि । आम्रकदली फल लेणा । हो पू० ॥ २ ॥ इमनानाफल गहिप्रभु आगै । भविभाजन धर दैणा । हो० पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा । हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । षट्पद भए जुगनैणा । हो पू० ॥५॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश धारा ॥ टेर ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । वचन सजल घनकारा॥ हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वाद श व्रत पूजन विधि पभणी । भवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति भा धृति रादि कलितके । धरि मन वचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥ संवत रस त्रिक निधि शशिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपक्ष प्रतिपद तिथि सोभन॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिसाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार मधुकारा । हांहो म०प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । रचि जिनपति नुतिसा रा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हांहो० प्र०५ इति ॥

॥※॥ काव्य ॥ जंवाम्रादि फल व्रजैः ससुरसै गंधादिभि र्मिश्रितै । नूनं । द्रव्य हृतु भवैश्च विधिना कुर्यात् प्रभोरर्चनं । भक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो भूपोपि भूयो लभे । द्धर्म्मस्वर्ग तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंता० श्रीमज्जि० अतिथि संविभाग व्रत उपदेशकाय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति श्री वारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगढ पीठ समवसरण की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशाकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी एवं चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै (आगे एक चोखूणा अच्छा चांदी पीत लादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक वीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुंज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त

१३ चिठी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दक्षिणे पासे धजा अष्टमंग लीकादि सोभता अतिशय स्थापन करै ॥ अव १३ चिठी लिखनेकी रीति॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री सद्दर्शनायनमः ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मैथुन विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥
॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥
॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री भोगोपभोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥
॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दंड विरमण गुण व्रतायनमः ॥
॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥
॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविभाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ※ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै । तीन नवकार गुणके वासक्षेपसें प्रतिष्टत करै (और) जल, चंदन. पुष्प, धूप, दीप. नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनूं तरफ रखै । पीछै स्नात्र करायके पूजा करावै। जो पद की पूजा सरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै (परंतु) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका मांडलापर व्रत दीठ च ढावै। वाकी द्रव्य सर्व थाल्यामें दोनुं तरफ रखै। दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखै । और वारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक मांडनेके चारुं तरफ सोभता श्रेणीबद्ध रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसें पूजनविधि करै, करावै, करतां की अनुमोदना करै । विशेष चित्तकी उमंग होय तो वाजित्रादि उच्छवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावै उत्तम उत्तम द्रव्य भगवानके भेट करै।।※।।इति वारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम्॥

॥ ※ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चिदानंद स्वरूपाय । रूपातीताय तायिने । परम ज्योतिषे तस्मै । नमःश्री परमात्मने ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ग्यानानंद मई है स्वरूप जिसका और उदारक शरीरादि रूप रहित । उत्कृष्ठ तेजके धरनेवाले ऐसे श्रीपरमात्मा परमेश्वरकों मेरो नमस्कार ज्ञवो ॥ १ ॥ पश्यंति योगिनो यस्य । स्वरूपं ध्यान चक्षुषा । दधाना मनसःशुद्धिं । तं स्तुवे परमेश्वरम ॥ २ ॥ जिसके स्वरूपकों ध्यानरूपी दृष्टीसें मनशुद्धी धरताथका मोटे योगीश्वर देखते हैं । ऐसें परमेश्वरकी वारवार स्तवना करता ज्ञं ॥ ऐसे परमात्म गुणधारक । सर्व जीव हितकारक । सर्वज्ञ सर्वदर्शी शाशनाधिपती श्रीमहावीर स्वामीकी आग्यानुसार दिन रातमें श्रावकके करनें योग्य शुद्ध आचारोपदेश लिखता ज्ञं ॥ क्युंकि संपूर्ण जगत्रका जीव सुखकी वांछा करनेवाले है (और) संपूर्ण सुख सिद्धि स्थानकमें है। सिद्धि स्थानक मिलनेसें जीवकों संपूर्ण सुख मिले । इससें सिद्धि स्थानककी प्राप्तीके अर्थ शुद्ध आचार धारन करनो। शुद्धाचारसें। कषाय४ इंद्रियां पांचकों जीतके मनकों शुद्ध करै। एकाग्र चित्तसें आतमगुणका ध्यान करता सिद्धि स्थानककों प्राप्त ज्ञवै । चित्तमें विवेक धारण करके यथा शक्ति शुद्धाचार धारन करनो। अमृतको वुंद मात्रज्ञी जीवकों सुखदायक है (और) जहरको लवलेशमात्र जीवको दुःखदायक है (इससें) यथाशक्ति व्रत पच्चक्खाण पूजादिक धारन करना। परंतु। विवेकसें शास्त्रोक्त विधि मुजव करना जिससें इछित फल होय। अविधिसें किया ज्ञवा वज्ञतज्ञी धर्मकृत्य संसार वृद्धीकारक है । प्रथम दश दृष्टांते अनंता ज्ञवमें मनुष्यज्ञव पामणा महा दुर्लज्ञ है (जिससें) आर्य देश, उत्तम कुल, पंचेंद्री परगमी, मोटा आयुष्य पावणा महा दुर्लज्ञ है (इन सवसें) जिनेश्वर देवका धर्मपर श्रद्धा उत्पन्न होणा। अनेकांती स्याद्वादी धर्मोपदेशक गुरूका जोग मिलना । शुद्धज्ञानका प्राप्त होना (और) शुद्ध ग्यानसें शुद्ध आचारमें चलना । यह जलदी मोक्ष जाणेंवाले जीवांका लक्षण है। इससें दूरज्ञवी अज्ञवीकुं पावणा महा महा दुर्लज्ञ है । इस सेती पूर्वोक्त लक्षणायुक्त सारो संजोग पायके साधु श्रावककुं अपनें अपनें शास्त्रोक्त आचार मुजव चलनो चहियै (इससें) उत्त

म श्रावक, रात्रीके चोथे प्रहरे दो घमी चार घमी रात रहते निद्राकों दूर करै। प्रथम तीन नवकार गुणें (पीछे)अपनो कुलधर्म दिनमें करनेको कृत्य स्मरण करके, लघुशंकादि निवारके, रात्रीका वस्त्र वदलके शुद्ध चित्तसें शुद्ध नवकार मंत्रको ध्यान करे। इस जगत्रमें अनेक मंत्र है परंतु चवदे पूर्वको सारभूत, उत्कृष्ट भाव, मंगलरूप, सर्व कार्य सिद्धिकारक मोक्षसुख दायक, एक नवकार मंत्र है। इस समान और कोई मंत्र है नहीं ॥ कहानी हे ॥ नमस्कार समोमंत्र। सत्रुंजय समोगिरी। वीतराग समोदेवो॥ न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ ऐसा नवकार मंत्रका ध्यान पूर्वदिश उत्तर दिश सन्मुख बेठके एकाग्र निर्मल चित्तसें यथाशक्ति प्रमाण जाप करै॥ सो जाप तीन प्रकारको होता है ॥ उत्कृष्ट १। मध्यम २। जघन्य ३। सुद्ध उपियोग रखके आंगुल्यांका विश्वापर जाप करै। चित्तकों स्थिर रक्खे सो उत्कृष्ट जाप कहियै ॥१॥ मालासें चलत चित्तसें जाप करे। सो मध्यम २॥ संख्या विगर उपियोग शुन्यसें जाप करै। सो अधम जाप कहिये३॥ (इससें) अपनी शक्ति मुजब उपियोग संहत स्थिर चित्तसें जाप करे।'धर्मस्थानक जाके(वा) एकांत स्थानके रात्री प्रतिक्रमण विधि संयुक्त करै पीछे मंगलाष्टक स्तोत्र गुणें ॥ यथा ॥ नाभेयाद्याजिनाः सर्वे। भरताद्याश्च चक्रिणः। कुर्वंतु मंगलं सर्वे। विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ १ ॥ नाभि सिद्धार्थ भूपाद्या। जिनानां पितरःसमे। पालिता खंड साम्राज्या। जनयंतु जयं मम ॥ २ ॥ मरुदेवी त्रिशलाद्या। विख्याता जिनमातरः। त्रिजगज्जनिता नंदा। मंगलाय भवंतुमे ॥ ३ ॥ श्रीपुंमरीकेंद्रभूति। प्रमुखा गणधारिणः। श्रुति केवलिनोपीह। मंगलानि दिशंतुमे ॥ ४ ॥ ब्राह्मी चंदन बालाद्या। महासत्यो महत्तरा। अखंड शीललीलाया। यच्छंतु ममंगलं॥५ चक्रेश्वरी सिद्धायिका। मुख्यः शासन देवताः। सम्यग्दृशां विघ्नहरा। रचयंतुजयंश्रियं॥ ६ ॥ कपर्दि मातंग मुख्या। यक्षा विख्यात विक्रमाः। जैन विघ्नहरा नित्यं। दिशंतु मंगलानिमे ॥ ७ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं। सर्व कल्याण कारणं। प्रधानं सर्व धर्माणां। जैनं जयतु शासनं ॥ ८ ॥ मंगलं भगवान् वीरो। मंगलं गौतमः प्रभुः। मंगलं स्थूल भद्राद्या। जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ ९ ॥ पीछे निर्जीव भूमिका यें रानन करके द्रव्ये भावे

शुद्ध होके घर देराशरमें भगवानकी पूजा करै ॥ यथा ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ जिनार्चन विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अर्हत्कल्यानुसारें तथा विधि प्रपाकानुसारें किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ भगवंतके मंदिर (वा) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधकै शुद्ध वस्त्र पहरके उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिश उत्तरदिश तरफ बेठके परमेश्वरकी पूजा करै ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकूं मंत्रों सें पवित्र करै (यथा) ॥ ॐ आपो अप्य काया एकेंद्रिय जीव निर्वद्या र्हत्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्च्चने॥इस मंत्रसें जल मंत्रणा ॥※॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिका या जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । स द्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्च्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अभिमंत्रण मंत्र॥※॥ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया नि रवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमे स्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्च्चने॥ इति वन्हि दीपाद्यभिमंत्रणं ॥ फेर वास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेधा एक चित्तो निरवद्यार्हदर्च्चनै निर्व्यथोभूयासं । निःपापोभूया सं । मत्संश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्च्चने निर्व्यथा भूयासुः निरुपद्रवा भूयासुः ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणें तिलक करे ॥ ※ ॥ पुष्पसें अपणें मस्तककी पूजा करे (फेर) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया एक द्वि त्रि चतुः पंचेद्रिया स्तिर्यङ मनुष्या नारक देवगति गता श्चतुर्दशर ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदनाः संतुः । निः पापासंतु । निरपायाः संतुः । सुखिनः संतुः । प्राप्त कामाः संतुः । मुक्ताः संतु । बोध माप्नुवंति ॥ इस मंत्रसें मंत्रकै दशदिशामें गंध जल अक्षतादिक क्षेपन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहित निर ता भवंति भूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥१॥ सर्वेपि संतु सुखिनः । सर्वेसंतु निरामया । सर्वे भद्राणि पश्यंतु

माकश्चिद्दुक्ख न्नाग्नवेत्॥ १ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ नूलधात्री ·पवित्रास्तु। अधिवासितास्तु। इस मंत्रसें मंत्रितजलसें ज़मीन पवित्र करे (फेर) स्थिरायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः ॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकुं पट ऊपर स्थापन करे। थिरबिंब होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे॥ पीछे इस मंत्रकूं पढे॥ ॐ अत्रक्षेत्रे। अत्रकाले। नामार्हंतो। रूपार्हंतो। द्रव्यार्हंतो। न्नावार्हंतः। समागताः। सुस्थताः। सुनिष्ठिताः। सुप्रतिष्टाः संतु ॥ इति अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र ॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मंत्र पढे ॥ ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेन्यः। स्तीर्णेन्यः। स्तारकेन्यः। बोधकेन्यः। सर्वजंतुहितेन्यः। इह कल्पना बिंबे न्नगवंतोर्हंतः सुप्रतिष्टिताः संतु ॥ यह मंत्र मौन सहित पढके न्नगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे। फेर पुष्प जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वागतमस्तु। सुस्थितिरस्तु। सुप्रतिष्टास्तु पुष्पान्निषेकेन अर्घ्यमस्तु। पाद्यमस्तु। आचमनीयमस्तु। सर्वोपचारैः पूजास्तु ॥ इस मंत्रसें मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावै॥ (फेर) जलग्रहण करके मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं तर्प्पणंपयं। प्राणदं मलनाशनं। जलंजिनार्चने त्रैव। जायतां सुखहेतवे॥१॥ इस मंत्रसें मंत्रित जल करके अन्निषेक करावै। फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके। यह मंत्र पढे॥ ॐ अर्हंतं ॥ इदं गंधं महामोदं। बृंहणं प्रीणनं सदा। जिनार्चनेच सत्कर्म। संसिद्ध्यौ जायतांममः॥१॥ ऐसा पढके विवधगंध वस्तूका विलेपन करे। फेर। पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके। यह मंत्र पढे। ॐ अर्हंतं। नानावर्णमहामोदं। सर्वत्रिदशवल्लन्नं। जिनार्चनंच संसिद्ध्यौ। सुखंन्नवतु मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अक्षत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं। प्रीणनं निर्म्मलं यत्पं। मांगल्यं सर्वसिद्धिदं। जीवनं कार्यसंसिद्ध्यौ। न्नूयान्मेजिनमंदिरं ॥१॥ इस मंत्रसें मंत्रित अक्षतका तीनपुंज करे। फेर पूंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे॥ ॐ अर्हंतं। जन्मफलं स्वर्गफलं। पुन्यमोक्षफलं फलं। दद्याज्जिनार्चने त्रैव। जिनपादाग्र संस्थितः॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥(फेर) धूप ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं श्रीखंमागरु कस्तूरी। द्रुमनिर्यास संन्नवः। प्रीणनः सर्व देवानां। धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसें धूप क्षेपन करे॥ फेर पुष्प

घमः । लवणार्ब्धि लवणांधुः । पिषाते सेवते पदौ ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण जल ऊतारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तमीति विघातार्हं । स प्तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकद्वारा । सप्तारर्तिुलांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य फलदान कृतप्रमोदं । सत्सप्त तत्वविदनंतकृतप्रबोधं । तववक्त हस्तधृतसंगत सप्त दीप । माराविकं न्नवतु सप्तम सद्गुणार्यां ॥ ऐसा कहके आरती ऊतारे ॥ फेर मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय न्नवेर्जीवैः । सदेवा सुर मानवैः । चिन्मं गलं श्रीजिनेंद्रात् । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं न्नगवतः प्रथमार्हतः श्री । संयोजनैः प्रतिवन्नूव विवाहकाले । सर्वाःसुरासुर वधूमुख गीयमानं । स र्वर्षिन्निश्च सुमनोन्नि रुदीर्यमासा ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु । राज्येर्हतः प्रथम सृष्टि कृतोयदासीत् । सन्मंगलं मिथन पाणिग तीर्थवारि । पादान्निषेक विधिनान्युपचीयमानं ॥ ३ ॥ यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनु न्नृत्सं सारनिस्तारणे । तीर्थेपुष्टि मुपेयुषिप्रतिदिनं वृद्धिर्गतं मंगलं । तत्संप्रत्युपनीतपू जनविधौ विश्वात्मना मर्हतां । न्नूयान्मंगल मक्षयंच जगते स्वस्त्यतु संघायच ॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती ऊतारे ॥ फेर सक्रस्तव पढै ॥ यह सदैव जिन पूजन करणेंकी विधि कही ॥ (पीछे) यथाशक्ती अच्छा वस्त्र आन्नूषण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, न्नाई, बंधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख ऊत्तम द्रव्य हाथमें लेके । न्नव्यजीकों मोक्ष मार्ग दिखाता हूआ, जिनशाश नकी प्रन्नावना करता हूआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि शाचवन करै (सो १० त्रिक लिखतेहे) (पहिला त्रिक) (३ निस्सही) कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैशतेही कहै (कहे पीछे) संसार घर संबंधी कुछन्नी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीछे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीक करानेकी सारसंन्नाल रक्खीथी सोन्नीछेमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल न्नाव पूजा करै । पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ※ ॥ यह प्रथम नि स्सही त्रिक कहा ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रन्नूके द

क्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ।। ※ ।। (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके विंबकों पंचांग मिलाके, तीन वेर नमस्कार करै ।।-३ ।। (चौथा त्रिक) प्रभूकी अंग १। अग्र २। भाव ३। त्रिविध प्रकार पूजा करै ।। (अव नि. स्सही किये पीछे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि संक्षिप्त लिखतेंहें ।। निस्सही किये पीछे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै ।। पांचो इंद्रियांकों वशमें रक्खै । गमनां गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खे । कुछभी देव कार्यकों छोडके और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा छोडै । जन्म (और) कर्मके, अनुगत वचन न वोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिकका किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलेकों गोला (इत्यादि वचन) नवोलै ।। निस्सही किये पीछे जिन मंदरमें धर्म्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन वोलना चाहिये ।। (जिसनें) मन, वचन कायाके, खोटै व्यापारों का निषेध अपनी आत्मासें कियाहे (उसके) भावसें निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते । पूजायोग्य उतम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्वल वस्त्रसें मुखकोश बांधे । धुपादिकसें अंग अपना सुद्ध करै । भावसें, दूशरी निस्सही कहते, मूल गुभारेमें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त पूजा करै । पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें । खेल खंखार न करै । निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै । सुकमाल अच्छा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें भगवानका अंगलूहै । कपूर कस्तूरी मिश्रित सुद्ध केशर चंदनका विलेपन करै । शुभवर्ण, शुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस । गुलाव, चंपा, चंपेली, केवडा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै । अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवै ।। मंगलदीप करै । अखंड उज्वल अक्षतासें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ।। दर्प्पण १। भद्रासण २। वर्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुगप५। पूर्ण कलश६। स्वस्तिक७। नंद्यावर्त ८। (ऐसा) अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै । सुंदर कुंकुम मिश्रित

चंदनसें हत्थोदेवै। उत्तम नैवेद्य चढावै। अच्छा खाद्य फल चढावै। (इत्यादि) पूजाकी विधि, आरती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्याता धर्मकथा, जीवाभिगमादि, सिद्धांतोमें लिख्ये मुजब करै (पीछे) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मुख नाटक करै॥ (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी, राणी प्रभावतीनें। द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रभूके सन्मुख शंकारहित होके। उत्तम पुरुष नाटक करै॥

॥ ※ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै॥ (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥२॥ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भाव पूजा ॥ ३ ॥ (यह पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा) ॥ ※ ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ※ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था। तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै॥ ※ ॥ (अब छठात्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै। उर्द्ध १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी। बांइ। पिछाडी। निजर नही करै॥※॥ (अब सातमा त्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जके। उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै॥※॥ (अब आठमा त्रिक)॥ ※ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रक्खै (सो) मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ※ ॥ (अब नवमात्रिक)॥ ※ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुत्काशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारै। दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी। एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका जोडा तिस आकार हाथ रखना। (सो) मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासे प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादि करै (अब

दशत्रिक) ॥ ※ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान ॥ १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंम विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेकें) आभवम खंमा तक । प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥※॥ (ऐसें दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥※॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहैं) ॥ ※ ॥ सचित्त द्रव्य कुशमादिक अपनेंपास होय उसकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह, मुकुट, छत्र, खड्ग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तु छोमना । आभूषण प्रमुख पहस्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट उत्तरासंग करना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही (नमो भुवण बंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ※ ॥ यह दूसरा द्वार कहा ॥ ※ ॥ (अब तीसरा द्वार दो दिशीका) पुरुष दहणी दिशा बेठा । भगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, वांम दिश बैठके भगवंतकुं वांदे ॥ ※ ॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥※॥ अभिग्रह देव वांदणामें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके देव वांदै ३ ॥ (अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥ ※ ॥ (सो) जघन्य १ ॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेद है (तिहां) णमो अरिहंताणं (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्य वंदन १ । जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंमक । नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक स्तुति कहै (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच दंमक सहित । थूई गाथा (४) कहै (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहियें ॥ (तथा) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीयराय पर्यंत । आठे थुई ए देव वांदै । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहियै ॥※॥ (अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करै । दो हाथ दोय गोडा (और) मस्तक (ए) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावें ॥※॥ (अब सातमा

द्वार ॥ ※ ॥ जघन्यसें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रभूकी स्तवना करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ स्तवना करके आनंदमान हूवो थको अपना घरे आके गृह संबंधी कहवा योग्य जो कृत्य अपना आदमीकों कहै (पीछे) धर्मस्थानमें जो गुरूको जोग होय तो अवश्य गुरूकेपास जावे। जाके विनयसंयुक्त पंचांग नमस्कार करै। गुरूकी आशातना टालतो हूवो, यथायोग्य स्थानके बैठके, एकाग्र चित्तसें धर्म अधर्मकी व्यापक, अमृततुल्य भगवानकी वाणी गुरुमुखसें सुणें। बुद्धीका आठ गुण संयुक्त शास्त्रकों धारण करे (यदुक्तं) शुश्रूषा श्रवणंचैव। ग्रहणं धारणं तथा। ऊहापोहोर्थ विग्यानं। तत्वग्यानंच धीगुणाः ॥ १ ॥ शास्त्र सुणनेंसें सर्व धर्मा धर्मको जाणपणो होता है। (यदुक्तं) श्रुत्वा धर्मं विजानाति। श्रुत्वात्यजति दुर्मति। श्रुत्वा ग्यानमवाप्नोति। श्रुत्वा मोक्षंच गच्छति ॥ १ ॥ उपदेश पूर्ण हुएबाद (प्रथम) आत्म शाखे, तथा देवशाखे पच्चक्खाण कियो होय (सो फेर) गुरूकेमुखसें पच्चक्खाण करै। पच्चक्खाण कियेविगर दातार होय सो भी तिर्यंचादियोनीमें उत्पन्न हुवै। तहां भोगभोगवै परंतु बंधनमें फसा हूवा रहै। (यदुक्तं) न दाता नरकंयाति। नतीर्यग्विरतोभवेत्। दयालुर्नायुखाहीनाः। सत्यवक्ता नदुःस्वरः ॥ १ ॥ तपश्याका फल मोटा है। (यदुक्तं) तपःसर्वाक्ष सारंग। वशी करणवागुरा। कषाय ताप मृद्वीका। कर्माजीर्ण हरीतकी ॥ १ ॥ यद्दूरं यद्दुराराध्यं। यत्सुरैरपिदुष्करं। तत्सर्वं तपसासाध्यं। तपोहिदुरतिक्रमः॥२॥ इसवास्ते यथशक्ति शुद्धभावसें व्रत पच्चक्खाण धारण करै (पीछे) यथाशक्ति देवगुरुकी वर्णना करनेवाले जैन याचकादिककों दान देके अपनें घर आवै पीछे अपना धर्मोपदेशक गुरूका जोग होय तो गुरू अतिथिकों शुद्ध आहारादिकका दान देके। अपना भाईबंधवांकेसाथ भक्ष अभक्ष जाणता थका उत्तम विधिसें भोजन करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब भोजनकी विधि लिखते है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्लोकः ॥ अधौतपादःक्रोधांधो। वदनूदुर्वचनानियत्। दक्षिणाभि मुखोभुंक्ते। तस्याद्राक्षस भोजनम् ॥ १ ॥ पवित्रांगे शुभेस्थाने। निविष्टो निश्चलःशनैः। स्मृत्वादेवगुरुभुंक्ते। तस्यान्मानुषभोजनं ॥ २ ॥ स्ना

त्वादेवान् समभ्यर्च्य । नत्वापूज्य जनान्मुदा । दत्वादानं सुपात्रेभ्यो । भुंक्ते भुक्तं तदुत्तमम् ॥ ३ ॥ (तथा) भोजने मैथुने स्थाने । वमने दंतधावने । विण्मुत्रो त्सर्गकालेच ॥ मौनंकुर्यान्महामतिः ॥ ४ ॥ इतने ठिकाणें मौन रखना युक्त है ॥ अब भोजन कोणदिशीमें करणा सो लिखतेहैं ॥ अग्निकूण १ नैऋत कूण २ दक्षिणदिशि ३ यह तीन दिशी वर्ज्य है । तथा सूर्यकी उदय वेला (तथा) अस्तवेला । उर ग्रहणकी वखत (तथा) अपणा ज्ञाति स्वजन संवंधियूंका जहांतक मृतकपणा होय । तहां तक भोजन न करै ॥ औरवतैं द्रव्यें भोजनादिकमें कृपणपणूं न करे । उर अजाणी थाली प्रमुख भाजनमें । तथा अजाणेंके घर भोजन न करें ॥ तथा भोजनं करतीवखत । वाल १ । स्त्री २ । गर्भ ३ । गौ ४ । यह मोटी हत्याको करणें वालो (तथा) आचार लोप न करणेंवालो (तथा) अपणें कुलसें विटंवित अयोग्यको । इतनोंकी पंक्तिमें वैस करके भोजन नहिं करै ॥ (तथा) म दिरा, मांश, माखण, मधु, पांच जातिके उंवर झाडके फल । अनंतकाय । सर्व जातीके अजाणे फल । तथा रात्री भोजन, ए सर्वदा त्याग करना चाहिए ॥ तथा काचो गोरस गठदहीमें मुंग मोठा दि विदल मिला हुवा अन्न। समाजयाअन्न । दोदिन उपरांतका दही । यह चीज त्याग करना फल, फूल, पान, उर दूसरा पदार्थ (जो) जीवादिक सहित होय (सो) सब त्याग करे (तथा) अथाणा प्रमुख वावीस अभक्ष्य ठांमै । भोजन करतां (तथा) वमीनीत करतां वहोत देरी न लगावे । और पाणी पीणा, स्नान करणा, यह दो काम थिरतासें करणा चाहिए ॥ भोजनके आदिमें पानी पीना जहर सदृश (तथा) भोजनके अंतमें पानी पीना सो शीसा शदृश । भोजनके वीचमें पाणी पीना सो अमृत सदृश इससें भोजनके वीचमें जल पीना चाहिये ॥ इस रीतीसें पाणी-पीनेंका फल जाणना ॥ अजीर्ण होय तो भोजन न करना । जैसा रुचै, तैसा भोजन कालमें करना ॥ भोजन करके मुखधोके पान सोपारीसें मुखशुद्ध करै ॥ विवेकी पुरष रस्ते चालतो थको तंवोल न खावे । आखी सोपारीकूं दांतांसें न तोडै ॥ भोजन कीएवाद क्षण काल विगर निद्रा न लेवै । किसवास्ते दिनकूं सोणेंसें शरीरके विषे रोगोत्पत्ति होय ॥ फेर वरकी शोभाप्रतें देखतो थको । पंडितकेसाथ वातचीत करतो

थको पुत्रादिककूं शीखामण देतो थको । सुख समाधीसें होय धर्म पर्यंत घरके विषे रहे। गुणको समूह अपनें वश है। धनादिक तो भाग्याधीन है। ऐसी तत्वकी वात जाणनेंवालेके कभी गुणकी हानी न होय ॥ कुलहीन माणस होय लेकिन गुणकरके उत्तमता प्राप्त होय ॥ उत्तम मनुष्यकी कोई भी खाणि नहिं है। सत्वादिक गुण सहित पुरष (जेसें) राज्यके योग्य होय॥ तिस तरेसें, श्रावकभी इकवीश गुण करके सहित होणेंसें धर्म राज्यके योग्य होय ॥*॥ अवश्रावकके इक वीश गुण लिखते है ॥ जिसको क्षुद्र हृदय न होय १ । तथा सौम्य होय २ । रूपवंत होय ३ । सर्वलोककूं वल्लभ होय ४ । क्रूर न होय ५ । संसारसें डरतोरहे ६ । मूर्ख न होय ७ । सदादाक्षिण्यवंत होय ८ । लज्जावंत होय ९ । दयासहित होय १० ॥ किसीके ऊपर रागद्वेष न करे ११ । सौम्यनिजर होय १२ । गुणकोरागी होय १३। अच्छी धर्मकथा सहित होय १४ । अच्छे परवारवालो होय १५ ॥ ऊंडो विचार करणेंवालो होय १६ । वडेमाणसकूं मान्यनीक होय १७ । विनयवंत होय १८। करानया उपगारकूं जाणनेंवाला होय १९। परम हित अर्थी होय २० सर्व वात स्याद्वादका भेदयुक्त समझणेंवाला होय २१ । यह इकवीश गुण श्रावक होय सो अवश्य धारण करे ॥ फेर जाणकर श्रावक होय सो प्रायें राजकथा । देशकथा । स्त्री कथा । भक्तकथा । इस च्यार कथाको त्याग करे ॥ किसवास्ते कि जिससें अनर्थकी प्राप्ति होय ॥ अच्छे मित्रसाथ भाईसाथ धर्म वातकरे ॥ जिससेती पापकी बुद्धि उत्पन्न होय । उसकी संगत न करे ॥ कोई क्रोधसेती कुछभी कहे तोपिण न्यायमार्गकूं न छोडे ॥ जो उत्तम मनुष्य पंडित होते है सो किसीकाभी अवगुण कहे नहिं (तथा) माता, पिता, गुरु, सेठ, स्वामी, राजादिक, इनोंका अवगुण तो अवश्य नहि वोलै (और) मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीन धर्मनिंदक, कुशीलीया, लोभी, चोर, इतनाकी संगत उत्तम पुरष नकरे॥ (तथा) अजाणें माणसकी प्रशंसा । अजाणेंकूं अपणें घरमें रहणें वास्ते स्थान । अजाणें कुलसाथ सगाई । अजाणे माणसकूं नोकर रखना । अपणेंसें वडेकेसाथ क्रोध । अपणेंसें वडा वैरीकेसाथ वैर रखना । गुणीकेसाथ विवाद करना । अपणेंसें जवरकूं नोकर रखना । माथेदेणा करके धर्म करना ।

व्याजसें लाके दूसरेकूं उधार देना । स्वजनकेसाथ विरोध रखना । दूसरे आदमीकेसाथ प्रीति रखना । धर्मकेवास्ते तारीफी करणेंसें न देना । चाकरकेपास दंमसें धन लेना । दारिद्र आनेंसें भाई बांधवादिकको आश्रय लेना । अपणें मुखसें अपणी तारीफ करना । आपवात कहे फेर आपहसना । (यह) सर्व अपगुण ग्रहण करणेंसें इस लोक परलोकमें बहोत कष्ट भोगवे । इसवास्ते ऊपर कहा सब अपगुणांको त्याग करै ॥ न्यायसें धनपेदा करे । न्यायसें चलणेंवाला । देश विरुद्ध । कालविरुद्ध । कार्यकूं त्याग करे ॥ राजाके वैरीकी संगत न करे । बहोत आदमीकेसाथ विरोध न करे ॥ कुल और आचार शील जिसका अपनें बरोबर होय तो उसकेसाथ विवाहादिक करे ॥ अच्छे पाभोसीयाके पास घर लेके बांधवादिक सहित रहे । उपद्रवके ठिकाणेंका त्याग करे (तथा) श्रावक योग्य खरच करे । द्रव्यके अनुसार वस्त्रादिक पहरे । लोकनिंदा करे उस कामकूं त्याग करे । देशके आचारें चालतो अपणो धर्म न छोमे । जो अपणें आसरे रहा होय उसको हित करे॥ अपणो बल अने निर्बलपणों जाणें । हित अहितकी बात जाणे । पांच इंद्रिय दमन करे । देवगुरुकी विशेष भक्ति करे । यथायोग्यपणें स्वजनकी दीनकी अतिथिकी सेवा करे । शास्त्रकूं सुणतो भणतो थको चतुरपुरषके साथ कितनोंक वखत गमावै ॥ फेर द्रव्य कमाणेका उपाय करे । मगर जो भाग्यमें होगा सो मिलेगा । ऐसा कहके निश्चिंत न रहे । किसवास्ते उद्यम किए विगर भाग्य फलदाई न हो सके । इससें उद्यम जरूर करणा चाहिये । शुद्ध अच्छा व्यापार करता सदैव रहे । खोटा तोल, खोटा मापका त्याग करे । जिसमें पनरें १५ कर्मादान तो श्रावककूं अवश्य त्याग करणा चाहिये (सो लिखतेहैं) अंगार कर्म १ । वन कर्म २ । शकट कर्म ३ । भाटक कर्म ४ । धरतीफोमन कर्म ५ । दांत कुवाणिज्य ६ । लाख कुवाणिज्य ७ । घृत तेल मद्यादिक कुवाणिज्य ८ । केश कुवाणिज्य ९ । विष कुवाणिज्य १० । वाणीयंत्र प्रमुख ११ । वैल समारण कर्ण कंबल छेदनादि १२ । असती दुष्ट दासी श्वान मार्जार प्रमुख पापी जीवादिक पोषण कर्म १३ । जमीनमें दव अग्नि लगावण कर्म १४ । सरद्रहतलावादिक शो

षण कर्म १५। यह पनरे कर्मादान छोमे ॥ (तथा) लोहखंम, महूमाके फूल, मदिरा, मधु, कंद, मूल, पान, प्रमुख वस्तु व्यापार करणेंकेवास्ते ग्रहण न करे॥ जो चतुर श्रावक होय सो फागुण माशउपरांत ।तिल, अलसी, गोल, टोपरा, प्रमुख वहोत जीवोंका घात जाण करके चोमासेमें न राखें। गामी (अथवा) पोठीया प्रमुख चोमासेमें न चलावे। (तथा) जीवकी हिंसाको कारण खेतीवामी कर्म न करे। वहोत लाभ होय (तोपण) गहणें राखे विगर लोभ करकै किसीकूं व्याजवास्ते नाणां उधार नहिं देवे। चोरीकी वस्तु मोल न लेवे। सरस निरस वस्तू भेल कर के नहिं वेचे। चोर साथ, चंमाल साथ, धूर्त साथ, मलीन अंतःकरण वालेके साथ, पापीके साथ, इणोंसें व्यापार नहिं करे॥ अपणी वस्तु वेचता थका मिथ्या न वोले। दूसरेकी वस्तू लेता थका वचन नहिं पलटे। जो चतुर पुरष होय सो विगर देखी वस्तूके साथ साटो न करे। सोनो, रूपो, रत्न परखे विगर नहिं लेवे॥ राजाके तेज विगर अनर्थ आपदाको नाशन होवे। इसवास्ते राजाको आसरो लेणो चाहिये। लेकिन स्वाधीनपणें रहे॥ (तथा) पंमित, तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मका जाण, रसोई करनेंवाला, मंत्रवादी, पूजनीक, इतनाकुं कोपावणा नहिं॥ द्रव्यको अर्थी द्रव्यपैदाकरणें में वहोत डुरकसहे (मगर) धर्मकूं छोमे नहिं॥ नीचकी सेवाका त्याग करे। जो विश्वासघात करे उसकी संगत न करे। लेना देना करते थके अपणें वोलको लोपन करे। मगर अपणों वचन पाले। जो माणस अपणें वचनमें थिर रहताहे। उसकी प्रतिष्ठा वहोत वधे। पंमित पुरष होय सो सर्व वस्तूको नासभी हो जाय (लेकिन) थोमे लाभकेवास्ते अपणें वचनको लोप न करें (अगर) लोप करे तो वसु राजाकी तरेसें दुःख प्राप्त होय। ऐसा व्यवहारके विषे दिवसको चोथो प्रहर गमावै॥ पीछे व्यालू करणेंके वास्ते अपनें घर जावे। एकासणों, आंविल, उपवासादिकको, पच्चरकाण कियो होय (सो) पमिकमणों करनेंकेवास्ते संध्याकालमें धर्मस्थानके जावै। दिवसके आठमें भाग (याने) चार घमी दिन रहणेंसें भोजन करे। मगर संध्याकी वखतमें भोजन कदापि न करै॥ आहार १। स्त्रीसेवा २। निद्रा ३। स्वाध्याय ४। ए च्यार कर्म सांझ समय त्याग करे॥ यह

क्तं ॥ चत्वारि खलु कर्माणि । संध्याकाले विवर्ज्जयेत् । आहारं मैथुनं निद्रा । स्वाध्यायंच विशेषतः ॥ १ ॥ आहाराज्जायते व्याधि । मैथुनाद्गर्भदुष्टता । भूतपीडा निद्रयास्यात् । स्वाध्यायाद्बुद्धिहीनता ॥ २ ॥ प्रत्याख्यानं ऽश्च रिमं । कुर्याद्वैकालिकादनु । द्विविधं त्रिविधं चापि । चाहारं वर्जयेत्समम् ॥३॥ अन्होमुखे वसानेच । योद्वेद्वेघटिकेत्यजेत् । निशा भोजन दोषज्ञो । विज्ञेयः पुण्य भाजनम् ॥ ४ ॥ करोति विरतिं धन्यो । यः सदानिशि भोजनात् । सोर्द्ध पुरुषा युषस्य । स्यादवश्य मुपोषितः ॥ ५ ॥ वासरेच रजन्यांच । यः खादन्नेव तिष्टते । शृंग पुच्छ परिभ्रष्टः । स स्पष्टं पशुरेवहि ॥ ६ ॥ उलूक काक मार्जार । गृध्रशंवर शूकराः । अहि वृश्चिक गोधाश्च । जायंते रात्रि भोजनात् ॥ ७ ॥ नैवाज्ञुतिर्नचस्नानं । न श्राद्धं देवतार्चनम् । दानंवा विहितं रात्रौ । भोजनंतु विशेषतः ॥ ८ ॥ इसवास्तै रात्री भोजन श्रावककूं करणा उचित नहिं । रात्री भोजनका दूषण पर मतमें भीकहाहै ॥ यदुक्तं ॥ अस्तं गते दिवानाथे । आपोरुधिर मुच्यते । अन्नं मांश समं प्रोक्तं । मार्कंडेय महर्षिणा ॥ १ ॥ यह श्लोक मार्कंड पुराणमें लिखाहै ॥ ऐसें परम तके वहोतसे ग्रंथोंमें रात्री भोजनका दूषण लिखा है (तो) जैनी नांमधराके रात्री भोजनका विशेष त्याग करणा उचित है ॥ यह रात्री भोजनका अधिकार कहा ॥ पीछे थोडेसे पाणीसें पग, हाथ, मुख, पखालके, अपणी आत्माकूं धन्य मानतो थको जिनेश्वर देवकी भक्तिसहित पूजा करे ॥ अत्री क्रियासहित ज्ञान है सो मोक्षका कारण है ॥ ऐसा जाणतो थको सांझकी वखत प्रतिक्रमणादि क्रिया करे (जैसें) स्त्री, अन्नं, भोजनके सुखको जाणकार होय (उसकूं स्त्री भोगवे विगर) भोजनखाए विगर। मात्रनाम जाणनेंसें सुख नहिं हुवे ॥ तिसतरे क्रियाविगर ज्ञान फल दायक नहिं॥गुरूका संयोग न होनेंसें अपणें घरके विषे स्थापना चार्य रखके, थापना न होय तो नोकरवाली पुस्तकआदि थापन करके। पडिक्कमणूं करे । धर्मसें सर्व कार्यकी सिद्धि होती है । ऐसा जाणता थका प्रतिक्रमण समय उल्लंघन न करे । (अगर) इसवखतकूं उल्लंघन करके जापादिक धर्म कर्म करे (तो) सर्व ऊखर क्षेत्रकेविषे धान्य वोणेंकी तरेसें निःफल होय । पंडित होय सो विधीकूं पूरण करके धर्मकी क्रियाप्रतें करे (परंतु) जोहीन

अधिक करे । सो अनेक तरेसें दुःख प्राप्त होय ॥ जेसें रोगीकूं दवाई उलटी बताणेंसें । वा रोगीके कुपथ्य करणेंसें रोग वढे (तैसें) अगामी पिछामी क्रिया करणेंसें अनर्थ उत्पन्न होय ॥ पीछे गुरु आदिककी वेयावच्च करे वेयावच्च यानें न्नक्ति करणेंसें श्रेय मंगलीक प्राप्त होय ॥ वाहुवल जीनें वेयावच्च करणेंसें न्नुजावल पैदा करा । (कि) जिसके अगाडी चक्रवर्त्तन्नी हारगए । यह वेयावच्चके प्रन्नावसें ऐसा वलन्नया । ऐसा जाणके । पंमित श्रावक, साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघकी न्नक्ति करे । वस्त्रसें मुखको संवाध करके । विगर वोलता थका । सर्व अंगकी खेदकूं हरता थका । अपणें पगका फरस त्याग करता थका । यत्नसें गुरूकी चरण सेवा करे ॥ पीछे देरासरमें जाके न्नगवंतको दरशण करके अपणें घर आवे । सोनेकी वखत पगधोके, पंचपरमेष्टी नवकार मंत्रगुणें । चउक्क सायको चैत्य वंदन करे । मेरेकूं श्रीअरिहंत महाराजको सरण हुवो । मुझकों श्रीसिद्धमहाराजको सरण हुवो । मुझकूं श्रीकेवलि न्नासित जिन धर्मको सरण हुवो । फेर मुझकों सदैव श्रीसाधु महाराजको सरण हुवो । (तथा) मंगलीकके करणेवाले दुःखसें राखणेंवाले । कंदर्पकूं जीतणेंवाले श्रीथूलन्नद्रजीकूं नमस्कार हुवो ॥ गृहस्थाश्रममें जिसकों शीलकी लीलान्नई ऐसा श्रीसुदर्शन सेठकों नमस्कार हुवो ॥ धन्यहै, कृतपुन्य है, (जो) कामदेवकूं जीतणेवाले मुनिराज, चारित्र ग्रहण करा जवसें । अतीचार रहित शील पालनेंवाले है ॥ और जो वहोत पापकर्मको करणेवालो, इंद्रि जीतणेंकूं असमर्थ, ऐसो पुरष एक दिनन्नी शीलपाल सके नहिं ॥ संसाररूप समुद्रके विषे, मदयुक्त है नेत्र जिसका । ऐसी स्त्रीसें नहिं वचणें वालेकों संसार समुद्र तिरणा दुर्लन्न है ॥ अव स्त्रीका दोष वतलावे है ॥ यडुक्तं ॥ अनृतं साहसं माया । मूर्खत्व मतिलोन्नता । अशौचं निर्दयत्वंच । स्त्रीणां दोषा स्वन्नावजाः ॥ १ ॥ यह सात दोष तो स्त्रीजातीकूं स्वन्नावसें प्राप्त होताहे । फेर जो स्त्री अनेक पुरषके ऊपर रागवंती होय । ऐसी स्त्रीकूं कोण न्नोगवे । जो पंमित होय सो तो मुक्ति रूपिणी स्त्रीकों न्नोगवे । किस वास्तै । कि मुक्ति रूपिणी स्त्री जोहे सो वैरागी ऊपर रागवंती हे । ऐसो स्त्रीको असारपणों विचारतो थको जरा देरतक समाधिसहित निद्रा करे ।

मगर बुद्धिवंत पुरुष धर्म पर्वके दिन मैथुन न सेवे। फेर बुद्धिवंत पुरुष वहोत निद्रा न लेवे (कारण) वहोत निद्रा। धर्म, अर्थ, सुख, इस तीनोंकूं नाश करणेंवालीहे। (इससें) जो स्वल्प आहार करे। स्वल्प निद्रा लेवे। स्वल्प आरंभ करे। स्वल्प परिग्रह रक्खे। क्रोध थोमो करै। ऐसा पुरुष संसारमें स्वल्प भमें॥ (तथा) निद्रा १। आहार २। भय ३। स्नेह ४। लज्जा ५। काम ६। विषय ७। कलह ८। क्रोध ९। यह वढाणेंसें वढे। घटाणेंसें घटे॥ विघ्नरूप वेलकूं छेदन करनेमें कुठार समान ऐसे श्री नेमिनाथ भगवानकूं निद्रा समय ध्यावनी करणेंसें खोटा स्वमादिक न होय॥ अश्वसेन राजा वामा राणीके पुत्र श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको ध्यान करे (तो) दुःस्वम न देखे। (तिसी तरेसें) लक्ष्मणा राणी, महसेन राजाके पुत्र, श्रीचंद्रप्रभ स्वामीकूं स्मरण करे तो सुखें निद्रा प्राप्त होय॥ (तथा) संपूर्ण विघ्नरूप सर्पानें हणनेंकुं गरुम समान। सर्व सिद्धिकों देणेंवाले। श्रीशांतिनाथ स्वामी प्रतें चित्तमें ध्यातो थको सोवे (तो) मनुष्यकों चोर प्रमुखका भय न होय॥ ऐसी क्रिया जो पंमित अंगीकार करतेहें। उसकूं उत्तम फल प्राप्त होते हे॥ ※॥ इति दिनकृत्य विधि॥ ※॥ ॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अथ सदैव धर्मकृत्य विधि लि० ॥※॥

॥ ※॥ समस्त जन्मकोसार ऐसो मनुष्यपणो पायकरके धर्मकृत्यसें सफल करे। निरंतर धर्म करणेंसें सुख होताहे॥ इसवास्ते। दान, ध्यान, तप करके, दिन व्यतीत करे (मगर) चोपमवाजी करके न करे॥ जीव अपणें आयुष्यसें (प्रायें) तीशरे भाग (अथवा) अंतसमयमें अगामी भवको आयुष्यवांधे। आयुष्यके तीशरे भाग रहा थका प्राणी वीज, पांचम, आठम, एकादशी, चौदश, यह पांच पर्वके दिन धर्म करतां थकां अच्छा आउखा वांधे। वीज पालणेंसें प्राणी यती धर्म, श्रावक धर्म, प्रतें आराधन करे। वहोत पुण्यसमूह संपादन करतो थको राग द्वेष इण दोनुंकों वीजतीथीसें जीते॥ पांचम पालतों थको पांच ग्यानप्रतें पावे। पांच चारित्र। पांच महाव्रत प्राप्त होवे। अहंकार, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, इस पांच प्रमादकूं जीतणेंवाला उवे॥ आठम पालनेंसें॥ दुष्ट अष्ट कर्मकुं दूर करे (तथा) पांच समिति

तीन गुप्ति । यह ८ प्रवचन माताकूं धारणेंवाला होवे (तथा) जातिमद १ । कुलमद २ । रूपमद ३ । बलमद ४ । ग्यानमद ५ । तपमद ६ । लाभ मद ७ । धनमद ८ । यह आठ मदकूं जीतणेंवाला होवे ॥ एकादशी करतो थको ॥ पंडित पुरष ११ इग्यारे अंगप्रतें (तथा) श्रावककी ११ इग्यारे प्रतिमाका आराधन करणेंवाला होय ॥ चतुर्दशीतप आराधन करतो थको प्राणी १४ चौदे राजलोकके ऊपर मोक्षरूप स्थानकहे तिसप्रतें (तथा) १४ चौदे पूर्वप्रतें प्राप्त होय ॥ यह पांच पर्व हे सो एकएकसें अधिक २ फलके देनेंवाले है । इसवास्ते पर्वके दिन विशेष पोसह प्रतिक्रमणादिक धर्मकृत्य आराधन करे । उसदिन स्नान मैथुनका त्याग करे ॥ बुद्धिवंत पर्व दिनके विषै पोसह करे (यह) मुक्तिकूं वश करणेंमें औषध समान हे ॥ अगर शक्ति न होय तो सामायक व्रत ग्रहण करे ॥ (और) च्यवन १ । जन्म २ । दिक्षा ३ । केवल ४। मोक्ष ५। यह पांच कल्याणककूं आराधन करे । पहला कल्याणककेदिन एकासणूं करे । दूसरा कल्पाणकमें नीवीकरे। तीसरा कल्याणकमें आयंबिल करे । चोथा कल्याणकमें उपवाश करे । पांचमा कल्याणकमें एकासणें सहित उपवाश करे । पांच कल्याणक तप पांचवर्षमें पूरण होय ॥(तथा) णमो अरिहंतादिक२० वीस स्थानक आराधन करणेंसें तीर्थंकर गोत्रबांधे ॥ साढापांच वरस उजवाली पांचम तप करणेंसें मोक्षगती मिले ॥ व्रत संपूर्णहूएवाद ऊजमणूं करे । जो शक्ति न होय तो डुगणों तप करे॥ पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, यह पांच ग्यानके उपगरण पांचमके उजमणेंमें रक्खे ॥ और पाक्षीको पडिकमण करणेंसें श्रावक १५ पनरेदिनकोपक्ष (तथा) कुटुंबको पक्ष यह दोनू पक्षकों शुद्धि करे ॥ आसाढ चौमाशो, कार्तिक चोमाशो, फाल्गुण चोमाशो (यह) तीन चोमाशेमें छठ तप करे ॥ (तथा) संवछरी पर्वके दिन अठम तप सहित प्रतिक्रमण क्षामणा करे ॥समस्त अठाई पर्वकेदिन अपणें घरके विषे । खांडणा । दलणा। धोना। स्नान प्रमुख आरंभ न करे॥ (तथा) शुद्ध मनसेंजिन शासनकी उन्नती करतो थको । नगरमें जीवदया पलावतो थको कल्पसुत्र सुणें॥ पजूषण पर्वके दिन श्रीकल्पसुत्र सात, आठ, एकवीस दफे सुणें तो ८ आठ भवमें मोक्ष प्राप्त होय ॥ फेर सम्यक्त सहित ब्रह्मचर्य पा

लनेंसें जितना पुन्य होय। इतना पुन्य श्रीकल्पसुत्र सुणनेंसें होता है। दान करके, तप करके, तीर्थकी सेवा करके, जो प्राणीयोंका पापक्षय होय, उत ना फल कल्पसुत्र सुणनेंसें होता है॥ मुक्ति उपरांत कोईभी पद नहिं। सत्रुंजय उपरांत कोईभी तीर्थ नहिं। समकित सिवाय कोईभी व्रत नहिं॥ तिसी तरेसें कल्पसुत्र उपरांत कोईभी सुत्र नहिं।(तथा) काती वदकी अमावश्या के रोज श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गए है। पमवाके दिन श्रीगौतमस्वामीकूं केवल ग्यान उत्पन्न भया है। इसवास्ते स्मरण जाप तपस्यावेलेकी करे तो उतम फल प्राप्त होय॥ अपणें घरके मंदरमें(तथा) सहरके मंदिरमें दीपक करे। बाद कुटुंब सहित भोजन करे। भगवंतके पांच कल्याणक दिनके विषे अपणें शक्तिमाफक याचककूं दान देवे। ऐसा धर्मकृत्य करणें सें रिद्धि संतानादिक इस लोकमें मिले। पर लोकमें देवलोक, अंतमें मोक्षपद प्राप्त होय। धर्मसें ऐश्वर्यपणों पायके जो फेर धर्मकृत्य न करे। ऐसा प्राणी धर्मरूप मालकका द्रोहीकी क्या गती होय। कभी भला न होय। अच्छी बुद्धिको धणी निरंतर भुक्ति मुक्तिके फल देणेंवाला दान, शील, तप, भाव, यह च्यार प्रकारको धर्म आराधन करे॥ शक्तिमुजब दान देणा चाहिए। कारण वर्म उदयकी अपेक्षा न करणी॥ किसवास्ते मनकी इच्छा सरखी नहिं है। जो प्राणी ज्ञानको दान करै(तो)आप ज्ञानवंत होय। अभयदान देणें से आप भय रहित होय। अन्नको दान देणेंसें सदासुखी होय। उवधीको दान देणेंसें रोग रहित होय। पुन्यसें कीर्त्ति होय। एकली कीर्तिकेवास्ते जो दान देते हैं सो मूर्ख जाणना चाहिए। (और कहा है) जो व्याजकेवा स्ते धन देवे तो दुगणों होय। व्यापारमें चोगुणों होय। क्षेत्रमें वाणेंसें सो गुणों होय। सुपात्रकों दान देवे तो अनंतगुणों होय॥ (तथा) देरासर १ प्रतिमा २ पुस्तक ३ साधू ४ साध्वी ५ श्रावक ६ श्राविका ७ यह सात क्षेत्रके विषे धन वावरे तो वहोत फल होय॥ (तथा) भक्तिभावसें जो देरासर करावे। वो पुरष धन्य है। देरासरके परमाणूंकी जितनी संख्या होय। इतनां पल्योपमतक देवताको आयु भोग वै॥ सोनेंकी, रूपेकी, पाषाणकी, रत्नकी, मट्टीकी, ऐसी भगवंतकी प्र तिमा जो पुरष करायके प्रतिष्टित करे। सो निश्चे तीर्थंकर होय॥ और

चढता गुणधारन करके मोक्ष जाणेवाले हैं (इससें) उत्तम पात्र है ॥ भक्ति, तथा, वंदन करनें योग्य है । साधर्मी भाईका गुण ग्रहण करे (परंतु) दूषण तो कभी ग्रहण न करे। सम्यक्ती उत्तम पुरुषका लक्षणतो यही है ॥ कि नवमा श्रीकृष्णवासुदेवकीपरे हरकोई जीवका गुणग्रहण करे परंतु ओगुण अपना मुखसें न कहै (यथा) एकदिन सोधर्म इंद्र अपनी देवसभामें बैठे अवधि ग्यानके उपियोगसें श्रीकृष्णवासुदेवको गुणग्राही जाणके सभामें प्रशंशा कीवी। कि कृष्णवासुदेव गुणग्राही है। दूषण ग्राही नहीं है। तव एक देवतायें यह वातकों न मानके द्वारकानगरीमें आके मरा हुवा, सडा हुवा, गंधा हुवा, कुत्तैकारूप वनाके राजमार्गमें पडा उस वक्त उसीरस्ते कृष्ण वासुदेवकी असवारी आई। सर्वलोक निंदा करता मुह आडा पल्लादेके आगे चले। जव श्रीकृष्णजीनें देखा। तव कहनें लगे। कि इस कुत्तैकी दांतोकी वत्तीसी केसी सोभायमान वरावर है। ऐसा कहके आगै चला (तव) देवता परम आनंदवान होकर अपना रूप प्रगट करके कृष्ण जीकों नमस्कार करके वरदिया (इसी दृष्टांते) उत्तम पुरुष कोईका दूषण छोडके गुण ग्रहण करे(औ)शक्त्यनुसारे वार मासमें कोई तपस्याके उज मणेंमें (तथा) कोई पर्व कल्याणकके दिन। दोचार मोटी पूजा जिन मंदरमें करावे। मोटा मंगलीक कार्यादिकमें उपद्रव मरी आदिक रोग शांतिके अर्थं शांतिपूजा विधि संयुक्त गुरूके पासे करावे। जिसमें सतर भेदी आदिक कित नीक मोटी पूजायां रत्नसागर प्रथम भागमें लिखी हुई है। इहां शांति पूजा (तथा) पांच कल्याणक पूजा लिखते हैं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शुभ दिन शुभ महूर्त्तें जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रति मा स्थापन करावे (आगे) पंच परमेष्ठी पट्ट स्थापन करे (तथा) भग वानके दहिणेंपासे दश दिग्पाल पट्ट (और) वामपासे नवग्रह पट्ट स्थापन करे (पीछे) एक मोटा, एक छोटा, तांवे, पीतल, मट्टी आदिकका हंडा ऊपर खडी सपेद मिट्टी पोतके चार चार केशर कुंकुका साथिया करे ॥ पीछे ऊंची नीची दोय टिवची काठकी धरावे। नीची टिवचीपर मोटा हंडा धरे। ऊंचीपर छोटा हंडा धरे। छोटा हंडाके तले एक छिद्र करे। दोनुं मट

काके भीतर साथिया करे ॥ बमा मटकाकी टिवचीके नीचे। चावलका साथिया करके। ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे॥ दोनुं मटका ऊपर मोली सुत्रवटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें २१ इकीस पोकर । चारुं खुणे ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दमो नीचला मोटा हुंमामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली छोटा हुंमाके छिद्रमें पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीदे । जिसके बीचमें गांठ देवे (पीछे) जो संघ संमुदायकी तरफसें शांतिपूजा होय (जबतो) मंदरको कलश लेवे (और) एकजनकी तरफसें होय । (तब) शांतिकारकके गृह सेती सधवस्त्री, जिसका । माता, पिता, सा , सुसरा, चारेमाईत जीता होय जिस स्त्रीकुं अच्छा वस्त्र आभूषण पहरायके, कलशके मांह कुंकु केशरको साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोटली धरके। मुखपर नालेर१ ढकणें माफक लगाय कसुंबल कपडो मोली सेती बांधे। ऊपर चार साथियाकर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके। गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि उत्सवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ (पीछे) पांच दश जणा द्रव्ये भावे अपना अंग शुध्द करे ॥ गुरूकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहिणा हाथके मोली कांकणमोरा मंत्रायके बांधे ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० ॥ इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावे ॥ (पीछे) एक थालीमें १० एक थालीमें ए एक थालीमें ए नागरवेलका पान सर्व २० लगावे (जिसपर) फूल, अक्षत, नेवेद्य, फल. रोक नाणो, सब पानपर बराबर धरायके तैयार रक्खे ॥ और पिण, पंचामृत, फूल, फूलमाला, अक्षत, नेवेद्य, नानाजात का, लीला, सूका, फल, अत्तर, गुलाबजल, केशर, कपूर, रोली, मोली, आदिपूजापेको सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रक्खे (पीछे) पूजा सरू करे ॥ ✲ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके । कुशुमांजली लेके स्नात्रपूजा (तथा) अष्टप्रकारी पूजा करावे (पीछे) पंचपरमेष्टी पट्टा ऊपर चावलांका तीन ढिगला करके । ग्यान, दर्शन, चारित्र, की थापना करे (ऊपर) वासक्षेप करके, चढापे सूधा तीन पान चढावे। इसके आगे दो चावलका ढिगला करके, चैत्यदेवता, क्षेत्रदेवताकी, थापना करावे, पान दोय

चढावे ॥ ऊपर कसुंबल कपडो बांधे (पीछे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढापे सूधो नागर वेलको पान चढावे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन्‌जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपुजा महोत्सवे । आगछ २ । वलिं गृहाण २ । उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ※ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ इतिइंद्रआव्हान पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ पुर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ※ ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंवुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महोत्सवे । आगछ २ । वलिगृहाण २ । उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहाः ॥ ॥ ※ ॥ ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंवु० । दक्षि० । अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिगृहाण २ । उदय म० । स्वाहा ॥ ※ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ※ ॥ दक्षिण दिशाकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करै ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नैरुत दिग्पालपूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नैरुताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंवुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगछ २ । वलि० । उदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ नैरुतायनमः ॥ नैरुत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंवुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । वलि० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशाकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥※॥ ॐ वायवे । सायु० सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । बलिगृह्णाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिणभर० । शांति० । आ० । बलि० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण०। अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ २। बलि० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिणभ०। शांति० आ० २। बलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबु० । शांतिपूजा० । आगच्छ २। बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकमी द्रव्य सहित नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पछाके, दशुं दिशकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती घमीं धरके जगावे । (वा) एक दीपक आगे जगा कर रखे ॥ ॥ ※ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय ।

चढावे ॥ ऊपर कसुंवल कपमो वांधे (पीछे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढापे सूधो नागर वेलको पान चढावे ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन्जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपुजा म होछवे । आगछ २ । वलिं गृहाण २ । उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥※॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ इतिइंद्रआव्हान पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

पुर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ※ ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंवुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महोछवे । आगछ २ । वलिगृहाण २ । उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥※॥

॥※॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंवु० । दक्षि०। अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिगृहाण २। उदय म० । स्वाहा ॥ ※ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ※ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करै ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नैरुत दिग्पालपूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ नैरुताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे०। शांतिपूजा० । आगछ २। वलि० । उदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ नैरुतायनमः ॥ नैरुत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ वरुणाय । सायु०। सवा०। सप०। अस्मिन् जंवुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । वलि० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशाकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥※॥ ॐ वायवे । सायु० सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । बलिगृहाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिणभरत० । शांति० । आ० । बलि० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण०। अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ २। बलि० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिणभ० । शांति० आ० २। बलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ए ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबु० । शांतिपूजा० । आगच्छ २। बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकमी द्रव्य सहत नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पछाके, दशुं दिशाकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती घर्मी धरके जगावे । (वा) एक दीपक आगे जगा कर रखे ॥ ॥ ※ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय ।

अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा महोत्सवे आगच्छ २। बलिपूजा गृहाण २ उदय मभ्युदयं कुरु २ अत्रपीठेतिष्ट २ स्वाहाः ।। ॐ सूर्यायनमः ।। ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ।। इति सूर्यपूजा ।। १ ।। ※ ।।

।। ※ ।। अथ चंद्रपूजा ।। ※ ।।

।। ※ ।। ॐ चंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । शांतिपूजा० आ० २ । बलि०। अत्रपीठे तिष्ट २ । उदयमभ्यु० स्वाहाः ।। ॐ चंद्रायनमः ।। ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसें चंद्रमाकी पूजा करे ।। ※ ।। २ ।। ※ ।।

।। ※ ।। अथ मंगलपूजा ।। ※ ।।

।। ※ ।। ॐ नमो भोमाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० । अमु०। शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे २ । उदय०। स्वाहाः ।। ॐ भोमायनमः ।। मंगलकी पूजा करे ।। ३ ।।

।। ※ ।। अथ बुधपूजा ।। ※ ।।

।। ※ ।। ॐ नमो बुधाय । सायु०। सवा०। सप०। अस्मिन् जं०। दक्षिण०। अमुक०। शांतिपूजा महोत्सवे। आगच्छ २। बलि०२। अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय०। स्वाहाः ।। ॐ बुधायनमः ।।४।। ऐसा कहके बुधकी पूजा करे।।

।। ※ ।। अथ बृहस्पति पूजा ।। ※ ।।

।। ※ ।। ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । शांति० आ० २। बलि० २। अत्रपीठे०२। उदय० स्वाहाः ।। ॐ बृहस्पतयेनमः ।। ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ।। ५ ।। ※ ।।

।। ※ ।। अथ शुक्रपूजा ।। ※ ।।

।।※।। ॐ नमो शुक्राय । सायु०। सवा० । सप०। अ० दक्षिण० अमु०। शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे०। उदय मभ्युदयं कुरु२ स्वाहा ।। ॐ शुक्रायनमः ।। ६ ।। इति ।। ※ ।। ।। ※ ।।

।।※।। अथ शनिपूजा ।।※।।

।। ※ ।। ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० ।

दक्षि०। अमु०। शांति०। आ० २। बलि०। अत्रपीठे० २। उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ राहु पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो राहवे सायु०। सवा०। सपरि०। अस्मिन्०। दक्षि० अमुक०। शांतिपूजा०। आ० २। बलि० २। अत्रपीठे० २। उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ केतूपूजा ॥ ※॥

॥ ॐ नमो केतवे। सायु०। सवा०। सप० अस्मिन्०। दक्षि०। अ०। शांति०। आगच्छ २। बलि० २। अत्रपीठे०। उदय० स्वाहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसीतरै क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य (तथा) शक्ति मुजब रोकम्र नाणो ऊपर भेट करे (ऐसा कहे) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक (वा) एक दीपक धरे ॥ ※ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसीतरै, अन्य मंगल प्रतिष्ठादिकर्मे (जब) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय (तो) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उछव होय। उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय। सो गुरुके मुखसें समझके करावे ॥ (पीछे) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला (तथा पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करबो; मालपूवा, पांच रंगका लाडू, (इत्यादि) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके। एक परातमे सब द्रव्य भेला करै(और)घृत, खांम्र, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलबाकुल तैयार करै ॥ (पीछे) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलबाकुल ऊपर वाशक्षेप करै ॥ (वासक्षेप मंत्र)

॥ ※ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं विंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं। ॐ णमो उवझायाणं। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ णमो आगास गामीणं। ॐ णमो चारण लद्धीणं। जे इमे किन्नर। किंपुरस। महोरग। गरुम्र। गंधर्व। जक्ख।

रक्खस । पिशाञ्च । भूञ्च । भाइण प्पभइड । जिणघर निवासिणो। सन्निहि याय । तेसव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं । वलिपम्छिंता। तुठिकरा भवंतु। पुठिकरा, संतिकराभवंतु । सव्वं जणं कुवंतु । सव्वजिणाणं संहाणप्रभा वड । पसन्नभावतणे । सव्वत्थ ररकंतु कुवंतु । सव्व डरियाणी नासंतु । सव्वा सिव सुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके वलवाकुलकों शुद्ध करै ।(पीछे) आधा वलवा कुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पटेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आ धावलवाकुल लेके घरके (तथा) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे । (जिसमें) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके वल वाकुल दोनुं हाथांमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खमा रहै १॥ दूशरो केशरकी कटोरी २। तीशरो फूलकी चंगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पांचमो धूपदानो ५। छठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घंटा ८। नवमो जलको कल श ए दशमो वलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मंगल वाजित्र ११। इसी तरैसें सव स्नात्रिया एकेक दिशतरफ खमार हैं। (जव) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पंमित गुरू, जो दिग्पालकी पूजा वोलचूके (तव) क्रमसें जल वाला, जल, केशर, फूल, वलवाकुल चढावे। चामरकरे। काच देखावे। वा जित्र वजावे । इत्यादि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ दशदिग्पाल आव्हान मंत्र ॥❋॥

॥❋॥ ऐरावतः समारूढः । शक्रःपूर्वदिशिस्थितः । संघस्य शांतयेसोस्तु वलिपूजां प्रयच्छतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि वलवा कुल चढावे ॥ १ ॥ (अग्निकूणके सन्मुष) ॥ सदावन्हि दिशोनेता । पाव को मेषवाहनः । संघस्य शांतिये सोस्तु । वलिपूजां प्रयच्छतु ॥ २ ॥ ऐसा कह के वलवाकुल चढावे ॥ (दक्षिण दिशकीतरफ) दक्षिणस्यां दिशःस्वामी। यमोमहिषवाहनः संघस्य० । वलि० ॥ ३ ॥ वलवाकुल चढावै । वाजित्रव जावे ॥ ४ ॥ (नेऋत कूणकीतरफ) ॥ यमापरांतरालोको । नैऋतः शिववा हनः । संघस्य०। वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीची दि शोनाथः। वरुणो मकरस्थितः । संघस्य० । वलि० ॥५॥ (अथ वायवकूण) हरिणो वाहनंयस्य । वायव्याधिपतिर्मरुत् । संघस्य० । वलि० ॥ ६ ॥ (अथ

उत्तरदिशि) निधान नवकारूढ । उत्तरस्यां दिशिप्रभुः । संघस्य० वलि० ॥ ॥ ७ ॥ (अथ ईशानकूण) सितवृषेधिरूढश्च । ईशानांच दिसोविभुः । संघस्य०। वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशी)॥ पातालाधिपतियोस्तु । सर्वदा पद्मवाहनः । संघस्य० । वलि०॥ ए ॥ (अथ ऊर्ध्वदिशि) ॥ ब्रह्मलोक विभोयस्तु । राजहंस समाश्रितः । संघस्य० । वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्ध्वदिशिकों जलचंदनादि बलि चढावै॥ ॥

इति दशदिग्पाल आव्हान वलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ॥

॥॥ (पीछे) कलशके भीतर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल पणें रक्खे । पंचरत्नकी पोटलीरक्खे । केशर पुष्पादिकसें कलशकी पूजा करें । गुरू वासक्षेप करे। तिसकेबाद कलशके आगे । कुशमांजली १। लवण उतारण २। पहरावणी ३। मंगलदीप ४। करे । मंगलदीपकमें मोलीकी बट्टी घृत ऐसा रक्खे । कि । शांतिपूजा पूरण होय उहांतक तो अवश्य अखंड रहे (पीछे) चतुर्विध संघसहत गुरू, इरियावही पडिक्कमें । चारनोकारको कावसग्ग करके, लोगस्स कहे ॥ बेठके, दहिणो गोडो धरतीपर रक्खे । डावोगोडो नम्रीभूत करके, चैत्यवंदन करै । नमोत्थुणं० कहके अरिहंत चेइयाणं०। वंदणवत्तिया० अनत्थु०। एक नवकारको कावसग्ग करे । नमोर्हत्सिद्धा० कहके । थुईकी गाथा कहे (यथा) ॥ यदंघ्रि नमना देव । देहिनः संतिसुस्थिता । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्न विघातिने ॥ १ ॥ लोगस्स० वंदन० अनत्थू० कहके १ नवकार० ॥ दूजीथूई कहे ॥ सुरपतिनत चरणयुगा । न्नाभेयजिनादि जिनपती नौमी । यद्वचन पालनपराः । जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ इहां पुक्खरवरदी० । वंदनवत्तिया० कहके कावसग्ग करे ॥ तीसरी स्तुति कहे ॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचंयति सूत्रतः । गणाधिपास्तीर्थ समर्थ नक्षणे । तदंगिना मस्तु मतंनमुक्तये ॥ ३ ॥ इहां । सिद्धाणं बुद्धाणं०। अनत्थू० कहके १ नवकारको कावसग्ग करे ॥ चोथी स्तुती कहे (यथा) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान् । भव्यान् जनाः भवतु नित्य ममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥ (पीछे) बेठके, नमोत्थुणं० कहके खमा उठे ॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करेमि काउसग्गं ॥ वंदन

वत्तिया०। अन्नत्थू० कहके १ नव०॥ रोग शोगादिभिर्दोषै। रंजिताय जि तारये। नमः श्रीशांतये तस्मै। विहितानत शांतये॥ ५ ॥ (ततः) श्रीशांति देवता निमत्तं करेमि०। अन्नत्थू० कहके का०॥ श्रीशांतिजिन भक्ताय। भ व्याय सुखसंपदं। श्रीशांतिदेवता देया। दशांति मपनीयते॥ ६ ॥ (ततः) श्रीश्रुतदेवता निमत्तं० ॥ सुवर्णशालनी देयात् द्वादशांगी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदामह्य। मशेष श्रुतसंपदं ॥७॥ (ततः) श्रीभुवनदेवता निमित्तं०॥ चतुर्वर्णाय संघाय। देवीभुवन वासिनी। निहत्य दुरितान्येषा। करोतु सुखमक्षतं ॥८॥ (ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्तं क०) यासांक्षेत्रगतास्संति। साधवःश्रावकादयः। जिनाज्ञां साधयं तस्था। रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥९॥ (ततः श्रीअंबिका देवता निमत्तं क०) अंबानिहित डिंबामे। सिद्धबुद्ध समन्विता। सिते सिंहे स्थि तागौरी। वितनोतु समीहितं॥ १० ॥ (ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्तं क०) धराधिपतिपत्नीया। देवी पद्मावती सदा। क्षुद्रो पद्रवतःसामां। पातुफुल्लत्फ णावली॥ ११ ॥ (ततःश्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्तं क०)। चंचश्चक्रधराचा रु। प्रवालदलसन्निभा। चिरंचक्रेश्वरीदेवी। नंदता निरवाद्भमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअछुप्ता देवता निमित्तं०) खड्गखेटक कोदंड। वाणपाणिस्तडित् द्युतिः। तुरंग गमना छुप्ता। कल्याणानि करोतुमे॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेर देवतानिमत्तं०) मथुरापुरी सुपार्श्व। श्रीपार्श्व स्तूप रक्षिका। श्रीकुबेरा नग रारूढा। सुतांकावतुवोभयात्॥ १४ ॥ (ततः श्रीब्रह्मदेवता निमत्तं०) ब्रह्म शांति समांपाया। दपाया द्वीरसेवकः। श्रीमत्सत्य पुरेसत्या। येनकीर्तिः कृता निजः॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्र देवता नि०) यागोत्रं पालयत्येव। सकला पायतःसदा। श्रीगोत्रदेवतारक्षां। शंकरोतु नतां गिरां॥ १६ ॥ (ततःश्री शक्रादि समस्त देवता नि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा;। जिनशासनसंस्थिताः। देवादेव्यस्तदन्येपि। संघरक्षंत्व पायतः॥ १७ ॥ (ततःश्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता नि०) अन्नत्थू० चारलोगस्सकोका० स्तुतिं कहे। श्रीमद्विमान मारूढा। यक्ष मातंग सेविता। सामां सिद्धायिका पातु। चक्रेचापेषु धारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स०। कहके बैठे। चैत्यवंदन०। नमोत्थुणं०। जयवी यरायपर्यंत कहै ॥२॥ इसी तरे १८ स्तुतीसें देववांदै॥ (पीछे) सुंदर अंगो पांगवाले। सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित। विवेक गुणधारक। आठ स्मात्रिया मुख

कोश बांधके, तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहे ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल नरके दोनुं तरफ धारा देनेंवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा दोनुंतरफ चामर ढालता रहे ॥ (प्रथम) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसें सात धारा दे चूके (तव) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें । नमो र्हत् सिद्धाचार्यो० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । (पीछे) नक्तामर, वमीशांति, गेटी शांति, गुणें ॥ (तथा) सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण शांति शुद्ध आती होय । जव तो गुरूकेसाथे, अपनें मनमें साते स्मरण शांतिगुणें (ओर) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहे ॥ साते स्मरण(तथा)शांति गुणें जहांतक अखंम ऊपरले गेटे कलशेमें धारा देता रहै। गींककोई न करै। कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूके (पीछे) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरै (पीछे) नीचेका कलशमेंसें। जिन प्रतिमाकों निकालके अङ्गीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ नगवानकी अङ्गी अंगीरचना करावे। नानाप्रकारका नैवेद्यफल चढाके। आरती उतारै। मंगलदीप करे ॥ पीछे शांतिजल सर्वसंघ लगावे। घरमें लेजाके गंटे । शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखमी बांधे ॥ (इससे) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय। अनेक प्रकारसें ऋद्धी वृद्धी सुख सौनाग्यकों प्राप्त होय ॥ (पीछे) जो आधा वलिवाकुल परातमें रखा हुवा है। सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है (कि) आगछ २ के गिकाणें गछ २ कहै ॥※॥

॥ ※ ॥ (यथा) ॐ नमो इंद्राय। पूर्वदिग् अधिष्टाय काय । ऐरावण वाहनाय। सहस्र नेत्राय। वज्रायुधाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे अमुक नगरे। अमुक मंदरे। अमुक महोत्सवे। सर्वोपद्रवाद्रक्ष २ गछ

गच्छ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकीतरफ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये । शक्तिहस्ताय सायु०। सवा०। सप० । अस्मि० अमु० । सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष २ । गच्छ२ स्वाहाः ॥ इति ॥(दक्षिणदिशे) ॥ ॐ नमो यमाय । दक्षिण दिगधिष्टायकाय । महिषवाहनाय । दंड आयुधाय । कृष्ण मुर्त्तये । सायु०। सप०। अस्मिन्०। सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष २ गच्छ २ स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेऋतकुणे) ॥ ॐ नमो नैऋताय । खड्गहस्ताय । सायु० सवाहनाय । सप०। अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष २ गच्छ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशे) ॥ ॐ नमो वरुणाय । पश्चिमदिगधिष्टायकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप०। अस्मिन्०। अमु०। सर्वोपद्रवा०। गच्छ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ (उत्तरदिशे) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु०। सर्वोपद्रवा० २ । गच्छ० २ स्वाहाः ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशान कूणे) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष २ गच्छ २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्ध्वलोके) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधिष्टायकाय । सायु० । सप०। अस्मि०। अमु० । सर्वोपद्रवा० गच्छ० २ स्वाहाः ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप०। अस्मि०। अमु०। सर्वोपद्रवाद्रक्षरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ॥ (पीछे) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥ (यथा) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्मसक्ताः । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । तत्सर्वं क्षमृतंदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आव्हानं नैवजानामि । नैवजानामि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥३॥ (पीछे) यथा

शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साहमीवात्सल्य करें ॥ जैनयाचकानें दानदेवें ॥ इति शांतिकपोष्टिक पूजा विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पाठक बालचंदजी.कृत पंच कल्याणक पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥※॥

॥ (दूहा) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनुं, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ※ ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ※ ॥ कल्याणक उत्सव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते भावे भविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हांरे जगदीशनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण॥नाम जिनादिक जिन कह्या, आगममांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥गाथा॥ नाम जिणा जिण नामा। ठवण जिणा उ जिणंद पडिमाउ॥ दव्वजिणा जिण जीवा। भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सव लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता। कारज रूपें सिद्ध ॥१॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हां ॥ द्र० ए ॥ न हुवे आपन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥२॥ नामादिक कारण सही ॥ हां०॥का०ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशुद्ध जिनतणी। पूज करो सहु कोय ॥३॥ व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हां० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावम शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥※ ॥

॥(दूहा)॥ ज्ञानकला कलितातमा। लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकभावें थिर रह्यो। शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा, जोति. सकल जिन राजनी। सहु लोका लोक प्रकाश ए.॥ हांहो रे देवा, राजस श्रीजिनराजजी। वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हांहो रे देवा, मात नमुं नित्य शारदा। गुरुपंच कल्याणक सार ए ॥ हांहो रे देवा, तीर्थंकरना वरणवुं। गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥२॥

॥ (दूहा) ॥ शासन नायक जग धणी। त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहो रे देवा, वीश थानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० दिव्य अमर सुख अनुनवे । प्राये प्रनु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हांहो०॥ निरमल तर वर ज्ञानना । धारक कारक शुनयोग ए॥ हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना । शुन्न फरस तणा वर नोग ए ॥ २ ॥ हांहो०। शाश्वत सिद्धायण तणा । नित नत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो०॥ बालचंद पाठक कहे । नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ☀ ॥

॥(दूहा) ॥ पुण्य पूर्व नव प्रनुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रनाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे । नाटक नवनव नाव ॥ १ ॥ ☀ ॥

॥☀॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥☀॥

॥ शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणाकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥ हे अइयो विविधकारी ॥ ए आं०॥ एक निजधर्ममय परमलय लीनता । दीनता सकल तज रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० ॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमप णे वृत्तिता । तजिय बहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ० ॥ आ० ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुन्न धर्म रुचि नास सारी ॥ हे अ० ना० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति जगमग जगे, चंद्रिका नास नासित करारी ॥ हे अ० ना० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें मुदा ॥ आयुकर बंध नर नव सुधारी ॥ हे अ० न० ॥ गर्न अवतार निज मात नदरें लहे । बाल शुन्न लग्न शुन्न योग चारी ॥ हे अ०॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ ☀ ॥ दोहा ॥ ☀ ॥

॥ शुनदिन शुन्न मुहूरत घमी । शुन्न नच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रनु लहे। मातु नदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥☀॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी नजो नवि प्यारा । या तें आनंद अधिक अ पारा ॥ जि०॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मननाता ॥ चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि०॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार ॥ धज कुंन पदमसर सारा ॥ जि०॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥४॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुनसूचक

पुण्य संभारा ॥ जि०॥ ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगें, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ ए भणी एक पुष्पमाला चढावे ॥

॥॥ दोहा ॥॥

॥ परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रभु पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥※॥

॥ आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें ॥ चौद सुपन सूचित गुण जेहना, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन वज्ञ सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज मनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जनजनमें ॥ आ०॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरत हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन वढत प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमतें, भरत भंमार नृपके सदनमें ॥ आ०॥४॥ ताल कंसाल मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन ननमें ॥ डुन्डुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाद, निशिदिन होत जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो, शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद भयो हे तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐह्रींश्रीं परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये जन्मजरामत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा ॥ ※ ॥

॥॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥॥

॥ (दूहा) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग सोरठी ॥ ※ ॥

॥ आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे ॥ आजे,

जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधु वन मिल आई रे ॥१॥ आगे आज आनंदघन ऊलट्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आगे दशदिश निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे ॥२॥ आगे फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सब धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरषित भयो रे वाला, भूमंमल छवि गई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महूरतघमी रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥ जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलावजलकी वर्षा करे ॥ ※ ॥

॥ (सोरठो)॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव भवे ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ रावण निरत वणावे हो भला एदेशी ॥

॥※॥ आज आनंद वधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयों जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ वरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर फर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे । स्नान करावत उभय शरीरे, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग विलेपन, देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्प्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल ढुलाई रे ॥ दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे वंधाई रे ॥ दे०॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगजननी, निजगृह मांहे गई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ (दूहा)॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ राग गोमी ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥※॥

॥※॥ आज उछव मन भायो रे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उल्लसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे०॥ आ० ॥२॥ वनभन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायो रे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भूषित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायो रे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, सिंहासण ऊपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ (दूहा) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ※॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जग दिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरज करतहुं सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ मैं सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांमुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥५॥

॥ (दूहा)॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंमुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इतनो गुमान न करियें बत्रीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ※ ॥
॥ जिनजीको पूजन करियें, हां रे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव बेहुभेदें करतां, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥ पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्री श्री प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥※॥

॥(दूहा)॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंमार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ गाव लूहे०॥ ए देशी ॥※॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उछरंगशुं ॥ रंगसुं हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजस कीरत विस्तरे ॥ वि० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर वधु मिल सुरसंगशु रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हांरे० ॥ बाललीला जिनसंगमें ॥३॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥देवा॥ इंद्रादिक मन मोहता ॥ मो० हांरेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीमा अतिशयवता ॥अ०हां०॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां०॥ वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ (दूहा)॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीमातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ पंच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥※॥ वरणी न जाती रे, व०॥ जिनजीकी शोभा व०॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, उरन एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि

शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोहन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशि दिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें, प्रात भये सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥ ॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिश भावन भावत, देख दरश अति हरखाती ॥ दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजत नित, सुरवधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए पढके प्रभुकों पुष्प वासक्षेप चढावे ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ (दूहा) ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें, प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥१॥ ✲ ॥ ॥ ✲॥

॥ ✲ ॥ राग ठुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ० ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र०॥ गृहवासें शुधसंयमधारी, शुद्धसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभवनिर्वेद, स्वतनकी जर खोई रे॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरने, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमे नित, आतम निरमल धोई रे ॥ आतमरूप निहारत निजघर, संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र०॥ ॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आतम उजियारे, साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु जीनो लीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना छीण भई लख । आतम शक्तिशुं छोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ (दूहा) ॥ दाता दीन दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे दारिद्र जग, त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ मरुदेवानंदकी, क्या छवि लागत प्यारी ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ जगपति जिनवरकी, क्या छवि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत प्रभुके मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतराय कर्म कछु, क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदितकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सबें मिल, हाजर होय सुचारी॥ जय जय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान

धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥४॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो त्सव अतिभारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव वर ज्ञान भयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्या० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोमा कोम ॥ जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे। जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव संवर गहे, संयमभाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धारी धारी धारी, जिन भए संयमपद धारी ॥ चरणकमल ब लिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर, सब जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणभारी ॥ भयभैरवतें निःप्रकंप भए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती, खेसम निराश्र यारी ॥ खड्गी शृंग परें एकाकी, अप्रतिबंध विहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) ॥ रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशि दिन करत विहारक्रम, प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी॥जि०॥१॥कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद भारंमसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुंजर करम विदारी ॥ अतिगंभीर

सायरसम शोन्नित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वच्छ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (दोहा) अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ कुब्जानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ॥

॥ ॥ जाके रागद्वेष न्नया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रन्नु जगमें, अपकारें उपकारा रे, ॥ सो०॥१॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख डुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु न्नवसुख हू न वांछे, वीतराग प्रन्नु प्यारा ॥ शूरवीर प्रन्नु क्षपकश्रेणि चढ, मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो०॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुन्न योगें, अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठकविजय विमल कहे प्रन्नुके, चरणकमल वलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (दोहा) घनघाती चउ कर्मकों, क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शन लोकालोकको । प्रगटप्रकाशी न्नान ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग ठुमरी ॥ बस मन कृष्ण कुंमके तीर ॥ ॥

॥ ॥ पायो प्रन्नु न्नवजलनिधिको तीर, अतुलीवल वमवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा०॥ १ ॥ मार्दवआर्जव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणठी, रही ईर्या सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट न्नयो हे, निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद, न्नयो अनुकूल समीर ॥ दें उपदेश न्नविक प्रतिबोधत, वचनातिशय गंन्नीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रन्नुता परम सुथीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सव मिली, तीन भुवन शिरदार ॥ सव दरसी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥१॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणं०॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इंद्र उच्छव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सव मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ डुंडुभि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यंग विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणे उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए॥ प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ०॥ ५ ॥ ए पढके वासक्षेप करे ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणे प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रभुता परमसम । परमातम पदभूप ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भूमंमल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणजंते इक कोमी अमरपद, पंकज भमर लुभाया रे ॥भू०॥१॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए कहके वासक्षेप करे ॥ ०॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा)॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥

मीठी अमृत सम गिरा, समजत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग कहेरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनंदवामिल गयो रे, दोय चरणं परध्यान ॥ शुक्ल मन गह गह्यो रे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनो रे, सवदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु सम जग वालहो रे, सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममें लह लह्यो रे ॥ दो०॥१॥ चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम वादरकंत ॥ वंध सव टर गयो रे, सरव संवर भयो रे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनो रे, कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुवंध ॥ निजआतम रूपें लह्युंरे, शाश्वत सुख संवंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद, चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऋरध गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वत वर, अनंत महासुख छाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्धस रूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिकनिरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत भगणीसं तेरोत्तर, श्रावण शुदि पख राजे॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥४॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धर्म्मसुंदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्मप्रभावन काजें ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐह्रीं प० ॥ अनं० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणायय: श्री मज्जिनेंद्रेभ्यो नि
र्वाणकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति पाठक विजयविम
लजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥❋॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ आरती प्रभुकी भद्र रचित्तें, करो भविक रसाल रे ॥ प्रथ
मधूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननाल रे ॥ १॥ भाल निजकर तिलक सुंदर,
पहर पुष्प सुमाल रे ॥ दक्षिणकर जिन राजजुके, कर आवर्त्त सुथाल रे ॥
शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियाल रे ॥ द्रव्यभावें वि
विधपूजा, भविकभाव विशाल रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो,
प्रभुपरम दयाल रे ॥ जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक वाल रे ॥
शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें (तथा) ऋध्धिवंत सेठ सककारादिककी
तरफसें (तथा) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उच्छव
होय (तबतो) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उच्छव
करे। पांच दिनमें पांच कल्याणक करै (और) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी
बीश स्थानक, सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उच्छव विस्तार वि
धिसाथ करावै। ऐसें १० दिनका उच्छव करै ॥ (यथा) पहले दिन पूठिया
चंद्रवा तोरणादिकसें मंडपकी स्थापना करावे । १० दिग्पालांकों बलबाकुल
दिरावे । जल यात्रादि उच्छव करके मंगल कलश थापन करै (इत्यादि)॥
दूशरे दिन चवन कल्याणकको उच्छव करै (जैसें) देवलोकसें चवके माताके
गर्भमें आवै (तैसें) भगवानकी माताको काष्टमई घरादिकमें पधि बिंबो
स्थापन करै (पीछे) ऊपर सेती काष्ट विमानमें भगवानको प्रतिबिंब स्थापन
करके नीचै उतारै (पीछे) चवदै स्वप्नांकों क्रमसें उतारै। माताके मंडपकेपा
स रख्के । तीन नवकार गुणके उतारै (और) तीन नवकार गुणके स्था
पन करै । (पीछे) एक (वा) २४ रत्न (अथवा) एक (वा) २४
रुपियांसें । चवन कल्याणककी थापना करै (और) चवन कल्याणककी
पांच पूजा पढै ॥ ❋ ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ※ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधि ॥ ※ ॥

॥ तीशरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उछव करै (जैसें) छप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उछव करै ॥ तिस पीछे, सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इंद्रादिकका रूप करके भगवानकों थापन करे। सोनें, रूपै, तांबा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरै का कलश बन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसें भरभरके स्नात्र उछव करावै ॥ भृंगार १। दर्पण २। रत्न करंमक ३। स्थाल ४। पुष्प चंगेरिका ५। इत्यादि उपगरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखें ॥ सर्व क्षेत्रोंकी सुगंधी उषधीयांसें स्नात्र करावे । गुलाबजलकी, पुष्पां की, रत्नांकी, वर्षा करे । तदनंतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उछव कियो उस माफक अपनेसें बन सके जिस मुजब संपूर्ण उछव करे। (तदनंतर) घृतसेर २४,। नैवेद्य सेर २४। गुम सेर २४। फल अच्छा २४ । चढावे । २४ सधव स्त्रियां मिलके २४ गवली करै ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढै । आरती मंगल दीपं उतारे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधि ॥ ※ ॥

॥ चोथे दिन दिक्षा कल्याणकको उछव करै । खाशा पालखीमें भगवा नकों बेठाके, वर घोमो वाजित्रादि सहत बमे उछवसें निकाले । अच्छा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे सिंघासनपर स्थापन करके स्नात्र उछव करावे । २४ । गज उत्तम वस्त्र चढावे । वाशक्षेप लेके नवीन चंद्रवा चढावे । दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे । जैन याचकादिककों दान देवे । साहमीवछल करे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पांचमें दिन त्रिगमा समोसरणकी रचना करे । मुगट छत्र चामरादि अनेक तरैके रत्नजमित आभूषण सहत भगवानकों स्थापन करै । पंचवर्णा सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसें पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ॥ अथ मोक्ष कल्याणक विधि ॥ ॥

॥ ॥ छठे दिन विस्तार विधिसें स्नात्र करावे । निर्वाण विधिका गुण वर्णनकी पांच पूजा करावे ॥ २४ अछा उत्तम द्रव्यका लाडू चढावे । भंडारकी वृद्धी करे ॥ आरती मंगल दीप करे ॥ यथा शक्ति ज्ञान पूजा गुरू पूजा करे ॥ साहमी वछल करै ॥ इति पंच कल्याणक पूजा विधि॥ अब संक्षेप रुचि, शक्ति, भक्ति, वाले जो जीव होय (सो) अपनी शक्ति माफक । पंच कल्याणकी पूजा करावै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ संक्षेप विधि लि० ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम त्रिगडा नीचे पांच साथिया करके । पांच रुपिया पांच नालेरसें थापना करै । प्रतिमा जीकों तीन नवकार गुणके । स्थापनका मंत्र बोलके । समोसरणपर स्थापना करे ॥ (स्थापन मंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमेश्वराय । षट् पंचाशद्दिक्कुमारी परिपूजिताय । चतुःषष्टि इंद्र महिताय सर्व जन हिताय । देवाधिदेवाय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वाहा ॥ ॥ कोई पूजादिक महोछवमें इस मंत्रसें समोसरणपर भगवानकों स्थापन करना ॥ पीछे च्यवन कल्याणककी पांच पूजा पढै । अष्ट द्रव्य चढावे । पुष्पमाला १ तथा, पुष्प अत्तर चढावे । गुलावजलकी वर्षा करे । हीरो चढावे ॥ इत्यादि ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा विधि ॥ ॥ जन्म कल्याणककी पूजामें दो तीन पूजा गायके भीतरसें पंच तीर्थी लायके स्थापन करै । स्नात्र करावै । धजा फेरावे । पीछे पंचतीर्थी सागी ठिकाणे स्थापन करै । पूजा सर्व भये पीछे । अष्टद्रव्य, गुड़, घृत, आदि चढावै । अष्टमंगलीककी रचना करे ॥ इति ॥ दिक्षा कल्याणककी पूजामें । पुष्पमाला । वाशचूर्ण । अष्टद्रव्य, कोमल सुगंधी उत्तम वस्त्र चढावे ॥ इति ॥ केवल ग्यानकी पूजामें आभूषण अष्टद्रव्य, वाशचूर्ण, सपेद गोला, चढावै ॥ इति ॥ निर्वाण कल्याणकमें । गुड़, गोला, लाडू, आदि अष्टद्रव्य चढावै ॥ पांचों पूजामें रोकनाणो यथाशक्ति चढावै । (पीछे) ग्यान पूजा, गुरु पूजा करै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति संक्षेप पंच कल्याणक विधि ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ नवपद मंम्लल पूजा विधि लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा (इसमंत्रसें) जलमंत्रे (पीछे) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमे पांपा वांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ (इस मंत्रकों) सात वेर पढता हुवा स्नान करै (पीछे) ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रौं नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे (पीछे) ॐ आँ ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥ (इस मंत्रसें) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ ।.वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । मडु म डुरे । ॐ कवली कः क्षः स्वाहाः ॥ (इस मंत्रसें) मोली मेंढल मरोमा फली मंत्रायके हाथके वांधे ॥ (और) जब मंम्ललजीके चारुं तरफ मोली मेंढल वांधे। सोभी, इसी मंत्रसें मंत्रके वांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोमके वैठे ॥ (जब गुरू) ॐ पर मेष्टी स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करंवज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ णमो सवसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमे उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सवसाहूणं । मोच के पादयोशुभे । एसो पंचनमुकारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव पांव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणंच सवेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां ! परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ※ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥※॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ (पीछे) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवै ॥ (तथा) तीन नवकार गुणके सवं स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ (इतनी विधीतो) हरकोई पूजा प्रतिष्ठा मंम्ललादिकमें स्नात्रियांकों प्रथम अवश्य करणी करा

णी चढ़ियै ॥ (पीछे) मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) चंपेलीका तेलमें, हिंगलू (वा) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग (वा) मालीपन्नासें अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप, नेवेद्य फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ऐसा वोलता हुवा चढावे ॥ (पीछे) मंन्दलजीके दहिणेंपासे, १० दश दिग्पालके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढाता रहे ॥ दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीछे । ऊपर कसुंवल वस्त्र वांधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करै ॥ (पीछे) वामपासे नवग्रहका पटकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै॥ (पीछे) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ (इहां) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र (तथा) देव वंदनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है (सो) पूर्वेशांति पूजामें लिख आए हैं (उसी मुजव) सर्व विधि करावे (पीछे) मंन्दरजीकी प्रतिष्टा करे ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ मंन्दल प्रतिष्ठा विधि ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करै ॥ इन दोनुं दीपककों चार पहर अखंन्ड रक्खे । (पीछे) सोनें, चांदी, आदिका कलशमें अवोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करै । हाथमें कलश लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ ॐ ह्रीँ जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें ७ वार जलकों मंत्रके । मंन्दलजीके चारुं तरफ धारा देवे । ऊपर जरा छांटा देके पवित्र करै । धूप खेवै (पीछे) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंन्दलजीके वाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली (तथा) मैंढल मरोम्हा फली चारुं तरफ वांधे ॥ (पीछे) केशरकी कटोरी हाथमें लेके (ॐ आँ ह्रीँ श्रीँ अर्हतेनमः) इस मंत्रसें मंत्रके मंन्दलके ऊपर केशरका छींटा देवे । (ऊपर) चावलको साथियो करै । टीकी देवे । मंन्दलके अगाडी चावलको साथियो (वा) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो भेट धरे ॥ (पीछे) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंन्दलजीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ (पीछे) वाशक्षेप, पुष्प, हाथ

में लेके (ॐ नूरसी नूतधात्री विश्वाधारैनमः ॥) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंमलनूमि, तथा, पीठकी पूजा करै ॥ फेर, आचार्य गुरु वासक्षेप हाथमें लेके (ॐ ह्रीँश्री अर्हत्पीठायनम) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंमल पीठकी पूजा करे ॥ (पीछे) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंम लकों वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नालेर थापनाको धरै । (पीछे) स्नात्रिया मंदरके नीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगमा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करै ॥ (स्थापन मंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमे श्वराय । चतुर्मुखाय परमेष्टिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासु रेंद्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वा हा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके । नवप्रतिमा (वा) एकप्रतिमा स्थापन करै॥ (इसीतरे) मंमल प्रतिष्टा करके (पीछे) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥ ॥ (प्रथम) एकरकेबीमें । सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प, अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद की पूजा पढै ॥ (यथा) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्भुतोल्लसद्बोधा । नावतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषें धन धूम केतुः । नपारं संसार समुद्र सेतून् । यजे समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसें अर्हत पदकी थापना पूजा करे । सर्व द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) रकेबीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मुंगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढै ॥ (यथा) तस्य पूर्व दले सिद्धान् । सम्यक्तादि गुणात्मकान् । निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे नक्ति निर्नरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वं पत्रे परितः प्रणष्टः । डष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशाकी तरफ सिद्ध पदकी स्थाप ना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ ॥ इति ॥ ॥ (पीछे) रकेबीमें पीलो गोलो पीली धजा, पीलो, वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे ॥(यथा) स्थापयामिततः सुरीन् । दक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पंचधाचारान् ।

षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा । नाचारयंतः स्वपरान् यथेष्टं । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थः । मत्त्यर्चया स्यद्कृतगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सूरीभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ☼ ॥ (पीछे) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामुगकालड्डु, हरीधजा, ४ इंद्रनील, २५ मरकतरत्नपन्ना, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ (यथा) द्वादशांग श्रुताधारान् । शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै । पठंतियेन्यानपि पाठयंति । अध्यापकां स्तांनपराब्जपत्रै । स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदको स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ☼ ॥ (पीछे) रकेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा। उडदकालड्डू, ५ राजपट्ट, २७अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके साधुपदकी पूजा पढै ॥ (यथा) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुध्यानध्यानैक मानसान् । उदक पत्रगतान् वारान् । साधुवासीस सुव्रतान् ॥९॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषा मुदक्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्री सर्व साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरदिशकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ☼ ॥ (पीछे) रकेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (यथा श्लोकः) जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्यात्व मथनं शुद्धं । नस्त मीशान् सद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहाः ॥ ६ ॥ ईशान कूणें दर्शनपदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ (पीछे) रकेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लड्डू आदि श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव भासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूणकीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ☼ ॥ (फेर) रकेबीमे सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र, आदि श्वेत द्रव्य हाथमें

लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) सामायिकादि भिर्भेदै । श्चारित्रं चारुपंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रेह नैरुते कमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैरुत कूणकी तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ※ ॥ (पीछे) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप पदको श्लोक बोलके चढावें ॥ (श्लोकः) द्विधा द्वादशधाभिन्नं । पूतेपत्र तपःस्वयं । निधापयामि भक्त्यात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ए ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ※ ॥ (अथ अर्घ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशय मयतनून् श्री जिनेंद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्तादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्यादि संघ्रे । स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदाने ॥ १५ ॥ इत्थमष्टदलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ असिआउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीँ श्री अर्ह परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ (इति मूलमंत्रः) ॥ इति सिद्धचक्र प्रथमवलय मूलपूजा विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय वलयपूजा विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम वलयमें एक मध्य, चार दिशा, चार विदिश, एवं अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मंमलके मध्यभागमें होय । उनोंकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ (पीछे) दूसरा वलयमें भूमीके आकार १६ कोठा होय । (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें, अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै । (और) एकेक कोठा बीचमें खाली रहा है (उसमें) अनाहत पद (ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं) ऐसा पदस्थापन करै ॥ (पीछे) एक रकेबीमें, मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां लेके खमा रहे । अनाहत पदमें मिश्री, लवंग, चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाखा चढावे॥ (यथा) ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढावे ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीँ स्वर वर्गाय नमः ॥

(इहां) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । ॐ ह्रीं व्यंजन कवर्गायैनमः ॥१६॥ दाखच०॥४॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ५ ॥ चछजझञ । ॐ ह्रीं चवर्गायैनमः॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ टठडढण । ॐ ह्रीं टवर्गायैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ९ ॥ तथदधन । ॐ ह्रीं तवर्गा नम ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफबभम । ॐ ह्रीं पवर्गायैनमः ॥१२॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । ॐ ह्रीं यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । ॐ ह्रीं शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावै ॥ सव ९६ द्राख (और) यरलव १। शषसह २। यह दो वर्गमें ६४ द्राख चढावै ॥※॥ इति दूसरा वलय पूजनविधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ अब (तीसरा वलयमें) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्टी, पद स्थापन निमत्त आठ कोण करै ॥ इस आठ कोणके बीच बीचमें वलाका तीन तीन देवे ॥ तीनुं वलाकामें २४ खाना ऊवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें । चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना॥

॥ ※ ॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आठ परमेष्टी पदोंमें । ॐ ह्रीं परमेष्टिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८ वेर कहके ८ वीजोरा चढावै (और) लब्धि पदका नाम बोलके खारकां ४८ चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं ॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं ॥१०॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमईणं ॥१५॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमईणं॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं

अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठंग निमत्त कुशलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इढ्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लब्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णासमणाणं ॥२३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मझुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवया महाइ महावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वद्धमाणाणं ॥३३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण वलीणं ॥४७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं ॥४८॥ ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यालब्धि पदेभ्योनमः ॥ ✻ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चौथे पांचमें वलयमें खारकां सव ४८ चढावे ॥ (पीछे) मंमलजीके गलेके स्थानके ह्रीं कारजी स्थापन कि । है (जहांसें) साढातीन वलाका, मंमलजीके चौतरफ देके नीचे(क्रौं) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें, आठे दिशाये, आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाममफल चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं अर्हंत् पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ (दामम चढावे) ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्योनमः॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनंत

गुरुपादुकाभ्योनमः॥ ७॥ ॐ ह्रीं अनंतानंत गुरुपादुकाभ्योनमः ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीअष्टगुरु पादुकेभ्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरे छठावलयमें ८ दोफल चढावे ॥ (पीछे) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर के । ८ नारंगी चढावै ॥(यथा) ॐ ह्रीं जयायैनमः स्वाहा॥१॥ ॐ ह्रीं जंभायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायैनमः स्वाहा ॥३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायैनमः स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं जयंत्यैनमः स्वाहा॥५॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा॥६॥ ॐ ह्रीं अपराजितायैनमः॥ ७॥ॐ ह्रीं अंधायै नमः ॥८॥(इसीतरें) सातमा वलयमें८ नारंगी चढावै ॥ ॥ (पीछे) आठमा वलयमें। १६ विद्यादेव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाई भई १६ सुपारयां चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीं रोहण्यैनम, ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रशृंखला यैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ।५॥ ॐ ह्रीं पुरष दत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं वैरोट्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अच्छुतायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ (इसीतरे) आठमा वलयमें चारुं तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ (पीछे) नवमा वलयकै वामवासे । २४ शाशनदेव्याकों स्थापन करके २४ सुपारयां चढावै॥ (यथा) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ दुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुंतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंडायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ वलायैनमः ॥१७॥ ॐ धारण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥१९॥ ॐ नरदत्तायैनमः॥२०॥ ॐ गांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥२२॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥२३॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरै वामपासे २४ ॥ देव्यांकी स्थापना करै ॥ (पीछे) दक्षिणपासे २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी

चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ भृकुटयेनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः॥२०॥ ॐ कुवेरायनमः ॥१९॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥१८॥ ॐ गंधर्वायनमः ॥१७॥ ॐ गरुमायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐ पातालायनमः ॥ ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायन : ॥ १ ॥ इसी तरै नवमा वलयके दक्षिणपासे २४ यक्षकी थापना करके २४ सुपारी चढावै ॥ (पीछे) चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वलवाकुल चढावै ॥ (यथा) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ (पूर्वदिशी) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥ दक्षिण०॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ (पश्चिम) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ※ ॥ (पीछे) चार विदिशाकीतरफ चार वीर पदे कृष्ण वलवाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ माणिभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ इसीतरै दशमा वलयमें आठुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्थापन करै ॥ (पीछे) पूर्ण कलशाके आकार, ऊपरसें किया हुवा, सिद्धचक्रजीके गलेके स्थानक, नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशामें यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करै ॥ (यथा) ॐ नैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐ पांमुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरै मुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ※ ॥ (पीछे) कोहलोफल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बराबर पासमें वंगलीका आकार किया है ॥ (जहां) ॐ ह्रीं विमल स्वमिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढावे । (फेर) कोहलोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे वंगलीमें (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ २ ॥ (पीछे) तीसरो कोहं

लोफल हाथमें लेके, अधःपीठीके दहिणपासे वंगलीमें (ॐ चक्रेश्वर्यैन मः ॥) ऐसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चोथो कोहलोफल हाथमें लेके नीचे पीठाके वामपासे वंगलीमें (ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्टाय कायनमः) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ (पीछे) दशोदिशायें इंद्रादिक दशदिग्पालकों स्थापन करे (वनसकेतो) अपना २ वर्णमुजब वस्त्र नेवेद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे (अथवा) सर्वको एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चंदन, केशर, चंपो, द्राख, पीलोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिशि) ॐ यमायनमः ॥ ३ ॥ कालेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ (नेऋतकूणे) ॐ नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सब द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ वायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ उतरदिशि) ॐ कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ईशानकूणे) ॐ ईशानायनमः ॥८॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ (अधोदिशिः) ॐ नागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ (ऊर्ध्वदिशि) मस्तके । ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ५ ॥ (पीछे) नीचे पीठीके स्थानकके बीचमें ९ कोठा किया हुवा है (जहां) नवग्रहको स्थापना पूजा करै ॥ (यथा) ॐ सूर्यायनमः ॥ १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ ॐ सोमायनमः ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐ भोमायनमः ॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य० ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥ मुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनमः नीलेरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ नील रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरै नीचैं नवग्रहकी स्थापना

करै (पीछे) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके । आरती नवपदजीकी करै पीछे नवपदको चैत्यवंदन करै॥ उप्पन्नसन्नाण०(तथा) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदढ पीठपइठियो । सिद्ध सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गरठ्ठि । दंश ण नाण चरित्त तव पमिशाहे सुंदरू ॥ तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लमंवरू । दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अह्मन वंछिय दियउ ॥ १ ॥ (पीछे) । जंकिंचि नमोत्थुणं०। नमोर्हत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके। जयवीयराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे ॥ नवपद स्तुति कहै ॥ (पीछे) गुरूकेपास आयके वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरुपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥ (पीछे) यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवपद मंमल पूजन विधिः ॥ अब जाणना चाहियै (कि) जब कोई श्रीमंत ऊन्नीकी तपस्या करै तब तो छए महिने मंमल पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहै ॥ और तपस्या ४॥ साढाचार वरसमें पूरण होय (तब) वमाउछवकेसाथ मंमल रच ना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ संपूर्ण देवखातै, ग्यानखातै, गुरुखातैका उपगरण नव नव करायके । प्रथम धर्मशालामें सुशोभित करै । दशपनरैदिन जलजात्रादि अनेक तरैका उछव करै ॥ (पीछे) देवका देवखातै देवै । ग्यानका ग्यानखाते । गुरूका गुरूखाते । उपगरणादि द्रव्य देवै ॥ (और) ऋद्धीरहित क्रिया भावसें संपूर्ण करै । द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजब करै॥ (और) पंचायती संघ तरफसें मंगलीक अर्थ छए महिने मंमल रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहै ॥ ऊन्नी करनेंका विधि (तथा) नवपद पूजा, स्तवन, थूई, संपूर्ण, इस रत्नसागरका प्रथम भागमें लिखा डुवा है (इससें) इहां न लिखा है । उसमुजब करै, करावै ॥ ॥ ※ ॥ इति विशेष विधि ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ संघमालारोपण विधि लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम मालारोपणका मडूर्तके पहलेदिन मध्यान्नसमे सुहाग णस्त्री. चांदी आदिका थालकू भीतर, कुंकुंको स थियो करके, ऊपर चाव लांको करै । पांच सुपारी नालेर १ धरी । माला पधरावी सुहागणस्त्री अप

ने हाथसें मस्तकपर धरै। (पीछे) सारै संघसहित गीत गावते वाजित्र वाजते गुरूपासे आवै ॥ सधवस्त्री गवली करै। और स्त्रीयां गवलीगावै ॥ (पीछे) गुरू वर्द्धस्वासे, वर्द्धमानविद्या मंत्रेकरी वाशक्षेप मुठीभरी माला प्रतिष्टत करै (यथा) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ ह्रीं णमो अरहउ भगवउ वद्धमाणस मिरस। जए विजये जयंते अपराजिए सव्वठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा॥इति वर्द्धमान विद्या॥इसीतरै मालापर वाशक्षेप करायके वाजित्र वाजते स्वस्थानक आवै। वाजोट ऊपर थाल रक्खे। धूप दीप सहित रात्री जागर्ण करै। श्रीफलादिककी प्रभावना करै। (पीछे) माला ग्राहक प्रभातरूमें प्रतिक्रमण करके पडिलेहण देव वंदनादि करे। जिनपूजा करे (पीछे) महूर्तवेलाये वाजित्रादि उच्छव सहत संघसाथे गुरूपासे आवै। पांच श्रीफल रोकनाणो हाथमें लेके। नांदकों ३ प्रदक्षिणा देके भेट करे। नांदके चौखूणें साथियाचार कुंकुं चावलका करै॥ ऊपर अच्छा विदामादि फल चढावे॥ (पीछे) मालाग्राहक चरवलो मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूकेसाथ इरियावही पडिक्कमें ॥ (पीछे) श्रावक खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहै॥ फेर खमासमण देके, इच्छकार भगवन् तुम्हे अम्हं संघपति माला आरोहावणि देववंदावणि वाशनिक्षेप करो (तव) गुरू वाशक्षेप करे (पीछे) फेर खमासमण देई तुम्हे, अम्हं संघपतिमाला आरोहावणी देववंदावो (गुरूकहे वंदेह) श्रावक इच्छं कही गुरूकेसाथ देववंदन करे॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ देववंदन विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम खमासण देके इच्छा० भगवन् चैत्यवंदन करुं (गुरुकहे करेह) पीछे, गुरू चैत्यवंदन वोले॥ श्रावक नमोत्थुणं कहै॥ अरिहंतचेइ० कही। एक नवकारको कावसग्ग करे। नमोर्हत् सिद्धा० कहके। गुरु, स्तुति कहे (यथा) अर्हस्तनोतु सश्रेय। श्रियं यध्याननो नरैः। अप्यैंद्री सकलात्रेहि। रहंसा सहसोच्यते॥ १॥ (पीछे) लोगस्सउज्जो०। सव्वलोए०। वंदन०। अनत्थू० कहके १ नवका० ॥ (स्तुति कहै)॥ ॐ मिति मंताय। शासनस्य नता सदा यदङ्घ्रीव। आश्रियंते श्रियांते। भवतो २ जिना

पातु ॥२॥ (पीछे) पुक्खरवरदी० वंदन० कहके १ नोकार० करै (स्तुति) नवतत्वयुता त्रिपदी । मिश्रेता रुचिज्ञान पुण्यशक्तिमता । वरधर्म कीर्त्तिविद्या । नद्यास्य जैनगी ज्जीयात् ॥ ३ ॥ (पीछे) सिद्धाणं बुद्धाणं० ममदिसंतु, पावत्कहै ॥ (ततः) श्रीशांतिनाथ आराधनार्थ करेमिका० । वंदन० । अनत्थू० कहके । एक लोगस्सको काउसग्ग करै ॥ नमोर्हत्० । (स्तुति०) ॥ श्रीशांतिश्रुतशांति । प्रशांतिको वशांति मुपशांति । नयतुसदा यस्यपदा सुशांतिदाः शांतिजिने ॥ ४ ॥ (ततः) द्वादशांगी आराधनार्थं क० । वंदन० एक नोकारको का० । पारके नमोर्हत्० । सकलार्थ सिद्धिसाधन । वीजो पांगा सदास्फुरदुपांगा । भवतादनुपहतमहा । नमो पदा द्वादसांगीव ॥ ५ ॥ (ततः) सुअदेवयाए आराधनार्थ क० ॥ अनत्थू० कहके १ नव कार० (नमो०) वदवदती वागवादनी । भगवति कः श्रुतगमेत्तु । रंगत रंगमितिवर । तरणीस्तुभ्यं नमइतीहः ॥ ६ ॥ (ततः) शासन देवता नि मित्तं करे० । अनत्थु कही १ नवकार० (स्तुतिः) उपसर्ग विलय विध न । निरती जिन सासनावने फरता । द्रुतमिह समिहीं तक्ते । स्युशासनं देवताभवतु ॥ ७ ॥ (पीछे) समस्त वेयावच्चगराणं शांतिकराणां समदिठि समाहि० । अनत्थू० । १ नवकार० । (स्तुतिः) संघत्रये गुरु गुणोघ निर्घेसुवैया । वत्यादिकृत्य करणैक निवद्धकक्षा । तेशांतये सहभवंतु सुरा सुरीभिः । सदृष्टयो निखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार, नमोत्थुणं०, जावंतिचेइ०, नमोर्हत्० कहके स्तवन कहे ॥ उ मिति नमो भगवउ । अरिहंत सिद्धाचारिय उवझाए । वरसव्वसाहु मुणिसं घ । धम्मतित्थय पवयणस्स ॥१॥ सप्पणव नमो तह भगवइ । सुअदेवयाइ सुहयाए । सिवसंति देवयाय । सियपवयणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमने रइया । वरुणो वायु कुबेर ईसाणा । बंभो नागुत्ति दसम । मविय सुदिसाण पालाण ॥ ३ ॥ सोम यम वरुण वेसमण । वासवाणं तहेव पंचन्हं । तह लोगपालयाणं । सुराई गहाणय नवन्हं ॥४॥ साहंतस्स समक्खं । मझमिणचेव धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छउ । जिणाणं नवकार उ भणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीयराय कहे ॥ (पीछे) भगवान आगे पमदा करके माला आदिक, गुरू भतई द्वादशावर्त्त वंदनाये वांदे (पीछे) खमा देके कहे १

इच्छकारभ० तुम्हे अम्हं संघपतिमाला आरोहावणी उद्देसावणी नंदीसुत्र संभ लावणी काउसग्ग करावो। (गुरु कहे करेह) इच्छं, संघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमिकाउसग्गं॥ अनत्थू० कहके १ लोगस्सको का०॥ प्रगट लोगस्सकहे॥ गुरुविण काउसग्ग करे॥ (पीछे) मालाग्राहक खमासण देई। इच्छकार भगवन नंदीसुत्र संभलावो (तव) गुरू ऊभा होके हाथ मां, वाशक्षेप लेके (तीन नवकार सुणावे) नित्थारग पारगाहोह कहके मस्तकपर वासक्षेप करे।(पीछे) श्रावक खमासमण देके इच्छा० संघपति माला उद्देसउ (गुरु० उद्देसउ)। फेर श्रावक इच्छामि० इच्छाका०। किंभ णामी (गुरु० वंदित्तापवेह) फेर खमा०। इच्छंतुम्हे अम्हं संघपतिमाला उद्दिउ। इच्छामो अणुसहिं॥ उदिठि १ खमासमणाणं। हत्थेणं। सुत्तेणं। अत्थेणं। तडभयेणं। जोगकरी जाहि। गुरुगुण वुद्धि जाहि। नित्थारग पारगाहोह॥ (फेर) खमासण देई तुह्माणं पवेइए संदिसह साऊणं पवेमी॥ (गुरुकहै पवेह) पीछे खमासण देके तीन नवकार गुणतां नांदकों ३ प्रदक्षिणा देवै। वासक्षेप चढावे॥ गुरू १ प्रदक्षिणा देवे (पीछे) माला ग्राहक मुहपत्ती पमिले है॥ खमासण देके। इच्छा०। तुह्माणं पवेइयं संदिसह भगवन् काउसग्गं करे मी। इच्छामि०। इच्छाका० भगवन् तुह्मे अह्मं संघपति माला उद्देसामणी आरोहावणी करेमि काउसग्गं॥ अन्नत्थु कहके १ लोगस्सको का०। प्रगट लोगस्स कहे। (पीछे) खमासण देके वैसणोसंदीसाउं। दूजे ख मासणें वैसणोठाउं। पीछे खमासण देके जो विधि करतां अवधि आसात ना लागी होय। ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छा०॥ इति नांदकी किरिया॥ (पीछे) मालाग्राहक भगवानके नव अंगें नव रुपिया आदि चढाके नमस्कार करे। महूर्त्त वेलायें मंदरजी वाहर जागा होय तो भग वानके सन्मुख सर्व संघ आयके खमा रहे। पीछे माला ग्राहक गुरूकेपास आके नव अंग पूजा करे। नव रुपिया आदि शक्ति प्रमाणें ग्यानरूपी निम त भेट करे॥ (पीछे) गुरू उर्द्धस्वासें माला हाथमांलेके ७ नवकार गुणें। (पीछे) जो माला पहिरावे जिसकों माला पहरनार यथा शक्ति पहिरामणी करै। माला पहिरावणेवाला उर्द्धस्वासें करी संघ पतिकों माला

पहिरावे ॥ दोनु जिणो ७ दिनतक सचित्त कुशीलादिकका गुरूपासे पच्च रकाण करे । (पीछे) मंदरजीके ऊपर चढानेकों धजावनाई होय (सो) धजा हाथमें लेके गीतगान वाजित्रादिसहत मंदरजीके बाहर कर ३ प्रद क्षिणा देके, गुरूकेपास वासक्षेप पूजन कराके मंदरजीपर धजा चढावे। (पीछे) सर्व संघके सन्मुख गुरु धर्म देशना देवे ॥ साधर्मी वात्सल्य करे ॥ ※ ॥ इति संघपति मालारोपणविधि ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ उपधान तप नित्यकर्त्तव्यता ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नित्य कर्तव्यता माह ॥ नित्य कर्त्तव्यता कापि शास्त्रोक्ता। कापि शांप्रतं दृश्यमानपरंपरागम्यां (तथाहि) उपधाने श्रावकैः विकृति मध्ये एकं घृतमेवग्राह्यं । नान्याकापि विकृतिः ॥ १ ॥ उपधाने त्रिंशन्नि विकृतिका नां मध्ये एक मपि निर्विकृतिकंग्राह्यं । तथा विधिकारणे तु सति खंमादि ग्रहणं यतनयाकार्यं ॥ २ ॥ उत्कटद्रव्याण्यपि न ग्राह्याणि ॥ ३ ॥ आर्द्र हरितशाकोपि न ग्राह्यः ॥ ४ ॥ घृत तैलादि व्याघारितशाकोपि न ग्राह्यः धूमितस्तु ग्राह्य ॥५॥ तलित पर्पट सीरावटिकादिकमपि न गाह्यं॥ ६ ॥ अन्नादि परिवेषिकास्त्री कृत रात्रि प्रायश्चित्ताशुध्यतिनान्यथा ॥७॥ अन्नादि परिवेषकाया वस्त्राणि दंम्भिता खंम्भितादिकानि न शुध्यंति ॥ ८ ॥ जेमना दिभूमस्थान मपि व्रत प्रायश्चित्तया खंम्भितादि वस्त्ररहितया प्रमार्जितं शुध्यति ॥९॥ यावंति वस्त्राद्युपकरणानि तपःप्रवेश प्रथम दिने गृहीतानि भवंति तानि सर्वाण्यपि भोग्याभोग्यानि उभयकाल प्रतिलेखनीयानि ॥१०॥ जे मन स्था लीकचोलिकादिनि तु जेमनदिने पादोनप्रहर प्रतिलेखनासमये प्रतिलेखनीयानि नान्यदा नान्यथा ॥ ११ ॥ कदाचित् दारकुंमलादिकं ग्रहणं स्वदेहादुत्तार्य स्वगृहादौमोच्यं भवेत् तदा विनोपधानं ययास्त्रिया अहोरात्र पौषधोगृहीतोभवे त्तस्पादृस्ते रात्रौ। नतुदिने उपधान वाहिन्यादेहं साच प्रातस्तदुक्तस्थाने मुंचति ॥ १२ ॥ उपधाने सर्वाणि वस्त्राणि स्वयंवा १। मालिकयावा २ ॥ प्रतिले खितानि शुध्यंति ॥ १३ ॥ सर्व क्रियानुष्टानमादेशनिर्देशादिकं मालकाय आदेशेन शुध्यंति ॥ १४ ॥ क्रियानुष्टानकारिका मालिकापि उभयकाले प्रतिक्रमणं करोति ॥रात्रि प्रायश्चित्तंकरोति। सप्तवाराम् देव वंदति। तदा शुध्य ति नान्यथा ॥१५॥ रजस्वलाया दिनत्रयं तपसिन पतति ॥१६॥ महास्वाऽ

ध्यायसत्कं ७।८।९ सप्तम्यादि दिनत्रयं तपसि न पतति ॥ १७ ॥ प्रतिक्रम णमध्ये प्रभाते नमस्कार प्रत्याख्यानमेवकार्यं (ततो) गुरु समीपे क्रि याऽवसरे । उपवास १। आचाम्लं २। निर्विकृतिकं ३। एकाशनंवाकार्यं ॥१८॥ प्रत्याख्यान पारणसमये पूर्वं नमस्कार प्रत्याख्यानं पारयति । ततः उपवा सादिकं ॥ १९ ॥ प्रथमोपधान द्वय प्रवेशदिने मालादिनेच नंद्यामंबरेण उत्सूरिता भवति ॥ पौषधादि कर्तुं न शक्यते । तदा तृतीय प्रहर प्रतिलेखनानं तरं सर्वोपकरणानि प्रतिलेख्य रात्रौ पोषधो वश्यं ग्राह्यः ॥ २० ॥ प्रातरुप धानवाही गुरुसमीपे समागत्य इर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य पौषधसामायिकं च लात्वा प्रतिलेखना मंग प्रतिलेखनां च करोति । ततो मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य उंही पमिलेहणं संदेसामि । उंही पमिलेहणं करेमि । इति क्षमा श्रमण द्वयं ददाति । ततो वंदनक षट्कदानानंतरं क्षमा श्रमण दशकंददाति॥तत्क्रमश्चायं वझवेलं संदि० । वझवेलं करेमि । वइसणं सं० । वइसणं ठा० । सिझा यं सं०। सिझायं क० । पांगुरणं सं० । पांगुरणं पमिग्गाहेमि । कठासणं सं० । कठासणं० ॥ २१ ॥ ततो वंदनकदानपूर्वं सुखतपः पृच्छा ॥ २२ ॥ संध्यायामप्येवं क्रियाकरणं (नवरं) पूर्वं प्रतिलेखनां अंगप्रतिलेखनांच करोति । न उंही प्रतिलेखनां । ततो गुरोर्वंदन षट्कदानानंतरं क्षमाश्रमण दशकदानमेवं उंही पमिलेहणं सं० । उंही पमिलेहणं क० २ । सझायं सं० ३। सझायं क० ४। वइसणं सं० ५। वइसणं ठायेमि ६। शेषं पूर्ववत् ॥ २२ ॥ पृथक् प्रतिक्रमण सद्भावात् पाक्षिकवंदनकानि सुखतपः पृच्छापर्यंतां क्रिया सर्वमपि कृत्वादेयानि ॥२३॥ मालापरिधाने संध्यायां मालामभिमंत्रयित्वा । स्वगृहे रा त्रिजागरणंकृत्वा । प्रातर्गच्छेश पार्श्वे मालापरिधातव्या । तदनुतद्दिनाद्दिनदशकं दशाहिकाकार्या तत्र पौषधग्रहणा भावेपि त्रिविधाहारमेकाशनं कुर्वन् उपधान वाहीनिरारंभस्तिष्टति ॥ २४ ॥ सर्वाण्यपि उपधानानि उत्कृष्टविधिनावहनी यानि । तदभावे श्रावकैरेकांतरोपवासैः साधुभिस्तु उपवासाचाम्ल निर्विकृतिकै काशनै कृत्वा तावंत उपवासापूरणीयाः । न दिनसंख्यानियमोस्ति ॥ इति नित्य कर्तव्यता श्रीसमयसुंदरोपाध्याय कृतोय विधिः ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ उपधान तप विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पंचमंगले सुयक्खंधे । डुवालसंतवोपुव्विं । तउ पंचणं अझय

णाणं । नमो अरिहंताणं (इत्यतआरभ्य) नमो लोए सव्वसाहूणं । यावत्, एगोवायणादिज्जइ ॥ इह पुण अझयणाअठ । तउ आयंबिल अठमंच ३ तउ तिणं अझयणाणं । एसोपंच नमोक्कारो (इत्यतआरभ्य) पढमं हवइ मंगलं, यावत् वीयावायणादिज्जइ २ ए पहिलो उपधान ॥ पंचमंगल महासु यस्कंधनउ कारन । पोसह अविधइ २० ॥ उपवास १२॥ विधिसुंवहता १६ पोसा । उपवास १२॥ ए पहलो वीनमतप २० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एमेव इरियावहिया सुयक्खंधेवि । अठअझयणा तिन्निचरमाणि चूलाभन्नइ । तत्थउवालसमतवे पुणे । इच्छाकारेण संदिसह (इत्यतआरभ्य) जेमेजीवाविराहिया । यावत्पढमावायणादिज्जइ १ ॥ तउ अंबिल अठगे अठमेचकेए । एगेंदिया (इत्यतआरभ्य) ठामिकाउसग्गं । यावत् वीयावाय णादिज्जइ २॥ ए वीजौ उपधान । इरियावहियां सुयखंध । इरियावहीनउ तप वीसमनाम ॥ अविधइ पोसा २०। उपवास १२ ॥ विधिसुंवहतां पोसा १६ उपवास१२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ भावारियं तत्थए पढमं अठमं । तउ, नमोत्थुणं (इत्यतआरभ्य) गंधहत्थीणं । यावत् पढम वायणादिज्जइ१॥ तउ सोलसहिं अंवलेहिं एगहं । लोगुत्तमाणं (इत्यतआरभ्य)धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण । यावत्वीयावायणादिज्जई २ ॥ तउ पुणो सोलसहि अंवलेहिं एगहं ॥ अप्पडिहयवरणाण दंसणधराणं (इत्यतआरभ्य) सव्वेतिविहेणवंदामि । यावत् तईयावायणादिज्जइ ३ ॥ ए त्रीजो उपधान ॥ भावारिहंतत्थय सुयक्खंध नमोत्थुणंको तप पंत्रीसडनाम विधिसुं विहितां उपवास १९ पोसा ३५॥ (अनै) अविधकरतां पोसा ३५॥ उपवास २२ थायइ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ठवणारिहं तत्थयसुयक्खंधे पुव्विंचउत्थं तउ तिन्निआयंविलाणि तिणिअझयणाणं । अरिहंतचेइयाणं । (इत्यतआरभ्य) वंदणवत्तियाए, अन्नत्थऊससिएणंः प्रभृतिवोसरामि । इतियावत् एगावायणा दिज्जइ १ ॥ ए चवथो उपधान ठवणारिहं तत्थय चउकमनाम पोसा ४ उपवासअढाई २ ॥

॥ ※ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थए पढमं अठमं (तउ) लोगस्सउज्जो यगरे ॥ (इत्यतआरभ्य) चउवीसंपीकेवली । यावत् । पढमावायणादिज्जई १॥ पुणो वारसहिं आयंविलेहिं गएहिं । उसभमजियंचवंदे (इत्यतआरभ्य)

पासंतह वद्धमाणंचेतियावत् बीयावायणादिज्जइ २ ॥ पुणोतेरसहिं आयं बिलेहिंगएहिं एवमए (इत्यतआरभ्य) प्रांतयावत् तईयावायणादिज्जइ ३ ॥ ए पांचमो उपधान नामारिहंत चउवीसत्थय अठावीसमनाम विधसुं वहिता दिन २८ । पोसा २८। उपवास साढापनरै ॥ एकांतरकरै ॥ अवधइकरतां दिन अठावीस । उपवास साढासतरै ॥ ५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुयत्थसुयक्खंधे पढमचउत्थं तउपंचआयंबिलाणि । अंते पुक्खरवरदीवड्ढे (इत्यतआरभ्य) सुयस्स भगवउ। इतियावत् । एगावायणा दिज्जइ १॥ ए छठोउपधान सुयत्थय छक्कमनाम पोसा ६ । उपवास साढातीन सिद्धत्थयसुयस्कंधे पोसहसहित चउविहार उपवास १ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यतआरभ्य) तारेइनरंवनारिंवा, यावत् एगावायणादिज्जइ १ ॥ एसा तमो उपधानमालानो तप ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथोपधान प्रवेशविधि रुच्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ यदि बहवः श्राविकाः (वा) श्रावका उपधानप्रवेशंति । तदासंघनाम्ना चंद्रबलंग्राह्यं । संघस्य कुंभराशिर्ज्ञेयः । तदभावेयोयावाप्रविशति । तन्नाम्ना चंद्रबलंग्राह्यं (तथा) उपधानवाही संध्यायां वाचकादिसमीपे समागत्य । ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य क्षमाश्रमणदत्वा भणति । अमुकउवहाणतवे पेसह गुरुर्भणति पवेसामो नवकारसीकरेज्यो । अंगपडिलेहण संदिसावेज्यो । उप धानवाही भणति । तहत्ति । अत्र क्षमाश्रमणदानानंतरं चतुर्विधाहारं करोतु । पानी यथा पिवतु । भोजनंवा करोतु व्यवस्थानास्थि (अथ) केनापिका रणेन, संध्याया क्षमाश्रमणंनदत्तं । (तदा) प्रतिक्रमणवेलातः पूर्वं, पूर्वरीत्या पाश्चात्परात्रावपि क्षमाश्रमण दानंकार्यं । कालवेलायां प्रतिक्रमणं कार्यं । नवकारसी प्रत्याख्यानं च मालिकापार्श्वेकार्यं ततो सूर्योदयानंतरं वाचकादि समीपे समागंतव्यं । तत्र यदि प्रथमोपधानद्वयं भवे तदा वश्यं नंदीकार्या । नंदीमध्येएवच तदुपधानस्योत्क्षेपोविधेयः ॥ अथ यदि शेषोपधानानि (तदा) नंदीनियमोनास्ति । ततः प्रातःप्रथमं उत्क्षेपः कार्यः ॥ ततः पोषध सामा यिकयो ग्रहणं । ततो वंदनषट्कदानपूर्वं प्रत्याख्यान करणं ततोमुहपत्ती पर्वकं सुखतपवंदनकद्वयदानं सुखतपपृछाच ॥ इति उपधान प्रवेश विधिः ॥

॥※॥ अथ तपसी प्रवेशः उतक्षेप विधिः ॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथमं ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य। मुखवस्त्रिकांप्रतिलेख्य। वंदनद्वयं दत्वा क्षमाश्रमणपूर्वं उपधानवाही जणति। पहिलैउपधानि पंचमंगल महासुयक्खंधत्तवं उक्खिवह (गुरुजणइ उक्खिवामो) पहिलैउपधानि पंचमंगल महासुयक्खंध उरकेवावणियं नंदिपवेसावणियं काउसग्गं करावेह गुरुजणइ करावेमो॥ पहिलैउपधानि पंचमंगलमहासुयरकंध उक्खेवावणियं नंदिपवेसावणियं करेमिकाउस्सग्गं। अन्नत्थऊससिएणं। इत्यादिपूर्वकायोत्सर्गे। चंदेसु० यावच्चिंत्यते। पारितेच संपूर्णः लोगस्सुज्जोयगरे वाच्यः (ततः) क्षमाश्रमणपूर्वं पहिलइ उपधानि पंचमंगलमहासुयरकंध उक्खेवावणियं चेइयाइं वंदावेह (गुरुकहे वंदावेमो) वासक्खेवं करावेह (गुरु० करेमो) ततोवासक्षेपपूर्वं संपूर्णचैत्यवंदनं क्रियते। एवं सर्वत्रउपधानेषु उत क्षेपोज्ञेयः (नवरं) प्रथमोपधानद्वये नंदी मध्येकार्यते। शेषोपधानेषुतु यदि नंदी तदा नंदीमध्ये। यदिनंदी न। तदा प्रातः प्रवेशदिने उतक्षेपः कार्यते। परंनिज२ नामाभिलापेन॥ इति उतक्षेपः॥

॥ ※ ॥ अथ वाचना विधि ॥ ※ ॥

॥※॥ संध्यायां प्रथमं चतुर्विधा हारं प्रत्याख्याय। ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य मुखवस्त्रिकांप्रतिलेख्य वंदनक द्वयं दद्यात् पहिलइ उपधानि पंचमंगल महासुयक्खंधस्स पढमावायणा पडिग्गहण करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू०। इत्यादि जणनपूर्वं। कायोत्सर्गे। सागरवरगंजीरा यावत् लोगस्स१ चिंत्यते। पारिते च संपूर्णं जणिला। क्षमाश्रमणद्वयपूर्वं इच्छाकारेण संदिस्सह पहिलै। उपधान पंचमंगल० पढम वायणा पडिग्गहणत्थंचेईयाइंवंदावेह (वंदावेमो) वासक्षेपः करावेह(करावेमो) ततो वासक्षेपः कार्यः। तत श्चैत्यवंदनं। ततः क्षमा० दत्वा। उपधान वाहिनः करद्वय गृहीत मुखवस्त्रिकाच्छादित मुखस्य अर्वावनतगात्रस्य वारत्रयं पंचानामध्ययनानां वाचनां ददाति (ततः) वायणा माहे मिच्छामि दुक्कडं। एवं सर्वत्रनिज वाचनाभिलापोबोध्यः १ वाचनाविधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तपोवसानदिने संध्यायां कृत चतुर्विधाहारः प्रातर्वा ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य। मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य। वंदनकद्वयं दत्वा उपधानादितपोवाहीजणति

इच्छाकारेण तुझेअह्मं अमुकतवं निरिकवह(निरिकवामो) पुनरपि क्षमाश्रमणद त्वा भणति। इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तवनिक्खिवणत्थं काउस्स ग्गं करावेह (करावेमो) इच्छामि० अमुगतव निक्खिवणत्थं करेमिकाउस्सग्गं। अन्नत्थू०। इत्यादि भणित्वा। कायोत्सर्गे नमस्कारमेकंपठित्वा। क्षमाश्रमण दत्वा। अमुगतवनिरिकवणत्थं चेईयाइंवंदावेह (वंदावेमो) ततः संपूर्ण चैत्य वंदनं करोति। इति निक्षेपः॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पडिपुन्ना विगयपारणाविधि रुच्यते ॥ ॥

॥॥ प्रातः गुरुसमीपे समागत्य। पृथक् प्रतिक्रमणे कते। मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदनकखट्कंददाति। गुरुभिः समं प्रतिक्रमणेकते वंदनकद्वयमेव (ततोगुरुर्भणति) पवेयणं पवेह। इति भणित्वा भणति। पडिपुण्णो विगइपार णयंकरेहत्ति ततः स्वेप्सितं प्रत्याख्यानं करोति ततः गुरुसमक्ष भणति उपधा नमाहे अभक्ति आसातनाकीधी हुवइ तेमिच्छामिडुक्कडं॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ क्षमाश्रमणविधि रुच्यते ॥ ॥

॥॥ उपधानवाही प्रातः पदिकसमीपे समागत्य। गुर्वादेशादीर्यां पथिकीं प्रतिक्रम्य। आगमनमालोच्य। पौषधं सामायिकं च गृहीत्वा। क्षमा श्रमणद्वयपूर्वं प्रतिलेखनां अंगप्रतिलेखनां च करोति (ततो) मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य। प्रथम क्षमाश्रमणेन। उंही पडिलेहणं संदिस्साएमि। द्वितीय क्षमाश्रमणेन उंही पडि लेहणं करेमि (इति भणति) ततो मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य। पदिकपदे वंदन षट्कं ददाति (ततो) गुरुर्वदति, पवेयणं पवेयह। उपधानवाही वदति। इच्छा० अमुकउच्हाणनिमित्तं निरुद्धंवा तवंकरावेह। गुरु० उपवासे आंबिले निरुद्धे ति एकाशने निमित्ते तिवक्तव्यं। ततः दशभिः क्षमाश्रमणै रनुक्रमेण वदति वडुवेलंसंदिसावेमि १। वडुवेलंकरेमि २। वइसणं संदिसावेमि ३। वइसणं ठाए मि ४। सज्झायं संदिसावेमि सज्झायं करेमि ६। पांगुरणं संदिसावेमि ७। पांगु रणं पडिघाएमि ८। कट्ठासणं संदिसावेमि ९। कट्ठासणं पडिघाएमि १०। ततो मुखवस्त्रिका पूर्वं वंदनकद्वयं ददाति (गुरुर्वदति)सुखतप उपधानवाहीवदति तुमा रइप्रसादि प्रसादि॥इति प्रभाति विधिः॥ तृतीय प्रहरस्य प्रतिलेखनायां जातायां स्थापनाग्रे मालिकादेशेन ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य। प्रथम क्षमाश्रमणेन पडिले हणं करेमि १ द्वितीय क्षमाश्रमणेन पोसहसालं पवज्जेमि २। इत्युक्त्वा मुखव

स्त्रिकां प्रतिलेखयति। एवं क्षमाश्रमणद्वय दानपूर्वं अंगप्रतिलेखन मुखवस्त्रिका प्रतिलेखयति। इत्थ अंगरुहेण अंगविय कमिपट्टाइनेयं इति गीयत्था भणति ततो वसतिं प्रमार्जयति। तत्रयदि तस्मिन् दिने भोजनंकृतं भवति। तदापरिधा न वेषं प्रतिलेखयति। नशेषवस्त्राणि(यदि)तस्मिन् दिने उपवासो भवति। तदा एकमपि वस्त्रं न प्रतिलेखयति (ततः) पदिकसमीपे समागत्य। ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य। प्रतिलेखनां१ अंगप्रतिलेखनां च पुनर्गुरुसमक्षं करोति। पश्चात्सि ज्झायं संदिस्साएमि। करेमि आठ नवकार (ततो)मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदन पट्कंददाति (ततः) त्रिविधाहारं चतुर्विधाहारंवा प्रत्याख्यानं कृत्वा क्षमाश्रम ण दशकं ददाति (तत्क्रमश्चायं) उहीं पमिलेहणं संदिसावेमि१। उहीं पमि लेहणं करेम २। सिझायं सं०३। सिझायंक० ४। वइसणं संदि०५। वइस णं ठाएमि ६। कढासणं सं० ७। कढासणं पमिघाएमि८। पांगुरणं संदिसा वेमि ९ पांगुरणं परिघाएमि१०। ततः मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदनद्वयं दत्वा सुखतपः पृच्छा (ततः) सर्वोपकरणानि प्रतिलेखयति मातृकादि सर्वं प्रतिलेखय ति (तथा) यस्मिन् दिने भुंक्ते। तस्मिन् दिने पोण प्रहर प्रतिलेखनायां थाली १कचोलादिकं सर्वमुपभुज्यमाणं प्रतिलेखयति। उपवास दिने तन। इति तृती य प्रहर क्रियाविधि। (तथा) पाखी पमिक्रमणा माहि असझाइनउकाउसग्ग न करै तो आवती पाखीसीम सर्व सिद्धांतनी असझाइ हुवइ। इरियावहीनो पाठगुण्योनसूझे तेभणी असझाईमांहे पिण असझाई नउ काउस्सगकीजइ। युगप्रधान श्रीजिनचंद्र सूरिजीयइ महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिनै पूछा तव एसाहीजवावदीया। योगारंभविधिरयं। अत्रचतुर्मासीमध्ये योगारंभे वर्षमाश शुद्धिर्न गवेष्यते दिनशुद्धीर्याह्या। मृडध्रुवचरक्षिभैः। वारेभौमं शनिंविना आ द्याटनंतपोनंद्या। लोचनादिसुभंसुभं॥ १॥ इत्याचारदिनकरे। श्रीमुहपत्ती पन्नासं। अठारस आरूणमि पमिलेहा। दंमेपत्तेसोलस। कप्पेपणवीसगोत्र मा॥१॥ पणवीसचोलपट्टे। गुरुकंवल तह्यचेवसंथारे। कढासणे अठारस जपेदंमेअपंचेव॥ २॥ इति प्रतिलेखना विचारः॥ पण उववासायाम। अ ठ्यं कुणइ अठमंअंते। नवकारउवहाणं। इत्तियमित्तं इरियाए॥१॥सक्कत्थयंमि तहएगं। अठमं अंविलाणवत्तीसं। अरिहंतचेईयत्थए। चउत्थमायामतियगंच २॥ चउवीसत्थएमठम। मेगंपणवीसझंति आयामा। नाणत्थंमिचउत्थं

आयामा पंचनवहाणं ॥३॥ चनवीसं नववासा। एगासी अंबिलाणसव्वंगं। पंचोत्तरंच पोसहसय। मुवहाणेसुजाणेसु ॥ ४ ॥ बारस बारस एगो। पण वीस अढ्ढाईपाए पन्नरस। अठुठय नववासा। सव्वंगं सढ्ढचनसठी ॥ ५ ॥ नवकार सहिय पोरसि। पुरमढ्ढ अवढ्ढ एगठुन्नतेहिं। इगठाणय निविगइ। बिलेहिं अत्थंबिलेणंच ॥६ ॥ पणयाला चनवीसं। सोलस चन २ हिअठ हिकमेणं। चनइठहियएगेणय। आयरणा होइनववासे ॥ ७ ॥ इति नपधा नतपोगाथाविधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानगणिः पं। मोहनलालमुनिः आचार दिनकरादि ग्रंथात्संगृहीकृते आचाररत्नाकर प्रथमप्रकाशे पंचदशम व्रतारो पसंस्कारः समाप्तः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ अंत्यसंस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ श्राद्धोयथाप्रवृत्तेन। पालयित्वा निजंभवं ॥ कालधर्मेथ संप्राप्ते। कुर्यादाराधनांपरं ॥ १ ॥ तिसकी यह विधि ॥ जिनकल्याणकस्थाने। निर्जीवेस्थांम्लिशुचौ। अरण्येवा स्वगृहेवा। कार्यअनशनोविधिः ॥ २ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शुन्नस्थानककैविषै। ग्लानपर्यंत आराधना कराणी चाहिये ॥ तथा अवस्य नाविमरणकै विषै तिथि, वार, नक्षत्र, चंद्रब लादि न देखणा चाहिए ॥ तहां संघ एकठे होकै। गुरु, ग्लानकूं यथा सम्यक्त आरोपणमें कहीविधि नसमाफक प्रथम विधि करावे। इतना विशेष है ॥ संलेहणा आराधना अन्निलाप करे। (और) सर्वनंदि देववंदन कायोत्सर्गादि विधि नसीमाफकहै। इसमें इतना विशेष है। वैयावृत्यकार कायोत्सर्गकै अनंतर। आराधन देवता आराधनार्थ करेमि कानसग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं। जावअप्पाणं वोसिरामि तक कहकै ॥ १ लोगस्स को कानसग्ग करै ॥ पारके णमो अरिहंताणं। कहकै। आराधना स्तुति कहै। सो लिखते है ॥ यस्याः सांन्निध्यते नव्या। वांछितार्थ प्रसाधकाः। श्रीमदाराधनादेवी। विघ्नव्रातापहासुवः ॥ १ ॥ शेषंपूर्ववत् ॥ फेर तिसीविधि

करकै । सम्यक्त दंमक उचारण । द्वादशव्रत उचारण । तिसीतरेसें वासक्षे पादि कायोत्सर्गजादि (तैसेंहीज) संलेखना आराधना उचारण करे ॥ प्रदक्षिणा ग्लानकी शक्ति अनुसारें दिरावै ॥ इहां इतना विशेषहै ॥ जाव नियमंपज्जुवासामी (इसपाठकै ठिकाणें) जावज्जीवाए । ऐसा पाठकहै ॥ (पीछे) सर्व जीवरासीकैसाथ अपराध क्षमावै । परमेष्टि मंत्रउचारणपूर्वक दोनूं हाथ जोमके ऐसा वचन कहै ॥ खामेमिसव्वजीवे ॥ सव्वे जीवाखमं तुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वैरंमज्झनकेणइ ॥ १ ॥ फेर गुरुकहै खामेह । जो खमई । तस्स अत्थिआराहणा । जो नखमइ तस्सनत्थि आराहणा ॥ फेर श्रावक क्षमाश्रमण पूर्वक कहै ॥ भगवं अणुजाणह । तव गुरुकहै । अ णुजाणामि । (पीछे) श्रावक परमेष्टि मंत्रउचारण पूर्वककहै ॥ जंमए अणं तेणं भवब्भमणेणं । पुढविकाइआ । आउकाइआ । तेउकाइआ । वाउका इआ । वणस्सइ काइआ । एगेंदिआ सुहुमावा । बायरावा । पज्जत्तावा । अपज्जत्तावा । कोहेणवा । माणेणवा । मायाएवा । लोहेणवा । पंचिंदिअठेण वा । रागेणवा । दोसेणवा । वाइआवा । पीमिआवा । मणेणं वायाए काएणं । तस्समिच्छामिदुक्कमं ॥ फेर परमेष्टिमंत्र पढके ऐसा कहै । जंमए अणंतेणं । भवब्भमणेणं । बेइंदिआ । सुहमंवा । बायरंवा । शेषंपूर्ववत्) फेर परमेष्टि मंत्र पढके श्रावक कहै । जंमए अणंतेणं । भवब्भमणेणं । अलियं भणियं कोहेणवा । माणेणवा । मायाएवा । लोहेणवा । पंचिंदि अठेणवा । रागे णवा । दोसेणवा । मणेणं । वायाए । काएणं । तस्समिच्छामिदुक्कमं ॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढकै ॥ जंमए अणंतेणं भवब्भमणेणं । अदिन्नंगहिअं । कोहेणवा । माणेणवा । शेषंपूर्ववत् ॥ (फेर) परमेष्टि मंत्र पढ करकै ॥ जंमए अणंतेणं भवब्भमणेणं । दिव्वं, माणुस्सं, तिरिक्ख मेहुणं, सेवियं । को हेण० । (शेषंपूर्ववत्) फेर परमेष्टि मंत्र पढके ॥ जंमए अणंतेणं । भव ब्भमणेणं । अठारसपावठाणाइं । कयाई । कोहेणवा । माणेणवा । (शेषं पूर्ववत्) फेर परमेष्टि मंत्र पढकै । जंमए अणंतेणं । भवब्भमणेणं । पंचिंदि या देवावा मणुअवा । नेरइआवा । तिरिक्खजोणिआवा । जलयरावा । थलयरावा । खयरावा । सन्नियवो । सुहमंवा । बायरंवा (शेषंपूर्ववत्) फेर मंत्र पढकै । जम्मेपुढविकायगयस्स । सिलालेडु । सक्करा । सन्हावालुआ ।

गेरिअ, सुवन्नाइं, महाधाटं, रूवसरीरं। पाणिवहे। पाणिसंघट्टणे। पाणिपीमणे। पाववद्दणे। मिछत्त पोसणे गणे संलग्गं। तंनिंदामि गरिहामि। वोसिरामि॥ जम्मे पुढविकाय गयस्स। सिला लेहु। सक्कर, सन्ह, वालुआ गेरिअ, सुवन्नाइं, महाधाटरूवसरीरं अरिहंतचेइएसु। अरिहंत विंवेसु। धम्मठाणेसु। जंतुरक्खण ठाणेसु। धम्मोवगरणेसु। संलग्गं तंअणुमोएमि। कल्लाणेणं। अभि निंदेमि॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढके॥ जम्मे आउकायगयस्स। जल करग महिआ उस्सा। हिम हरतणुरूवं सरीरं। पाणिवहे। पाणिसंघट्टणे। पाणिपीमणे। पाववद्दस्स। मिछत्त पोषणे। ठाणेसंलग्गं तंनिंदामि। गरिहामि। वोसिरामि। जम्मे आउकायगयस्स। जल, करग, महिआ, उस्सा, हिम हरतणुरूव सरीरं, अरिहंत विंवेसु, धम्मठाणेसु, धम्मोवगरणेसु, जंतुरक्खणठाणेसु, जिणन्हाणेसु, तन्हा दाहावरण सुलग्गं। तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभितंदेमि (फेर) परमेष्टि मंत्र पढके। जम्मे तेउकायगयस्स। अगणि, इंगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जुक्काते अरूवं सरीरं। पाणिवहे। पाणिसंघट्टणे। पाणिपीमण पाववद्धणे। मिछत पोसणे। ठाणेसंलग्गं। तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि॥ जम्मेतेउ कायगयस्स अगणि, इंगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जुउक्काते। अरूवंसरीरं सीआव हारे। जिणपूआ धूव करणे। नेवज्जयाए। वुहाहरणाए। संलग्गं। तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढके॥ जम्मे वाउकायगयस्स। वाउ झंझा सासरूवं शरीरं। पाणिवहे। पाणि संघट्टणे। पाणिपीमणे। पाववहणे। मिछत्त संपोसणे। संलग्गं। तं निंदामि। गरिहामि वोसिरामि। जम्मे वाउकायगयस्स। वाउझंझा सासरूवं शरीरं। पाणिरक्खणे, पाणिजीवणे, साझवंआवच्चधम्मावहारे। संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनिंदामि॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढके॥ जम्मे वणस्सइकायगयस्स। मूल, कंद, वल्लि, पत्त, फुल्ल, फल, बीअ, रस, निज्जासरूवं सरीरं। पाणिवहे। पाणिसंघट्टणे। पाणिपीमणे। पाववद्दणे। मिछत पोसणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि। गरिहामि। वोसिरामि। जम्मे वणस्सइकायगयस्स। मूल, कंद, वल्लि, पत्त, फुल्ल, फल, वीय, रस, निज्जसरूवं शरीरं। वुहारणेसु अरिहंतचेइय पूरणेसु। धम्मठाणेसु। नेवज्ज करणेसु। संलग्गं।

तं अणुमोएमि । कल्लाणेणं अभिनंदेमि । (फेर परमेष्टि मंत्र पढकै)। जम्मे तसकायगयस्स ॥ रस रत मंस मेअट्ठि मज्जा सुक चम्म रोम नह नसा रूवं शरीरं । पाणिवहे पाणिसंघट्टणे । पाणिपीडणे । पावट्टणे । मित्तपोसणे । ठाणे संलग्गं । तंनिंदामि । गरिहामि । वोसिरामि ॥ जम्मे तस कायगयस्स । रस, रत, मंस, मेअट्ठि, मज्जा, सुक, चम्म, रोम, नह, नसारूवं सरीरं । अरिहंत चेइएसु । अरिहंत बिंबेसु । धम्मठाणेसु । जंतुरक्खणठाणेसु । धम्मोवगरणेसु । संलग्गा । तं अणुमोएमि । कल्लाणेणं अभिनिंदेमि ॥ (फेर परमेष्टि मंत्र पढके) ॥ जम्मे इत्थ भवे मणेणं डुछुचिंतिअं डुछ्भासिअं। डुछूकयं । तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जंमए इत्थभवे । मणेणं । वायाए काएणं । सुछूचिंतिअं । सुछूभासिअं । सुछूकयं । तंअणुमोएमि । कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ (इहां मतलब येहै) । कि समारोपित करा था व्रत सम्यक्तादिक (तथापि) व्रत सम्यक्तादिक आरोपण करणा चाहिए ॥ फेर जिसनें व्रतारोप पहले करा है (तिसकूं) अंत वखतमें एकशो चोवीस अतीचारोंकी आलोयणा अवश्य करणा चाहिए ॥ फेर गुरु सर्वसंघसहित । वास अक्षतादि ग्लानकै मस्तकपर क्षेपन करै ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ (फेर) पंचपरमेष्टि मंत्र पूर्वक ग्लानसाधु क्षमाश्रमण देतो थको कहै॥ आयरिअ उवझाए । सीसे साहम्मिए कुलगणेअ । जेमेकया कसाया। सव्वेतिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स । भगवउ अंजलिं करिय सीसे । सव्वंखमावइत्ता । खमामिसव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ भयवं जम्मए चउगइगएणं । देवा, तिरिआ, मणुस्सा, नेरइआ, चउकसाउ वगएणं । पंचिंदिअ वसट्टेणं । इहम्मिभवे । अन्नेसुवा भवग्गहणेसु । मणेणं वायाए काएणं । विङमिआ । संताविआ । अभिताइया । तस्समिच्छामि डुक्कडं ॥(फेर) इस आलावोंकी विस्तारसेती व्याख्या करै ॥ वादग्लान, गुरूप्रतें साधु साध्वी श्रावक श्राविकाप्रतें प्रत्येकें २ क्षामणा करे ॥ फेर इहां गुरुपूजा संघपूजा करै ॥ इत्यंत संस्कार विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अणशणविधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (फेर) ग्लान श्रावक मृत्युनजीक आणेंसें सर्व चैत्यकै विषै पुष्पादिकसें पूजा करवावै । चैत्य ग्यान आदि सात क्षेत्रोंकेविषै अपना

द्रव्यखरच करै ॥ (पीछे) पंच परमेष्टिमंत्र उच्चारण पूर्वक पढै ॥ जेमे जाणंतुजिणा । अवराहा जे सुखासणेतेहं । आलोएमि उवठ्ठि । जाणं तो सव्वकालंपि ॥ १ ॥ छउमत्थो मूढमणो । कित्तिअमित्तंपि संभरइजीवो जंचन संभरामि अहं । मिच्छामे दुक्कडंतस्स ॥ २ ॥ जंजंमणेण चिंतिअ । मसुहं वायाइभासिअं किंचि । असुहं काएणकयं । मिच्छामे दुक्कडंतस्स॥३॥ खामेमि सव्वजीवे । सव्वेजीवाखमंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वैरंमज्झ न केणइ ॥ ४ ॥ इति ग्लानपाठः ॥ (फेर) तीन नमस्कार पठनपूर्वक कहै ॥ चत्तारिमंगलं । अरिहंतामंगलं । सिद्धामंगलं । साहूमंगलं । केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धालोगुत्तमा । साहूलोगुत्तमा । केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो । चत्तारिसरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ऐसा तीनवेर पढै ॥ (फेर) गुरुवचनसे अष्टादश पापस्थानक वोसरावै ॥ सोलिखते है ॥ सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सव्वं मूसावायं पच्चक्खामि । सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि । सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि । सव्वं राईभोय० । सव्वं कोहंप०। सव्वं माणंप०। सव्वं मायंप०। सव्वं लोहंप०। सव्वं रागं पच्च०, सव्वं दोस, कलहं, अब्भक्खाणं, अरई, रई, पैशुन्न, परपरिवायं, मायामोसं, मिच्छादंसणसल्लं । इच्चेइआइं अढारस पावठाणाइं । दुविहं तिविहेणं वोसिरामी॥ अपढमम्मि कसासे तिविहेणं बोसिरामि ॥ (फेर) गुरुगीतार्थ, श्री योगसास्त्रके पंचम प्रकाशमें कहा (वा) कालप्रदीपादि शास्त्रकेविषै कहाजिसमुजब ग्लानको आयुक्षय जाण करके। संघकी। तिणकै संबंधियें की। राजादिककी आज्ञा ग्रहण करकै। अणशण उच्चारण करावै (फेर) ग्लान शक्रस्तव पढकै परमेष्टि मंत्रोच्चारण सहित पढै ॥ (यथा) । भवचरिम पच्चक्खामि तिविहं पिआहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं। सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं बोसिरामि॥ इति सागारी अणशणं अंतर्मुहूर्त्त यावत् भवत्येव ॥(अनागार मनशनं यथा)॥ भवचरिमं निरागारं पच्चक्खामि। सव्वं असणं सव्वंपाणं सव्वंखाइमं सव्वंसाइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहस्सागारेणं। अइअं निंदामि । पडिपुन्नं संबरेमि । अणागयं पच्चक्खामि ।

अरिहंतसक्खिअं। सिद्धसक्खिअं। साऊसक्खिअं। देवसक्खिअं। अप्पसक्खिअ वोसरामि। जेमेऊज्जपमाउ। इमस्सदेहस्समाइरयणीए। आहार मुवहिदेहं। तिवि हं तिविहेणं वोसिरिअं ॥ (फेर) गुरुकहे निथ्थारग पारगोहोइ। वासअक्षता दिक गुरुसहित संघ ग्लानकै सन्मुख मालै ॥ अणवयम्मिउसहो (इत्यादि) स्तुति पढै(वा) चवणं जम्मणभूमि (इत्यादि पढै)॥फेर गुरुग्लानके अगामी त्रिभुवन चैत्यांको वर्णव करे। अनित्यादि द्वादशभावनां वर्णन करे। अनादि भवस्थितिवर्णन करे। अनशनफल व्याख्यान करे। श्रीसंघ गीतनृत्यादि उत्सव करे। ग्लानपिण, जीवन मरणकी वांछा त्याग करके समाधीमें रहै (फेर) मुक्तर्तनजीक आणेंसें, ग्लान सर्व आहार सर्वदेह वोसिरामि (ऐसा वचन कहे) फेर अंतमें ग्लान पंचपरमेष्टि स्मरणयुक्त शरीरप्रतें त्याग करै ॥ ※ ॥ इत्यंत संस्कारे अनशनविधि ॥ मरणांतसमय जाणके, माभकीस ज्याके ऊपर स्थापन करे। जन्ममरणकीवखत, जमीनपर स्थापन करणेंका व्यवहार है और मृत्यु होणेंसें, अजीवसरीरकूंपिण व्यवहारके अर्थ सनाथ पणां जणाणेंकेवास्ते। तिसका पुत्रादिक कृतार्थपणां समजकै मृत्युशंस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ शव संस्कार विधि लिखतेहै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शवके शिखावर्जित मस्तकमुंडन करावै (फेर) संपूर्ण स्व जन संबंधियादिक सुगंधतेलादिक मर्दन करैं, सुगंध जलसें स्नान करवावै फेर केशर चंदना दिकका विलेपन करावै। सुगंधफूलोंकी माला पहरावै ॥ अपणें २ कुलयोग्य अच्छा वस्त्र आभरणादिकसें विभूषित करैं (इतना विशेष है) कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यकूं, त्यागकै। सुद्रादिकोंका सर्वथा मस्तक मुंडन नहिं करे। तिसकेबाद, नवीन रची भई काष्टशय्याकै ऊपर, कुशाका घास बिछाके, अच्छा वस्त्र बांधके, शवकों थापन करे। अच्छा वस्त्र ऊपर उढावे ॥ शवका उपगरण होय सोपासमें रखके।(और) धनि ष्टादि पंचक नक्षत्रांमें जो मृत्यु होय (तो) कुश घाशका पूतला वर्णानुसार गृहस्थवेशका करके। वस्त्र आभूषणसें शोभा करके। शवकेपास थापन करे। (पीछे) ज्ञातीजन चार जिणा खंदपर धारन करके स्मशान भूमि का यें लावे। (पीछे) पुत्रादिक स्वजन, शवको उत्तरदिशा तरफ मस्तक

करके काष्टकी सिय्यापर थापन करे । अग्नि संस्कार करै ॥ और अन्न जहांतक न खावै। ऐसा दूध पीणेंवाला लम्काकी मृत्यु होय(तो)नूमि संस्कार करै । अग्नि दाह न करै ॥ (और) उस वखत जो दान लैनेंवाला होय उन सबकों यथाशक्ति दान देवै ॥ नदी कूवादिकका निर्मल जलसें स्नान करके। गया जिस रस्तेकों गेम्के । और रस्ते अपनें घर आवें ॥ (पीछे) तीसरे दिन चिताकी नस्म हड्डीकों लेके नदी समुद्रादिकमें प्रवाह करे । (फेर) शुद्ध जलसें स्नान करके, शोक दूर करनेंकों मंदर आवे ॥ जिन बिंबकों नहिं फरसता थका चैत्य वंदन करै (पीछे) धर्मस्थान आवे । गुरु महाराजकों नमस्कार करै (तब) गुरूपिण संसारको अनित्य चलाचल स्वरूपको प्रतिबोध देके शोक दूर करावे ॥ (पीछे) अपने २ घर जावे ॥ इस संस्कारमें, अंत्य आराधनासें लेके, शोक दूर करनें पर्यंत अवश्य कार्य सेती मङ्कर्त्तादिक न देखै । (परंतु) अंतका स्नान, मृत कार्य, इतनां योग नक्षत्रादिकमें न करै (यथा) प्रेतक्रिया न कर्तव्या । यम लेच त्रिपुष्करे । आद्रा मूलानुराधासु । मिश्र क्रूर ध्रुवेपुच ॥ १ ॥ धनिष्टा पंचके वर्ज्या । तृणकाष्ठादि संग्रहाः । सय्या दक्षिण दिशयात्रा । मृत कार्य गृहोद्यमा ॥२॥ इतना हीन योग टालके प्रेत क्रिया करै ॥ (अव इहां) सूतक विचार, किंचित् आचार दिनकर मुजब लिखें है (इससें) विशेष खुलासा सूतक विचार देखना होय(तो)इसी रत्नसागरका प्रथम नागमें लिखा ङवा है ॥ सो उसमें देख लेवे ॥ (यथा) अन्य वंशे समुद्भूते । मृते जातेथ तद्गृहे । परणीत सुतायाश्च । सूतिका नाशने तथा ॥ १ ॥ एतेषु चैव सर्वेषु । सूतकंस्या दिनत्रयं । सूतकं हंतितत्सर्वं । जातं जातं मृतं मृतं ॥२॥ अनन्न नोजिबालस्य । सूतकंस्या दिनत्रयं । अनष्ट वार्षिकस्यापि । त्रिन्नागोनंच सूतकं ॥ ३ ॥ स्वस्ववर्णानु सारेण । सूतकांत जिनस्नपनं । साधर्म्मिक वात्सल्यं । ततो नवतु कल्याणं ॥ ८ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्राद्ध आराधना लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ श्री सर्वज्ञं नमस्कृत्य । डुष्ट कष्ट प्रणाशनं । श्रावका राधनांवक्ष्ये । सुगमां शिष्यहेतवे ॥ १ ॥ अत्र आराधनायां पंच अधिकाराः ॥ सम्यक्त शुद्धि १ ॥ १८ पापस्थानक परिहार २ ॥ ८४ लक्ष जीवक्षामणं

३ ॥दुःकृत गर्हा ४ ॥ सुकृतानुमोदना ५ ॥ (तत्रादौ) चैत्य वंदना पूर्वं । सम्यक्त शुद्धि (तथाहि)॥ प्रथमं ईर्या पथिकी प्रतिक्रम्य । मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य । वंदन द्वयं दत्वा । चैत्य वंदनां प्रतिमार्गेकृत्वा । क्षमा श्रमण द्वयं चः दत्वा । आराधनाकृत् वदति । भगवन् आराधनां श्रावयतः॥ ततो गुरुर्वदति ॥ विधिपूर्वकं शृणु (तथाहि) अरिहंतो मह देवो १। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो २ । जिणपन्नत्तंतत्तं ३ । इय समत्तं मए गहियं ॥१॥ व्या०॥ अर्हन् भगवन् ॥ ३४ अतिशय सहितः ॥ ६४ इंद्र महितः ॥ अष्टमहा प्रातिहार्य युक्तः ॥ १८ दोष निर्मुक्तः ॥ अनंत गुण व्याप्तः । परम पदवी प्राप्तः । देवाधिदेवः श्री वीतराग देवो मम देवः ॥१ ॥ (तथा)॥ पंचमहाव्रत पालिकाः॥ १८ सहस्रशीलांगरथ धारिका । रागद्वेष निवारिकाः । संसार समुद्रात् भव्य जीव तारकाः । क्रिया कलाप सावधानाः । सदा धर्म ध्यानाः कुक्षिसंबलाः । ज्ञान, दर्शन, चारित्र, निर्मलाः । साधवो मम गुरवः ॥ ॥ २ ॥ (तथा)॥ उत्पन्न दिव्य विमल केवलग्यान श्री वीतराग देवभाषित हिंसाप्रतिकूलः । शुद्ध जीवदयामूलः मुक्तिपुरपाथेय समानः आज्ञा प्रधानो धर्मो मम धर्मः ॥३॥ इति देव गुरु धर्म तत्वत्रय श्रद्धानस्वरूपं सम्यक्तं ॥ हृदये विशेषतो दृढीकार्यं॥१॥ अथ१८ पापस्थानानि ॥ आसव ५॥ कसाय ४ ॥ २ बंधन ११॥ कलहा १२ भरकाण१३ परपरीवात्त १४। अरइ रई १५ पेसुन्न१६। मायामोसंच१७ मिछत्तं १८॥ (तत्र प्रथमाश्रवे)॥ पृथिवी १। अप्प २। तेऊ३। वाऊ४। वनस्पति ५। बेंद्रिय६। तेंद्रिय ७। चतुरिंद्रिय ८। पंचेंद्रिय ९। जीवाः अभिहतादिः१० प्रकारैः । इहभवे । अनंतेषुवा भवेषु ॥ मनसा १ वचसा २ कायेन ३ वा ॥ जानता । अजानता । जीवाविराधितास्युः । तेषां अरिहंत १ सिद्ध २ साधु ३ देव ४ आत्म ५ गुरु ६ साक्षिकं त्रिकरण शुद्ध्या हे पुण्यात्मन् मिथ्या दुःकृतं देहि॥ १ ॥ (अथ द्वितीयाश्रवे)॥ हास्येनवा, क्रोधेनवा, मानेनवा, मायायेवा । लोभेनवा ॥ मृषावाद उक्तो भवति । कन्यालीकादि महत्कूटानि । कथितानिस्युः । इहभवे (इत्यादि)। मिथ्या दुःकृतं देहि ॥ २ ॥ (अथ तृतीयाश्रवे) ॥ परद्रव्यापहारेणवा । चौरिकियावा॥ चौरा अनाहृत वस्तुग्रहणेणवा । रस मसि भेदेनवा ॥ कूटतूल कूट मानेनवा । अदत्तादानं गृहीतं भवेत् ॥ इह भवे० ॥ मिथ्या०

॥ ३ ॥(अथ चतुर्थाश्रवे)॥ देव मनुष्य । तिर्यंक् संबंधि । मैथुनं सेवितं भव ति ॥ स्वस्त्री पर पुरुष गमनेन ॥ अति विषय लोलुपतया यत् अब्रह्मं सेवितं भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या०॥४॥ (अथ पंचमाश्रवे) ॥ धन धान्य क्षेत्र । वस्तु सुवर्ण । रोप्य । द्विपद । चतुःपदानां । अपरमित संग्रहेण ॥ क्षेत्रकृष गमनेन । वाणिज्य । वाटिका । नदी कूप महारंभ मूर्च्छादि करणेणच । परि ग्रह कृतो भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या०॥ ५ ॥ (तथा) क्रोध मान माया लोभाः ॥ ४ ॥ कषाया कृता भवंति ॥ ९ ॥ (तथा) रागद्वेषा ॥ स्त्री पुरुष जनो परि विषय लोलुपता । कामराग॥ धन धान्य । स्वजन । पुत्र माता । पितृ प्रमुख जनो परि रागः । स्नेहरागः । निजश्मतोपरि । अभि निवेशेन कदा ग्रहो दृष्टिरागः ३ ॥१०॥ एवं द्वेषोपि ११ ॥ लोकैः सहकलहकारणं १२॥ कर्कश वचनादिना कलंकदानं ॥१३॥ सत् असत् दूषण प्रकाशनेन । १४॥ परेषां निंदाकरण्पं रहसि १५। मर्मोद् घट्टना । दंभ मुंभादि कारापणं ॥ १६ ॥ न्यासापहार करणं । मायायुक्त मृषा वादोवा ॥ १७ ॥ महामाई चामुंडा । चउसठी । यक्ष । गोगा । क्षेत्रपाल । विनायक हरिहरादीनां । राग द्वेष कलुषित चित्तानां । देवतत्व बुद्ध्या माननं ॥ जोगी । सन्यासी । कर्मी । कापडी । तापश । शेष । मुल्ला । चारित्र भृष्ट स्वलिंगी । निन्हवा दीनां कुगुरूणां । गुरुतत्व बुद्ध्या माननं । मिथ्यात्वि प्ररूपित । हिंसादोष दुष्ट ॥ कुधर्मस्य धर्मबुद्ध्या माननं मिथ्यात्वं ॥ १८ पाप स्थानानि से वितानि भवंति । इहभवे० । मिथ्या० ॥ २ ॥ ✻ ॥ ॥✻॥

॥ ✻ ॥ अथ ८४ लक्षजीवक्षामणं ॥ ✻ ॥

॥✻॥ (तत्र प्रथमं पृथिवीकायः)॥ फटिक १ मणि २ रतन ३ प्रवाल ४ हिंगलू ५ हरियाल ६ मणसिल ७ सुरमो ८ सोनो ९ रूपो १० गेरू ११ खडी १२ वांनी १३ अरणेटो १४ पलेवडो १५ भोडल १६ ॥ वस्त्ररंगणी कालीमाटी ॥ ऊखरमाटी । पाषाण खर पृथ्वीप्रमुखा अनेक भेदाः । अस्याः । २२ सहस्राणि । खरपृथिव्यादेः उत्कृष्टमायुः । अंगुला संख्येय भागोदेहमानं॥ आमलकप्रमाण खंडे ये जीवाःसंति । तेषांयदिसर्षप प्रमाण देहास्युः ॥ तदा जंबूद्वीपा नमांति ॥ अस्याश्वसप्त ७ लक्षयोनयः एतेजीवानां आरंभादिना विराधना कृताभवति ॥ इहभवे०। पूर्ववत् मिथ्या

डुःकृतं देही ॥ १ ॥ अथ अप्पकायः ॥ तत्र आकासपाणी। भूमिपाणी। उस। हिम। करहा। धुंहरि। घनोदधि प्रमुखा अनेके भेदाः। अस्य सप्त ७ सहस्राणि उत्कृष्टं आयुः। अंगुला संख्येय भागोदेहमानं। एकस्मिन् जलबिंदौ असंख्याता जीवाः ॥ ७ सप्तलक्षयोनयः। एतज्जीवानां आरंभादिना विराधनाकृताभवति ॥ इहभवे पूर्ववत्, मिथ्या डुकृतं देहि ॥२॥ (अथ तेजस्कायः)॥ तत्राग्नि। अंगार। मुम्मर। जाल वीजली प्रमुखा अनेक भेदाः। तत्र त्रिक ३ अहोरात्रि उत्कृष्टं आयुः ॥ अंगुला संख्येय भागोदेहमानं। गुंजाप्रमाणे अग्नौ असंख्याता जीवा। सप्त ७ लक्षयोनयः एतज्जीवानां उकालन निर्वापणाद्यारंभेणविराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० पूर्व० मिथ्या०॥ ३ ॥ (अथ वायुकायः)॥ तत्र, गुंजावात। शुद्धवात। महावात। भूतेलियो। तनुवात प्रमुखा अनेके भेदाः। तस्यसप्त ७ लक्षयोनयः। एततूज्जीवानां आरंभादिना विराधनाकृता भवति ॥ इहभवे०। मिथ्या डु० देहि० ॥ ४ ॥ (अथ वनस्पतिकायः)॥ सप्रत्येक साधारण २ भेदेनद्विधा ॥ (तत्र) प्रत्येक वनस्पति। तस्याः अंव निंव कदंव। असोग नाग पुन्नाग धव खदिर वम्र पीपल। कइर वोर। पेजमा। जालि। आक धतूरा। रायणि। केलि खड। तृण। हरीवेली। लता। पत्र फूल। फलिप्रमुख। अनेकेभेदाः। तस्यसाधिक सहस्रयोजन देहमानं पद्मद्रहादौ कमलादीनां १० दिनसहस्राणि उत्कृष्टं आयू। १० लक्ष योनयः ॥ ५ ॥ (अथ साधारण वनस्पतिः)॥ कंद मूल। अंकूर। किसलय। सेवाल। भुंफोम। पंचवर्ण फूलणि। गाजर। मूला। सूरण। लसण। प्याज आदौ। थोहरि। कुंवारपाठो। गिलोय। मोथ नीलीहलद लचालू। पिंमालू। प्रमुखा अनेके भेदाः जघन्यं उत्कृष्टंच। अंतर्मुहूर्त्त आयुः अंगुलासंख्येय भागोदेहमानं। एकस्मिन् सूच्यग्रभागप्रमिते अनंतकाये अनंताजीवा चतुर्दशलक्षयोनयः। एतज्जीवानां छेदन भेदनाद्यारंभेण वेदनाकृता भवति ॥ इह भवे०। मिथ्या डुकृतंदेहि ॥६॥ (अथ द्विंद्रियाः)॥ तत्र संख। सीप। कउमा। कातरा। पुरा। अलसीया। कृमि गंमोला। गामर। चूमेलि। मेहरि। प्रमुखा अनेके भेदाः। तेषां द्वादश वर्षाणि उत्कृष्टमायूः। द्वादश योजनानि संखादीनां देहमानं। द्विलक्षयोनयः। एत

जीवानां विराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० मिथ्या दुकृतंदेहि ॥ ७ ॥ (अथ
त्रींद्रिया)॥ तत्र कीमी । मकोमा । गादहिया । जुं । लीख । मांकण । कुंथु
वा । उदेही । ईली धानकीमा । जवा । गोगीडा । घीवेली । मामोला
प्रमुखा अनेके भेदाः । तेषां ४९ एकोन पंचासद्दिनानि उत्कृष्टमायुः ॥ कोस
त्रयंच कर्णशृगालादीनां देहमानं । द्विलक्षयोनय । एतज्जीवानां विराधनाकृता
भवति ॥ इहभवे० मिथ्या० देहिः॥८॥ (अथ चतुरेंद्रियाः) तत्र माखी विछू ।
भमरा । पतंगिया । तीमा । माछर । डांस । मासा । भमरी भणहणा
प्रमुखा । अनेके भेदाः । तेषां षण्मासा उत्कृष्टं आयु । एक योजन प्रमा
णंच भ्रमरादीनां देहमानं । द्विलक्षयोनयः । एतज्जीवानां विराधनाकृता
भवति ॥ इह भवे० मिथ्या० देहि ॥ ९ ॥ (अथ पंचेंद्रियाः)॥ ※ ॥
तेच । नारकि १ ॥ देवता २॥ तिर्यक् ३॥ मनुष्य भेदात् ४ ॥ त च्चतुर्वि
धा । तत्र रत्नप्रभादि पृथिवी सप्तगता नारकी असंख्याताः । तेषां ३३ साग
रोपमाणि उत्कृष्टं आयुः ५०० धनुषि देहमानं ॥ च्यार लक्ष योनयः । एते
षां स्वयं परम धार्मिकी भूय, छेदन भेदन क्रकच्च विदारण ॥ त्रपुपान कुंभी
पाचनादि नानाविध कदर्थनया विराधना कृता भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या
दुकृतं देहि ॥ १० ॥ अथ देवाः ॥ तेषां भवनपति १ । व्यंतर २ । ज्योति
षी ३ । वैमानिक ४ । भेदेन चतुर्भेदाः । ३३ त्रयत्रिंशत्सागरोपमाणि उ
त्कृष्टमायुः । सप्तहस्त देहमानं ॥ ४ चत्वारि लक्षयोनयः । तेषां दिव्यसुख
भोगं दृष्ट्वा । ईर्ष्याकरणेण । मंत्र यंत्र तंत्र आकर्षणे दुःख दानेन अपलापे
नवा विराधना कृता भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या दुःकृतं देहि ॥ ११ ॥
(अथ तिर्यंच)॥ तेषां । जलचर १। स्थलचर २ । खचर ३। उरपरिसर्प ॥
भुजपरि सर्प भेदात् । पंचधा ॥ तत्र जलचराणां ॥ मछ कछप प्रमुख
अनेके भेदाः । तेषां संमूर्छिमानां गर्भजानांच उत्कृष्टं पूर्वकोटिः आयुः । यो
जन सहस्रंच स्वयंभूरमण गतानां देहमानं ॥ १ ॥ (स्थलचराः)॥ तेषां
सीह वाघ चीतरा सरभ हाथी घोमा ऊंठ बलद खर गाइ भैंस । छली ह
रिण रोझ ससा । सूवर रींछ सांबर । कूतरा सियालिया प्रमुखा अनेके भेदाः
तत्र युगलिकानां तेषां ३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायुः । ३त्रिक क्रोश दे
हमानंच ॥ इतरेषांतु पूर्वकोटिः उत्कृष्टं आयुः । षट्क्रोश देहमानंच ॥ १ ॥

(खचराणां)॥हंस बगला सारस सीचाणां । समली गृध्र काग घूक होलावा। होला चिमकला नीलचांस सूवटा प्रमुख अनेके भेदाः । तेषां पल्योपमस्यश्र संख्येयो भाग उत्कृष्टं आयुः । धनुपृथुक्तंच ए देहमानंच । उरपरिसर्पाणां । अजगर । कालंदर सर्पाणां प्रमुखा अनेके भेदाः । तेषां पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः । योजन सहस्रंच देहमानं ४ (भुज परि सर्पाणां)। गोह । नउला । काकिंमा । गिलोई वांभणी प्रमुखा अनेके भेदाः । तेषां पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः ॥ क्रोश पृथुक्तंच देहमानं । एषांतिरश्चां चतुलक्ष योनयः एतेषां छेदन भेदन कदर्थन अंगावयव कर्त्तन ॥ नासावेध पृष्टिगालन ॥ अधिक भारारोपण निकश घात चारि पाणिय निरोधादि दुःखोत्पादनेन विराधना कृता भवति । इहभवे०॥मिथ्या दुकृतं देहि॥१२॥ मनुष्यां ॥ तेषांच४५लक्ष योजन प्रमाण मनुष्य क्षेत्र ॥५ भरत ।५ ऐरवत । ५महाविदेह ।१५ कर्म्मभूमि ॥३० अकर्म्मभूमि ॥५६ अंतर द्वीपेषु गर्भजपर्याप्ताऽपर्याप्त संमूर्छिम भेदेन ३०३ भेदा भवंति । तेच आर्य, अनार्य, व्राह्मण, वैश्य, शुद्र, राजा, रांक, दष्ठ, अदष्ट ज्ञान, अज्ञान, सुत, स्वजन। मित्र, शत्रु, प्रत्यक्ष, परोक्षादि भेदात् अनेक विधाः॥ तेषां युगलिकानां३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायुः ॥३त्रिक क्रोश देहमानं । इतरेषांतु पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः ॥ ५०० धनुर्देहमानं ॥ एतज्जीवानां विराधना कृता भवति । इहभवे० ॥ मिथ्या दुःकृतं देहिः ॥ १३ ॥ तत्रापि विशेषतः॥ माता, पिता, भाई, बहिन । पुत्र । कलत्र । मित्र, शत्रु । वहु, वेटी । सासू । सुसरा । जेठाणी । देराणी ॥ काका । काकी । मासी । भूवा ॥ साला । साली । पोतरा । पोतरी॥ दोहीतरा। दोहीतरी॥ दायाद। गोत्री । वेवाही आमोसी पामोसी प्रमुख जनैः । समंकलह कंदलादिना विराधना कृता भवति ॥ इहभवे०॥ मिथ्या० देहि ॥ १४ ॥ ३ ॥ अथ दुःकृत गर्हा ॥ तत्रपूर्व आशातना अर्हच्चैत्ये मूल गर्भागारे ॥ महत्पो दश आशातनाः कृता । एवं सिद्ध, प्रवचन। आचार्य, उपध्याय वाचनाचार्य, रत्नाधिक स्थविर, साधु, साध्वी श्रावक । श्राविका, समस्त संघस्य अभक्तिः आशातनाः कृता भवति । तत् मिथ्या दुकृतं देहि ॥ १ ॥ कुतीर्थ कदापि प्रवर्त्तितं २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्मसेवा कृता भवति ३ ॥ श्री वीतराग देवमार्गः कदापि अपलपितो भवति ४ ॥ ज्ञान गुरु अपलपितो भवति ५ ॥ स्थापना प्रतिलेखिना विस्मृता भवति

६ ॥ गंठसी मुंठसी नवकारसी प्रमुख प्रत्याख्यानं विस्मृतं भवति ७ ॥ रात्रि भोजनंकृतं भवति ८ ॥ उत्सुत्र प्ररूपितं भवति ए॥ ज्योतिष्क वैद्यक । नाटक कामशास्त्राणि शिक्षतानि भवति १० ॥ श्री जिन भवनं पातितं भव ति ११ ॥ जिन बिंबानि भग्नानिवा भवति १२ ॥ जिन प्रतिमा उत्थापिता भवति १३ ॥ देवसंबंधानि लोटा लोटी कलसा पिंगाणा उरसियो सुकम्भि कुंभी धोतीया प्रमुखानि उपगरणानि स्वगृहेभ्याभृतानि भवति १४ ॥ देव गुरु द्रव्यं भक्षितं भवति १५ ॥ गुरु पुस्तकं विक्रीय भक्षितं भवति १६ ॥ पाप कुटंबं पोषितं भवति १७ ॥ आकाशे आवरणं विना प्रतिक्रमणं कृतं भवति १८ ॥ अरहट्टक्षेत्र यंत्र कूपाद्यारंभाः कृता भवति १ए ॥ इष्ट वियो गे रोदनं कृतं भवति २० ॥ पाशी दानेन कस्यापि गलकर्त्तनं कृतं भवति २१ ॥ तन्मिथ्या दुःकृतं देहि ॥ पुनः अनंत भवकृत पाप गर्हा ॥तथाहि॥ खाटकीभवे गोमहिष छागादयो मारिता भवंति १॥ चटिकामारभवे चटिका दयोमारिता भवंति २ ॥ धीवरभवे मत्स्या मारिता भवंति ३ ॥ आखेटकभवे मृगादयो मारिता भवंति ४ ॥ कुंभकारभवे, भांभनिवाहा इष्टिका निवाहावा पाचिता भवंति ५ ॥ तैलिकभवे, सजीव तिल सर्षपादयः पीमिता भवंति ६ ॥ सूत्रधार भवे वृक्षाः छिन्ना भवंति ७ ॥ मालिकभवे, नानाविध वनस्प तयोरोपिताः छिन्नाः विक्रीता भवंति ८ ॥ भ्राष्टिकभवे गोधुम मुग्नादयो भ्र ष्टा भवंति ए ॥ लोहकारभवे, अग्न्यारंभ कृतो भवंति १० ॥ कृषीवलभवे, क्षेत्रे हलक्षेटितं निदानं कृतं धान्यं लूनंवा भवंति ११॥ भारवाहकभवे करभ वृषभ खरादीना मुपरि, प्रभूत भारारोपणेन, पृष्टगालन, कीटक पातन, व्य थोत्पादनात् कुमरणेन मारिता भवंति १२ ॥ भिल्लादिभवे सार्थौ लुंटितो भवंति १३ ॥ कोलिकभवे, वने दावानलोदत्तो भवंति १४ ॥ कोटपालभवे छेदन भेदन तामिनादिना मनुष्याः कदर्थिता भवंति १५ ॥ काजी मुल्लांभवे चटिकादीनां बधः कृतो भवंति १६ ॥ अनार्य्यभवे बब्बरकुले मनुष्य शरीर रुधिरेण पट्टकूलवस्त्राणि रंजितानि भवंति १७ ॥ सिंह व्याघ्र चित्रकादिभवे मृगादयो मारिता भवंति १८ ॥ सर्प वृश्चिकादि भवे दशनेन विष व्यापारात् मनुष्यादयः पीमिता मारिता वा भवंति १ए ॥ मार्जारी भवे मूषकादयो भ क्षितावा भवंति २० ॥ गृह कोकिलाभवे मक्षिका भक्षितावा भवंति २१॥

बकन्नवे मत्स्या गृहीता न्नवंति २२ ॥ शकुनिन्नवे तिड चटिकादयो गृहीता न्नवंति २३ ॥ पुनरपि इहन्नवे परन्नवे विषं वा कस्यापि दत्तं न्नवंति २४ ॥ सपत्नी पुत्राणा मुपरिद्रोह श्चिंतितो न्नवंति २५ ॥ स्वकीय परिकीय गर्न्नो वागालितः पातितो न्नवंति २६ ॥ जीव पानीयं ढोलितं न्नवंति २७ ॥ शीलव्रतं गृहीत्वा न्नग्नं न्नवंति २८ ॥ इह परन्नवे श्रावकानां तीव्रव्रतानि गृहीत्वा न्नग्नानि न्नवंति २९ ॥ साधु साध्वीनां साधिर्मिका साधर्मिकीणां वा निंदा कृता न्नवंति ३०॥ अन्यदपि सूतिका दूतिका कर्म्म, खंमन दलन रंधन लिंपनादिना यदारंन्न कृतं न्नवंति ॥ इहन्नवे० मिथ्या डुःकृतं देहिः ॥ ४ ॥ (अथ सुकृतानु मोदना)॥ जिण न्नवण १। बिंब २। पुत्थय ३ ॥ संघस रूवाइ सत्तखित्ताई ७। जीर्णोद्धारो ८। पोसह साला ए। साहारणं चैव १० ॥ १ ॥ इह परन्नवे श्री वीतराग चैत्यं कारापितं न्नवंति २ ॥ तेषां बिंबानि रत्न प्रवाल मम्माणी पाषाण मयानि निर्मापितानि न्नवंति २ ॥ सूत्र सिद्धांत पुस्तकानिवा लेखयित्वा साधुन्न्यो वाचनार्थं प्रदत्तानि न्नवंति ४ ॥ साधु साध्वीन्न्यः शुद्धानि एषणीयानि ॥ अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र पीठ फलक उंषध न्नेषजादीनि न्नक्त्या प्रतिलान्नितानि न्नवंति ५ ॥ साधर्मिकाणां न्नोजनेन वस्त्र परिधानेन वा न्नक्ति युक्तिः कृता न्नवंति ६ ॥ जीर्णोद्धारो वा कृतो न्नवंति ७ ॥ पौषध शाला वा कारिता न्नवंति ८ ॥ साधारण द्रव्यं वा दत्तं न्नवंति ए ॥ आचार्य उपाध्याय वाचकादि पद प्रतिष्टा महोत्सव कारितो न्नवंति ए॥ श्री शत्रुंजय, गिरिनारि, आबू, अष्टापद, संमेत सिखर, रांणपुर। जेसल मेरु, थंन्नणापार्श्वनाथ, संखेस्वरा, सोरीपुर। हथिणाउर। फलवधी प्रमुख, तीर्थ यात्रा कृता न्नवंति । तत्पुण्यं अनुमोदयः ॥ १० ॥ पुनः पूर्वन्नवे पृथिवी कायो न्नूत्वा । वीतराग प्रतिमात्वेन। अप्पकायोन्नूत्वा। तीर्थकराणां स्नात्रा न्निषेकत्वेन। अग्निर्न्नूत्वा, धूपोत्क्षेपत्वेन। दीपत्वेनवा। वायुर्न्नूत्वा, जिनानां, साधूनां, धर्मार्त्तानां, शीतलत्वजनकत्वेन। वनस्पतिर्न्नूत्वा पुष्पादि पूजात्वेन ॥ त्रशन्नवे शंखोन्नूत्वा जिनाग्रे मंगलध्वनित्वेन। उपयोगत्वं प्राप्तोन्नवसि। तत्पुण्यं अनुमोदयः ॥ ११॥ पुनः श्रीपर्युषणा पर्वणि श्री कल्पपुस्तकं गृहीतं वाचितं न्नवंति । श्रीपर्युषणादि पर्वपोषधिका न्नोजितान्नवंति ॥ १२ ॥ साधर्मिकवात्सल्यंवा कृतं

भवंति ॥ १३ ॥ सुपात्रेदानंदत्तंभवंति ॥ १४ ॥ शीलव्रतं वा पालितं भवंति ॥१५॥ कल्याणक एकादशी पंचमी पक्खवासऊ, उपधान समोसरण प्रमुख तपः कृतं भवंति । तेषां उद्यापनं वा कृतंभवंति ॥ १७ ॥ साधर्मिकगृहे लंभ निकाकृताभवंति ॥ १८ ॥ धर्मध्यानं वा कृतंभवंति ॥ १९ ॥ अन्यदपि यत्पु एयं कृतं भवंति ॥ इहभवेउ । तत्सर्वं अनुमोदयः ॥ पुनरपि सांप्रतं निज वित्तानुसारि सप्तक्षेत्र्यां वित्तं व्ययीकुरु । आरंभादिनियमं पक्खं, मासं जाव ज्जीवं, वा कुरु । इत्यादि ॥ सर्वमंगल मांगल्यमित्यादि ॥ १ ॥ आराधनां सुगमसंस्कृत वार्त्तिकाख्यां । चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण ॥ उच्चाभिधा न नगरे महिमासमुद्र ॥ शिष्याग्रहेण मुनिषड्रस चंद्रवर्षे ॥ १ ॥ इति श्री श्रावकाराधना समाप्तम् ॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः तत्सिष्य यं । मुक्तिकमलमुनिः आचारग्रंथात् संग्रहीकृते आचाररत्नाकर प्रथम प्रका शे अंत्यसंस्कार १६ मा उदयः संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥

॥※॥ यति ब्राह्मणादीनां आचार्यपदारोपण विधिः ॥※॥

॥ (उक्तंच) ऐहिकामुत्रिकाणांच । तपसां पुण्यकर्म्मणां । फलंतदो दयात्सुख । मारोहंतिपदंजनाः ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ तिहां प्रथम यतीका पदारोपण करणेकी संक्षेप विधिः (इहां लिखते है) विशेष विधि आचारदिनकर, विधिप्रपादिकसें जान लेना । यती का पदारोपण कह्ये पीछे (अनुक्रमसें) जैन ब्राह्मणका पदारोपण कहेगा॥ (यथा) विशुद्ध है कुल, जाति, रूप, चरित्र, (और) विधिसें ग्रहण कीया है चारित्र । (और) जोगकुं धारके ३६ गुण युक्त होवे (तिसकुं) विधिसें, (अरु) अनुक्रमसें, आचार्यपद, गच्छनायकत्व पदका आरोपण कर णा युक्त है ॥ पूर्वगुरु वेठे छवे आचार्यपद देवें (अथवा) पूर्वगुरु पर लोक गये पीछे, यथोक्त गुणसहित, आचार्यकुं स्तोक शुद्ध उष्ण जलसें स्नान करायकें नवीन रजोहरण, मुखवस्त्रिका, शयनासन, अरु, स्वेतवस्त्र धारन करायके सिंहासनपर वेठावे । (तिससमये) घणा आचार्य उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, एकठे मिले ॥ आचार्यपदो चित लग्नसमय आये थके स्वगुरु (अथवा) अन्य वयवृद्ध (अथवा) ज्ञानवृद्ध, गीतार्थाचार्य, वर्द्धमान विद्यासें । वासक्षेपादिक करके गणधर

विद्याका तिलक करै (तेसें) अन्य आचार्योपाध्याय, साधु, श्रावक श्राविका पिण परमेष्टि मंत्रपाठ करतां तिसही रीतीसें श्रीखंडसें तिलक करै॥ (तदनंतर) वृद्धगुरु पूर्वोक्त विधिसें मंत्रित करके। वासाक्षतदान साधुकुं, श्राद्धकु करै (तदनंतर) वृद्धाचार्य खमासमणाणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुनयेणं गुरुगुणेहिंवुद्धा नित्थारग पारगोहोहि। एसें वृद्धाचार्य कहैं (तब) दूसरेभि वासाक्षतक्षेप करै॥ वंदनक विधि पूर्ववत्। औरपिण उपाध्याय साध्वाधिकारे पण पदारोपणविधि आचारदिनकरादि, विधिग्रंथोंसें जान लेनी॥ इति साधु आचार्य पदारोप विधिः॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ विप्राणां पदारोपण विधिः॥ ॥

॥ ॥ आचार्य, उपाध्याय, स्थानपति, कर्म्माधिकारी, भेदसें चार प्रकारके पदक्रमहैं॥ अब प्रथम आचार्यपदका लक्षण कहते हैं॥ आचार्य सम्यग्दृष्टि, द्वादशव्रतधारी, अन्यलिंगीके देवकों प्रणाम, संभाषण संस्तव विवर्जित, पापकर्मरहित, दुःप्रतिग्रहरहित, अरु, नित्यपच्चखाणसहित होते है (उक्तंच)॥ स्वभावादल्प संतुष्टा। अल्पभाषण तत्पराः। जिनागमा त्परंनैव। पठंति श्रुतमादरात्॥ १॥ नित्य धौतवस्त्र भाजो। द्वादशव्रत धारिणः। सम्यगभ्यस्त तत्वार्थाः। प्रमाणः ग्रंथवेदिनः॥ २॥ प्रायः साव द्यविरता। मिथ्यादृक् संगवर्जिताः। धीराः शांताः गुणोपेताः। सर्वशास्त्र विदस्तथा॥ ३॥ प्रतिष्टादि सर्वकर्म। कारणाभ्यास मालिनः। प्रत्याख्यान रता नित्यं। प्रायः प्राशुक भोजिनः॥ ४॥ नित्य स्नानरता दांताः। वाग्मिनो मंत्रवेदिनः॥ षट्कर्म्मसाधनाव्यग्र। हृदयास्ते द्विधैवहि॥ ५॥ साधूपास्तिपरानित्यं। शुद्धवंशसमुद्भवाः। प्रायःकनकरत्नादि। दुःप्रतिग्रहव र्जिताः॥ ६॥ प्राणात्ययेपिशुद्रान्न। भोजनेपिपराङ्मुखाः। वृंताक मूल कादीनां। पंचोडुंवरकस्यच॥ ७॥ परित्याग परानित्यं। प्रांजलाः प्रियवा दिनाः। विद्याप्रवादपूर्वोत्थं। मांत्रिकंकल्पमार्हतः॥ ८॥ जानंतोजीवसं घाते। सर्वत्रापिकृपापराः। आचार्यपदमर्हंति॥ ईदृशाः ब्राह्मणोत्तमाः॥९॥

॥ ॥ ऐसे पूर्वोक्त गुणयुक्त ब्राह्मणाकुं आचार्यपददेनेकी विधि कहतेहैं सूरिपदके उचित शुभ लग्न आये थके आचार्यपदकुं प्राप्त हुये ऐसे ब्राह्मण इत्यादि गुरुः। पूर्वोक्त गुणसंयुक्त ब्रह्मचर्य धारण किया। हुवा

स्वरे संपूर्ण करके स्वहस्ते जापकरे। जिनस्वरूपं । जिनलक्षणं जिनपदवृंदं । जिनपादांबुजं । जिनमंदिरं । जिनकथालाभं । जिनबोधं । जिनदर्शनं । जिन महावीर्यं । जिनगुणस्तोत्रं । जिन जगन्मंगलं । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा ग्यान दर्शन चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ॥ इस मंत्रका १०८ जापसदा करै । इतना न होसके तो ५४ (तथा) २७ (या) ९ वेर अवश्य जाप करै ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रों ह्रः दिगंबराय धौतवस्त्रायनमः ॥ वस्त्र शुद्ध करै ॥ ॐ ह्रीं असि आ उ सा य अर्हं मम सर्वांग सुद्धिकुरु २ स्वाहाः ॥ स्नान मंत्र प्राणायामं ॥ ॐ भूरभ्रवस्व सवितुवरेण्यं । भृगुदेवश्च सिद्धिमहि ॐ धी योनि प्रचोदयात् ॥ इति आचमन मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं सर्वांगत गायत्रीमंत्रः ॥ ॐ ह्रीं सम्यग् दर्शनेनमः ॥ ॐ कमल्व्यूं, ॐ समल्व्यूं, ॐ लमल्व्यूं, ॐ कमल्व्यूं, ॐ शमल्व्यूं, ॐ षमल्व्यूं, ॐ समल्व्युं, ॐ हल्व्यूं, अत्रआत्मनेनमः ॥ जाप्य १०८ ॥ इति प्रभात गायत्री विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मध्यान्न गायत्री मंत्रः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग् ग्यानाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं यमल्व्यूं, ह्रीं समल्व्यूं ह्रीं ल्मल्व्यूं । ह्रीं क्म्ल्व्यूं । ह्रीं श्म्ल्व्यूं । ॐ षमल्व्यूं । ह्रीं स्मल्व्यूं ह्रीं हल्व्यूं अर्हं आत्मनेनमः ॥ जाप १०८ । इति मध्यान्नगायत्री ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ संध्यागायत्री मंत्रः ॥ ※ ॥

॥ ॐ ह्रीं सम्यग् चारित्रायनमः । श्रीं क्ष्मल्व्यूं, श्रींफम्ल्व्यूं, श्रीं स्मल्व्यूं श्रीं क्मल्व्यूं । श्रीं लमल्व्यूं । श्रीं शमल्व्यूं । श्रीं ष्म्ल्व्यूं । श्रीं भमल्व्यूं । श्रीं कमल्व्यूं, सिद्ध आत्मनेनमः । इसका १०८ वेर जाप करे ॥ ※ ॥ इति संध्या गायत्री विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ऋषिमंमलजीकी पूजा विधि लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ श्रीऋषभदेवजी १॥ श्री अजितनाथजी २॥ श्री संभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनंदनजी ४ ॥ श्री सुमतिनाथजी ५॥ श्री पद्मप्रभुजी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथजी ७ ॥ श्री चंद्राप्रभुजी ८ ॥ श्री सुवविनाथजी ९ ॥ श्री शीतलनाथजी १० ॥ श्री श्रेयांसनाथजी ११ ॥ श्री वासुपुज्यजी

१२ ॥ श्री विमलनाथजी १३ ॥ श्री अनंतनाथजी १४ ॥ श्री धर्मनाथजी १५ ॥ श्री शांतिनाथजी १६ ॥ श्री कुंथुनाथजी १७ ॥ श्री अरनाथजी १८ ॥ श्री मल्लिनाथजी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रतजी २० ॥ श्री नमिनाथजी २१ ॥ श्री नेमिनाथजी २२ ॥ श्री पार्श्वनाथजी २३ ॥ श्री वर्द्धमानजी २४ ॥ इति चतुर्विंशति तीर्थ कराः ॥ ह्रीं नम । क्रौं नमः २ ॥ ववववववववववववव १ ॥ ववववववववववववव २ ॥ ववववववववववववव ३ ॥ ववववववववववववव ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः । ॐ ह्रीं आचार्येभ्योनमः । ॐ ह्रूं उपाध्यायेभ्योनमः। ॐ ह्रैं सर्व साधुभ्योनमः। ॐ ह्रैं ज्ञानेभ्योनमः। ॐ ह्रौं दर्शनेभ्यो नमः । ॐ ह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ (इति प्रथम वलय) ॥१॥ ॐ इंद्रायनमः । ॐ अग्नयेनमः । ॐ यमायनमः । ॐ नैऋतायनमः । ॐ वरुणायनमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेरायनमः । ॐ ईशानायनमः । ॐ नागायनमः । ॐ ब्रह्मणेनमः १०॥ (दशदिग्पाल नामानि) ॥ (इति द्वितीय वलयः) ॥ २ ॥ ॐ सूर्यायनमः । ॐ चंद्रायनमः । ॐ मंगलायनमः । ॐ बुधायनमः । ॐ बृहस्पतयेनमः । ॐ सुक्रायनमः । ॐ शनेश्चरायनमः । ॐ राहवेनमः ॥ (इति तृतीय वलयः ३)॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॥ क ख ग घ ङ २ ॥ च छ ज झ ञ ३ ॥ ट ठ ड ढ ण ४ ॥ त थ द ध न ५ ॥ प फ ब भ म ६ ॥ य र ल व ७ ॥ श ष स ह ८ ॥ ॐ ह्रीं इंद्रभूतयेनमः १ ॥ ॐ ह्रीं अग्निभूतयेनमः २ ॥ ॐ ह्रीं वायुभूतये नमः ३ ॥ ॐ ह्रीं व्यक्तायनमः ४ ॥ ॐ ह्रीं सुधर्मणेनमः ५ ॥ ॐ ह्रीं मंडितायनमः ६॥ ॐ ह्रीं मोर्यपुत्रायनमः ७॥ ॐ ह्रीं अकंपितायनमः ८॥ ॐ ह्रीं अचलभ्रातायनमः ९ ॥ ॐ ह्रीं मेतार्यायनमः १० ॥ ॐ ह्रीं प्रभासाय नमः ११ ॥ इति ११ गणधरनामानि ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सवोहिजिणाणं ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीयबुद्धीणं ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीणं ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ९॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिठीविसाणं

१० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंसं बुद्धाणं १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिबुद्धीणं १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो रुजुमईणं १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमईणं १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुव्वीणं १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदशपुव्वीणं १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठंगमहानिमित्तकुशला णं १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पन्हासमणाणं २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवाणं २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिआसवाणं २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मडुयासवाणं २७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं २८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइम हावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंभयारीणं ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमो सहीपत्ताणं ४१॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहीणं ४२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहीणं ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ता णं ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयणबलीणं ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ण मो कायबलीणं ४८ ॥ (इत्यष्टचत्वारिंशल्लब्धिपदानि) ॥ ॥ ॐ नाभयेनमः १ ॥ ॐ जितशत्रवेनमः २ ॥ ॐ जितारवेनमः ३ ॥ ॐ संवरायनमः ४ ॥ ॐ मेघायनमः ५ ॥ ॐ धरायनमः ६ ॥ ॐ प्रतिष्ठायनमः ७ ॥ ॐ महशेनायनमः ८ ॥ ॐ सुग्रीवायनमः ९ ॥ ॐ दृढरथायनमः१०॥ ॐ विश्नवेनमः ११॥ ॐ वसु पुज्यायनमः १२ ॥ ॐ कृतवर्मणेनमः १३ ॥ ॐ सिंहसेनायनमः १४॥ ॐ भा नवेनमः १५ ॥ ॐ विश्वसेनायनमः १६ ॥ ॐ सूरायनमः १७॥ ॐ सुदर्शनाय नमः १८ ॥ ॐ कुंभायनमः १९ ॥ ॐ सुमित्रायनमः २० ॥ ॐ विजयायनमः

२१ ॥ ॐ समुद्रविजयायनमः २२ ॥ ॐ अश्वशेनायनमः २३ ॥ ॐ सिद्धा र्थायनमः २४ ॥ (इति चतुर्विंशति जिनजनका नामानिः) ॥ ॐ मरुदेवायै नमः १॥ ॐ विजयायैनमः २ ॥ ॐ सेनायैनमः ३॥ ॐ सिद्धार्थायैनमः४॥ ॐ सुमंगलायैनमः ५॥ ॐ सुशीमायैनमः ६॥ ॐ प्रथ्वीमातायैनमः ७॥ ॐ लक्ष्म णायै नमः ८॥ ॐ शामायैनमः ९॥ ॐ नंदायैनमः १०॥ ॐ विश्नवेनमः ११॥ ॐ जयायैनमः १२ ॥ ॐ स्यामायैनमः १३ ॥ ॐ सुयसेनमः १४ ॥ ॐ सुव्र तायैनमः १५॥ ॐ अचिरायैनमः १६ ॥ ॐ श्रियैनमः१७ ॥ ॐ देव्यैनमः १८ ॥ ॐ प्रभावत्यैनमः १९ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः २०॥ ॐ वप्रायैनमः २१ ॥ ॐ शिवायैनमः २२ ॥ ॐ वामायैनमः २३॥ ॐ त्रिशलायैनमः २४ ॥ (इति चतुर्विंशति जिनजननीनामः)॥ ॐ ह्रियैनमः १॥ ॐ श्रियैनमः २ ॥ ॐ धृत्यै नमः ३॥ ॐ लक्ष्म्यैनमः ४ ॥ ॐ गोर्य्यैनमः ५ ॥ ॐ चंण्यैनमः ६ ॥ ॐ सर स्वत्यैनमः ७ ॥ ॐ जयायैनमः ८ ॥ ॐ अंबायैनमः ९ ॥ ॐ विजयायैनमः १० ॥ ॐ क्लिन्नायैनमः ११॥ ॐ अजितायैनमः १२॥ ॐ नित्यायैनमः१३॥ ॐ मदद्रवायैनमः १४ ॥ ॐ कामांगायनमः १५ ॥ ॐ कामवाणायैनमः १६ ॥ ॐ सानंदायैनमः १७ ॥ ॐ नंदमालियेनमः १८ ॥ ॐ मायात्यैनमः १९॥ ॐ मायावित्यैनमः २०॥ ॐ रोद्र्यैनमः२१ ॥ ॐ कलायैनमः २२॥ ॐ काल्यै नमः २३॥ ॐ कालप्रियायैनमः २४॥ इति श्रीदेव्यादि चतुर्विंशतिनामानि॥ ॥ ॐ गोमुखायनमः १ ॥ ॐ महायक्षायनमः २ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ३ ॥ ॐ यक्षनायकायैनमः ४ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ५॥ ॐ कुसुमायनमः ६ ॥ ॐ मातं गायनमः ७ ॥ॐ विजयायनमः ८ ॥ ॐ अजितायनमः ९ ॥ ॐ ब्रह्मण्यैनमः १० ॥ ॐ यक्षराजायनमः ११ ॥ ॐ कुमारायनमः १२ ॥ ॐ षणमुखायनमः १३ ॥ ॐ पातालायनमः १४ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ गरुडायनमः १६ ॥ ॐ गंधर्वायनमः १७ ॥ ॐ यक्षेंद्रायनमः १८॥ ॐ कुबेरायनमः१९॥ ॐ वरुणायनमः २० ॥ ॐ भृकुटयेनमः २१ ॥ ॐ गोमेधायनमः २२ ॥ ॐ पार्श्वयक्षायनमः २३ ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः २४ ॥ (इति गोमुखादि चतुर्वि शति जिनशासन यक्षनामानि) ॥ २४॥ ॐ चक्रेस्वर्यैनमः १ ॥ ॐ अजित बलायैनमः २॥ ॐ दुरितार्य्यैनमः ३॥ ॐ कालिकायैनमः ४ ॥ ॐ महाकाल्यै नमः ५॥ ॐ श्यामायनमः ६॥ॐ शांतायैनमः७॥ ॐ भृकुटयेनमः८॥ ॐ सुतार

कायैनमः९॥ ॐ अशोकायैनमः १०॥ ॐ मानव्यैनमः ११ ॥ ॐ चंमायैनमः १२ ॥ ॐ विदितायैनमः १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः १४ ॥ ॐ कंदर्प्पायैनमः १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनमः १६ ॥ ॐ बलायैनमः १७ ॥ ॐ धारण्यैनमः १८॥ ॐ धरणप्रियायैनमः १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः २० ॥ ॐ गंधार्व्यैनमः २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः २३ ॥ ॐ सिद्धायकायैनमः २४ ॥ (इति चक्रेश्वर्य्यादि चतुर्विंशति जिनशासन देवीनामानि) ॥ ॐ रोहिण्यैनमः १ ॥ ॐ प्रज्ञप्त्यैनमः २ ॥ ॐ वज्रशृंखलायैनमः ३ ॥ ॐ वज्रांकुशायैनमः ४ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनम ५ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ६ ॥ ॐ काल्यैनमः ७ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ८ ॥ ॐ गोर्य्यैनमः ९ ॥ ॐ गंधार्य्यैनमः१० ॥ ॐ महाज्वालायैनमः ११ ॥ ॐ मानव्यैनमः १२ ॥ ॐ वैरोट्यायैनमः १३ ॥ ॐ अछुप्तायैनमः १४ ॥ ॐ मानस्यैनमः १५ ॥ ॐ महामानस्यैनमः१६ ॥ (इति रोहिण्यादि षोमशविद्यादेवीनामानि) ॥ ॐ नैसर्प्पकायनमः १ ॥ ॐ पांडुकायनमः २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ४॥ ॐ महापद्मायनमः५॥ ॐ कालायनमः६॥ ॐ महाकालायनमः७॥ ॐ माणवायनमः८॥ ॐ शंखायनमः ९ ॥ (इति नवनिधाननामानि) ॥ ॐ सौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानेंद्रायनमः २ ॥ ॐ सनत्कुमारेंद्रायनमः ३॥ ॐ माहेंद्रायनमः ४॥ ॐ ब्रह्मेंद्रायनमः ५॥ ॐ लांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐ शुक्रेंद्रायनमः ७ ॥ ॐ सहश्रारेंद्रायनमः ८ ॥ ॐ प्राणतेंद्रायनमः ९॥ ॐ अच्युतेंद्रायनमः १० ॥ ॐ चंद्रायनमः ११ ॥ ॐ सूर्यायनमः १२ ॐ चमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐ बलींद्रायनमः १४ ॥ ॐ धरणेंद्रायनमः १५ ॥ ॐ भूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐ वेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥ ॐ वेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐ हरिकांतेंद्रायनमः१९ ॥ ॐ हरिस्सहेंद्रायनमः २०॥ ॐ अग्निसखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐ अग्निमाणवेंद्रायनमः २२ ॥ ॐ पूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐ विशिष्टेंद्रायनमः २४ ॥ ॐ जलकांतेंद्रायनमः २५ ॥ ॐ जलप्रभेंद्रायनमः २६ ॥ ॐ अमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐ मितवाहनेंद्रायनमः२८॥ ॐ बेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐ प्रभंजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐ घोषेंद्रायनमः ३१ ॥ ॐ महाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐ कालेंद्रायनमः ३३ ॥ ॐ महाकालेंद्रायनमः ३४ ॥ ॐ सरुपेंद्रायनमः ३५ ॥ ॐ प्रतिरुपेंद्रायनमः ३६ ॥ ॐ पूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७ ॥ ॐ मांणभद्रेंद्रायनमः ३८ ॥ ॐ भीमेंद्रायनमः ३९ ॥ ॐ महा

न्नीमेंद्रायनमः ४० ॥ ॐ किन्नरेंद्रायनमः ४१ ॐ किंपुरषेंद्रायनमः ४२ ॥ ॐ सत्पुरुषेंद्रायनमः ४३ ॥ ॐ महापुरषेंद्रायनमः ४४ ॥ ॐ अतिकायेंद्रायनमः ४५॥ॐ महाकायेंद्रायनमः ४६ ॥ ॐ गीतरतींद्रायनमः ४७ ॥ ॐ गीतयशीं द्रायनमः ४८ ॥ ॐ सन्निहितेंद्रायनमः ४९ ॥ ॐ सामानिकेंद्रायनमः ५० ॥ ॐ धात्रेंद्रायनमः ५१ ॥ ॐ विधात्रेंद्रायनमः ५२ ॥ ॐ ऋषींद्रायनमः ५३ ॥ ॐ ऋषिपालतेंद्रायनमः ५४ ॥ ॐ ईश्वरेंद्रायनमः ५५ ॥ ॐ महेंद्रायनमः ५६ ॥ ॥ ॐ वत्सेंद्रायनमः ५७ ॥ ॐ विशालेंद्रायनमः ५८ ॥ ॐ हास्येंद्रायन मः ५९ ॥ ॐ हास्यरतींद्रायनमः ६०॥ ॐ श्रेयइंद्रायनमः ६१॥ ॐ महाश्रेय इंद्रायनमः ६२ ॥ ॐ पदगेंद्रायनमः ६३ ॐ पदगूपतींद्रायनमः ६४॥(इति चतुःपष्टींद्राणांनामानि) ॥ ॐ अणिमसिद्ध्येनमः १॥ ॐ गरिमसिद्ध्येनमः २॥ ॐ लघिमसिद्ध्येनमः ३ ॥ ॐ प्राकाम्यसिद्ध्येनमः ४ ॥ ॐ महिम सिद्ध्येनमः ५ ॥ ॐ इसित्वसिद्ध्येनमः ६ ॥ ॐ विशित्वसिद्ध्येनमः ७ ॥ ॐ प्राप्तिसिद्ध येनमः ८ ॥ (इत्यष्टसिद्धिनामानि)॥ ॐ श्रीधरणेंद्रोरक्षतुः १ ॥ श्रीपद्मावतिर क्षतुः २ ॥ श्री गौतमस्वामिनेनमः ३ ॥ श्रीवैरोट्यारक्षतुः ४ ॥ इति श्री ऋपमंम्लजीका पजनविधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वीशस्थानक मंम्ल पूजन विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ णमोणंत विन्नाण सद्दंसणाणं । सहाणं दिया सेसजंतूगया णं । न्नवांन्नोज विद्धेयणे वारणाणं । णमो वोहियाणं वराणं जिणाणं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः १ इति प्रथम पदे जिनेंद्रपूजा ॥ (अथ सिद्ध पूजा)॥ लोगग्गन्नागोपरि संठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिंदियाणं । निस्से स कम्मरकय कारगाणं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे भ्योनमः २ ॥ (अथ तृतीय पद)॥ अणंतसंसुद्ध गुणांकरस्स । डरकंधया रुग्गदिवाकरस्स । अणंत जीवाण दया गिहस्स । णमो २ संघ चउव्विह स्स ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनायनमः ३ ॥ (अथ चतुर्थपद) ॥ कुवादि केली तरु सिंधुराणं । सूरी सराणं मुणिवंधुराणं । धीरत्त संतज्झियमंदराणं । णमो सया मंगल मंदिराणं ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ (अथ पंचम पद) ॥ सम्मत्त संयम पतित न्नविजन अतिद्द थिर करता न्नला । अवगुण अदूपित गुणविन्नूपित चंद्रकिरण समोज्ज्वला । अष्टाधिकादशसह

श सीलांगरथ रुचिरधाराधरा । भवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थिवरमु नीसरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविरायनमः ॥ (अथ छठोपद उपाध्याय) ॥ सव्वोह्दिवीजं कुर कारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुव्वोह्दि दंती हरिणेसराणं । विग्घोघसंताव पयोहराणं ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ६ ॥ अथ सातमो पद साधु पूजा ॥ संतज्जियासेस परी सहाणं । निस्सेस जीवाण दयागिहाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं । णमो णमो होउ तत्तोधणाणं ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ (अथ अष्टम पदे ज्ञान पूजा)॥ छद्दव्व पज्जाय गुणाकरस्स ॥ सयापयासी करणोधुरस्स । मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ज्ञानायनमः ॥ ८ ॥ (अथ नवमं पद दर्शन)॥ अणंत विन्नाण सुकारणस्स अणंत संसार विदारणस्स । अणंत कम्मावलि धंसणस्स । णमो णमो निम्मल दंसणस्स ॥ (ॐ ह्रीं श्री सम्यग् दर्शनायनमः)॥ ए ॥ (अथ दशमो विनयपद) ॥ आणंदियासेस जगज्जणस्स । कुंदिंउ पाद्मलताचणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स । णमो णमो श्री विणयालयस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् विनयैनमः ॥ १० ॥ (अथ इग्यारमैं पदै चारित्र) ॥ कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महोदयानंद लयाजलस्स । विन्नाण पंके रुहकारणस्स । णमो चरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्रायनमः ॥ ११ ॥ (अथ बारमै पदै ब्रह्मचर्य) ॥ सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स । सव्ववया भूषण भूषणस्स । नमोह्दि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥ (अथ तेरमै क्रियापद) ॥ विसुद्ध सद्धाण विभूषणस्स । सुलद्धि संपत्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणंत गुणप्पदस्स । नमो नमो सुद्ध क्रियापदस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् क्रियायैनमः॥१३॥ (अथ चवदमोतपपद)॥ लच्छीसरोजा वलितावणस्स । सुरूव संलग्गसुपावणस्स । अमंगलानो कुह उद्दवस्स । नमो नमो निम्मलसत्तवस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तपसेनमः ॥ १४ ॥ (अथ पनरमो गोतमपद) ॥ अणंत विन्नाण विन्नाकरस्स । उवाल संगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जय गोयमस्स । नमो गणाधीस्वर गोयमस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री गौतमायनमः ॥ १५ ॥ (अथ सोलमा पदे जिनपूजा)॥ मणुण्णसव्वा तिसयासयाणं । सुरासुराधीसरवंदियाणं ।

रवोडुविंबामल सग्गुणाणं । दयाधणाणंहिनमोजिणाणं ॥ ॐ ह्रीं श्री जिनेन्योनमः ॥ १६ ॥ (अथ सतरमैं चारित्रधारीपद) ॥ सविंदिया पार विकारदारी । अकारणा सेसजणोवगारी । महान्नवातंकरणापहारी । जयौ सदा सुद्ध चरित्तधारी ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्रधारिन्योनमः ॥ १७ ॥ (अथ अंगारमै ग्यानपदपूजा) ॥ सुद्धक्रिया मंम्ल मंम्नस्स । संदेह संदोह विखंम्नस्स । मुत्ती नपादान सुकारणस्स । नमोहि नाणस्स जसोधणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ज्ञानायनमः ॥ १८ ॥ (अथ नगणीसमोश्रुतपद) ॥ अन्नाणवल्ली वनवारणस्स । सुबोहि बीजां कुरकारणस्स । अणंत संसुद्ध गुणालयस्स । नमो दया मंदिरसत्थयस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् श्रुतायैनमः ॥१९॥ (अथ वीसमैपदै तीर्थ पदपूजा) ॥ तुन्यंनमः सकल विश्व वशंकराय । तुन्यंनमः त्रिजगती जनशंकराय । तुन्यंनमो नुवन मंम्ल मंम्नाय । तुन्यं नमोस्तु जिनपंक विखंम्नाय ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तीर्थपदेन्योनमः ॥ २० ॥ २०धजासहत अष्टद्रव्य चढावे ।।(पीठे)६४ इंद्रपूजा६४ अखरोट चढावै॥ ॐ सौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानेंद्रायनमः २ ॥ ॐ सनत् कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐ माहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐ ब्रह्मेंद्रायनमः ५ ॥ ॐ लांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐ शुक्रेंद्रायनमः ७ ॥ ॐ सहस्रारेंद्रायनमः ८ ॥ ॐ प्राणतेंद्रायनमः ९ ॥ ॐ अच्युतेंद्रायनमः १० ॥ ॐ चंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐ सुर्येंद्रायनमः १२ ॥ ॐ चमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐ बलींद्रायनमः १४ ॥ ॐ धरणेंद्रायनमः १५ ॥ ॐ नुतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐ वेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥ ॐ वेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐ हरिकांतेंद्रायनमः १९ ॥ ॐ हरिस्सहेंद्रायनमः २० ॥ ॐ अग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐ अग्निमाणवेंद्रायनमः २२ ॥ ॐ पूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐ विसिष्टेंद्रायनमः २४ ॥ ॐ जलकांतेंद्रायनमः २५ ॥ ॐ जलप्रनेंद्रायनमः २६ ॥ ॐ अमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐ मितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥ ॐ वेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐ प्रन्नंजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐ घोषेंद्रायनमः ३१ ॥ ॐ महाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐ कालेंद्रायनमः ३३ ॥ ॐ महाकालेंद्रायनमः ३४ ॥ ॐ सरूपेंद्रायनमः ३५ ॥ ॐ प्रतिरूपेंद्रायनमः ३६ ॥ ॐ पूर्णन्नद्रेंद्रायनमः ३७ ॥ ॐ माणन्नद्रेंद्रायनमः ३८ ॥ ॐ न्नीमेंद्रायनमः ३९ ॥ ॐ महान्नीमेंद्रायनमः ४० ॥ ॐ किन्नरेंद्रायनमः ४१ ॥ ॐ किंपुरु

षेंद्रायनमः ४२ ॥ ॐ सत्पुरुषेंद्रायनमः ४३ ॥ ॐ महापुरुषेंद्रायनमः ४४ ॥ ॐ अमितकायेंद्रायनमः ४५ ॥ॐ महाकायेंद्रायनमः ४६ ॥ ॐ गीतरतींद्रायनमः ४७ ॥ ॐ गीतयशेंद्रायनमः ४८ ॥ ॐ सन्निहितेंद्रायनमः ४९ ॥ ॐ सामानिकेंद्रायनमः ५० ॥ ॐ धात्रेंद्रायनमः ५१ ॥ ॐ विधात्रेंद्रायनमः ५२ ॥ ॐ ऋषिंद्रायनमः ५३ ॥ ॐ ऋषिपालतेंद्रायनमः ५४ ॥ ॐ ईश्वरेंद्रायनमः ५५॥ ॐ महेश्वरेंद्रायनमः ५६ ॥ ॐ वत्सेंद्रायनमः ५७ ॥ ॐ त्रिसालेंद्रायनमः ५८ ॥ ॐ हास्येंद्रायनमः ५९ ॥ ॐ श्रेयइंद्रायनमः ६० ॥ ॐ हास्यरतेंद्रायनमः ६१ ॥ ॐ पदगेंद्रायनमः ६२ ॥ ॐ पदगपतेंद्रायनमः ६३ ॥ ॐ महाश्रेयेंद्रायनमः ६४ ॥ इति चोसठ इंद्रनामः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ १६ विद्यादेवी पदे १६ सुपारी चढावे ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ रोहिण्यैनमः १ ॥ ॐ प्रज्ञप्तैनमः २ ॥ ॐ वज्रशृंखलायैनमः ३ ॥ ॐ वज्रांकुशायैनमः ४ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ५ ॐ पुरषदत्तायैनमः ६ ॥ ॐ काल्पैनमः ७ ॥ ॐ महाकाल्पैनमः ८ ॥ ॐ गोर्य्यैनमः ९ ॥ ॐ गंधार्य्यैनमः १० ॥ ॐ महाज्वालायैनमः ११ ॥ ॐ मानव्यैनमः १२॥ ॐ वैरोट्यायैनमः १३ ॥ ॐ अछुप्तायैनमः १४ ॥ ॐ मानस्यैनमः १५ ॥ ॐ महामानस्यैनमः १६ इति षोडश विद्या देवी नामः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावे ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ब्रह्मशांतियेनमः२४॥ ॐ पार्श्वयक्षायनमः२३॥ ॐ गोमेधायनमः २२॥ ॐ भृकुटयैनमः२१॥ ॐ वरुणायनमः२०॥ॐ कुवेरायनमः १९॥ ॐ यक्षेंद्रायनमः १८॥ ॐ गंधर्वायनमः १७॥ ॐ गरुडायनमः १६॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ पातालायनमः १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः १३ ॥ ॐ कुमारायनमः १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ११ ॥ ॐ ब्रह्मण्येनमः १० ॥ ॐ अजितायनमः ९ ॥ ॐ विजयायनमः ८ ॥ ॐ मातंगायनमः ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ६ ॥ ॐ तुंबुरवैनमः ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः २ ॥ ॐ गोमुखायनमः १ ॥ इति २४ यक्षनामः ॥ सोपारी चढावे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ चक्रेश्वर्येनमः १॥ ॐ अजितवलायैनमः २॥ ॐ डुरितार्य्येनमः ३ ॥ ॐ कालिकायैनमः ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ७ ॥ ॐ भृकुटयैनमः ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ए ॥ ॐ अशोकायैनमः १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ११ ॥ ॐ चंमायैनमः १२ ॥ ॐ विदितायैनमः १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः १४ ॥ ॐ कंदर्प्पायैनमः १५ ॥ ॐ निर्वाणयैनमः १६ ॥ ॐ वलायैनमः १७ ॥ ॐ धारिएयेनमः १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः १ए ॥ ॐ नरदत्तायैनमः २० ॥ ॐ गांधार्य्येनमः २१ ॥ ॐ अंविकायैनमः २२ ॥ ॐ पदमावत्येनमः २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः २४॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ नवनिधाननामः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नैसर्प्पकायनमः १ ॥ ॐ पांडुकायनमः २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ५ ॥ ॐ कालायनमः ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ७ ॥ ॐ माणवायनमः ८ ॥ ॐ शंखायनमः ए ॥ इति नवनिधान पदे ए कलश चढावे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १० दिग्पालादि नामः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ विजयस्वामिनेनमः ॐ क्षेत्रपालायनमः १॥ ॐ चक्रेश्वर्य्येनमः१॥ ॐ धरणेंद्रायनमः १॥ ॐ पद्मावत्येनमः १॥ ॐ इंद्रायनमः१॥ ॐ अग्नयेनमः२॥ ॐ यमायनमः ३॥ ॐ नैक्रतायनमः ४॥ ॐ वरुणायनमः ५॥ ॐ वायवेनमः ६॥ ॐ कुवेरायनमः ७ ॥ ॐ ईशानायनमः ८ ॥ ॐ नागायनमः ए ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः १० ॥ इति दशदिग्पाल ॥ ॐ सूर्यायनमः १ ॥ ॐ चंद्रायनमः २ ॥ ॐ भोमायनमः ३॥ ॐ वुधायनमः ४॥ ॐ वृहस्पतयेनमः ५॥ ॐ शुक्रायनमः६॥ ॐ शनैश्चरायनमः ७॥ ॐ राहवेनमः८॥ ॐ केतवेनमः ए॥ इति नवग्रहनाम॥ ॥※॥ इहां ऋषमंमल पूजनकी (तथा) वीशस्थानक मंमल पूजनकी विशेष विधि; नाममात्र स्थापन पूजन करनेकी लिखी हे । (इस उपरांत) मंमल प्रतिष्ठा वलवाकुलादिककी संपूर्ण विधि पूर्व नवपद मंमल पूजामें लिखाए हें । उसीमुजव करनी (इससें) विशेषविधि करानी होय तो विद्वान गुरूको पूछके करानी ॥ इति वीशस्थानक मंमल पूजाविधि संपूर्ण ॥ ※ ॥

॥※॥ अष्टापद गिरिस्थापन पूजन विधि ॥※॥

पूर्व

॥६।१

१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।

२२।२३।२४। उत्तर ॥

त्रिवेदिकमध्य

अशोकवृक्ष

उर्द्ध: ॥

दक्षिण

॥२।३।४।५

७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।

पश्चिम

॥※॥ चत्तारिदक्षिणाए । पश्चिम उ अठ उत्तराइ । दस पुव्वा ए दो अग्ग । वयंमि वंदे चउव्वीसं १ ॥ पुव्वाइं उसन्नमजियं । दक्षिण उ संन्नवाइचत्तारी । पश्चिम सुपासमाइ । धम्माइ दसउ उत्तरउ २ ॥ इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम चोवीस प्रभुकी थापना करणी । तिसकी विधि लिखे हे (इहां)मेंढल, मुरडा फली, मोली, आत्मरक्षा पूर्वक सर्व नवपदजीके मंडलवत् जाणणा । नवग्रह, दसदिगपाल, थापना सहित (पछे) २४ जिनकी थापना करै॥ ए श्लोक पढके॥ श्री नाभेय जिनेशत्वं। नंद्यायत सितांशुक:। यथा कुमुदतीनेता । नंद्यायतसितांशुक: ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री ऋषभदेव स्वामी वेदिका पीठेतिष्ट २ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्व मजितंभक्त्या । कंदधाना मनेकपं । प्रणतो बोधितं ज्ञान । कंदधाना मनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अजितस्वामी० २ ॥ श्री संभव प्रपन्नाये । समयंते सदादरात् । ते संसार वनान्मुक्ति । समयंते सदा दरात् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री संभवस्वामी० ३ ॥ येभि नंदन ते तीर्थं । राजपाद सभाजना: । विलसंति चिरंतेत्र । राजपाद सभाजना: ॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अभि० ४ ॥ पूजितां क्रियमी मुक्त्ये । कांता राजीव मालया । सुमते तव लीनाह: । कांता राजीव मालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्री सुमति० ५॥ पद्मप्रभ: सुदृष्टीनां । भूरिशोभा तपोदया: । हन्यात्तमांसि पूर्षेव । भूरिशोभा तपोदय:॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री पद्मप्रभ० ६ ॥ सुपार्श्वतत् श्रुतंश्रुत्वा । दर्प्पकोप क्रमानलं । मुंचंति जंतव:शांता । दर्प्पकोपक्रमानलं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

सुपार्श्व० ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेंद्रेण । यैरन्नाजिसमुन्नतः ८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री चंद्र० ८ ॥ सुविधेत्व विधिंप्राप्य । प्रमाद्यंत्य समाहितः । येतेश्रेयः श्रियं श्रस्त । प्रमार्यंत्य समाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं ऐं श्री सुविधि० ९ ॥ सेवते शीतलत्वांये । देवसंपन्नकेवलं । अपि मुक्तिर्भवेत्तेषां । देव संपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं ऐं श्री शी० १० ॥ श्रीश्रेयांस तनूजाजां । परमोक्ष गतिर्भवान् । अनंतानूसत्व विश्रांतं । परमोक्ष गतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीं श्रेयांस० ११ ॥ वासुपुज्य नवस्वर्ण । नीरजा रूढ सक्रमः । हरत्वं विरहंमोहं । नीरजा रूढ सक्रमः ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं ऐं श्री वासुपुज्य० १२ ॥ विमलत्वां प्रतिस्वंये । रंजयंति मनोभवं । अपि दुर्जयं मुच्चैस्ते । रंजयंति मनोभवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं ऐं श्री विमल० १३ ॥ जग्मिवां समनंतत्वां । नमस्यंति महापदं । येते विश्व त्रयी लक्ष्मी । नमस्यंति महापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अनंत० १४ ॥ नाशुन स्तवसिद्धांतो । येनावीत नयस्ततः । वरंधर्म जिनद्धर्मा । येनावीत नयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं धर्म० १५ ॥ श्रीशांते देहिनांदेहि । सारंग विदधेधृतिं । शर्मकर्म ततेरंक । सारंग विदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री शांति० १६ ॥ कुंथनाथस्तु पंथानं विधुतारो वृषादतः । पुंसां तन्यात्पिनाकीच । विधुतारो वृषादतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री कुंथु० १७ ॥ येनत्वं नाचितःकर्म । वनवैश्वानरोपमः । सो अरनाथ कुर्धीर्भव्या । वनवैश्वानरोपमः ॥१८॥ नांह्निपद्म सुतः सिद्धि । प्रतिपन्न सदारुणः । येनतेभिद्यतेमल्ले । प्रतिपन्न सदारुणः ॥१९॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री मल्लिस्वामी० १९ ॥ श्री सुव्रत जिनाधीश । मक्षमालोप लक्षितं । विरंचि मिव सेवन्द । मक्षमालोप लक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री मुनि: २० ॥ देव्योपि लक्षणोज्ञाना । सदा मंदर सानुगाः । गायंतित्वां नमेभक्त्या । सदा मंदर सानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री नमि० २१ ॥ तृष्णातापात्वया वर्ष । शमिता दान वारणा । श्री नेमे जनतांराध्य । शमिता दानवारिणा २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री नेम० २२ ॥ पार्श्वदेवः सदा कुत । महाहारतरंगिताः । नाटयंति चरित्रंते महाहारतरंगिताः ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं ऐं श्री पार्श्व० २३ ॥ वीरो

जिन पतिः पातुः । तत्वानः कांचनश्रियं । विघ्नव्रमेषु निस्सीमां । तत्वानः कांचनश्रियं २४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ ऐं श्री वीरस्वामी अत्र वेदिका पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहाः २४॥ (पीछे) चोवीसप्रकारी पूजा करावै॥ पूजा भएया पीछे, बलबाकुलासें दिग्पालादिकको विसर्जन करे ॥ इति अष्टापद पूजा०॥

॥ ※ ॥ अथ नींवमे पाया भरणेकी विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथमसें नींवषोदी गई हे, जिसके भीतर, वायव्य कोणमें लोटो १ नालेर १ मावे, ऐसो गम्भो खोदके, उस गढेके भीतर पृथ्वी का पूजन करणा ॥ ॐ पृथिवीनमः ॥ जलं समर्पयामि । ऐसा कहिके जलधारा देवे । पीछे रोलीको छींटो देवे । मुंग, अक्षत, पुष्फ, दोब, धूप, दीप, गुम्र, पतासा, चढायके फेर जलधारा देवे । पान सोपारी चढावै । सब चीजां मंत्र पूर्वक चढावे । चोखूणो रुपीयो, उसी गढेके बीचाबीचमें धरणो । तीसपर लोटो धरणो । लोटेके भीतर रूपो, सोनो, मोती, मुंगा, माणक, ऐपांचे रत्न रखणा (पीछे) लोटो घीसें भरणो । उस लोटेमांहि सोनेको नाग, चिमठी (तथा) चुंथीसें धरके, नेक्रत कुण मुखकीयां वेठावणों । सुंवो रहे । भिगे नही, ऐसें वेठावणो । नागके वांइ तरफ, रूपेकी नागिणी, नेक्रत कूणकी तरफ मुखकीयां वेठावणी (पीछे) नाग नागणीकी पूजा ऐसें कराणी । ॐ अनंतायनमः॥ जलं समर्पयामी । ऐसा कहिके, थोम्भो सो जल, लोटेमांहि चढावणो । रोली समर्पयामि । (ऐसो कहिकर) रोली रो छंटो लोटेमांहि देणो । अक्षत, पुष्फ, दूर्वादि, धूप, दीप, नैवेद्य समर्पयामि ॥ ऐसा कहिके, गुम्र, पतासा, चढावणा । जलं समर्पयामि । ऐसा कहिकर, जलधारा देणी । तांबूल, पुगीफल, समर्पयामि । ऐसा कहिकर, पान सुपारी चढावणा । श्रीफल समर्पयामि । ऐसा कहिकर, श्रीफल चढावणा । लोटेके ऊपर रकेबीसें ढांक देणा । रकेबीके ऊपर नालेर रखणा । सर्व द्रव्य चढावणा (सो) मंत्र पूर्वक चढावणा (पीछे) इंटा ५ जलसें पखालके, रोलीसें छींटा देणा । अक्षत फूल प्रमुख चढाय देणा । मालकके हाथके मोतीकी राखमी बांधणी । तिलक करणो । रोलीका छींटा देणा (पीछे) पांच इंटा कारीगरके हाथसे, लोटेके ऊपर रकेबी हे, रकेबीके ऊपर श्रीफल हे, तिसपर वेठाय देणी । उसी वखत चोफेर सवा गज

प्रमाणे नीवजरूर ञरणी (पीछे) सव दिन काम चलू रखणा ॥ इति पाया ञरण विधिः ॥ न्नद्रं कुरुष्व परिपालय सर्ववंशं ॥ विघ्नं हरश्व विपुलां कमलां प्रयश्च । जेवातृ कार्क सुर सिद्ध जलानि यावत् । स्थैर्यं ञजश्व वित नुष्व समीहितानि ॥ १ ॥ अनेन वृत्तेन सर्व देव देवी कलश ध्वजादि स्थापनं विधेयं ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पद्मावती विधान मारञ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अस्य श्रीपद्मावतीस्तोत्रमंत्रस्य ॥ श्री पार्श्वजिनेंद्रऋषिः ॥ श्री पद्मावतीदेवता वृहतीछंदः ॥ आंबीजं ॥ ह्रीं शक्तिः ॥ क्रोंकीलकं ॥ श्री पद्मावतीप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ॥ ॐ पार्श्वजिनेंद्र ऋषियेनमः ॥ शिरसि ॥ ॐ पद्मावती देवतायैनमः ॥ मुखे ॥ बृहतीछंदसेनमः ॥ हृदये ॥ आंबीजायनमः ॥ नाञौ ॥ ह्रीं शक्तयेनमः ॥ पादयो ॥ क्रोंकीलकायनमः॥ सर्वांगे ॥ (अय न्यासः) ॥ ॐ आं अंगुष्ठाञ्यांनमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीञ्यां नमः ॥ ॐ क्रों मध्यमाञ्यांनमः ॥ ॐ क्लां अनामिकाञ्यांनमः ॥ ॐ भ्रूं क निष्टिकाञ्यांनमः ॥ ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाञ्यांनमः ॥ ॐ ह्रीं आं हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं शिरसेस्वाहा ॥ ॐ क्रों शिखायै वखट् ॥ ॐ क्लां कवचायहुं ॥ ॐ भ्रूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ज्रीं अस्त्रायफट् ॥ एवं न्यासं निधाय ॥ ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्रेण प्राणायामं ॥ पूर्वंवामपुटेनपूरकं कुंञकं ॥ पुनः दक्षिणपुटे नरेचकं ॥ पुनः दक्षिणेनपूरकं कुंञकं ॥ वामेनरेचकं ॥ पुनवामेन कुंञकं पूर कं ॥ दक्षिणेरेचकं ॥ एवं प्राणायाम ॥ पश्चात् योनिमुद्रांकुर्यात् ॥ (अथ ध्यानं)॥ पद्मासना पद्मदलायताक्षी॥ पद्मानना पद्मकरांघ्रिपद्मा ॥ पद्मप्रञा पार्श्वजिनेंद्रयक्षाः ॥ पद्मावती पातुफणिंद्रदेवी ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसो पचारैः संपूज्य ॥ पुनः ॥ ॐ आं क्रों ह्रीं क्लां भ्रूं ह्रीं पद्मावतीवरप्रदः २ सर्वजनमेव समानयसमानयस्वाहा ॥ एवं अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ पश्चात्स्तोत्र पठ्यते ॥ अथ स्तोत्रं ॥ श्री मह्रीवाण० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पद्मावती पूजा स्तोत्र लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री पार्श्वनाथजिननायक रत्नचूम । पाशांकुशोर्न्नयफलांकित दो चतुष्कं॥ पद्मावती त्रिनयने त्रिफणावतांसा । पद्मावती जयतिशासन पूर्णमूर्त्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं क्रों अरुणवर्णा सर्वलक्षण संपूर्ण सायुधसवाहनं वधूचिन्ह परि

वारसहितं पद्मावतीदेवी अत्रावतर २ तिष्ट २ ठः ठः ठः संनिहितो वौषट् स्वाहा ॥ त्रिवारेण आव्हानं ॥ अथ पूजा ॥ सर्वलोकजन तापहारणी ॥ वारणीसुरभिगंधशालनी ॥ अर्चयामि जिनशाशनदेवी ॥ पद्मिनीकुमुदनेत्रसालनी ॥१॥ जलंग्रहाण २ स्वाहा ॥ भृशंविरोचिर्विमलैश्च लक्ष्मै । विरक्त शालपक्रतसंचयैश्च ॥ पद्मावती पद्मदलायताक्षी ॥ यजाम्यहं सर्वगुणैर्युतांच्च ॥ ३ ॥(अक्षतं)॥ कर्पूरकृष्णागुरु कुंकुमाद्यै ॥ गंधैर्महामोद मनोहरैश्च ॥ पद्मावती कोकनदीप्रभांगी ॥ यजाम्यहं कामसुखायहेतुं ॥४॥ (चंदनं)॥ जाती केतकी पारजात कुसुमे कुंदै जपा पाटलैः ॥ संध्याराग सुदेहकांति सुभगा सारस्वती सर्वदा ॥ पुष्पैर्वास कदंब कासित लसत्पद्माविनां देवता ॥ भव्यर्च्येषु गुणार्णवां भगवती पुष्पैस्सदा प्रार्चयेत् ॥ ५ ॥(पुष्पं) ॥ सुगंध सुस्वाद सुभक्तिपूपैः ॥ पीयूष पिंडोपमशालिदुग्धैः ॥ कल्याण निर्वृत्ति शुभाजनस्थै संपूजये देविसुभासुरांगी ॥ ६ ॥ (नैवद्यं) ॥ सर्प्पंब्रुभ्रांशुसाराप्लुतविशदसदासंगि संप्राप्त दीपै ॥ ध्वंस्तध्वांतैः सुसांद्रैः सकल जन मनोहारिभिर्दीपव्रातैः ॥ चंचच्चंद्रांशुजालै रिव कठिन कुचद्वंद्वमध्ये लुठद्भि ॥ हारैर्विभ्राजितांगी जन सरणसरो जात भृंगी यजामि ॥ ७ ॥ (दीपं)॥ चंचद्गुग्गल शीतदीप्ति विमल श्रीखंडसन्मिश्रितैः ॥ काश्मीरा गुरुधूपतांगघटनैर्धूमैत्करैः कामदैः ॥ देवी रक्तसरोज कांति विमला देहप्रभाभासुरा ॥ राजीवांजन शालिनी शुभगतिंपद्मावती चर्चयेत् ॥८॥ (धूपं) ॥ फुल्लद्रंभाघटोघैः फनसफलशतैर्मातुलैर्मातुलिंगैः ॥ जंभीरैः शश्वदंभोफलधरणिवहैः कोमलै कामदुग्भिः॥ चंचद्राक्षाकपित्थैः क्रमुकफलशतैर्दाडिमीवप्रचक्रैः ॥ कल्याणांगीयतेहं जिनचरण सरोजात भृंगीफलाय ८॥ (फलं)॥ श्रीमन्महाचीन दुकूलनेत्री ॥ सत्क्षौमकौशेयकचीनवस्त्रैः ॥ शुभ्रांशुकैः शोणिमणि प्रभांगी ॥ यजाम्यहं पन्नग राज देवी ॥ ए ॥ वस्त्रं ॥ कांचीसुत्र किमुत्र रत्न रचितैः केयूरसत्कुंडलैः ॥ मंजीरां गददूर्मिकादि मुकुटैः प्रालेयका वासकैः ॥ चंचद्धाटक पट्टकूल विलसद्ग्रैवेयकैः भूषणैः ॥ सिंदूरांगद भूषणै स्तुशुभगैः संपूजयामोवयं ॥ १० ॥ (आभरणं)॥ इति पद्मावती पूजा समाप्ता ॥ ❊ ॥ ॥ ❊ ॥

॥ ❊ ॥ अथ अष्टभय निवारण छंद ॥ ❊ ॥

॥ ❊ ॥ दूहा ॥ सरस वचन दे सरसती ॥ एह अरज अवधार ॥ प्रार

थिया पद्मनंदी ॥ उत्तम ए आचार ॥ १ ॥ हित करजे मोसुंहिवे ॥ दीजे वयण उरस्स ॥ कवियणपिण गुणनैंकहै ॥ सखरोघणुं सरस्स ॥ २ ॥ गुण गिरुउगौमीधणी ॥ पारसनाथ प्रगट्ट ॥ मनसुद्धे मोटांतणां ॥ गुणगातां गह गट्ट ॥ ३ ॥ छंदनाराच ॥ प्रसिद्धि वुद्धि सिद्धि निद्धि रिद्धि वृद्धि पूरए ॥ कलत्त पुत्त कित्त वित्ति वद्धते सनूरये ॥ वियोगं सोग रोग विग्घ सिग्घ घायकं॥ प्रगट्ट देव नित्तमेव सेवो पासनायकं ॥ ४ ॥ गुमांन मोम हत्थजोम देवको मि वग्गये ॥ अनूप भूप चूंपधारि आइपाय लग्गये ॥ पङ्ग वङ्ग सुकित्त नित्त सब्व सौंजलायकं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ कुवोह लोह द्रोह कोह मोह माण वज्जियं ॥ अनंत कांत शांत दांत रूपमैण लज्जियं॥ अशेष शुद्ध तत्त जुत्त सो भये अमायकं ॥ ६ ॥ प्र० ॥ विसाल भाल सुविसाल अद्धचंद गज्जियं । रत्तद्दथी रिसाइजाण एथ आय रज्जियं । सुनैणकंद गंधकांत कार्जभोरारा यकं ॥ ७ ॥ प्र० ॥ कपूरपूर कस्सतूर कुंकुमा तुरंगए । अरग्गजा अथग्ग में रहै गरकअंगए । अछेहगेह उत्तिदेह सव्वही सुहायकं ॥ ८ ॥ प्र० ॥ मृदंग दोंदोंदों दप्प मप्प वज्जये । न फेर भेर झल्लरी नीसाण मेघगज्जए । तटक्कतान थेई २ लक्ख सुक्खदायकं ॥ ९ ॥ प्र० ॥ (दुहा) करि १ केहरि २ दव ३ कुद्धवहि ४। रामि ५ समुद्दह ६ रोग ७ । अतिवंधण८ भय अञ्टले । सांमनांम संयोग ॥१०॥(छंद भुजंगी) झुंररित्त गको फुकंतो फुकोला । लपक्कै विलग्गीपली माललोला । वले टेवला कावली सुंम दोला झरैनिझरां जेममद्देकपोला॥११॥पङ्ग चालतो जाण पाहामतोला।झलक्के ल लकावतोलाल मोला । इसौ दुठपूठै पमंता अकोला । जपंतां करै नांचिनी मात चौला ॥१२॥ (इति हस्तिभय निवारणं) महासद्दसीहं अवीहं अदंमं भरै फाल आफालतो पुच्छ कुंमं । भिगैफाम भाचौ वकं वङ्कसुंमं। महातिरक नक्खं रखे रोषछंमं ॥१३॥ फुरकावतो मुंछ फामंततुंमं । ललकंत लोला विकटं विदंमं । धणीपास चौनाम ध्यानं धरंमं । टलै श्यालज्युं सीहहोए अदंमं॥ ॥ १४ ॥ (इति सिंघभय निवारणं) ॥ जलां जंगलांमै जटाजूट जाला । घणां झाम झझामभै अग्गझाला । वङ्क मृग्गवग्गं पशुं पंखिवाला । धखंता कमेमा चिमा जंतिजाला ॥ १५ ॥ धुधैधूम लग्गोकीया नग्गकाला । झलोझाल रूंखै टल्या नांहिटाला । वमे संकटे एण आयां त्रिचाला । प्रभू

नामनीरै वुझै तत्तकाला ॥ १६॥ (इति अग्निभय निवारणं) कलू कालरूपि महा विक्करालं। फणा टोप रोपै महा कोपजालं। वलक्कै वलंतो चलंतो करालं। जिणैं फूंकसूकै तरुम्मालडालं। हलाहाल संलोलियं विक्खलालं। रहै लाल लोचन्न दोजी हवालं। धरंता प्रभू नाम रिदे विचालं। सही साप होवै जिसी फुल्ल मालं॥ १७॥ (इति सर्पभय निवारणं) भिडै भूपभूपे अधिक्के अटके। खलां हाड तूटै खडग्गांपटक्के। परां हैवरां पाडनांखै पटक्कै। धुरां सिंधुरां कंधरा भूधटक्के॥१९॥पडै प्राण संधाण वांणे वटक्कै। झुकै केइ हाथाल रोसे हटक्कै। झला झाल गोले झनाले भटक्कै। तुटै तुंड मुंडा प्रचंडा तटक्कै॥२०॥छछोहा सलोहा पडंता छिटक्कै। कुकै सूर झंझेड नांखैझटक्कै। प्रभु नाम लेतां इसेही अटक्कै। कदे बालवांको न होवै कटक्कै।२१।(इति युद्धभय निवारणं) जतन्नेघणें कोई वैसे जिहाजै। अथग्गे जले आइकुवाय वाजै। घटाटोप मेघा घडडंति गाजै। झवक्कै तरंगा विरंगाझ वाजै ॥२२॥ लिचापिच्चलागी घडीताल भाजै। अहो कोइ राखै अठै अम्मकाजै। इसे संकटे जेजपे जैनराजे। सही पारपामें तिके सुरक साजै॥ २३॥ (इति जलभय निवारणं) गडं गुंबडंगोलकं हीय होडी। हरस्सं खसं भग्रसं गांठ फोडी। टलै गोडथी कोढ अढार रोडी। महा ताप संताप आतंक कोडी ॥ २४॥ न होवै कदे काय में काव्य खोडी। सझ आधिव्याधं सही जाइ छोडी। जिनंदं नमैं मन्नमैं मान मोडी। लहै सो सदा सुरक संपत्ति जोडी ॥ २५॥ (इति रोगभय निवारणं) अमुंछ बलेछ वले मन्न खोटा। जियां चक्खुचुंची लुह्यागाल गोटा। वलेपाघवांकी लपेटा लंगोटा। सहेठ्यास ह्या सबला हाथ सोटा ॥ २६॥ दीयै कोरडा देह दोलाद वोटा। वदै वोलवांका झझेडंत जोटा। पड्या बंदिषानैं महादुःख मोटा। प्रभु नामथी वेग थायै विछूटा ॥ २७॥ (इति बंदिभय निवारणं) नमंता जिणेसं सदा मन्न रागै। सहीये महा दुब्भय अठ्भागै। रली लोक लरकं लुली पाय लागै। दिसो दिस्स मांहे जसो जस्स जागै॥२८॥(कलश)परतिख जिनवर पास। आस उल्लासह अप्पण। विविधजासगुण वादास चादालदक्क प्पण। चैण दैण जसुचरण, इंति अति भीत निवारण। लीललाछ लषगांन विमल कीरत्तिवधारण। दिणयंति जेमदीपंति दुति। विमलचंदमुख छविकरण

दौलत्ति विजय हरखांदीयण । धरमसीह ध्यानह धरण ॥ २९ ॥ इत्यष्टभय निवारण गौडी पार्श्वनाथजीको छंद सं० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थंभणापार्श्वनाथजीरो स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभुप्रणमुंरे पास जिणेसरथंभणो । गुणगाइवारे मुझमन ऊलट अतिघणो । ग्यांनीविणरे एहनी आदिनकोलहे । तोहीपिणरे गीतारथगुरु इम कहे ॥ इमकहै सास्त्रतणे प्रमाणे राम दसरथनंदनें । वांधवापाजे शीतकाजै समुद्रतट एकणवनें । तिहांरह्या वांधव रांम लछमण साथि सेन्या अतिघणी । प्रासाद एक उतंगतोरण थापना जिनवतरणी ॥ १ ॥ तिहां मूरतिरे मूलगुंभारै पासनी । मनवंछितरे आसापूरै आसनी । तेराजारे दिन प्रति पूजासाचवै । करजोडीरे वेवांधव इमवीनवै॥ वीनवैस्वामी तुह्मप्रसादै ज लधिजलथंभे किमै । तोपाजवांधुं लंकसाधुं इमकही प्रभुपायनमै । वडपूज करतां ध्यानधरतां सातमास गया जिसै । नवदिवस अधिकाथया ऊपरि । जलधिजलथंभ्यो तिसै ॥ २ ॥ एअतिसयरे अचरिजपेख्यो प्रभुतणो । तिण कारणरे नामदीयो तसुथंभणो । जलऊपरिरे पाजकरी पाथरतणी । गढलं कारे साधेवा सीताभणी ॥ गढलंकसाधी सीतआणी तेणवन आव्यावली । दिन आठ अठाइमहोछव कीया मनपूगीरली । श्रीरामराजा शुद्धश्रावक विनी तानगरीवसै । वीशमाजिनवरतणेवारे इम थया गुरुउपदिसै ॥ ३ ॥ इण अनुक्रमरे केतलोकाल गयो वही । ते प्रतिमारे तिणवनमे निश्चल रही । इण अवसररे इंद्रतणे आएसकरी । सायरतटरे सोवनमै द्वारापुरी । द्वारिका नगरी कृष्णराजा अर्द्धभरत तणोधणी । तिहां वसै यादवकोडि छप्पन वहै आग्या जिनतणी । तिण काल तिणवन तेह तीरथ तेहनी महिमा सुणी । सारंगप्राणी भावआणी आव्या तिहां यात्राभणी॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ आव्यो तिहां नरहर जिणहर मनउल्लास । मनमेंआणंदै वंदै थंभणपास । पेखेअ तिनवली पूजा प्रभुजीनें देह । एकेणें कीधी इममनथयो संदेह । संदेहथयो अटवी चिहुंपासै नहीमानवसंचार । केणकरी विद्याधर सुरवर पूजा सतरप्र कार । इसो विमासी मंडप अंतर रह्याजु गुपतैगाम । मध्यरातपाताले आवी । वासग विसहरसाम ॥ ५ ॥ तिहां आवी प्रणमें दै नाटिकआदेस । मिलि नागकुमारी विरचे अदभुतवेस । शकस्तव पभणें जाणयौ श्रावक एह ।

हरिप्रगटयौ ततखिण साहमी तणइ ससनेह।।ससनेह वासग किण्णनरेसरबैठा विंववषांणै । ए श्री जिणवर पास जिणेसर आदिनकोई जाणै । असी सह सवरसांमै पूज्या जेऊंतापायालै । वरण एकप्रसाद कराव्यौ थाप्या एह जिनालै ॥ ६ ॥ सऊबात कहीनें वासग गयो पायालै ॥ श्री कृण्णनरेसर मनचिंतइ ततकालै । जो एहवो तीरथ ऊवै द्वारिकामऊार । तो जाणुं नर न्नव सफल थयौ अवतार । सफल जनम करिवानै काजै तेहविंव तिहां आणै । श्री द्वारिका हैममै जिणवर थाप्या प्रगट प्रमाणें । घणै काल पूजा तिहां पांमी करमनिकाचित जाणी । श्रावकनेंसुपनांतर आवी देववदे इमवाणी ॥ ७ ॥ प्रन्नुप्रतिमा वाहण लेई समुद्रमऊारि । मुंकेज्यो नगरी थास्यै अवरप्रकार । तिणसागर अंतर कालगयो वऊजाम। दक्खिणदिसि उत्त म कुंतीनगरी ठांम । कुंतीनगरी जैनवसै जिहां श्रावक सागरदत्त । वाहण सातवहै व्यापारै पोतै परघलवित्त । अन्य दिवस सायरविचवहतां जिहांछै थंन्नणपाश । ऊपरि आव्या थंन्या वाहण ते सविथया उदास ॥८॥ढाल॥ माशदिवस वाणी थई अंवरसुरराय । प्रतिमा थंन्नण पाशनी सायरजल मांहि । सुरप्रगटयो जिणसासणें ॥ सुरकहै वांणी एह प्रतिमा न्नावसुं प्रगटी करो । जइजैन कुंतीनगर जिणहर मूलनायक एधरो । ते विंव कुंतीमांहि थाप्यो कहै वऊ श्रावक तिहां । ए सकल तीरथ नाथ समरथ पुन्यजोग मिल्यो इहां ॥ ए ॥ इणि अवसर दसउरपुरइ पालत्तइसूर । विद्यावल अंवरन्नमें अतिसय न्नरपूर । तीरथजाय जिणहरनमें । तेनमैंसेत्रुंज प्रमुख गिरिवर सदापाखी पारणें । पालीयतांणेंरह्या थाणें नागारजुन जोगीपणें । ते धातु सोवनकाज धमतां माश ठै रसकरै । करिकोपन्नैरव वीरनाखै रूप पंखीनोधरै ॥१ ॥ तिणपालत्तै सूरिनें जाणयौ एहमहंत । पूछै को सुरदाखवो अतिसय गुणवंत । कृपाकरी मुजन्नाषवो । गुरु तेह न्नाखै जेहथंन्नै उपद्रव सुरनरतणों । तिण कह्यौ कुंतीनेंप्रसादे पाशछै प्रन्नुथंन्नणो । कुण यक्ष वीर वेताल व्यंतर सहू तसुसेवा करै । तेहनी दृष्टइ साधि विद्या जेम तुमवंछित सरै ॥ ११ ॥ विद्यापिण आकर्षणी । ऊती जोगीनेंपास । ते प्रतिमा आणी तिहां । थापीनिज आवास । सोवनरस सीधो जिहां । रसतिहां सी धो सुजसलीधो । नदी सेढीनेंतटै । गुरुनें जणाव्यो तिण कहाव्यो विंवन्नें

मास्यो घटै । इण कालधरम सुथान थोमा ऊसी मलेछाइण इहां । खाख रातले सेढिकातीरै विंबनंमास्यो तिहां ॥ १२ ॥ ढाल ॥ मेघ आगमसही नदी कुलटिवही वेलुका विंबऊपर वलैए । तेणनुंइ धणचरै खीरसुरही ऊरै चीकणी नूमि खाखरतलैए । केतला दिनपछै सुगुरु खरतरगछे । श्री अ नयदेव सूरीसरूए । पटविगय परिहरी उग्रतप आदरी । रगतपित्ती थया मुनिवरूए ॥ ते रगतपित्ती गलतकाया चित्तमें चिंता करै । अधरात सासण-देवी आवी कोकमा नवकार धरै । ए सूत्र तूं सुलऊाइ सुपरें तामगुरु जंपेइसो । जो थायसी मुऊ नीरोगकाया तो सही ऊखेलसुं ॥१३ ॥ ताम देवी कहे नदीयसेढी वहे । तेण तटवृद्ध खाखरतलेए । तिहां तुह्मे जाइवो त वनकरिवो नवो प्रगट थासी प्रनु थंनणोए । तेहनें स्नात्र जल रोग सवि जाय टलै । इम कहीय गई सासण सुरीए । संघसगलोमिली तिहां जाइ मनरली । ताम धरणिंदध्यांनेंधरीए । तिहां करी जयतिऊअण बत्तीसी पाश प्रगट्याततपिणें । तसु सनात्रनीरै सुखसरीरै धन्य २ सऊकोनणें ॥ तिहां थांनथाप्यो सुजसव्याप्यो थयो परचो अतिघणो । तेहनें नामें तेणगामें गामवास्यो थंनणो ॥ १४ ॥ थईय महिमाघणी पाश थंनण तणी सुगुरु काया नवपल्लवीए । संघ आवै घणा करै वधावणा महयल कीरत विस्तरी ए । सुपन जे देवता कोकमा नवऊता सूत्रते सूत्र सिद्धांत नामें । वृत्ति नव अंगनी नेद नवनंगनी रची आचारज तेण गामे । ते तेण गामें सऊथ पांमें आसकर जो आवए । वऊ नाव नत्ते एकचित्तै सेवतां सुख पावए । एकदा गुरु धरणिंदध्यांनें प्रगट थई पदमावती । श्री अनयदेवसुरिंद आगलि । इम कहै सांनल यती ॥ १५ ॥ तवनजे तुह्म कस्यो मंत्र अतिशय नस्यो अंति तसुगाह जे वे कहीए । तेह गुणीयै जिहां इंद्र आवे तिहां कष्ट विणतेह गुणवी नहीए । तेह नंमारवी काज सं नारवी । अवरइण तवनमहिमाघणीए । समरतां संपदा रोगनावे कदा सदा आवश्यकधुरि नणीए । पमिक्कमणानितनणें धुरि एह विधि खरतर तणीए । इम कही सासणि देव सांमणि गई निजथांनिकनणीए । केतले दिवसे दे सगुऊर सयल मलेछायन थयो । नलगांमजाणी विंबआंणी । नयरश्रीथंना इति ठव्यौ ॥ १६॥ थंनणयर सिरि पास जिणे सरू । दिन २ दीपइ अती

अलवेसरू । जात्र करेवा मुझ ऊंतोरली । प्रज्जुमें ज्नेट्यो आस सहू फली । सुऊ आस सफली थईयसांमी जांमज्नेट्या जगपती । सोज्नाग सुंदर करो ऊन्नति करुं एती वीनती । अश्वसेन वामादेव अंगज ध्यान मनतोराधरुं । करि कृपा सांमी सीस नांमी सदा तुल सेवा करुं ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम स्तव्यो थंज्नण पास सांमी नगर श्री थंज्नाइतै । जिम सुगुरु श्री मुख सुणी वांणी सास्त्र आगम संमतै । ए आदि मूरति सकल सूरति सेवतां सुख संपए । मन ज्नाव आंणी लाज्न जांणी कुशल लाज्न पयंपए ॥ १८ ॥ इति श्री थंज्नणा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ऊपदेशमाला यंत्राम्नाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥ नमिऊण जिणवरिंदे । इंदनरिंदच्चिए तिलोय गुरु । ऊवएसमाल मणिवो । वुज्नामि गुरूवएसेणं ॥ १ ॥ जगचूडामणि ज्नूऊ । ऊसज्नो वीरो तिलोच सिरतिलऊ । एगो लोगाइच्चो । एगोचक्खू तिऊयणस्स ॥ २ ॥ इतिध्यात्वा वारत्रयं ॥ ॐ सच्चं ज्नासइ अरिहा । सच्चं ज्नासइ केवली । ज्नयवं एणं सच्चेणं । सच्चं सच्चेण मेज्नवऊ स्वाहा । इस मंत्रसें गाथा मंत्रके देखे । शनिवारे, संध्यासमये, श्री ऊपदेशमालाकी गाथाकं जितना अक्षर ऊवै । जिसको ३ ज्नाग दीजइ । अक्षर १ ऊवरै, तो दिन ५ कष्ट । दोय २ अक्षर ऊवरै, तो दिन १० कष्ट, पिण जीवै । सून्य आवै तो विमासण न करै । अणसण करावै । ऊत्कृष्टी गाथा दिन ५ कष्ट परंजीवै । मध्यमगाथाइं पंचरात्रि ढील कीजै । चऊकडीये कष्ट । शून्य आवे तो नजीवै । मींडा ऊपर नाणूं धरावे । ते गाथा विचारै । पहिलीमींडा ६ तेसईकडा ०००००० (पीछे) नीचै मींडा दस १०, ते दाहका ००००००० ००० (फेर) मींडा दस, ते गाथा ०००००००००० (पीछे) ऊदाहरणं । प्रथम मींडा ऊपरि धरावे । जितरमा मींडा ऊपर मेलै । तितर मोसईकडो । इस अनुक्रमें गिणीजै । पीछे १० मींडा ऊपर धरावे । ते दाहको जितरमो गिणीजे । पीछे नीचला १० मींमा ऊपरै धरावे । जिस मींमा ऊपर धरे । सो दाहकानी जितरमी गाथा जाणीजै । (इसीतरे ऊपदेशमाला गाथा यंत्र जोईजै) शनिवारे संध्या समये, अक्षित पूजादिसहित चतुर्थप्रहरे प्रथम सुज्नघटी पुनः पूजा करणीयाः। कुमारी करेण चित्रं करणीयं । युगंधरी

ढिगलीद् । पुनः ढिगली १०। (गाथा)नमिऊण जिणवरंदे । पठिखा वार ३ शतकः कथितः । पुनः दस १० ढिगली ऊपर धरावे । गाथा ज्ञेया । पश्चात् गाथा ३ अनुक्रमेण अवलोकी शुभाशुभं कथयति । राजार्थे,राजमार्गं, देश, पुर, ग्राम, रोगार्थ, जीवतव्यादि, विलोकनीया । उपदेशमाला गाथाया यावंतो वर्णास्युः । तेत्रिभिर्ह्रीयते । एकस्मिन् वर्णे उद्धरिते ५ पंच दिनानि कष्टं । द्वयोरुद्धरितयोः १० दश दिनानि जीवति । शून्ये सति विलंवो न विधेयः । अनशन मेव कारयितव्यं । इत्युपदेशमाला यंत्रकाम्नायः ॥

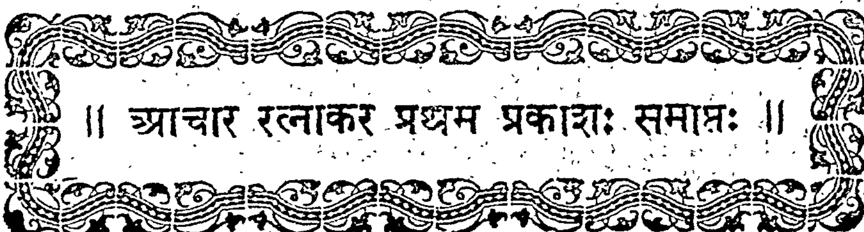
॥ ※ ॥ अथ मंत्र नाम माला लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ कारमनवद्यानां । विद्यानामादिमादरात् । स्तुमः प्रभाव संभार । विभावित जगत्रयं ॥ १ ॥ ॐकारः प्रणवोज्योतिः । परमेष्टि मयोध्रुवः । परम ब्रह्म विनय । प्रदीपो जातवेदसः ॥ २ ॥ परमः शक्तितत्वंच । श्री ज्ञानं श्री गृहंरमा । अर्हं मर्हं न्परब्रह्म । वाचकं परमेष्टिनं ॥ ३ ॥ सिद्धि चक्र परं बीजं । क्षिः पृथिव्युच्यते पुनः । पःपयः स्वाचसमेहो । हाव्योमां पाशएवच ॥ ४ ॥ प्रौं चतुष्कल माख्यातं । सोंजीवेऽक्षः सहस्ररुक् । क्लींकारः काम राजःस्या । द्वश्यं कामात्मकंस्मरः ॥ ५ ॥ ह्रींच माया महा माया । माया लता जगत्रयं । परमेष्ट्यात्मकं शक्ति । र्हःशून्यं गदितं बुधैः ॥ ६ ॥ ह्रूंविद्वे षो रोषणत्रि । तत्वं माया मयंमतं । ह्रौं ज्ञानं खं शिवः शास्त्रं । हंस आत्मा समीरणः ॥ ७ ॥ ऐंकारो भारती वाणी । मयंवाग्भवमेवच । शक्ति कुंमलिनी वीजं । त्रिपुरा परि कीर्त्तिता ॥ ८ ॥अकारो हर इं विष्णु । मांयावाङ्मयमुच्यते । ऐंज्वलनं क्रौंचांकुश । निरोधौखश्वखादनं ॥ ९ ॥ ग्लौंस्तंभनं प्रैं ग्रहणं । द्विषन्निरोध नामकं । जूंकारो द्वेषणं स्वांच । चाद्रं पीयूष नामकं ॥ १० ॥ ब्लूंकारो द्रावणं ब्लैंचा । कर्षणं यो विसर्जनं । उच्चाटनंच यं वायू । रसोलः स्वंभवासवौ ॥ ११ ॥ रः पावको ऊं क्रोधात्मा । विद्वेषो वाङ्मयं तथा । र्हौं प्रेतासनं शक्ति । निंनादः परिकीर्त्तितः ॥ १२ ॥ क्ष्रौंहंकारो महा शक्ति । फ्रौंचसोमं विपापदं । क्ष्मीं महाक्ष कूटंच । संवर्त्तकं निगद्यते ॥ १३ ॥ सकारश्चंद्रमाजीव । कुलं शक्ति फमस्त्रफुट् । विसर्जनं चालनं चो । ठाटः स्व धाच पौष्टिकं ॥ १४ ॥ वषट्त्रयं तथा द्रांद्री । क्लीं ब्लूंसः पंचसायका । कामराजं रतिवीजं । वाग्भवं मोहनं तथा ॥ १५ ॥ प्रीतिवीजं पंचमस्या ।

ध्वकारः पंचमोमतः । प्रासादः प्रौं तथा हंसं । विषापहंच निर्विषं ॥ १६ ॥ बौंषम्मच पूजा ग्रहणं । कर्षणाकान संज्ञकं । स्वाहाच शांतिकं हामौ । नमो जापश्च शोधनं ॥ १७ ॥ संबोषम्मा कर्णनिंचा । मंत्रणं क्लींपिंम्मकः । हांहीं हूं हैं तथा हौंहोः । हृदयं मस्तकं शिखा ॥ १८ ॥ नेत्रत्रयं क्रमेणै षा । मन्निधा गदिता मया । अकारै कारकाचट । तपया शंशपार्थिवाः ॥ १९ ॥ अकारै खठगास्यश्च । फरषा मारुतामताः । इकारौ गजडादश्च । वलसा वारुणा स्तथा ॥ २० ॥ ईकारौ घऊढातश्च । न्नवहास्तैजसाः पुनः। चतुःसरा विसर्गाश्च । वर्गात्पा व्योमजामताः ॥ २१ ॥ ॐमौलि रामुखमिई । नेत्रे कर्णा बुक्र स्मृतौ । ऋॠ घ्राणे लृॡ गंडा । ए ऐ रदनयामलं॥ २२ ॥ उ ऊ उष्ठौ बिंडुर्जिव्हा । विसर्गः कंठ उच्यते। कादि चादी न्नुजौटादि । तादी चलण यामलं ॥२३ ॥ पफौ कुक्षी पृष्ठ नान्नी । हृदया निच वादयः। य र ल व श ष साश्च । सवैते धातवोमता ॥२४॥ बीजो परि स्थितारेखा। कला चंद्रा द्दलांकुरौ । अर्द्ध खंड कला अर्द्ध । खंडादिर्व्योमृतद्युति । मारणादौ पुनः श्याम्या । धूम्राविद्वेषणादिषु ॥ २७ ॥ शुभ्राशांत्पादिके कार्यै । ध्येयोवर्णाश्च मंत्रगाः । इत्येषा कियती मंत्रा । मात्रृका निर्मिता मया ॥ २८ ॥ इति श्री मंत्र नाममाला समाप्ता ॥ श्रीरस्तुः ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ स्वकुलप्रकाशनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हिवकही माहरो कुलप्रकाशुं अहो न्नवियण तुमसुणो । गुरुगछ कोटिक चंद्रकुल अरु वयरिशाखा चितन्नणो । गुणगण जिनेसर सूरिपट्टण विरुदपायो गुणकरी । सोजयउ खरतरगछ मोहन प्रगट सह्रु न्नविदित धरी ॥ १ ॥ गुरुगछ खरतर तेजदीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिन हंस सूरीसर तणेंपद, चंद्रसूरी जिनमही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक विनयगुण उल्लासए । बहुरत्न संग्रह नगर मुंबइ किया मोहनन्नासए ॥ २ ॥ ※ ॥


॥ आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशः समाप्तः ॥

॥ ※ ॥ श्री जैनपाठशाला ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आचाररत्नाकर ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूसरा प्रकाश ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन इतिहास ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूचीपत्र ॥ ※ ॥

॥✻॥ विज्ञापन ॥✻॥

॥✻॥ अहो देवानुप्रियो, अहो सर्वे सहृदयो, विचारणा चाहिये, के वर्त्तमानकालमें इंग्रेजसरकारकी शोभनीक राज्यनीतीसें, और छपेके प्रचारसें, बहुतसे मतवाले अनेक प्रकारसें उलटे, तथा सुलटे. विकल्प करनेवाले विद्यापात्र होते जाते है, और अपनी अपनी भक्तिमुजब बुद्धीके फेलावसें, देशका, तथा अपनें कुलधर्मका, फेर विशेष बुद्धी दिखलानेकों सर्व मतका इतिहास प्रगट किये, और करते है, सर्व इस कूलोंमें हींदी गुजराती मराटी इंग्रेजी सीखनेंवाले विद्यार्थियोंकों इतिहास अवश्य सिखाते है, परंतु कितनेक ऐसे पंडित हुए सो अन्य मतका किंचित् स्वरूप जानके अपनी कुयुक्तियोंसें अन्य मतका खंडन वा अन्यमतका इतिहास प्रगट कियेहैं और करते हैं, परंतु कोई धर्मका असली तत्व समझेविगर खंडन मंडन करना सो कैसा है कि निरापेक्ष विद्वज्जनोंके सन्मुख अपनी मूर्खताका चिन्ह प्रगट करना है, कितनेक इतिहास पुस्तकोंमें जैनधर्म उत्पत्ति विषय अनेक अपना २ झूठा विकल्प करके जैनकों स्थापित करते हे १ कोई लिखता हे, बोद्धमत एक जैनधर्मकी शाखा हे २, तो कोई लखता हे

जैनधर्म बोद्धमतकी एक शाखा है ॥ कोई कालमें यह दोनु मत एक थे २ कोई लिखता है, जैनमत मछंदरनाथके पुत्रोंनें चलाया हुवा है ३, तो कोई लिखताहे, क्या जानते नहिहो, विष्णु भगवान् दैत्योंके धर्म भ्रष्ट करनेंको अर्हतका अवतार लिया था जबसें जैनमत चला है ४ ॥ कोई लिखता हे, और सब बात फूठी, यह जैनधर्म सं। ६०० के लग भग चला है, इत्यादि अनेक विकल्प धर्मविषई किये हुए है, और पिण देवविषय गुरुविषय, जैनआचार विषय, अनेक विकल्प करतेहै, केई कहते है जैनधर्मवाले ईश्वर नहि मानते है, १ तो केई कहते है, जैनधर्म वाले ईश्वर मानते हे पण भगवानकी नग्नमूर्त्ति रखते है, इससेती मंदरमें जाना दरशन करना न चाहिये, केई कहते है जैनलोक कुलाचारसें भ्रष्ट है और कुलाचार करानेंवाले जैनीब्राह्मण कुलगुरुभी नहिं है, जो आचार करते है सो अन्य मतकी अपेक्षा करते हें, इत्यादि अनेक फूठे विकल्प किये हुए पुस्तकोंमें देखके (वा) कोईकेपास सुनके जो जैनतत्व जा णनेंवाले पंडित लोक तो अवस्य उनकों फूठे समजतें हें और हास्य करतेहै क्यों कि मोहमदिराके नसेमें व्याप्त हुवे थके, जो बचन नहिं कहने लायक है सो कह देते हें, इससेती जितने पुराण है, उन सबमें एकेकसें विरुद्ध वाक्य है, जूदे जूदे ईश्वर माननेंसें, तथा जूदे जूदे प्रकारसें श्रष्टी, जगत्‌की रचना माननेंसें, एकेककी अपेक्षायें एकेक फूठे होनेसें, जैन धर्मकी अपेक्षायें सर्व फूठे होते है, क्यों कि जैनधर्म तो अनेकांतिक है अनादी है, और जीवस्वरूप जगत्‌का स्वरूप अनादी मानते हें और राग द्वेषादिक अढारे दूषणो करके रहित, सर्व देवगणके पुज्यनीक, सर्व जीवोंके ऊपर दया भाव धारन करनेंवाले, परमपुरुष परमात्म गुणपायके जो सिद्धि स्थानकमें निश्चल रहे है, कभी संसारमें जिसका आवागमन नहिं रहा है ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हें, परंतु जगतका रचनेंवाला, तथा संहार करनेंवाला, स्त्री शस्त्र, जपमालादिक, धारन करनेंवाला, तथा अपना लिं गपूजानेवाला, राग द्वेषादिकसें अनेक कुकर्म करनेंवाला होय ऐसा ईश्वरकों जैनीलोक ईश्वरतुल्य नमानते हें और गृहस्थधर्मका, जन्मसें मरणपर्यंत, सं पूर्ण आचार तथा साधुधर्मका संपूर्ण आचार जैनलोक मानते हें, क्युंकि

जैनधर्ममें मोक्षप्राप्ती, ज्ञान, क्रिया, दोनुंसें होती है, कोई क्रियाकों उत्थापके ग्यानकों मानते हैं, तो कोई ग्यानकों उत्थापके क्रियाकों मानते हैं, ऐसे जो एकांतिक है उन सर्वकों जैनीलोक मिथ्यात्वी कहते हैं, इत्यादि संपूर्ण जैन धर्मका स्वरूप, तथा ईश्वरका स्वरूप, तथा जैनकुलाचारका स्वरूप तो बमे बमे जैनसिध्धांतोंमें हेतु, युक्ति, प्रमाण, दृष्टांत, करके विस्तारसें लिखे हुवे हैं, जिसमें बहुतसे तो जैनआचार, जैनजोतष, जैननीतिके ग्रंथ, कितनेक वरषोंसें अन्यमति म्लेछादिक केई राजावोंके अनीतिके सबबसें विछेद तुल्य होगए है, तथापि आवश्यक सुत्र, आचारदिनकरादि अनेक आचार ग्रंथ प्रसिध्द है, जिससें जो विद्धान पुरुष है सो तो संपूर्ण जैनआचारकों जान शक्ते हैं, परंतु व्याकरणादि बोधरहित सामान्य वर्गवाले सर्व बाल मित्रोंकों उस ग्रंथोंसें अपना संपूर्ण आचारका जाणपणा नहिं हो सक्ता है, इसी हेतुसें मेनें मेरी अल्पमति प्रमाणें बहुत प्रयास करके सर्व जैन लोकोंके अवश्य जाणनें, सीखनें, करनें, लायक जैनआचार, तथा जैन इतिहास, इस रत्नसागरका दूसरा भागमें छपाके प्रशिध्द किया है, यद्यपि इसमें संघकी मदत प्रथम मिलेबिगर, कितनेक ठिकाणे सुधारा, बधाराकी आवश्यकता, रहगई है, तथापि सर्व जैनधर्म रागियोंके अवश्य उपयोगी पुस्तक है, इससेती मेरेंकों आशा हैं, कि गुणग्राही धर्मउद्योतक पुरुष, अवश्य इस पुस्तककों लेकर अपनेंपास रख्खेंगे और ग्यानवृध्दी बाते पांच पंचवीस पुस्तक इकठीलेकर जैनशालाउंमें शीखनेंवाले लमकोंकों तथा साधु साधर्मियोंकों देकर पाठशालाकों मदत देवेंगे, और सर्व ठिकाणें अपना धर्म इतिहासकों प्रवर्त्तन करके मेरा परिश्रम सफल करेंगे, अलं विस्तरेण ॥ शुभंभवतु, कल्याणमस्तु ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहनगुण सुखकंद ॥
मोहनी मूरत देखके । मोहनचित आनंद ॥ १ ॥ ※ ॥
॥ ※ ॥ पारसप्रभुके नामसें । सहुसंकट मिटजाय ॥
ईतउपद्रव भयटले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ २ ॥ ※ ॥
॥ ※ ॥ गुरुदीपक गुरुदेवता । गुरुविनघोर अंधार ॥
जे गुरुवाणी वेगला । रम्मवडिया संसार ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग प्रसिद्ध करते जो धर्मरागी जैनसज्जनोंनें प्रथम पुस्तकों लेके मदत दीवी है, जिनोंका ग्यानवृद्धी उपकारार्थ मान्यसें नाम प्रकाश करते हें ॥

१०१ वाफणासेठ श्री जुहारमलजी गेंगमलजी, उदेपुर ॥
३१ तत्वदीपक मोहन मंम्मली ॥ बीकानेर ॥
२५ बाबू राय श्री कालिकादासजी वदरीदासजी बहादुर, कलकत्ता॥
२१ बाबू राय श्री प्रतापसिंहजी धनपतिसिंहजी बहादुर, अजीमगंज॥

॥ ※ ॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥ ※ ॥

॥ १ ॥ मु । बीकानेर, ठि । बडे उपाशरेपासे, जैनलक्ष्मीशाला, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानजीगणिः पं । मुक्तिकमल मुनिः ॥ ※ ॥

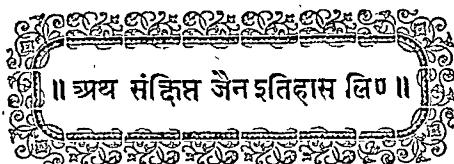
॥ २ ॥ मु । कलकत्ता, ठि । अफीमचौरस्तै ६२ नं० जैन विद्याशाला पं । जयचंद मुनिः पं । रावतमलमुनिः ॥ ※ ॥

॥ ३ ॥ मु । मुंबई, ठि । विचला भुंयवाडामें, श्री चिंतामणजीके मंदिरमें जैनपाठशाला, पंडित धर्मचंद कल्याणचंदपासे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ये तीन ठिकाणोंमेंसें, कोई ठिकाणें ऊपर लिख्येमुजव पत्र देनेसें पुस्तक भेजनेमें आवेगा, ये तीनों ठिकाणें, तत्वदीपक मोहनमंम्मली, तरफसें जैनपाठशाला स्थापन है ॥ इनमें औरभी अनेक जातकी जैन छपैकी पुस्तकों तैयार मिलती हें सो सूचीपत्र मंगायके देख लेना ॥

॥ ※ ॥ पुस्तकोंके नाम ॥ ※ ॥

		रु०	आ०	पा०
॥ १ ॥	रत्नसागर प्रथम भाग	५	०	८
॥ २ ॥	रत्नसागर दूसरा भाग	२	८	६
॥ ३ ॥	आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाश....	२	०	४
॥ ४ ॥	आचाररत्नाकर दूसरा प्रकाश	१	४	४
॥ ५ ॥	खरतर राई देवशी प्रतिक्रमण	०	६	॥-
॥ ६ ॥	स्तवनावली दूसरा भाग	०	४	॥-
॥ ७ ॥	खरतर पांच प्रतिक्रमण	१	०	४



॥ ※ ॥ अब आचार रत्नाकरका दूसरा प्रकाशमें पाठक गणके उप कारार्थ जैन धर्मका स्वरूप प्रश्नोत्तरकी रीतसें लिखता हुं ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) जैन धर्म कबसें प्रशिद्ध हुवा ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) जैन धर्म अनादि कालसें प्रशिद्ध है ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) जैन लोक जगत्का स्वरूप किस तरे मानते हें ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) द्रव्यार्थिक नयके मतसें, जैनलोक, जगत्का स्वरूप शाश्वता (अर्थात्) हमेशां प्रवाहसें ऐसाही मानते हें । अनादि कालसें उत्कृष्ट, हीन, कालमुजब चढाव उतार स्वरूप चला आता है ॥ कोई इस संसारकी, श्रष्टीकी रचना करनेंवालेकों जैनी लोक न मानते हें ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) अन्य मतवाले कहते हें (कि) जैन धर्मवाले श्रष्टी कर्त्ता ईश्वरकों न मानते हें, इस सेती नास्तिक है (सो) जैनी लोक ईश्वर मानते हें, या नहिं ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) जो जैन धर्मकों नास्तिक कहते हें (सो) नास्तिक हो सक्ते हें (क्युं कि) सर्व मतवाले अन्य २ प्रमाणसें, अन्य २ ईश्वर कृत लोकरचना कहते हें ॥ (परंतु) सत्य प्रमाणसें कोई ईश्वरकी करी श्रष्टी सिद्ध नहिं हो सक्ती है (विचारना चाहिये) लोकरचना तो एक (और) ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादिक, ईश्वर, रचनेंवाले बहुत हुए ॥ इससेती, एकके मतसें, एकका मत झूठा होतां, सब झूठे हुये (और) यहीबात अंतमें सिद्ध हुई, कि जगत् रचना अनादि है । इससें जगत्कर्त्ता ईश्वर कोई नहिं (और) जो ईश्वर नाम धारके राग, द्वेषमें, मग्न होकर रातदिन जगत् विटंबणामे फसरहे हें । आपसमें लड रहे हें । (तथा) अ नेरे दूषणों करके सहित हें (इसमाफक) चरित्र करनेंवालोंकों जेनवाले

देवगतिमें मानतेहें (और) जो ईश्वर, अनंत अपना आत्मगुणांमें मग्न है (तथा) शांतिस्वरूप धारक हे, रागद्वेषादिक अठारे दूषणो करके रहित है । लोकालोक त्रिकाल विषय पदार्थकों जाणनेंवाले है । संसारमें आवा गमन रहित, हमेशां सिद्धिस्थानकमें विराजमान है (ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हें) ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ प्रश्नः ॥ जैनधर्मवाले ईश्वर मानते है सो ईश्वरके कितने नाम है ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ अनंतकालमें, अनंते तीर्थंकर, परमात्मगुण पायके सिद्धिस्थानककों प्राप्त हुए हें, ॥ इस अपेक्षायें तो अनंतनाम है (परंतु) सर्बके गुणकी तुल्यतापणे समुच्चय, सत्यार्थ गुणयुक्त नाम १००८ है ॥ सो हजार नामको स्तोत्र, रत्नसागर प्रथम भागमें लिखा है ॥ (फेर) समुच्चय २४ नाम जैन ईश्वरका हेमकोशादिक ग्रंथमें प्रशिद्ध है (यथा) अर्हन् १॥ जिनः २ पारगत ३ त्रिकालवित् ४। क्षीणाष्टकर्म्मा ५ परमे ष्ठच ६ धीश्वरः ७ । संभुः ८ स्वयंभु ए भगवान् १० जगत्प्रभु ११ । स्तीर्थंकर १२ स्तीर्थकरो १३ जिनेश्वरः १४ ॥१ ॥ स्याद्वाद्य १५ भयदः १६ सर्वाः १७ । सर्वज्ञः १८ सर्वदर्शि १ए केवलीनौ २० । देवाधिदेव २१ वो धिदः २२ । पुरषोत्तम २३ वीतरागाप्ता २४ ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ जैनलोक अनादि अनंतकालमें एक ईश्वर मानते ह (वा) अनंत ईश्वर मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ एकभी मानते हें (और) अनेकभी मानते हें॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ एककेसें मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ रागद्वेषरहित, परमात्मगुण, अक्षयसुख संपदा, भाव, सबके तुल्य होनेसें एक ईश्वर गुणयुक्त नाम मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ अनेक केसे मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ द्रव्य, क्षेत्र, कालकी, अपेक्षायें अनंत सिद्धभए । इससेती अनंत ईश्वर मानते हें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ जैनलोक कालचक्रका स्वरूप किसतरें मानते हें ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ कालचक्रका दो भेद मानते हें । १ अवसर्पणीकाल । २ उत्सर्पणीकाल ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ अवसर्पणीकाल किसकों कहते हें (और) इसका क्या प्रमाण है । कितना भेद हे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥(उत्तर) दस कोमा कोम सागरोपमको अवसर्पणी काल होता है॥ इसका ७ हिस्सा हे (अर्थात्) जिसकों जैनी ७ आरे कहते हें ॥ इस कालके ७ आरोमें अछी वस्तुवोंकी दिन दिन हानी होती चली जाती है॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ उत्सर्पणी काल किसकों कहते हें (और) क्या स्वरूप है । कितना प्रमाण है ॥ ※ ॥

॥※॥ (उत्तर) ॥ दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पणी काल होता है इसका पिण ७ आरा हे । इस कालके ७ हिस्सोमें दिन२ अछी वस्तुवोंकी वृद्धी होती चली जाती है(तथा)एक सागरोपममें असंख्याता वर्ष होता है । (जब) उत्सर्पणीकाल उतरे, तब अवसर्पणीकाल सरू हुवे (और) जब अवसर्पणी काल उतरे, तब उत्सर्पणीकाल सरू हुवे । ऐसें २० कोमाकोड सागरोपम प्रमाणें एक कालचक्र होता है ॥ अतीतकालमें, ऐसे कालचक्र अनंते व्यतीत हो गए हें (और) आगुं अनंते व्यतीत हुवेंगे । (इसीमाफक) अनादि अनंत कालतक इस जगतकी चढाव उतार व्यवस्था चलती रहेगी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) अवसर्पणी, उत्सर्पणी कालके, ६ आराका क्या नाम है (और) क्या स्वरूप हे । कितना २ प्रमाण है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ अवसर्पणी कालको पहलो आरो, सुखम सुखमा नामें, चार कोडाकोड सागरोपम प्रमाण होता हे (इस कालमें) भरत क्षेत्रकी जमीन अत्यंत सुंदर, बहुत रमणीक, सोनेंकेथाल समान बराबर थी । (और) इसमें मनुष्य, तथा सर्वजीव जानवर, बमे सरलस्वभावी अल्प काम, क्रोध, मोह, राग द्वेषवाले होते थे (प्रायें) नीरोग सरीरवाले सुंदर रूपवान होते थे । दशजातिके कल्पवृक्षोंसें, अपनें खानें पीनें वस्त्र घरादिकका सब मनोरथ पूरण करते थे (और) एक लमका, एक लमकी दोनुंका युगल जन्मते थे । जब वे युवान अवस्थाकों प्राप्त होते थे (तब) युगल जनमे हुवे, आपसमें स्त्री भरतारका संबंध कर लेते थे । जैन मतके प्रमाणसें तीन कोस प्रमाण जिनोंका सरीर होता था (और)

तीन पल्योपम प्रमाण आऊखा होता था । जिनोंके दोयसै छप्पन पृष्ठकरं मके हाड होते थे । ४९ दिनतक अपना पुत्रादिककी पालना करते थे । जीव हिंसा, झूठ, चोरी, आदिक पापकर्म विशेष नहिं करतेथे । तीसरेदिन पीछे मटरकी दाल प्रमाण आहार करते थे । कल्पवृक्षोंहीमें सो रहते थे। युगल जोमे पिण गिणतीमें थोडेही थे ।(शेष)चतुपाय, पक्षी, पंचेंद्री आदि, सर्वजातके जीव थे । परंतु सर्व क्षुद्रक नही थे । सरलस्वभावी थे । शालि प्रमुख सर्व अन्न, इक्षु प्रमुख सर्वरसाल, वनोंमें आपसेंही उत्पन्न होते थे । (परंतु) मनुष्योंके भोगमें नहिं आते थे (निकेवल) उसकालके मनुष्य देवाधिष्ठित कल्पवृक्षोंके दिया हुवा फल फूलोंका आहार करते थे । वस्त्र पहनते थे । भद्रक परिणामोंसें मरके निकेवल देवगतिकों जाते थे ॥ (इत्यादि) अवसर्प्पणी कालका पहला आरा (और) उत्सर्प्पणी कालका छठा आरा की समान मर्यादा कही ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अब दूसरा सुखमा नामें आरा) ॥ ये तीन कोमाकोड सागरोपम प्रमाण होता है । इसमें मनुष्य तिर्यंचका दो पल्योपमका आऊखा (और) दो कोशका सरीर होता है । बोरप्रमाणें दो दिन पीछे आहार करे । १२८ पासली हुवे । (और) ६४ दिन पर्यंत अपना पुत्र युगल की पालना करै । कल्पवृक्ष सब प्रकारका मनोरथ पूरण करे । अंतमें मरके देवगतिमें जावै ॥ (यह) अवसर्पणीकालका दूसरा आरा, (और) उत्सर्पणीका पांचमा आराकी मर्यादा कही ॥ २ ॥ (तीसरो) सुखमदुःख मा नामें आरो, दों कोडा कोड सागरोपम प्रमाणें (इसमें)मनुष्य तिर्यंचको एक पल्योपमको आयु(तथा)एक कोशको शरीर होय । एकांतरे आमलाप्र माणें आहार करे, ६४ पांसुली हुवै।।७९ दिनतक अपना युगल पुत्रादिक की पालना करै । कल्पवृक्ष सर्व मनोरथ पूरण करै । सरलपणासें मरके देवगतिकों प्राप्त हुवे (यह) अवसर्पणीका तीसरा आरा (और) उत्स र्पणीका चौथा आराकी मर्यादा कही ॥३॥ (चोथो) दुःखम सुखमा नामें आरो, ४२ हज़ार वरष ऊणा, एक कोमाकोम सागरोपम प्रमाणे (इसमें) मनुष्य, तिर्यंचका, उत्कृष्टा एक पूर्वकोम वरषका आयु, (तथा) पांचसै धनुष्य प्रमाणें शरीर होय । नित्य भोजन करे ॥ (इसमें) युगलिया न

होय, सर्व संसारी आजीवका कर्मका करनेवाला होय (इससें) मरके देवता १ मनुष्य २ । तिर्यंच ३ । नारकी ४ । ए चारुंइंगतिमें जाएँवाले होय। केई जीव सर्वकर्म खपायके पांचमी मोक्षगतिकों भी प्राप्त होय ॥ (यह) अवसर्पणीका चोथा आरा (और) उत्सर्पणीका तीसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ४ ॥ (पांचमो) दुःखमा आरो, इकवीसहजार वरषप्रमाणें (इसमें) मनुष्यांको उत्कृष्टो सात हाथ प्रमाणें सरीर, (और)१२० वरषको आऊखो होय। संसारी सर्व आजीवका करनेवाले होय(मरके) चारेइगतिमें जावे (परंतु) सर्व कर्म खपायके कोई मोक्षमें न जावे (यह) अवसर्प्प णी कालका पांचमा आरा, (और) उत्सर्प्पणीका दूसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ५ ॥ (छट्ठो) दुःखमदुःखमा नामें आरो, २१ हजार वरषप्रमाणें । (इसमें) मनुंष्यांको उत्कृष्टो २० वरसको आयु, (तथा) एक हाथको शरीर होय। वैताढ्य पर्वतादिकका विलांमें रहनेवाले होय, धर्म, कर्म, करके रहित होय। सर्व मनुष्य, क्रूरकर्मी, न्यायमार्गरहित, मरके खोटी नरक निगोदादि गतिमें जावें ॥ (यह) अवसर्पणी कालका छट्ठा आरा (और) उत्सर्पणीका पहला आराकी मर्यादा कही ॥ ६ ॥ (इसीतरे) अवसर्पणी उत्सर्पणीका, ६ आराकी मर्यादा, जैनसिद्धांतोंमें कही है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ६ आरेरूप अवसर्प्पणी (वा) उत्सर्प्पणी कालमें, कितने २ परमात्म ज्ञान गुणयुक्त, जैनधर्म मुख्य, चतुर्विधसंघ स्थापन करनेंवाले तीर्थंकर होते हें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ६ आरेरूप एकेक कालमें, २४ चौवीस तीर्थंकर भगवान होते रहते हें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥(प्रश्नः) अभी प्रचलित कोनसा काल(तथा)कोनसा आरा है ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) अभी अवसर्पणी कालका पांचमा आरा है ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ये अवसर्प्पणी कालका कोनसा आरातक युगलिया मनुष्य होता रहा (फेर) कोनसें प्रकारसें संसार संबंधी नीति मर्यादा प्रवर्त्तन भई ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) अवसर्पणी कालका तीसरा आरा, बहुतसा व्यतीत होनेंतक तो, कर्मादिक रहित युगलिया मनुष्य, तीर्यंच, होता रहा (इस

उपरांत) दक्षिण भरतार्द्ध मध्यखंममें, सात कुलकर एक वंशमें उत्पन्न भए। कुलकर उसकों कहते हैं (कि) जिणोंनें तिस २ कालमुजब, मनुष्योंकेवास्ते नीति मर्यादा बांधी हे (और) इसी सात कुलकरांकों पाठ फेरसें लोकीकमें सप्त मनु कहते हैं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) किस प्रकारसें कुलकर उत्पन्न भये (और) क्या २ नीती मर्यादा प्रवर्त्तन करी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) तीसरे आरे उतरतां, दश जातिके कल्पवृक्षहीय मान कालके सबब अल्प फल देनेंवाले, थोमे रह गए (तब) युगलक लोकोनें, अपनें २ वृक्षोंका ममत्व कर लिया। जो कोई युगल, दूसरेका कल्पवृक्षकेपास फलादिक कुछ मांगे (तो) आपसमें क्लेश करै (इस वास्ते) युगल पुरषोंके दिलमें विचार आया (कि) कोई ऐसा पुरष हो य, सो सबका न्याव करै। इसीसमें एक युगलकों, एक वनके श्वेत हस्तीनें देखकर, अत्यंत प्रेमसें अपने स्कंधपर चढा लिया (जब) युगल हाथीपर बैठा थका वनमें फिरनें लगा (तब) और युगल लोकोंनें विचारा। यह युगल सर्वमें बमा है। सो हाथीपर चढा हुवा फिरता है (इस वास्ते) इसकों अपना राजा न्यायाधीश बनाउ। ऐसा विचारके युगलकों न्यायाधीशपणें स्थापन किया। इसका विमलवाहन नाम हुवा, (इसके) चंद्रयशा नामें भार्या हुई। (इसनें) सर्व युगल लोकोंकों, जूदा २ कल्प वृक्ष बांटके दे दिये (जब) कोई संतोष रहत युगलिया, दूसरेके कल्प वृक्षसें कुछ मांगता (तो) क्लेश करता हुवा, उसकों साथ लेके, राजाके पास आता (तब) बिमल वाहन (हा) तुमनें यह क्या कामकिया। ऐसी हकारकी दंमनीति करी। इससें अपराधी युगल मर जाते थे (सो फेर) वैसा काम कभी न करते थे। इस प्रथम कुलगरका देहमान,९०० धनुषका हुवा (सो)युगल(तथा)हस्ती पिछले भवमें पश्चिम महा विदेह क्षेत्रें, वाणियापणें दोनुं भाई हुए थे (जिसमें) एकतो सरल था (और) दूसरा कपटी था (परंतु) आपसमें स्नेह बहुत था। कपटी जो कहता (सो) सरल मान लेता था। अंतमें सरल भाई मरके युगल हुवा (और) कपटी मरके हाथी हुवा, (इस सेती) एकेककों देखनेंसें ईहापो करतां जाती स्मरण ग्यान

कों प्राप्त ज्ञवा (तव) स्नेहमान होकर हाथीनें अपनें न्राईकों स्कंधपर चढा लिया। इसका विस्तार संबंध आवश्यकजी सुत्रसें जाण लेना॥ (इति प्रथम कुलकर संबंधः) ॥१॥ (दूशरा) कुलकर, विमल वाहनका पुत्र चक्षुस्मान् नामें कुलकर ज्ञवा (तिसके) चंद्रकांता नामें न्नार्या ज्ञई (और) ८०० धनुष प्रमाण देहमान ज्ञवा । इसके पिण पूर्ववत् हकारकी दंम नीति रही ॥ २ ॥ इति ॥ (तीशरा) यशोमान् नामें कुलकर ज्ञवा (जिसके, सरूपा नामें न्नार्या ज्ञई (और) ७०० धनुषका देहमान ज्ञवा । इसके थोमे अपराधमें हकारकी, विशेष अपराधमें (मा) ऐसा काम मत करो । ऐसी दूसरी मकारकी दंडनीति ज्ञई। इससें सर्व युगल बज्ञत मरनें लगे।। इति ॥ ३ ॥ (चोथा) अन्निचंद्र नामें कुलकर ज्ञवा (जिसके) प्रतिरूपा नामें न्नार्या ज्ञई (और) ६५० धनुष प्रमाण देहमान ज्ञवा । इस केपिण हकार, मकार, की दंमनीति रही ॥ इति ॥ ४ ॥ (पांचमा) प्रशेनजित् नामें कुलकर ज्ञवा(जिसके) चक्षुस्मती नामें न्नार्या ज्ञई । (और) ६०० धनुष प्रमाण सरीर ज्ञवा । इसकें सामान्यपणासें हकार, मकारकी दंमनीति रही (और) विशेष अपराधीकों, धिक्कार, की दंम नीति करी ॥ जिसकों धिक्कार, कह देता, सो युगल जाणता मेरा सर्वस्व हरलिया ।। इति ॥ ५ ॥ (ठठा) मरुदेव नामें कुलकर ज्ञवा । इसके श्रीकांता नामें न्नार्या इसका ५५० धनुप प्रमाणें शरीर ज्ञवा । इसकी वखतमें तीनुं दंड नीति रही ॥ ६ ॥ इति ॥ (सातमा) नान्नि नामें कुलकर ज्ञवा । (इसके) मरुदेवी नामें न्नार्या ज्ञई । इसका ५२५ धनुपका देह मान ज्ञवा । इसकी वखतमें जघन्य अपराधीकों, हकार, कांइंक विशेष अपराधीकों, मकार, (और) उत्कृष्ट अपराधीकों धिक्कार, इसीतरे तीनुं दंम नीति रही । (तथापि) ॥ दिन दिन हीन कालके सवब असंतोषी युगल बज्ञत होनें लगे । बज्ञतसें अपराध करनें लगे । तीनुं दंम नीतिका न्नय नहिं मानणें लगे (इस वखतमें) नान्नि कुलकरके, मरुदेवी न्नार्याकी कूखसें, चवदै स्वप्न सूचित, ऋषन्नदेव कुमार पुत्रपणें उत्पन्न ज्ञये। (ये) रिषन्नदेव कुमर, क्रोमों देवतावोंके पुज्यनीक ज्ञए (और) युवान अवस्थामें राज्यपदकों धारन करके (संपूर्ण पुरुष, स्त्रियोंकी कला (तथा) राज्यनीति, धर्मनीति, आदिककों

प्रवर्त्तन करनेंवाले, ब्रह्मादि अनेक नामधारक, प्रथम ईश्वर इस कालमें इस धरतीमें येही हुए। (इसी तरे) सात कुलकर हुए॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) रिखभदेव स्वामी कहांसें आयके, मरुदेवी माताकी कूखमें उत्पन्न भए (और) कोण प्रकारसें देवतावोंके पुज्यनीक, संपूर्ण कलाकों (तथा) धर्मनीतिकों प्रवर्त्तन करनेंवाले प्रथम ईश्वर भए ॥ ※ ॥

॥※॥ अब ५२ बोल गर्भित श्री ऋषभदेव अधिकार लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ विनीता भूमीके विषै, श्री नाभि नामें, सातमा कुलकर हुवा (जिसके) मरुदेवी नामें पटराणी हुई । तिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध देवलोक थकी चवके, मिति आषाढ वदि ४ के दिन, भगवान् उत्पन्न भए (तब) मरुदेवी मातायें, वृषभकों आदलेके, अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा। (इहां) १४ स्वप्नका नाम लि० ॥ वृषभ १ ॥ हस्ती २ ॥ सिंह ३ ॥ लक्ष्मीदेवता ४ ॥ दो पुष्पमाला ५ ॥ चंद्रमा ६ ॥ सूरज ७ ॥ इंद्रधजा ८ ॥ पूर्ण कलश ९ ॥ पद्म सरोवर १० ॥ क्षीर समुद्र ११ ॥ पुंडरीक देव विमान १२ ॥ रत्नराशि १३ ॥ निर्धूम अग्नि १४ ॥ ऐसा चवदे स्वप्ना देखा(फेर) गर्भके प्रभावे उत्तम २ जो जो मोहला, मरुदेवी माताकों उत्पन्न हुवा (सो) इंद्र आयके पूरण किया (पीछे) सर्व दिशायें सुभिख्य समें । मि । चैत्र वदि ८ के दिन, उत्तराखाढा नक्षत्रके विषे, भगवानूका जन्म हुवा । (उसी वखत) रुचक पर्वतकी रहनेंवाली ५६ दिश कुमरी देव्यां आयके, सूतिका उच्छव किया (पीछे) उसी रात्रिकों ६४ इंद्रोंका आसन कंपायमान हुवा (तब) अपना अवधिज्ञानसें प्रथम भगवानका जन्म हुवा जाणके जन्म उच्छव करनेकों, मेरुपर्वत ऊपर आए (जिसमें) पहला सोधर्मइंद्र भगवानकी माताकेपासे आयके, मंगलीकके अर्थ माताके पासे, भगवानके समान, दूसरा प्रतिबिंब रखके, भगवानकों मेरु गिरके ऊपर ले गया (उहां) बड़ा उच्छवसें स्नान कराय के, अष्ट द्रव्यसें पूजा करके, अगाभी बत्तीस बद्ध नाटक करके, भगवान कों, पीछा माताके पासें लायके स्थापन किया । (और) क्रोडोंइ सोनइयांकी (तथा) अन्य वस्त्र, धान्यादिककी, वर्षा करके नाभि राजाका घर भर दिया (पीछे) सर्व इंद्र आठमा नंदीश्वर द्वीपजायके अठाही उच्छव

करके, अपनें २ स्थानक गए । (फेर) नाभि राजानें दशदिन पर्यंत जन्मके उत्सव किये (उस वखत) युगलिया लोक कुछभी जाणते नहीं थे (इसवास्ते) सोधर्म इंद्रनें, बहुतसे देवता देव्यांकों भगवानकेपास रखदिये (सो) सर्व व्यवहार वताते करते रहे ॥ (पीछे) ११ में दिन, कल्पवृक्षोंका दिया हुवा, नानाप्रकारका भोजन, सर्व युगलियाकों जिमायके, नाभि राजायें, रिषभ कुमर नाम स्थापन किया। नाम स्थापनका ये हेतू है (कि) भगवानकी दोनुंसाथलोंमें वृषभका लांछन था। (दूसरो) मरुदेवी मातानें, चवदे स्वप्नाके प्रथम स्वप्नमें, वृषभ देखा था (इस सेती) रिषभ कुमर नाम स्थापन किया ॥ बाल अवस्थामें श्री ऋषभदेवकों जब भूख लगती थी (तब) अपनें हाथका अंगूठा, मुखमे लेकें चूस लेते थे। उस अंगुठेमें, इंद्रनें अमृतसंचार कर दिया था । जब ऋषभ देवजी बडे हुए (तब) देवता उनकों कल्पवृक्षोंके फललयाकर देते थे। वे फल खाते थे। जब ऋषभदेव, कुछन्यून एक वर्षके हुए (तब) इंद्र आया। रीते हाथसें स्वामिकेपास न जाना । इस्सें इक्षुदंड हाथमें लेके आया (उसवखत) श्री ऋषभदेव कुमर, नाभि कुलकरकी गोदीमें बैठे थे। तब भगवानकी दृष्टि इक्षुदंडपर पडी । तब इंद्रनें कहा (कि) हे भगवान् इक्षु भक्षण करोगे (तब) श्री ऋषभदेव कुमरनें हाथ पसारया। तब इंद्रने, ऋषभदेव कुमारके, इक्षुकी इच्छा उत्पन्न होणेसें, भगवान्का इक्ष्वाकु कुल स्थापन करा (यांसे इक्ष्वाकु वंशकी उत्पत्ति भई) और श्री ऋषभदेवजीके वंशवालोनें, काश वनस्पति विशेपका रस पीया (इस वास्ते) काश्यपगोत्र प्रशिद्ध हुवा ॥ श्री ऋषभदेवजीके, जिस जिस वयमें जो जो काम उचितथा, सो सर्व इंद्रनें आयके करा (यह) अनादिकालसें, जो जो इंद्र होते आये है। उन सबका येही आचार है । कि प्रथम भगवान्के वयोचित सर्व काम करना ॥ ※॥

॥ ※ ॥ (इस अवसरमें) एक लडकी, एक लडका, बहिन और भाई, बालअवस्थामें, तालवृक्षके हेठे खेलते थे । उहां तालके फल गिरनेंसें लडका मरगया (तब) लडकीकुं नाभिकुलकरनें लायके सोंपी (तब) उसनें ऋषभदेवके विवाह योग्य जाणके, यतनसें अपणेपास रक्खी। तिसका

नाम सुनंदा था (और) दूसरी ऋषभदेवकेसाथ जन्मी थी। उसका नाम सुमंगला था। इस दोनोंकेसाथ ऋषभदेव बाल्यावस्थामें खेलते हुए, यौवनवयमें प्राप्त हुए। (तव) इंद्रनें विवाहका प्रारंभ करा। आगे युगलके समयमें विवाहविधि नही थी। (इसवास्ते) यह विवाहमें, पुरुषके कृत्य तो सर्व इंद्रनें करे (और) स्त्रीयोंकी तरफसे सर्व कृत्य इंद्रीणीनें करे (तवसें) विवाहविधि सर्व जगत्मे प्रचलित भई। तव ऋषभदेव दोनों भार्योंकेसाथ संसारिक विषयसुख भोगवतां, ६लाख पूर्ववर्ष व्यतीतभए (तव) सुमंगला राणीके, भरत (और) ब्राह्मी, यह युगल जन्मा। (तथा) सुनंदाके बाहुबली (और) सुंदरी यह युगल जन्मा। पीछेसें सुनंदाके तो और कोइ पुत्रपुत्री नहिं हुवे (परंतु) सुमंगला देवीके गुणपच्चास (४९) जोड़े पुत्रोंहीके हुवे। यह सब मिलकर सो (१००) पुत्र (और) दो पुत्रियोंभई ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब सो पुत्रोंके नाम लिखते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ भरत। २ बाहुबली। ३ श्रीमस्तक। ४ श्री पुत्रांगारक। ५ श्री मल्लिदेव। ६ अंगज्योति। ७ मलयदेव। ८ भार्गवतार्थ। ९ वंगदेव। १० वसुदेव। ११ मगधनाथ। १२ मानवर्त्तिक। १३ मानयुक्ति। १४ वैदर्भदेव। १५ वनवासनाथ। १६ महीपक। १७ धर्मराष्ट्र। १८ मायकदेव। १९ आस्मक। २० दंभक। २१ कलिंग। २२ ईषकदेव। २३ पुरुषदेव। २४ अकल। २५ भोगदेव। २६ वीर्यभोग। २७ गणनाथ। २८ तीर्णनाथ। २९ अंबुदपति। ३० आयुवीर्य। ३१ नायक ३२ काक्षिक। ३३ आनर्त्तक। ३४ सारिक। ३५ ग्रहपति। ३६ करदेव। ३७ कच्छनाथ। ३८ सुराष्ट्र। ३९ नर्मद। ४० सारस्वत। ४१ तापसदेव। ४२ कुरु। ४३ जंगल। ४४ पंचाल। ४५ शूरसेन। ४६ पुटदेव। ४७ कालिंगदेव। ४८ काशीकुमार। ४९ कौशल्य। ५० भद्रकाश। ५१ विकाशक। ५२ त्रिगर्त्तक। ५३ आवर्ष। ५४ सालु। ५५ मत्स्यदेव। ५६ कुलियक। ५७ मुषकदेव। ५८ बाल्हीक। ५९ कांबोज। ६० मृडनाथ। ६१ सांद्रक। ६२ आत्रेय। ६३ यवन। ६४ आभीर। ६५ वानदेव। ६६ वानस। ६७ कैकेय ६८। सिंधु। ६९ सोवीर। ७० गं

धार। ७१ काष्टदेव । ७२ तोषक । ७३ शौरक । ७४ भारद्वाज । ७५ शूरसेन ।७६ प्रस्थान ।७७ कर्णक ।७८ त्रिपुरनाथ ।७९ अवंतिनाथ।८० चेदीपति । ८१ विष्कंभ । ८२ नैषध ।८३ दशार्णनाथ । ८४ कुसुमवर्ण । ८५ भूपालदेव । ८६ पालप्रभु । ८७ कुशल । ८८ पद्म । ८९ महापद्म ९० विनिद्र । ९१ विकेश । ९२ वैदेह । ९३ कच्छपति । ९४ भद्रदेव । ९५ वज्रदेव । ९६ सांद्रभद्र । ९७ सेतज । ९८ वत्सनाथ । ९९ अंग देव । १०० नरोत्तम (यह)श्री ऋषभदेवजीके १०० पुत्रोंका नाम कहा॥

॥※॥ अथ राज्याभिषेक, विनीता नगरी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ (इस अवसरमें) जीवोंके कषाय प्रवल होजानेसें । पूर्वोक्त हकारादि तीनों दंडका, लोक भय नहिं करनें लगे (इस अवसरमें) लो कोंनें सर्वसें अधिक, ज्ञानादि गुणों करके संयुक्त, श्री ऋषभदेवकों जानके, युगललोक, श्री ऋषभदेवकों कहते ज्ञए । (कि) अवके सर्व लोक दंडका भय नहि करते हैं । (तव) मति १। श्रुति २। अरु । अवधि ३। यह तीन ज्ञानकरके युक्त (ऐसे) आदिकुमर युगलियोंकुं कहते ज्ञए (कि) जो राजा होता है (सो) दंडकर्त्ता है । फेर उस की आज्ञा कोई उल्लंघन नहिं कर सकता है । ऐसे वचन सुनकर, वे युगलिये वोले (कि) ऐसा राजा हमारेभी होना चाहिये । (तव) आदि कुमर वोले । जो तुमारी इछा ऐसी है (तो) नाभि कुलकरसें याचना करो । (तव) तिनोंने नाभिकुल करसें वीनती करके (तथा) आज्ञा लेके, आदिकुमरकुं राज्याभिषेक करणेके लिये, पद्मसरोवर जल लेनेंकुं गए (इस समें) सौधर्मइंद्रका आशन कंपमान ज्ञवा । तव अवधि ज्ञानसें, रा ज्याभिषेकका अवसर जानके, बज्ञतसे देवता देवीयोंके संग आके, श्रीआ दिकुमरका राज्याभिषेक, संपूर्ण विधिसंयुक्त, महोछवके साथ करा । (जिस वखत) छत्र, मुगुट, कुंडलादिक, आभरण सहित, रत्नजडित सिंहासनपर वेठे हैं । उससमय, वे युगल लोक, कमलके पत्तेमें जल लेके आये ।(वहां) वस्त्राभरण सहित सिंहासनपर वेठे देखके, अंगूठेपर जलाभिषेक किया (तव) इंद्रनें विचारा (कि) यह युगल लोक वडे विनयवान है । ऐसा जानके वैश्रमण नामा देवकुं आज्ञादीनी (कि) आदिराजाके (तथा)

इस विनीत पुरुषांके, रहनेके योग्य, विनीता नामसें, १ नगरी स्थापित करो (तब) वैश्रमण देवनें, गढ, मढ, प्रोल, प्राकारादिक, संयुक्त, वर्णव योग्य, १२ योजन, ४० कोसमें नगरी बसाई । जिसके मध्य भागमें २१ भूमिकाके मकान, श्री आदि राजाके रहने योग्य वनाया (और) सर्व भाई बेटांके योग्य, सात सात भूमिये मकान (और) दूसरोंके योग्य, तीन२ भूमिये मकान वनाये। इसका विस्तार संबंध, सेत्रुंज महात्म्यसें जाण लेना (अब) आदि राजा, चतुरंगिणी सेनाकेवास्ते, प्रथम बोहो तसे। हाथी, घोडे, गाय, भैंशे, प्रमुख, उपयोगी जानवरोंकुं, वनसें मंगायके संग्रह करे (और) च्यार वंशकी स्थापना करी । उग्र १ । भोग २। राजन्य ३ । क्षत्रिय ४ । जिसकुं कोटवालकी पदवी दीवी (सो) उग्र दंड के करनेसें, उग्रवंशी कहलाये १ (तथा) जिसकुं आदि राजाइं, गुरुतुल्य वडे करके माने, तिससें वो भोगवंशी कहलाए २ (तथा) आदि राजा के, स्वजन संबंधि मित्रादिकके, राजन्य वंश कहलाए ३ (और) प्रजागणके सर्व क्षत्री वंश कहलाए ४ (अव युगलियांके आहारकी विधि कहते हें) हीन कालके प्रभावसें, कल्पवृक्ष फल देनेसें रह गए। तब लोक, और वृक्षोंके, कंद मूल पत्र फल फूल खानें लगे । केईक इक्षु का रस पीनें लगे (तथा) सतरे जातिका कच्चा अन्न खानें लगे (परंतु) कितनेक दिनोंतक कच्चा अन्न उनकों जीर्ण न होनेसें, ऋषभदेवजीनें उन कों कहा (कि) तुम हाथोंसे मसलके, तूतडा दूर करके, खाउ (फेर) कितनेक दिनो पीछें, वैसेभी पाचन न होने लगा। तब अनेक भांतसें कच्चा अन्न खानेकी विधि वताई । तोभी काल दोषसें अन्न पाचन न होनें लगा (इस अवसरमें)जंगलोंमे वांसादिक घसनेसें अग्नी उत्पन्न हुई। पहली कित नेक कालतक अग्नि विछेद थी (क्युं कि) एकांत स्निग्ध कालमें (और) एकांत रुक्ष कालमें, अग्नी किसी वस्तूसें उत्पन्न नहिं हो शक्ती है (कदाचित्) कोई देवता विदेह क्षेत्रसें अग्नीकों लेभी आते (तोभी) इहां तत्काल वुझ जाती थी (इसवास्ते) पहले अग्नीसें पकाके खानेका उपदेश नहिं दीया (पीछे) तिस अग्नीकों तृणादि दाह कर्त्ता देखके, अपूर्व रत्न जानके पकडनें लगे। जब हाथ जले, तब भयसें आदि राजाकुं आयके कहा (और)

अपणा हाथ जला ऊवा देखाया (तब) आदि राजानें अग्नी ले आने की, और फल फूल पकायके खानेकी विधि बताई। फेर आप हाथीपर बेठे ऊवे वनमें आये। युगलियेंकेपास लीली मट्टी मंगायके, हस्तीपर बेठे ऊवे सर्वके सामने एक हांडी बनायके दीवी (और) कहा कि, इसकुं अग्नीमें रखके पकावो। हांडी पकके तैयार जई (तब) उसमें धान्यका, जलका प्रमाण, रांधनेकी सर्व विधि बताई। जिसके हाथसें मट्टी मंगाई। और हांडी पकवाई (जिससें) कुंजकार कर्म प्रगट ऊवा। इससेती कुंजकारकुं, प्रजा पति (तथा) पर्याप्ति कहते हें (फेर) सनें सनें, सर्व आहार पकाके खानेकी विधि प्रगट हो गई (औरजी) संपूर्ण कर्म, कला मात्र, अपना पुत्रादिक प्रजा गणकुं बताई। आदि राजाके उपदेशसें, पांच मूल शिल्प (अर्थात्) कारीगर बने। कुंजकार १। लोहकार २। चित्रकार ३। तंतुकार वस्त्र वणनेंवाले ४। नापित ५। (इस) एकेक शिल्पका, अवांतर २० वीस जेद रहे हें। (इससें) सब मिलके१०० जेद शिल्पके प्रशिद्ध ऊवे (तथा) कर्षण कर्म, खेती आदिक करणा। (तथा) वाणिज्य कर्म, व्यापारादिक करनेंकी रीति, तिससें धन उपार्जन करणा। धनका ममत्व करना। धनकों शुज क्षेत्रादिकमें लगाना (इत्यादि) संपूर्ण जगत् प्रशिद्ध कर्म बताये। (प्रथम) मट्टीके संचयोमें, अहरण हथोडी प्रमुख बनाये (पीछे) उससें उपयोगी काम लायक सर्व वस्तु बनाई गई॥ (और) जरतादि पर्या लोकोंको वहोत्तर कला सिखलाई (तथा) स्त्रियोंकों चोसठ कला सिखलाई (इन सर्व कलाके नाममात्र लिखते हें) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुरुषोंकी ७२ कलाका नाम ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ लिखनेंकी कला। २ पढनेंकी कला। ३ गणित कला। ४ गीत कला। ५ नृत्य कला। ६ ताल बजाना। ७ पटह बजाना। ८ मृदंग बजाना। ९ वीणा बजाना। १० वंश परीक्षा। ११ जेरी परीक्षा। १२ गज शिक्षा। १३ तुरंग शिक्षा। १४ धातुर्वाद। १५ दृष्टिवाद। १६ मंत्रवाद। १७ वलि पलित विनाश। १८ रत्न परीक्षा। १९ नारी परीक्षा। २० नर परीक्षा। २१ छंद बंधन। २२ तर्कजल्पन। २३ नीति विचार। २४ तत्व विचार। २५ कविश

क्ति। २६ ज्योतिष शास्त्रका ज्ञान। २७ वैद्यक। २८ षट्भाषा। २९ योगाभ्यास। ३० रसायण विधि। ३१ अंजन विधि। ३२ अठारह प्रकार की लिपि। ३३ स्वप्न लक्षण। ३४ इंद्रजाल दर्शन। ३५ खेती करणी। ३६ वाणिज्य करणा। ३७ राजाकी सेवा। ३८ शकुन विचार। ३९ वायु स्थंभन। ४० अग्नि स्थंभन। ४१ मेघवृष्टि। ४२ विलेपन विधि। ४३ मर्दन विधि। ४४ ऊर्ध्वगमन। ४५ घटबंधन। ४६ घटभ्रमन। ४७ पत्रछेदन। ४८ मर्मभेदन। ४९ फलाकर्षण। ५० जलाकर्षण। ५१ लोकाचार। ५२ लोकरंजन। ५३ अफल वृक्षोंकों सफल करणा। ५४ खड्गबंधन। ५५ छुरीबंधन। ५६ मुद्रा विधि। ५७ लोहज्ञान। ५८ दांत समारण। ५९ काल लक्षण। ६० चित्रकरण। ६१ बाहुयुद्ध। ६२ मुष्टियुद्ध। ६३ दंड युद्ध। ६४ दृष्टि युद्ध। ६५ खड्गयुद्ध। ६६ वागयुद्ध। ६७ गारुडविद्या। ६८ सर्पमर्दन। ६९ भूतमर्दन। ७० योग, सो द्रव्यानुयोग अक्षरानु योग, व्याकर्ण, औषधानुयोग,। ७१ वर्षज्ञान। ७२ नाममाला

॥ ※ ॥ स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ नृत्यकला। २ औचित्यकला। ३ चित्रकला। ४ वादित्र ५ मंत्र। ६ तंत्र। ७ ज्ञान। ८ विज्ञान। ९ दंभ। १० जलस्थंभ। ११ गीतगान। १२ तालमान। १३ मेघवृद्धि। १४ फलवृद्धि। १५ आरामारोपण। १६ आकार गोपन। १७ धर्म विचार। १८ शकुन विचार। १९ क्रिया कल्पन। २० संस्कृत जल्पन। २१ प्रसाद नीति। २२ धर्म नीति। २३ वर्णिका वृद्धि। २४ स्वर्णसिद्धि। २५ तैलसुरभिकरण। २६ लीलासंचरण। २७ गजतुरंग परिक्षा। २८ स्त्री पुरुषके लक्षण। २९ कामक्रिया। ३० अष्टादश लिपि परिछेद। ३१ तत्काल बुद्धि। ३२ वस्तु बुद्धि। ३३ वैद्यक क्रिया। ३४ सुवर्णरत्न भेद। ३५ घटभ्रम। ३६। सार परिश्रम। ३७। अंजन योग। ३८ चूर्ण योग। ३९ हस्तलाघव। ४० वचन पाटव। ४१ भोज्य विधि। ४२ वाणिज्य विधि। ४३ काव्य शक्ति ४४ व्याकरण। ४५ शालिखंडन। ४६ मुखमंडन। ४७ कथा कथन। ४८ कुसुमगुंथन। ४९ वरवेष। ५०। सकल भाषा विशेष। ५१ अभिधाने परिज्ञान। ५२ आभरण पहरण। ५३ भृत्योपचार। ५४ गृहाचार।

५५ शाठ्यकरण। ५६ । पर निराकरण । ५७ धान्यरंधन । ५८ केशबंधन । ५९ वीणादि नाद । ६० वितंमावाद । ६१ अंक विचार । ६२ लोकव्यवहार । ६३ अंत्याक्षरिका । ६४ प्रश्न प्रहेलिका ॥ यह स्त्रीकी ६४ कला कही ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अबकी सर्व संसारीक कला पूर्वोक्त कलायोंका प्रकरभूत है (इसवास्ते) सर्व कला इनहीके अंतर्भाव है (जैसें) प्रथम लिपि कला के १८ भेद दक्षिण हाथसें ब्राह्मी पुत्रीकों सिखाए । तिसके नाम कहते है ॥ १ हंस लिपि । २ भूत लिपि । ३ यक्ष लिपि । ४ राक्षशी लिपि । ५ यावनी लिपि । ६ तुरकी लिपि । ७ किरी लिपि । ८ द्राविडी लिपि । ९ सैंधवी लिपि । १० मालवी लिपि । ११ नडी लिपि । १२ नागरी लिपि । १३ लाटी लिपि । १४ पारसी लिपि । १५ अनिमित्ती लिपि । १६ चाणक्की लिपि ।१७ मूलदेवी लिपी॥१८ उड्डी लिपि॥ (यह) अगरह प्रकारकि ब्राह्मी लिपि, देश विशेषके भेदसें, अनेक तरहकी हो गई । (जैसेंकी) १ लाटी । २ चौडी । ३ माहली । ४ कानडी । ५ गौर्जरी । ६ सोरठी । ७ मरहठी । ८ कौंकणी । ९ खुरासाणी । १० मागधी । ११ सिंहली । १२ हाडी । १३ कीरी । १४ हम्मीरी । १५ परतीरी । १६ मसी । १७ मालवी । १८ महायोधी । (इत्यादि) लिपी सिखाई (तथा) सुंदरी पुत्रीकों वाम हाथसें अंक विद्या सिखाई ।(और) जो जगत्में प्रचलित कला है ।जिनोंसे कार्य सिद्ध होते है । (वे सर्व) श्री ऋषभ देवनें प्रवर्त्ताई है । तिसमें कितनीक कला, कई वार लुप्त हो जाती है । फिर समय पाकर प्रगटभी हो जाती है (परंतु) नवीन कला, वा विद्या, कोइभी उत्पन्न नहिं होती है । जो कला व्यवहार, श्री ऋषभ देवजीनें चलाया है । उसका विस्तार, सर्व आवश्यक सूत्रसें देख लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री आदिराजायें, भरतकेसाथ ब्राह्मी जन्मी थी । तिसका विवाह तो, बाहुबलीकेसाथ किया (और) बाहुबलीकेसाथ, जो सुंदरी जन्मी थी । उसका विवाह भरतके साथ कर दिया । तबसें माता पिताकी दीधी हुइ कन्याका विवाह प्रचलित हुवा । (इससें) पहले एक उदरके उत्पन्न हुवे, भाई बहिनके संबंध होता था (वो) दूर किया ॥ (तब)

लोकभी इसीतरे विवाह करनें लगे (और) विवाहकी विधि, सर्व आदिरा जाके विवाहसमें, इंद्र, इंद्राणियोनें करी थी। उसीमुजब करनें लगे ॥ श्री आदिराजा यें वहुत कालतक राज्य किया। संपूर्ण राज्यनीतीसें, प्रजा के अर्थ, सवतरेके सुख उत्पन्न किये। (इस हेतुसें) श्रीऋषभदेव स्वामीकों सर्व जगत्का कर्त्ता, जैनी लोक मानते है (दूसरे मतवाले) जो ईश्वरकी करी श्रष्टी मानतेहैं। (वेभी) ईश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्का कर्त्ता, व्रह्मा आदि, विष्णु आदि, योगी आदि, भगवान् आदि अर्हंत आदि, तीर्थंकर, प्रथम वुद्ध, महादेव (इत्यादि) जो नाम और महिमा गाते हैं (वे सर्व) श्री ऋषभदेवजीकेही गुणानुवाद हैं (और) कोई श्रष्टीका कर्त्ता नही है ॥ सर्व जगत्का व्यवहार चलाकर शेषमें भरतपुत्रकुं, विनीता नगरीका राज्य दीया ॥ बाहुवली पुत्रकुं, तक्षशिला नगरीका राज्य दीया ॥ शेष ९८ पुत्रोंको उनोंके नामसें, जूदे २ देश वसायके राज्य दीये (जवसें) अंग, वंग, कलिंगादि देशोंके नाम प्रशिद्ध हुवे। (और) सर्व गोत्रियोंकुंभी, यथायोग्य आजीविकाके विभाग कर दिये (इससमें) नव लोकांतिक देवतानें भगवानकुं दिक्षाका अवसर जनाया। भगवान् आप अपणे ज्ञानसें दिक्षाका अवसर जानते हैं (तथापि) लोकां तिक देवोंका यहहीज जीत व्यवहार है (पीछे) संवत्सरी दान देकें, चैत्र वदि ८ के दिन, मच्छ, कच्छ, प्रमुख ४ हजार सामंत पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी। दिक्षाका महोत्सव सर्व, ६४ इंद्रोंनें मिलके करा (तव) भगवानकुं चोथा मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भया। दिक्षा लिये वाद, १ वर्षतक शुद्ध आहार साधूके लेनें योग्य नहिं मिला। जहां भगवान् जावै (वहां) हाथी, घोडे, आभूषण, कन्या, इत्यादिक वहुतसे भेट करे। (परंतु) शुद्ध आहार देनेकी विधि कोइ नही जानें (क्यूं कि) आगे कोइ भिक्षा चर देखा नही था ॥ और भगवान् उससमय त्यागी थे (इसवास्ते) आहार विगर कोइभी पदार्थ ग्रहण करा नहिं। (पीछे) १ वरषके वाद, वैशाख सुदि ३ कुं, हथनापुर आये। (तहां) श्री ऋषभदेव स्वामीका पड पौत्र, श्रेयासकुमरनें जातिस्मरण ज्ञानके वलसें, भगवानकुं इक्षुरसका पार णा कराया। उस वखतमें, ५ द्रव्य देवतानें प्रगट करे। साढा १२ कोड

सोनइयांकी वरषा करी। श्रेयांसका जश तीन भवनमें फेला। तव लोकोंनें आपके पूछा (कि) तुमने ऋषभदेव स्वामीकुं भिक्षार्थी केसेंजाने । तव श्रेयांस कुमरनें आपणे (अरु) ऋषभदेव स्वामीकेसाथ, ८ भवोंका संबंध कह्या (इससेती) भगवान्कुं साधु मुद्रामें देखके, मेरेकुं जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न भया। तिनसें ८ भवोंका संबंध, तथा भिक्षार्थीपणा जाना॥ इसका विस्तार सर्व आवश्यक सूत्रसें जाण लेना॥ जव भगवानकुं एक वर्षतक शुद्ध आहार न मिला (तव) मच्छ, कच्छ प्रमुख ४ हजार पुरुष, जो साथमें दीक्षा लीनी थी (सो) भूखसें पीडित हुवे थके, वनमे गंगाके दोनूं किनारे, तापशपणा धारके, कंद मूल फल फूल खाते हुवे रहनें लगे (और) श्री ऋषभदेव स्वामीका ध्यान जप आदि, ब्रह्मादि शब्दोंसे करनें लगे (इहांसे) ताप शादिककी उत्पत्ति हुई॥ (जव) श्रेयांस कुमरनें आहार दिया। उस दिनसें सव लोक साधूकुं शुद्ध आहार देनेकी विधि जाननें लगे ॥ ※॥

॥※॥ अव विद्याधरोंकी उत्पत्ति कहते है ॥※॥

॥※॥ श्री ऋषभदेवस्वामी दीक्षा लियांकेवाद, १ हजार वर्षतक, देशूंमे छद्मस्थपणें विचरते रहे। तिस अवस्थामें। कच्छ (और) महाकच्छके वेटे। नमि, और विनमीने, आकर, भगवान्की वहुत सेवा भक्ति करी (तव) धरणेंद्र संतुष्टमान होके, ४८ हजार पठित सिद्धविद्या उनकुं देकर, वेताढ्यगिरीकी, दक्षिण और उत्तर, यह दोनूं श्रेणीका राज्य दीया। (तव) तिनके वंशी सव विद्याधर कहलाए (इनही) विद्याधरोंके संतानमें। रावण, कुंभकर्ण, वालि, सुग्रीव, हनूमानादि, सर्व विद्याधर भए हैं॥

॥※॥ (एकदा) छद्मस्थ अवस्थामें भगवान् विहारकर्त्ते, तक्षशिला नगरीमें गए। वहां वाहिर, वागमें काउसग्ग करकें खडे रहे। यह खवर उहांके राजा, वाहुवलजीकुं हुई। (तव) वाहुवलीनें मनमें विचार करा। कि प्रभातसमें वडे आडंवरके साथ, पिता श्री ऋषभदेवजीकुं वांदनेकुं जाउंगा॥ जव प्रभातसमें, वडे आडंवरसें वांदनेकुं गया (तो) वहां भगवानकुं नदेखा। वनमालीसें सुना (कि) भगवान् तो, सूर्य उगतेही विहार कर गए (तव) वाहुवली वहुत उदासहुयके, जहां भगवान् काउसग्ग मुद्रामें उभे थे। उसजगे कानूंमे अंगुली घालकें (वावा आ

दम, बाबा आदम) ऐसे ऊंचे स्वरसें पुकारके, उसी चरनूंके ठिकाने, रत्न भई थुंभ बनाके, धर्मचक्र तीर्थ स्थापितकरा । (यह) धर्मचक्र तीर्थ विक्रम राजाके राज्यतक तो रहा (पीछे) म्लेच्छादिकके बहुतसे प्रचारसें, धर्मचक्र तीर्थ, ऐसा नाम तो नष्ट भया (और) यवन लोकोंने उसका नाम, मक्का, ऐसा प्रशिद्ध करा (और) अवलसें तो यवनादिकभी, मद्यमांशादिक अभक्ष नहिं खाते थे । यवनोंके मतमेंभी, नसादिक अभक्ष खाना नहि कहा है (तथापि) जो केइ खाते है । सो धर्मसें विरुद्ध है ॥ और श्रीऋषभदेव स्वामी । जिन २ देशोंमे विचरे । वहांका लोकतो प्रायें सरलस्वभावी दयावंत हुवे (और) भगवान् जिनदेशोंमे नगए (अरु) जिनूंनें भगवान के दर्शन नहिंकरे (वो) सर्व म्लेछ, अनार्य, निर्दयी, हो गए। अनेक अपनी कल्पनाके मत माननें लगे । उनका व्यवहार औरतरहका हो गया ॥

॥ ※ ॥ (इस कारणसें) सर्व वरणोंका (तथा) सर्व मत मतांतरका (तथा) सर्व वैद्यक, ज्योतिष, मंत्र, तंत्रादिक, संपूर्ण कला कौशल्यका मूल उत्पत्तिकारण, श्री ऋषभदेवस्वामी भए ॥ (जब) श्री ऋषभदेवस्वामीकुं चारित्र लियेबाद, १ हजार वर्ष व्यतीतभए (तब) विहार करके विनीता नगरीके पुरिमताल नामा बागमें आये (जिसकुं) इस्समय प्रयागजी कहते है (उहां) वड वृक्षके नीचे, तेलेकी तपस्यायुक्त, मिति फाल्गुन वदि ११ के दिन, प्रथम प्रहरमें, संपूर्ण लोकालोक प्रकाशक, केवल ग्यान, केवल दर्शन, उत्पन्न हुवा (उसीवखत) ६४ इंद्र । भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकके देवगण, सर्व आयके समोसरनकी रचना करी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब समवशरनका किंचित स्वरूप लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम भुवनपति, वायुकुमारदेवता, १ योजन पृथ्वीका कच्चरादिक दूरकरके शुद्ध करे (तदनंतर) भुवनपति मेघ कुमार नामें देवता, १ योजन पृथ्वीपर सुगंधि जलकी वर्षा करे (तदनंतर) व्यंतर देवता उसी पृथ्वीपर गोडे प्रमाण सुगंधि पुष्पोंकी वर्षा करे (पीछे) व्यंतरदेव पुष्पोंके ऊपर, वनस्पतिकुं बाधा रहित, १ योजनमें, रत्नोंकी पीठका बनावे । इस पीठकाके ऊपर, भुवनपति देवता, रूपेमई गढ, सुवर्णमई कांगरांकी रचना करे॥ तिसके च्यारुंदिशे, ४दरवाजा । छत्र, चामर, तोरण,

८ मंगलीक, धूपघटी (प्रमुख) वर्णन सहित करे (तिसके अंदर) ज्योतिषी देवता) रत्नमई कांगरायुक्त, सुवर्णमई कोट, ४ दरवाजा सहित करे । तिसके अंदर) वैमानिक देवता, मणि रत्नमई कांगरासहित, रत्नमई कोट ४ दरवाजा सहित करे ॥ दरवाजाका वर्णन पूर्ववत् जाण लेना, (अब) इसकोटके मध्यमें, रत्नोंमई १ पीठका बनावें । तिसकेऊपर मध्यभागमें १ रत्नमई स्थटक, वृक्षका थांणा बनावे । तिसके ऊपर, छत्र चामरादि विभूति सहित अशोकवृक्षकी रचना करें । तिस अशोकवृक्षके नीचे, रत्नजडित सुवर्णमई ४ दिशे ४ सिंहाशन स्थापन करे । तिसऊपर, तीन छत्र (अरु) दोनुं तरफ चामर रहे । (और) इसीतरह वर्णवसहित भगवान्के बैठनेके लिये, स्वर्णरत्नमई मध्यकोटके वीचमें देवछंदेकी रचना करे । ऐसा वर्णन सहित समोसरणमें, भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी पूर्वके दरवज्जे प्रवेशकरके, चैत्यवृक्षके चौतरफ, प्रदक्षिणाभूत फिरते हुवे, नमस्तीर्थाय, ऐसा वचन बोलके पूर्वाभिमुख बैठे (शेष) तीन दिशाके सिंहाशनपर, भगवान्के समान, प्रतिबिंब इंद्र, स्थापित करे (परंतु) भगवानके अतिशयसें (और) देवानुभावसें चारे दिशासें आनेवाले लोकोंकूं, साक्षात् ऋषभदेव स्वामी, सन्मुख बैठे, उपदेश देते मालुम हुवे (जब) चार मुखसें धर्मोपदेश देते देखके, लोकोंनें ऋषभदेव स्वामीकुं, चतुर्मुख ब्रह्मा, ऐसे नामसें केनें लगे (धनंजयकोशमेंभी, ऋषभदेव स्वामीका नाम ब्रह्मा लिखा है) जबीसें भगवानका नाम, ब्रह्मा प्रसिद्ध हुवा ॥

॥ ※ ॥ (जब) श्री ऋषभदेव स्वामीने केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा सुना (तब) भरत चक्रवर्त्ति राजाः परिवार सहित, वंदन नमस्कार करनेकूं, और धर्मोपदेश सुणनेकूं आते, रस्तेमें हाथीपर बैठी हुई, मरुदेवी माता, समोसरण, छत्र, चामरादि, अपनें पुत्रका अतिशय देखतेही शुद्ध भावसें केवलज्ञान पायके, मोक्षकुं प्राप्ति भई (तब) भरत राजा, हर्ष शोच सहित समवसरणमें आया । वहां भगवान्के मुखसें धर्मोपदेश सुनके, भरत राजाके ५०० पुत्र, और ७०० पोतूंने दीक्षा ग्रहण करी (तथा) ऋषभ देव स्वामीकी पुत्री, ब्राह्मी प्रमुख, अनेक स्त्रीयोंने दीक्षा ग्रहण करी (इनूंमे) भरत राजाके, वडे पुत्रका नाम, ऋषभसेन पुंडरीक था (वो) भगवानके प्रथम गणधर हुवा (यह) पुंडरीक गणधर, शत्रुंजय पर्वतउपर अंतमें मोक्ष

गया (इससें) शत्रुंजय तीर्थका नाम पुंडरीक गिरि प्रशिद्ध भया (इसी मुजब) शत्रुंजय तीर्थके अनेक नाम ऊये (वोहोतसे) स्त्री, पुरुषोंने, देशविरति श्रावक धर्म अंगीकार करा (इस तरह) साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध संघ स्थापित करा । आगे कितनेकवरसोंसें विछेद ऊवा थका, इहांसें फिर, साधु श्रावक धर्म प्रवर्त्तन ऊवा (इस समयमें) परिव्राजक सांख्य मतवालूंकी उत्पत्ति भई ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब शांख्यमतका स्वरूप लिखते हें ॥ ※ ॥

॥ भरतजीके ५०० पुत्रोंने दीक्षा लीथी (उसमे) एकको नाम मरीची था (सो) साधुपना पालना महाकठिन देखकै, नवीन मन कल्पित वेष धारन करा (क्यूं कि) पीछा गृहवास करनेमें तो, अपनी हीनता जानके, आजीविका चलानेके लिये मत स्थापित कीया ॥ इस रीतिसें अपना व्यवहार बनाया (कि) साधु तो, मनदंड वचनदंड कायदंड, इन तीनों दंडोंसे रहित है (और) में तो इन तीनों दंडां करके संयुक्त ऊं । इसवास्ते, मुजकों त्रिदंड रखना चाहिये (दूसरा) साधू तो द्रव्य अरु भाव करके मुंडित है। सो लोच कर्त्ते है (अरु) में तो द्रव्य मुंडित ऊं (इसवास्ते) मुझे उस्तरे पाछनेसें मस्तक मुंडवाना चाहिये । शिखाभी रखनी चाहियै (तीसरा) साधु तो पंचमहाव्रत पालते हे (अरु) मेरे तो सदा स्थूल जीवकी हिंसाका त्याग रहो ॥ (चौथा) साधु तो निः कंचन है (अर्थात्) परिग्रह रहित है । अरु मुझकों एक पवित्रिकादि रखनी चाहिये । (पांचमा) साधु तो शीलसें सुगंधित है । अरुमें ऐसा नही ऊं (इसवास्ते मुझे चंदनादि सुगंधि लेनी ठीक है (छठा) साधु तो मोह रहित है (अरु) में मोह संयुक्त ऊं । इसवास्ते मुझे मोहाछादितकों छत्री रखनी चाहियै (सातमा) साधू जूते रहित है । मुजकों पगोंमे कुछ जूती प्रमुख चाहियै (आठमा) साधू तो निर्मल है । इसवास्ते उनके शुक्लांबर वस्त्र है (अरु) में तो क्रोध मान माया अरु लोभ, इन च्यारों कषायों करकें मेला ऊं (इसवास्ते) मुजे कषायला वस्त्र, (अर्थात्) गेरुसें रंगे ऊवे भगमे वस्त्र रखने चाहिये (नवमा) साधु तो सचित्त जलके त्यागी है । (इसवास्ते) में छाणके सचित्त जल पीऊंगा । स्नानभी करुंगा । (इस तरे) स्थूल मृषावादादिकसें नि

वृत्त ज्ञवा। इस प्रकारसें मरीचिने स्वमतसें अपणी आजीविकाकेवास्ते लिंग वनाया। यही लिंग परिव्राजकोंका उत्पन्न नया। यह मरीचि इस नेषसें नग वानूकेसाथ विचरता रहा (तव) लोक इसका साधुवोंसे विसदश लिंग देखकें पूछ (तव) मरीचि, साधुका धर्म यथार्थ वतायके कहा (कि) ऐसा कठिन धर्म, हमारेसें पला नहीं (तव) मैंनें यह लिंग धारण किया है। यह मरीचि समोसरणके वाहिर प्रदेशमें वैठा रहता (ज्हां) जो कोई इसकेपास उपदेश सुनता,उसकूं यथार्थ धर्मसें प्रतिवोध देके, नीतर नगवानूकेपास नेज देता था (पीछे) एकदासमें मरीचि रोगाग्रस्त ज्ञवा। तव विचार कीया (कि) म्हें कुलिंगी ज्ञं। इसवास्ते साधू लोक तो मेरी वेयावच्च नहिं करते है (और) मुझे कराणीनी युक्त नही हैं। इससें अवके शरीर अछा होने से, मेरे लायक कोई शिष्य करुंगा (जव) मरीचि अछा ज्ञवा। पीछे थोमा दिनके वाद, एक कपिल नामे राजपुत्र, मरीचकेपास धर्म सुणनेकूं आया (तव) मरीचनें यथार्थ साधु धर्मका स्वरूप वर्णन कीया। तव कपिल वोला (कि) साधू धर्म उत्तम है (तो) तुमने ऐसे नेष काहेकूं धारण करा। तव मरीचि वोला (कि) साधु धर्म हमारेसें पल नही सका। इससें म्हेनें यह लिंग स्वमति कल्पित धारण कीया है। (इस सेती) तुम नग वानूकेपास जायके दीक्षा ग्रहण करो। तव कपिल राजपुत्र समवसरणके नीतर गए (वहां) श्री ऋषन्न देव स्वामीकों, छत्र चामरादि सिंहासनयुक्त राज्यलीला नोगवता देखके, पीछ मरीचिकेपास आयके केनें लगा (कि) श्री ऋषन्नदेव स्वामी तो राज्यलीला सुख नोगवते हैं। इसवास्ते उसका धर्म तो मुजकूं रुचे नही। अव तेरेपास कुछ धर्म है, या नही है। तव मरीचिने जाना (कि) यह नारी कर्मा जीवहै। मेराही शिष्य होने योग्य है। इस लोनसें मरीचिने कहा (कि) वहांनी धर्म है। और मेरेपासन्नी देशे धर्म है। (तव) कपिल मरीचकेपास दीक्षा लेके शिष्य ज्ञआ (सरपाः सरपेन रज्यंते इति वचनात्)॥ यह सांख्य मतके प्रवर्त्तक, कपिलमुनीकि उत्पत्ति कही॥ (उस्समय) मरीचिके तथा कपिलकेपास कोईनी उसके धर्मसंवंधी पुस्तक नही था॥ निःकेवल जो कुछ आचार मरीचिने वताया उस प्रकारे कपिल कर्त्ता रहा॥ (और) मरीचिने, शिष्यके लोनसें, मेरे

भासन्नी किंचित् धर्म है (ऐसे) उत्सूत्र भाषणेसें एक कोटाकोटि सागरोपम लग जन्म मरण करके, अंतमे २४ मा तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी हुआ उस मरीचिके काल करे पीछे, कपिल मरीचिके वताया यथार्थ ज्ञानशून्य आचारमें चलता रहा। उस कपिलमुनीके, आसुरी नामे शिष्य हुवा। औरभी वहोतसे शिष्य हुए (जिनकुं) पुस्तकशून्य, आचार मात्र, ज्ञान वतलाया। शिष्यूंके ऊपर, वहुतसा प्रेम रखता थका, कपिल मुनि, शेषमें काल करके, ५ मा ब्रह्म देवलोकमें देवता हुवा। उत्पत्तिके अनंतर, तत्काल अवधि ज्ञानसें देखा। कि मेनें परभवमें क्या दान पुन्य करा है। तव पूर्व भव देखनेसें, अपणा आसुरी प्रमुख शिष्यांकूं ग्रंथ ज्ञान शून्य देखा। तव विचार कीया। कि मेरे शिष्य कुछ जानते नही है (इसवास्ते) म्हें इस कुं कुछ तत्वोपदेश करुं। ऐसा विचार करके, कपिल देव आकाशमें, पंच वर्ण संमपमें रहकर, तत्वज्ञानका उपदेश कर्त्ता भया। अव्यक्तसें व्यक्त प्रगट होता है (इत्यादि) धर्मका स्वरूप आकासवानीसें सुनके, आसुरीनें तिस अवसरमें, षष्टि तंत्र, प्रमुख अनेक ग्रंथ वनाये (फेर) इसकी संप्रदायमें एक संख नामा आचार्य हुवा। (तवसें) इस मतका सांख्य मत नाम प्रशिद्ध हुवा (वास्तवमें) सांख्य परिव्राजक संन्यासियोंके लिंगका, आचारादिकका मूल, यह मरीचि हुवा। एक जैन मतके विगर, सव मतोंकी जम्, इसकूं समझना चाहिये ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अव जैन पंन्डित ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति लि० ॥ ॥

॥ ॥ (जिस दिन) श्री ऋषभदेव स्वामीकूं केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा। उसी वखत भरत राजाके, आयुध शालामें हजार देवाधिष्टित चक्ररत्न उत्पन्न हुवा। दोनू तरफका वधाईदार साथमे आया। उन दोनुंकूं वधाई देके धर्मकूं मोटा जानके, प्रथम केवल ज्ञानका उछव करके, पीछे चक्ररत्नका उछव करा (औरभी) हजार हजार देवाधिष्टित १३ रत्न उत्पन्न भए। इस १४ रत्नोंके संयोगसें, भरत क्षेत्रके, छं खंममें, अपनी आज्ञा मनाई (इस वास्ते) इसका नाम, भरतखंम, ऐसा प्रशिद्ध हुवा॥ (जव) छ खंम साधके, भरत पीछा विनीता नगरीमें आया। (तथ पि) चक्ररत्न आयुध शालामें प्रवेश करे नहि (जव) अपणेएए भाइयांकूं अपणी आज्ञा मनाणेके

लिये दूत भेजा। (तब) बाहुबलजी बिगर ए८ भाइयांने विचार किया (कि) राज्य तो हमकूं, पिता ऋषभदेव स्वामी देगए है (तो) इस भरत की आज्ञा कैसें माने। चलो, अब पिताकूं पुछै। जो पिता आज्ञा देवेगा सो करेगें। ऐसा विचारके भगवान्‌केपास गए (तब) ऋषभदेव स्वामीनें मनका अभिप्राय जानके, ऐसा उपदेश करा। जिनसें ए८ भाइयोंनें दीक्षा ग्रहण करी। सब छगमे छोम दीये (और) बाहुबलजी दूतके मुख सें सुनके, बहुतसे क्रोधमें आयके युद्धकी त्यारी करी (तब) भरतजीभी चढके आये। दोनूंके आपसमें बडा युद्ध हुवा॥ भरत तो चक्रवर्त्ती था (और) बाहुबलजी बहोत बल पराक्रमका धरनेवाला था (इसवास्ते) कोइभी युद्धमें हारा नहि। चक्ररत्न, गोत्रपर चले नहि। इसवास्ते भरतजी जीत सके नही (शेषमें) बाहुबलजी आपसें समझके दीक्षा ग्रहण करी। तब लोकोंमे भरतजीकी अपकीर्त्ति भई (पीछे) भरतजीभी अपणा सब भाईयोंकूं दीक्षालीवी सुनके, चित्तमें उदास होके, उनोंकूं राजी करणेकेलिये, भोजन करानेकों। पकवानोंके गाम्हे भरायके, भगवान्‌के, समोसरणमें आया (और) केनें लगा, कि अपना भाइयोंकूं भोजनकरायके, मेरा अपराधकुं माफ कराऊंगा (तब) भगवान् श्री ऋषभदेवस्वामी कहनें लगे (कि यह) आहार, साधुवोंके लेनें योग्य नहि (तब) भरतजी मनमे उदास होके केनें लगे (कि) यह आहार किसकूं देउं (तब) भगवाननें कहा, जो तेरेसें गुणोंमें अधिक होय, ऐसे वृद्धश्रावक सार्धमीयांकूं भोजन कराव। तब भरतजीनें बहुत गुणवान् श्रावकोंकुं वो भोजनजिमाया (और) उन श्रावकोंकूं ऐसा कह दीया (कि) तुम सब जने मिलकर सदेव मेरे इहां भोजन कर लियां करो। (औरभी) जो खरच तुमारे चहीये (सो) मेरे भंमारसें लेलीयां करो॥ (और) वाणिज्यादिक सर्व काम छोमके, स्वाध्याय करनेमें, पढने पढानेमें, भगवान्‌को धरम प्रवर्त्तन करनेमें, सदाकाल सावधान रहो (और) मेरे महिलूंकेपास रहते हुवे मेरेकूंभी ऐसे वचन सुनाते रहो। (जितो भवान् वर्द्धते भयं। तस्मात् माहन माहन) तब जो वृद्धश्रावक भरतजीके कहनेसें सब काम छोमके निःकेवल धरमकार्य करणेमें उद्यमवंतभए (तबसें) जैनी पंमित, वृद्धश्रावकोंकी उत्पत्ति

भई। श्री अनुयोगद्वारजी सूत्रमेंभी, जैनी पंडित श्रावकोंका नाम, वृद्धसावया ऐसा लिखाहै, यह वृद्धश्रावक भरतजीके महिलोंकेपास बैठे हुवे (जितोभवान्) इस पूर्वोक्त वचनकूं सदाकाल उचारन कर्त्तेरहे। (और) भरतजी तो सदा काल भोगविलासमें मग्न रहते थे (तथापि) वृद्धश्रावकोंका वचन सुनके, मनमें चिंतवन करनें लगे। कि मुझकुं किसनें जीताहै। तब स्मरन हुवा। कि मेरेकुं। क्रोध, मान, माया, लोभ, कषायादि कसें, मोहराजा जीत रयाहै (इससेंती) हूं संसारमें मग्न हो रयो हूं। मेरे भाइयादिक सर्व धन्य है। जिनोंनें राज्य छोडके चारित्र ग्रहणकीया है। इत्यादिक धर्मकी वार्त्ता स्मरण करनेसें, दिलमें वैराग्य उत्पन्न होताथा (और) वृद्ध श्रावक, वेरवेर, माहन माहन, पूर्वोक्त वचन कहनेसें, लोक सर्व, उन वृद्धश्रावकांकुं, माहन ऐसे नामसें कहने लगे (तबसें) यह जैनी ब्राह्मण उत्पन्न भए। प्राकृत भाषामें ब्राह्मणकुं माहन नामसें लिखा है। प्राकृत व्याकरणसें, ब्राह्मण शब्द, बंभण (अरु) माहन, इस दोय नामसें सिद्ध होता है। ऐसे श्रावक माहन भोजन करनेवाले, दिन २ बढ़तवधे। तब रसोईदार भरतजीकुं कहा। कि इनोंमें श्रावककी, वा अन्य पुरुषकी, क्या मालम पडे। तब जितने श्रावक थे। उनकुं बुलायके सर्वकी परीक्षा करी। श्रावक जानके भरतजीनें उनोंके शरीरमें, कांकणी रत्नसें तीन२ रेखाका चिन्ह कीया (इससें) जिनोपवीत धारनकी रीति प्रशिद्ध भई॥ (पीछे) भरतजीका वेटा सूर्ययश हुवा। जिसके संतानवाले, भरतक्षेत्रमें, सूर्यवंशी कहे जाते हैं (अरु) बाहुबलीका बडा पुत्र, चंद्रयश था (तिसके) संतानवाले, चंद्रवंशी कहे जाते हे। श्री ऋषभदेवजीके कुरुनामे पुत्रके संतानवाले सर्व कुरुवंशी कहे जाते हैं। (जिनमें) कौरव, पांडव हुये हैं (जब) भरतका बेटा, सूर्ययश सिंहासनपर वेठा था। तब तिसकेपास कांकणी रत्न नहि था (क्यों कि) कांकणीरत्न चक्रवर्त्ति शिवाय और किसीकेपास नहि होता है। (इसवास्ते) सूर्ययश राजानें, ब्राह्मण श्रावकांके गलेमें, सुवर्णमय जिनोपवीत करवा दीये। तथा भोजन प्रमुख सर्व भरतमहाराजकीतरे देते रहे (जब) सूर्यजशका वेटा, महायश, गद्दीपर वेठा (तब) तिसने रूपेके जिनोपवीत बनवा दीये। आगे

तिनके संतानोंने पंचरंगे रेशमी पट्टसूत्रमय जिनोपवीत बनाते रहे । इस पीछे सादेसूतके बनाये गये । यह जिनोपवीतकी उत्पत्ति कही ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब चार वेदोंकी उत्पत्ति लिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जब भरतजीनें, ब्राह्मणाकूं बहुतसा मान्या पूज्या (तब) दूसरे भी लोक ब्राह्मणाकूं दानादिक देनें लगे (और) धर्मकृत्य सर्व उनूंकेपास सीखनें लगे । तथा करानें लगे (तब) भरत चक्रवर्त्तिनें, ऋषभदेवस्वामी के वचनानुसारे, तिन ब्राह्मणूंके, स्वाध्याय करनेंकेवास्ते, श्री भगवान् ऋषभ देवस्वामीकी स्तवनागर्भित, (और) पूजा, प्रतिष्ठादि, श्रावक धर्मका, संपूर्ण स्व रूप गर्भित, ८ कर्म, ७ नय, ४ निक्षेपा, ९ तत्व, । क्षेत्र प्रमाणादिक गर्भि त, बहुत मंत्रयुक्त ४ वेद रचे (तिनके यह नाम) १ संसार दर्शन वेद । २ संस्थापना परामर्शन वेद । ३ तत्वावबोधन वेद । ४ विद्या प्रबोध वेद । इन च्यारोंमें, सर्व नय वस्तूके कथन संयुक्त तिन ब्राह्मणांकों पढाये । भरत के ८ पाटतक तो, ब्राह्मणांकी भक्ति भरतजीकी तरे करते रहे ।(पीछे) प्रजा भी ब्राह्मणांकों भोजन करानें लगी(तबसें) सर्व जगे ब्राह्मण पूजनीक सम जे गये । इस पीछे (आठमा) तीर्थंकर, श्री चंद्रप्रभ स्वामीके वखततक, सर्व ब्राह्मण जैन धर्मी श्रावक रहे (अरु) चंद्रप्रभु भगवान्के पीछे, कितना क काल व्यतीतभये, इस भरतखंडमें, जैन मत (अर्थात्)चतुर्विधसंघ, और सर्वशास्त्र विछेद हो गये । (तब) तिन ब्राह्मणा भासोंकों लोक पूछनें लगे । (कि) धर्मका स्वरूप हमकों बतलावो । तब तिनोंने जो मनमें माना । (और) अपणा जिसमें लाभ देखा सो धर्म बतलाया । अनेक तरहके ग्रंथ बनाते रहे (जब नवमा) श्री सुविधिनाथ पुष्पदंत अरिहंत हुए । तिनोंने जब फेर जैन धर्म प्रगट करा (तथापि) कितनेक ब्राह्मणा भासोंने न माना स्वकपोल कल्पित मतहीका कदाग्रहरक्खा (जबसें) अन्य मति ब्राह्मण भए (और) उलटे जिन धर्मके साधुवांके द्वेषी बन गए (इसी तरे) ७ भगवानके अंतर कालमें जिनधर्म विछेद होता रहा (इससें) बहुत मिथ्या धर्म वढता गया ॥ (यदुक्तं आगमे) सिरिभरहचक्कवट्टी । आय रियवेयाण विस्सु उप्पत्ती । माहण पढणत्थमिणं । कहियं सुहझाण विवहारं ॥ १ ॥ जिण तित्थे वुछिन्ने । मिछत्ते माहणेहिं तेठविया । अस्संजयाण

पूआ। अप्पाणंकाहियातेहिं ॥ १ ॥ (इत्यादि) ॥ (फेर) कितनेक काल पीछे, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद, अरु पर्वत, प्रमुख ब्राह्मणा भासोंनें, धनके लोभसें, तिन वेदांमें जीव हिंसा प्रमुख प्ररूपणा करके उलट पुलट कर भारे। जैन धर्मका नामभी वेदांमेंसे निकाल दीया। वलकी अन्योक्ति करके (दैत्पदस्युवेदवाह्य) इत्यादिनामोंसे, साधुआंकी निंदा गर्भित, १ ऋग्। २ यजु। ३ साम। ४ अथर्वण, ये ४ नाम कल्पन कर दीये। (यही वात) वृहदारण्य उपनिषदके भाष्यमें लिखा है (कि) यज्ञोंका कहनेवाला सो यज्ञवल्क्य। तिसका पुत्र याज्ञवल्क्य। इस कहनेसेंभी यही प्रतीत होता है। जो यज्ञांकी रीति, प्राय याज्ञवल्क्यसेंही चली हे (तथा) ब्राह्मण लोकांके शास्त्रमेंभी लिखा है(कि)याज्ञवल्क्यनें पूर्वली ब्रह्मविद्या वमके, सूर्यपासे, नवीन ब्रह्मविद्या सीखके प्रचलित करी (इस्से) यही अनुमान निकलता है (जो) याज्ञवल्क्यनें, प्राचीन वेद छोडके नवीन वेद वनाये। (इस्सें) वर्त्तमान ४ वेद (और) जीव हिंसायुक्त यज्ञकी उत्पत्ति, प्राय याज्ञवल्क्यादिकोंसें हुई संभव है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (तथा) श्री तेसठ सलाका पुरष चरित्र ग्रंथमें, आठमें पर्वके दूसरे सर्गमें, ऐसा लिखा है (कि) काशपुरीमें, दो सन्यासणियां रहती थी, तिसमें एकका नाम सुलसा था (अरु) दूसरीका नाम सुभद्रा था, (यह) दोनूंही वेद अरु वेदांगोकी जानकार थी। (तिस) दोनुं वहिनोंनें वहुतसे वादियोंको वादमें जीते। (इस अवसरमें) याज्ञवल्क्य परिव्राजक, तिनके साथ वाद करनेंकों आया, आपसमें ऐसी प्रतिज्ञा करी (कि) जो हार जावै। वो जीतनेंवालैकी सेवा करै। (तव) याज्ञवल्क्यनें, सुलसाकों वादमें जीतके, अपनी सेवा करनेंवाली वनाई ॥ सुलसाभी रात दिन याज्ञवल्क्यकी सेवा करनें लगी। (अरु) दोनुं युवान थे, इसमें कामातुर होके, आपसमें भोगविलास करनें लग गए। (सत्र है) कि अग्निकेपास, घी रहनेंसें पिघलैईगा (तथा) घी, घास, फूस, मिलनेंसें, अग्नि वधैईगा (निदान) दोनुं काम क्रीडामें मग्न होकर, काशपुरीके निकट, कुटीमें वास करते थे (तव) याज्ञवल्क्य, सुलसाके पुत्र उत्पन्न भया (तव) लोकोंके उपहासके भयसें, उस लडकेकों, पीपलके वृक्ष नीचे छोडकर, दोनुं भागके

कहाइं चले गए ॥ (यह वृत्तांत) सुलसाकी बहन, सुभद्रानें सुना ।(तव) तिस वालककेंपास आई (जव) वालककों देखा (तो) पीपलका फल स्वयमेव मुखमें पमा हुवा चवोल रहा है (तव) तिसका नामभी पिप्पलाद रक्खा । (और (तिसकों अपनें स्थानमें ले जाकें यत्नसें पाला (अरु) वेदादि शास्त्र पढाए (तव) पिप्पलाद वमा वुद्धीमान् हुवा । वहुत वादियोंका अभिमान दूर किया (पीछे) तिस पिप्पलादकेसाथ सुलसा (और) याग्यवल्क्य, यह दोनुं वाद करनेंकों आए (तव) तिस पिप्पलादनें दोनुंकों वादमें जीत लिया (और) सुभद्रा मासीके कहनेंसें जान गया (कि) यह दोनुं मेरा माता, पिता है ॥ और मुझे जन्मतेकों निर्दयी होकर छोम गये थे (इससें) वहुत क्रोधमें आया (तव) याज्ञवल्क्य (अरु) सुलशाके आगे । मातृमेध, पितृमेध, यज्ञोंकों युक्तियोंसें स्थापन करके, पितृमेधमें याग्यवल्क्यकों, (और) मातृमेधमें, सुलसाकों मारके होम करा (यह) पिप्पलाद, मीमांशक मतका मुख्य आचार्य हुआ ॥ इसका वातली नामें शिष्य हुवा (तवसें) जीव हिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित हुए (इससें) याग्यवल्क्यके वेद वनानेंमें कुछभी संका नही (क्यों कि) वेदमें लिखा है (याज्ञवल्केति होवाच) अर्थात् याग्यवल्क्य ऐसें कहता हुवा (तथा) वेदमें जो साखा है, वे वेदकर्त्ता मुनियोंकेही सव वंसे हें (इसी तरे) श्री आवश्यकजी मूल सुत्रमें लिखा है (कि) जीव हिंसा संयुक्त, जो वेद है (सो) सुलसा (अरु) याग्यवल्कादिकोंनें वनाये हें (और) कितनीक उपनिषदोंमें पिप्पलादकाभी नाम है (तथा) और मुनियोंकाभी कितनेक जगेमें नाम है । जमदग्नि, काश्यपतो वेदोंमें खुद नामसें लिखे हें । फेर वेदोंके नवीन होनेंमें कुछ संका नही॥(इस पीछे)महाकाल असुरके सहायसें, पर्वतनें, वहुत जीव हिंसा संयुक्त वेद प्रचलित किये है । उसका विशेषअधिकार आवश्यक सुत्र, तेसठ शलाका चरित्रादिकमें लिखा है। उहांसें देख लेना(यह) जैन ब्राह्मण, जैन वेद, (तथा) प्रसंगसें, अन्यमत वेदोत्पत्ति कही ॥ (अव) श्री ऋषभदेवस्वामीके परिवारकी संख्या कहते हें ॥ भगवान् श्री ऋषभदेव स्वामीके सर्व ८४००० साधु हुए (जिसमें) पुंमरीकजी प्रमुख ८४ गणधर हुए ॥ ब्राह्मीजी प्रमुख (३०००००) साध्वी हुई ॥

(१०६००) वेक्रिय लब्धिधारक हुए ॥ १२६५० वादी विरुद धारक हुए ॥ (९०००) अवधिग्यानी हुए ॥ (२००००) केवल ग्यानी हुए (१२७५०) मनपर्यव ग्यानी हुए ॥ (४७५०) चौदे पूर्वधारी हुए ॥ (३५००००) श्रावक हुए ॥ (५५४०००) श्रावकएयां हुई (इत्यादि) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें कैलाश पर्वतके ऊपर अठम तप करके संयुक्त, अनशन किया । पद्मासन मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति माघ वदि १३ के दिन, (१००००) पुरषांकेसाथ, ८४ पूर्व लाख वरषको आऊषोपूरण करके, सिद्धिस्थानको प्राप्त भए ॥ (जब) श्री ऋषभदेव स्वामीका कैलाश (तथा) दूसरा नाम अष्टापद पर्वत ऊपर, निर्वाण हुवा (तब) ६४ इंद्रादि सर्व देवता निर्वाण उत्सव करनेंकों आए, तिन सर्व देवताओंमेंसुं, अग्निकुमार देवतानें श्री ऋषभदेवकी चितामें अग्नि लगाई (तबसेंही) यह श्रुति लोकमें प्रसिद्ध हुई है (अग्नि मुखावै देवा) अर्थात्, अग्नि कुमार देवता, सर्व देवताओंमें मुख्य है (और) अल्प बुद्धियोंनें तो इस श्रुतिका ऐसा अर्थ बना लिये हें (कि) अग्नि जो है, सो तेतीस कोड देवताओंका मुख हे ॥ भगवानके निर्वाणका स्वरूप, सर्व आवश्यक सुत्र, (तथा) जंबुद्वीपपन्नत्तीसें जान लैना (जब) भगवानकी चितामेंसें, दाढां दांत वगैरे सर्व इंद्र, देवतादिक, अपनें २ देवलोकमें, पूजाके निमत्त लेजानें लगे (तब) वृद्ध श्रावक ब्राह्मण लोक मिलकर, बहुत विनय संयुक्त, देवताओंसें याचना करनें लगे (तब) देवता लोक, अहो याचका २, ऐसा बोलके देनें लगे (तबसें) ब्राह्मणांकों याचक कहनें लगे (और) ब्राह्मणोंनें, श्री ऋषभदेवकी चितामेंसें अग्नि लेकर, अपनें २ घरोंमें स्थापन करते हुए (इससें) ब्राह्मणांकों आहिताग्नय कहनें लगे ॥ श्री ऋषभदेवकी चिता जले पीछे, दाढादिक तो सर्व इंद्रादिक ले गए (बाकी) भस्मी अर्थात् राख रह गई, सो ब्राह्मणोंनें थोडी थोडी सर्व लोकोंकों दीनी (तब) उस राखकों लेकै सबनें अपनें मस्तकपर त्रिपुंडाकारसें लगायी (तबसें) त्रिपुंड लगाना सरु हुवा । (और जब) भरतजीनें कैलास पर्वतके ऊपर, सिंहनिषद्या नामें मंदर बनाया (उसमें) श्री ऋषभदेवस्वामीकी (और) आगे होनेंवाले

२३ तीर्थंकरोंकी, सर्व चौवीश प्रतिमा, अपना २ वर्ण प्रमाणमुजब, चारेंई दिशामें संस्थापन करी (और) दंम रत्नसें पर्वतकों ऐसें बीला (कि) जिस ऊपर कोई पुरुष पांवासें न चढ सके । (उसमें) एकेक जोजन ऊंचा ८ पगथिया रखा (इससें) कैलाश पर्वतका, दूसरा नाम अष्टापद हुवा ॥ और तवसेंही कैलाश, महादेवका पर्वत कहलाया ॥ मोटा जो देव सो महादेव, श्री ऋषभदेवस्वामी, जिसका निर्वाण स्थान कैलाश हुवा ॥ (पीछे) श्री भरत चक्रवर्त्ति (और) बाहुवलजी केवलज्ञान पायके मोक्ष गए (तव) श्री भरतजीके पाटे, सूर्ययश राजा भया। तिसकी औलाद सूर्यवंशी कहलाए। सूर्ययशके पाटे महायश राजा गद्दीपर वैठा (ऐसें) अतिवल, महावल, तेजवीर्य, कीर्त्तिवीर्य, दंमवीर्य (इत्यादि) अनुक्रमसें अपनें २ पिताकी गद्दीपर, वैठे (परंतु) भरतजीसें आधा राज्य (अर्थात्) भरत क्षेत्रका तीन खंमके भीतर २ राज्य रहा (अंतमें (भरतजीकी तरै) आठ पाटतक तो, आरीसा महलमें, केवलग्यान पाय, दिक्षा लेके मोक्ष गए (इस पीछे) दूसरा तीर्थंकर, श्री अजितनाथ स्वामीका पिता, जितशत्रु राजातक असंख्य पाट हुए । जिन सवका अधिकार चितांतर गंमिकासें जाण लैना ॥ इति ५५ वोल गर्भित श्री ऋषभदेवस्वामी (तथा) पहला चक्रवर्त्ति भरतजीका अधिकार कहा ॥ ※ ॥

॥※॥ अव दूसरा श्री अजितनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ अजोध्यानगरीमें, भरतजीकेपीछे, असंख्य राजा हो चके(तव) इक्ष्वागवंशी जितशत्रु राजा भया । तिसके विजयानामे राणी । तिसकी कूखमे, विजय अनुत्तर विमानसें, वैशाखसुद १३ के दिन, भगवान अवतार लिया ॥ मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा। गर्भमें८ मास२५ दिन रहके। मिति माघ शुक्ल ८ के दिन, रोहिणी नक्षत्रे जन्म हुवा (तव) जितशत्रु राजायें १० दिन पर्यंत जन्म उछव करके, अजितकुमर, नाम स्थापन किया। लांछन हस्ती। शरीरमान ४५० धनुष। कंचनसमानवर्ण, तीन ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी । भोगावलीकर्म निर्जरार्थे, विवाहकरके, क्रमसें राज्यपदकों प्राप्त हुवे (पीछे) अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, माघ कृष्ण

९ के दिन, अयोध्या नगरीमें, छठतप करके, शालवृक्षके नीचे १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी। (उसीवखत) भगवानकों चोथा मनपर्यव ग्यान उत्पन्न भया। प्रथम छठका पारणा, परमान्नसें, ब्रह्मदत्त व्यवहारीके घरे हुवा॥ १२ वरष छद्मस्थपणें विहार करके, अयोध्या नगरीगये (तव) वहां मिती पोषवदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न भया। (तव) देवगणका कीया हुवा, समवसरणमध्ये बैठके, १२ परषदाके सन्मुख, धर्मोपदेश करकें, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी। भगवान्के सिंहसेन प्रमुख ९५ गणधर हुवे॥ १००००० सर्व साधु मुनिराज भए। ३३०००० फल्गुश्री प्रमुख साधवी हुई॥ २०४०० वैक्रियलब्धि धारक हुवे॥ ९४०० अवधि ज्ञानी भए॥ २२००० केवल ज्ञानी भए॥ १२५५० मनपर्याय ज्ञानी भए॥ ३७२० चवदे पूर्वधारी भए। १२४०० वादी विरुद धरनेंवाले भए। २९८००० व्रतधारी श्रावक भए॥ ५४५००० व्रतधारक श्राविकायें भई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरपर्वतऊपर १००० साधुवोंके साथ, १ मासकी संलेखना करके, काउसग्ग मुद्रासें, सर्व कर्म खपायके, मिती चैत्रसुदि पंचमीके दिन, ७२ पूर्वलाखवरषको आउषो पालकें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भए॥ शासनदेव महायक्ष। शासनदेवी अजितबला मानवगण। सर्पयोनि। वृषराशि। सम्यक्त पायेबाद तीसरे भवमें मोक्षगए (इस समयमें) दूसरा चक्रवर्त्ति सगरनामें हुवा॥ ॥

॥ ॥ अब किंचित् सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ श्री अजितनाथ स्वामीके, पिताका भाई, सुमित्र नामें युवराजा हुवा॥ जिसके यशोमतीराणीयें। १४ स्वप्न पूर्वक, सगरनामें पुत्रकों जन्मा (जब) भगवान्ने दीक्षा लीवी। (तब) अपना भाई सगर युवराजाकों राजगद्दीपर स्थापन किया। पीछे नवनिधान (और) चक्ररत्न, प्रगट होनेसें, भरतक्षेत्रका छखंडसाधकें। दूसरा चक्रवर्त्ति हुवा। इनके, जन्हुकुमार प्रमुख ६०००० पुत्रभए। वो सर्व समुदाई कर्मकेयोग, एकदा भरतचक्रवर्त्तिका कराया हुवा, सुवर्णमई अष्टापद पर्वतके ऊपर, रत्नामई, निज २ प्रमाणोपेत २४ भगवान्का मंदिर देखकें, पर्वतकी रक्षाके निमित्त, बहुत ऊंडी खाईखोदकें, गंगानदीकों चउफेर करदीनी। तब उस जमीनके अधिष्टित, देवगणकों

तकलीप होनेसें एकसाथ ६०००० हजार पुत्रोंको भस्म कर दीया। इसकी मालुम होनेसें, सगरचक्रवर्त्तिकों बहुतसा दुःखभया (पीछे) सौ धर्मेंद्रके मुखसें भवस्थितिका स्वरूप सुणके दुःख दूर किया (पीछे जब) सगर पुत्रोंके लाया हुवा, गंगाकाजल वढता थका, अष्टापद पर्वतके चौफेर देशोंमे उपद्रव करने लगा (तब) जन्हुकुमारका पुत्र, भागीरथ, सगर चक्रवर्त्तिकी आज्ञा पायके, दंभरत्नसें जमीनकों खोदकें, गंगाजलका प्रवाहकुं, समुद्रमें मिला दिया (इसीसें) गंगाका नाम लोकीकमें जान्हवी (तथा) भागी रथी कहने लगे ॥ और यह खारासमुद्र पिण, देवसहायसें, सगरके पुत्रोंका लाया हुवा भरतक्षेत्रमें मालुम हो रहा है (और)सगरचक्रवर्त्तिकी आज्ञासें वैताढ्य पर्वतसें आयके, लंकाके टापूमें, प्रथम घनवाहन राजा हुवा(इस) घनवाहन राजाके वंशमें, रावण, बभीषणादिक भए हैं (सो) राक्षसी विद्यासें राक्षस कहलाए (इसीसें) लंकाके टापूका नाम राक्षसदीप हुवा (और) सिद्धगिरीके ऊपर, मंदिरोंका दूसरा उद्धार, सगरचक्रवर्त्तिनें करा (अरु) बमादानेसरी हुवा। अंतमें श्री अजितनाथ स्वामीकेपास दीक्षा लेके, शुद्ध चारित्रसें केवल ज्ञानपायके, मोक्षकों प्राप्त भया ॥ श्री ऋषभदेव स्वामीके निर्वाणसें, पंचासलाख कोड सागरोपम वितीतहोनेसें, श्री अजितनाथ स्वा मीका निर्वाण हुवा ॥※॥ इति ५५ बोलगर्भित दूसरा अजितनाथस्वामी (तथा) दूसरा सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः संपूर्णः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ३ श्री संभवनाथस्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ सावत्थी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, जितारी नामे राजा हुवा (तिसके) सेना नामे पटराणी, जिसकी कूखमें, ऊपरला ग्रैवेयक विमानसें आयके, मिति फाल्गुन शुक्ल ८ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें। मिति माघ शुक्ल १४, मृगशिर नक्षत्रे, जन्म कल्याण क हुवा (तब) जितारी राजायें १० दिन पर्यंत उत्सव करके, संभव कुमर नाम स्थापन किया। अश्वका लंछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ४०० धनुष हुवा। तीन ज्ञानयुक्त। महा तेजस्वी। १००८ लक्षणालंकृत। भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन किया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके,

महातेजस्वी, १००८ लक्षण लंकृत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाहकरके क्रमसें राज्यपद धारण कीया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति वैशाख शुक्ल९ के दिन अयोध्यानगरीमें, नित्य भक्तसें, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम पारणो परमान्नकी रसें, पद्मशेखरके घरे हुवो । २० वरष छद्मस्थपणें विहार करकें, फेर अयोध्यानगरीमें चातुर्मास रहा । वहां छठ तपसंयुक्त, मिति चैत्र शुक्ल ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न भया । उसवखत चतुर्निकाय देवगणके किया हुवा, समवसरणमें बैठके, १२ प्रखदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी ॥ भगवानूके सर्वसाधु३२०००० हुए (जिसमें) चरम प्रमुख १०० गणधर पदधारक भए ॥ १८४४० वैक्रियलब्धि धारक भए ॥ ११००० अवधिज्ञानीभए ॥ १०४५० मन पर्यवज्ञानी हुए ॥ १३००० केवल ज्ञानीभए ॥ २४०० चवदे पूर्वधारक भए ॥ १०४०० वादीविरुद धरनेंवालेभए ॥ ५३०००० काश्यपीप्रमुख साधवी हुई ॥ २८१००० श्रावक हुए ॥ ५१६००० श्राविका हुई ॥ (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें समेतशिखर पर्वतके ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण कीया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणकेध्यानसें, सर्व कर्मको खपायके, मिति चैत्र शुक्ल ९ के दिन, ४० लाख पूर्वका आउखा पूरणकरके, सिद्धिस्थानको प्राप्त भए ॥ शासनदेव तुंबरुयक्ष । शासनदेवी महाकाली । राक्षसगण । मूषक योनि । सिंहराशी । अंतरकाल ९० हजार कोड सागरोपम । सम्यक्तपाए वाद तीसरे भवमें मोक्षगए ॥ इति ५५ बोलगर्भित श्री सुमतीनाथ स्वामीका अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ६ ठा श्री पद्मप्रभु अधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ कोसंबी नगरीमें, इक्ष्वागवंशी, श्रीधरनामें राजा (जिसके) सुसीमा पट्टराणी, तिसकी कूखमें, उपरिम ग्रैवेयक देवविमानसें चवके, मिति माघ कृष्ण ६ के दिन उत्पन्न हुवा । मातायें १४ स्वप्न देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति कार्त्तिक कृष्ण १२ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक

हुवा (तब) श्रीधर राजायें १० दिन पर्यंत उत्सव करके, सर्व गोत्रियोंके सन्मुख, पद्मकुमर नाम स्थापनकिया (नाम स्थापनका येहेतु हे) मातानें पद्म सज्यापर सोनेंका मोहला उत्पन्न हुवा था (और) नगवानूका पद्म कमलके समान रंग था (इससें) पद्मकुमर नाम हुवा । कमलका लंछन युक्त । रक्तवर्ण । शरीर प्रमाण २५० धनुष हुवा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, नोगावलि कर्म निर्जरार्थे, विवाह करकें, क्रमसें राज्यपद धारण किया । अवसर आयेसें, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दानदेके, मिति कार्त्तिक कृष्ण १३ कों, कोशांबीनगरीमें, एक उपवास करकें, छत्र वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दिक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न नयो । प्रथम पारणो, सोमदेव ब्राह्मणके घरे, परमान्न क्षीर सेती नयो । ६ मास छद्मस्थ पणे विहार करके, फेर कोशंबी नगरीमें आए (वहां) चोथनक्त संयुक्त चैत्र शुद १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न नया । उस वखत चतुर्निकाय देव गणके किया हुवा, समवसरणमें बेठकें, १२ परषदा के सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ नगवानूके सर्व ३३०००० साधु हुए ॥ (जिसमें) १०७ प्रद्योतन प्रमुख गणधर नए ॥ १६१०८ वैक्रिय लब्धि धारक हुए ॥ १०००० अवधि ज्ञानी नए ॥ १०३०० मन पर्यव ज्ञानी नए ॥ १२००० केवल ज्ञानी नए ॥ २३०० चउदे पूर्वधारी हुए ॥ ९६०० वादी विरुद धरनेंवाले हुए ॥ ४०२००० रति प्रमुख साधवी हुई ॥ २७६००० श्रावक हुए ॥ ५०५००० श्राविका हुई । (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतके ऊपर, ३०८ साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण किया । काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायकें, मिति मिगसर वदि ११ के दिन, ३० लाख पूर्वका आउखा पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्त नए ॥ शासनदेव कुसुम यक्ष । शासन देवी श्यामा । राक्षसगण । महिष योनि । कन्या राशि । अंतर काल ए हजार कोम सागरोपम । सम्यक्त पाएवाद तीसरे नवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥

॥※॥ इति ५५ वोल गर्जित ६ श्री पद्म प्रनुका अधिकार: ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ ✻ ॥ अथ ७ श्री सुपार्श्वनाथजी अधिकारः ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ वनारशी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, प्रतिष्ट नामें राजा हुवा (तिशके) पृथ्वी नामें पटराणी, जिसकी कूखमें, मझम ग्रेवेयक देव विमानसें आयके । मिति भाद्रवा वदी ८ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया (तव) मातायें चवदै स्वप्न देखा । पीछे सर्व दिशा सुभिक्ष समें, मिति जेष्ट शुद २ के दिन विशाखा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा । साथियेका लांछन युक्त । कंचन वर्ण, सरीर प्रमाण २०० धनुष हुवा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी । एक हजार आठ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्झरार्थे, विवाह करकै, क्रमसें राज्यपद धारण किया । अवसर आए लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति जेष्ट सुदी १३ के दिन, वणारशी नगरीमें, छठ तप करकै, सरीश वृक्षकै नीचै, एक हजार पुरुषोंकैसाथ, दिक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उपज्यो । प्रथम छठको पारणो, माहेंद्रदत्तकै घेर, परमान्नसें हुवो । नवमाश छद्मस्थपणें विहार करकै, फेर वनारशी नगरीमें आये । वहां छठ तप संयुक्त, फागुण वदी ६ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणका किया भया, समवसरणमें, वारह परखदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ भगवानकै ३००००० तीन लाख सर्व साधू हुए (जिसमें) विदर्भ प्रमुख ९५ गणधर भए ॥ १५३०० वैक्रीयलब्धि धारक भए ॥ ९००० अवधि ज्ञानी हुए ॥ ८१५० मनपर्यव ज्ञानी हुए ॥ ११०० केवल ज्ञानी हुए ॥ २०३० चवदै पूर्वधारी हुए ॥ ८४०० वादी विरुद धारक हुए ॥ ४३०००८ सोमा प्रमुख साधवी हुई ॥ २५७००० श्रावक हुए ॥ ४९३००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहोतसे जीवोंका उद्धार करकै, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतकै ऊपर, पांचसै ५०० साधुवोंकैसाथ, एक माशका अणसण ग्रहण कीया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्म खपायकै, मिति फाल्गुण वदी ७ के दिन, वीस लाख पूर्वका आयुष्य पूर्ण करकै, सिद्धिस्थानकुं प्राप्त भए ॥ सासन देव मातंगजक्ष । सासन देवी सांता । राक्षस गण । मृग योनी । तुल राशी । अंतकाल ९ सो कोडी सागरोपम । सम्यक्त

पायेवाद, तीसरै भवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥ इति ५५ वोल गर्भित श्री सुपार्श्वनाथस्वामी अधिकार संपूर्ण ॥ ※ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ८ श्री चंद्राप्रभू स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चंद्रपुरी नामा नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, महसेन नामें राजा (जिसकै) लक्ष्मणा नामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, जयंतनामें विमानसें आयकै, मिति चैत्र कृष्ण ५ के दिन उत्पन्न भया। मातायें चवदे स्वप्न देखा पीछे सर्व दिशा सुभिक्ष समें, मिति पोष वद १२ के दिन, अनुराधा नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा (तव) महसेन राजायें, १० दिनकाउछव करके, चंद्रप्रभ कुमर नाम दिया। चंद्रमाके लांछनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीर प्रमाण १५० धनुष, तीन ज्ञानयुक्त; महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण कीया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति पोष वदी १३ के दिन, चंद्रपूरी नगरीमें, छठ तप करके, नागवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, सोमदत्तके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो ॥ ३ मास छद्मस्थपणें विहार करके, चंद्रपुरी नगरीमें आए (वहां) छठ तप संयुक्त, मिति फागुण वदि ४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न भया (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणके किया हुवा, समवसरणमें वेठकें, १२ परषदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवानके सर्व २५०००० साधु भए (जिसमें) ९३ दिन्न प्रमुख गणधर हुए ॥१४००० वैक्रिय लब्धि धारक हुए ॥ ८००० अवधि ज्ञानी हुए ॥ ८००० मनपर्यव ज्ञानी हुए ॥ १०००० केवल ज्ञानी हुए ॥ २००० चवदे पूर्वधारी हुए ॥७६०० वादी विरुदधारक भए॥ ३८०००० सुमना प्रमुख साधवी हुई ॥ २५०००० श्रावक हुए ॥ ४७९००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करकें, अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मास का अणसण ग्रहण कीया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायकै, मिति भाद्रवा वदि ७ के दिन, दश लाख पूर्वका आउखा

पूरण करकें, सिद्धस्थानकों प्राप्त भए ॥ शासनदेव विजय यक्ष । सासन देवी भृकुटी । देवगण । मृग योनि । वृश्चिक राशि । अंतरकाल ९० कोमी सागरोपम । सम्यक्त पाएबाद, तीसरे भवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥

इति ८ मा श्री चंद्राप्रभु स्वामीका अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ९ मा श्री सुविधनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ काकंदी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, सुग्रीवनामें राजा हुवा (तिसके) रामा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, आनत नामा देवविमानसें चवके, मिति फागुण वदि ९ के दिन भगवान् उत्पन्न भया । तब मातायें १४ स्वप्न देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति मिगसर वद ५, मूलन क्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा (तब) सुग्रीव राजायें १० दिनपर्यंत जन्म महोत्त्सव करके, सर्व गोत्रियोंके सन्मुख, सुविधिकुमर नाम स्थापन किया ॥ मगरमच्छका लंछनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीरप्रमाण १०० धनुष हुवा । तीन ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे विवाहकरके, क्रमसें राज्यपद धारण किया । अवसरआये । लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति मिगसरवदि ६ के दिन, काकंदी नगरीमें, छठ तप करके, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ, दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, पुष्पदत्तकेघरे, परमान्नसें हुवो । ४ माश छद्मस्थपणे विहार करके, फेर काकंदी नगरी आए (वहां) छठ तप संयुक्त, मिति कार्तिकशुद ३ केदिन, लोकालोक प्रकाशक केवलग्यान केवल दर्शन उत्पन्नहुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा समवसरणमें, १२ परखदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी । भगवान्के २००००० सर्व साधु भए (जिसमें) वराह प्रमुख ८८ गणधर भए ॥ १३००० वैक्रियलब्धि धारक भए ॥ ८४०० अवधिज्ञानीभए ॥ ७५०० मनपर्यव ज्ञानीभए ॥ ७५०० केवल ज्ञानीभए ॥ १५०० चौदे पूर्वधारीभए ॥ ६००० वादीविरुद धरनेंवालेभए ॥ १२०००० वारुणीप्रमुख साधवी हुई ॥ २२९००० श्रावक हुए ॥ ४७१००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करकें, कर्मशत्रुवांसे छोडायकें,

अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुओंके साथ, १ माशका अणशण ग्रहण किया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानतें, सवकमा कों खपायके, मिति भाद्रवा शुद ए के दिन, २ लाख पूर्वका आउखा पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भए॥ शासनदेव अजितयक्ष। शासनदेवी सुतारिका। राक्षसगण। वानरयोनि। धनराशि। अंतरकाल ए कोम सागरोपम। सम्यक्त पायेवाद, तीसरेभवमें मोक्षगए॥✱॥ इति५५ वोलगर्भित श्री सुविधिनाथस्वामी अधिकारः॥ ए॥ ✱॥

॥✱॥ अथ १० श्री शीतलनाथ स्वामी अधिकारः॥✱॥

॥✱॥ भद्दलपुर नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, दृढरथनामें राजा हुवा (तिसके) नंदा नामे पट्टराणी, जिसकी कूखमें, अच्युत नामें देवलोकसें चवके मिति वैशाखवदि ६ के दिन उत्पन्न भया (तव) मातायें १४ स्वप्ना देखा (पीछे) सर्वदिशा सुभिक्षसमें, मिति माघवदि १२ कों, पूर्वाषाढा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा (तव) ५६ दिश कुमरी, ६४ इंद्रोंके जन्ममहोत्सव कियेवाद, दृढरथ राजा, १० दिवशका महोत्सव करके, श्री शीतलकुमर नाम दिया॥ श्री वत्सका लंछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ए० धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००ण लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करकै, क्रमसें राज्यपदकों धारन किया। अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति माघवदि १२ के दिन, भद्दलपुर नगरमें, छठतप करके, प्रियंगु वृक्षके नीचे १००० पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, पुनर्वसुके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। तीनमाश छद्मस्थपणें विहार करके, फेर भद्दलपुर नगर आए (वहां) छठ तप सहित, मिति पोषवदि १४ के दिन, लोकालोकप्रकाशक, केवलज्ञान उत्पन्न भया। (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा, समवसरणमें वेठके, १२ परखदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेशदेके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी॥ भगवानके १००००० सर्व साधुभए (जिसमें) नंद प्रमुख ण१ गणधर हुए॥ १२००० वैक्रियलब्धि धारक भए॥ ७२०० अवधिज्ञानीभए॥७५०० मनपर्यवज्ञानीभए॥ १४०० चवदे पूर्वधारीभए॥५ण००

वादीविरुदधारीन्नए ॥ १००००६ सुयशाप्रमुख साधवी ऊई ॥ २८९०८० श्रावकन्नए ॥ ४५८००० श्राविकान्नई (इत्यादिक) बऊतसे जीवोंका उध्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी परवतके ऊपर, १००० साधुवोंके साथ, १ माशका अणशण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंको खपायके, मिति वैशाखवदि २ केदिन, १ लाख पूर्वको आयुपूरण करके, सिध्दिस्थानकों प्राप्तिन्नए ॥ शासनदेव ब्रह्मायक्ष। शासनदेवी अशोका। मानवगण। नकुलयोनि। धनराशि। अंतरकाल १ कोटि सागरोपम, सम्यक्त पाएवाद, तीसरे न्नवमें मोक्षगए (इनोंकीवखतमें) हरिवंशकुलकी उत्पत्तिन्नई (जिसमें) वसुराजादि ऊवे है। इसका विस्तार संबंध जैनसिध्दांतोंसें जाणना ॥✻॥ इति ५५ बोलगन्नित श्री शीतलनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥✻॥ अथ ११ मा श्री श्रेयांसनाथस्वामी अधिकारः ॥✻॥

॥ ✻ ॥ सिंहपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, विष्णु नामें राजा ऊवा (तिसके) विष्णु नामें पटराणी, जिसकी कूखमें, अच्युतनामा १२ मा देवलोकसें चवके, मिति ज्येष्ट वदि १४ के दिन, न्नगवान् उत्पन्न ऊवा (तब) मातायें, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुन्निक्षसमें, मिति फागुन वदि १२ कों, श्रवणनक्षत्रे, जन्म कल्याणक ऊवा (उसी वखत) ५६ दिशाकुमरी मिलके सूतिका महोछव किया (और पीछे) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर न्नगवान्कों ले जायके जन्म महोछव किया (तिस पीछे) विष्णु राजा १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों, मनसा न्नोजन करायके, सर्वके सन्मुख श्रेयांस कुमर नाम दिया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु हें (कि) विष्णु राजाके महिलमें, देव अधिष्टित १ सय्याथी। उस देवसय्यापर जो सूवे वेठे, तो अकस्मात् कोई उपद्रव ऊवे विगर रहै नही (जव) न्नगवान् विष्णु माताके गर्न्नमें आये (तब) माताकों उस देवसय्यापर, सोनेका मोहला उत्पन्न न्नया (इस सेती) विष्णु माता जव देवसय्यापर सूती, तव देवता प्रसन्न होके, माताकी सेवामें हाजर न्नया। कोइ तरहका उपद्रव नहिं हो सका (इसवास्ते) पितायें श्रेयांसकुमर

नाम दिया । गैंमेका लंछन युक्त, कंचन वर्ण, शरीर प्रमाण८० धनुष हुवा । तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें । संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति फाल्गुन वदि १२ के दिन, सिंहपुरी नगरीमें, छठ तप करके, तिंडुक वृक्षके नीचे, १००० पुरषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी । उस वखत चौथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, नंदरायके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो ॥ दो मास छद्मस्थपणें विहार करके (फेर) सिंहपुरी नगरीमें आए वहां छठ तप सहित, मिति माघ वदि ३ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ग्यान उत्पन्न भया (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणके किया भया समवसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ भगवान्‌के ८४००० सर्व साधु हुए (जिसमें) कश्यप प्रमुख ७६ गणधर पद धारक भए ॥ ११००० वैक्रियलब्धि धारक भए ॥ ६००० अवधिज्ञानी भए ॥ ६००० मनपर्यव ज्ञानी भए ॥ ६५०० केवल ज्ञानी भए ॥ १३०० चौदै पूर्वधारी हुए ॥ ५००० वादी विरुदधारक भए ॥ १०३००० साधवीयां भई ॥ २७८००० श्रावक भए ॥ ४४८००० श्राविका हुई ॥ इत्यादिक वहुतसे जीवोंका उद्धार करके, (अंतसमें) समेत सिखरजी पर्वत ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, एक मासका अणसण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति श्रावण वदि३ के दिन, ८४ लाख वरषका आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुए ॥ शासनदेव यक्षराज । शासनदेवी मानवी । देवगण । वानर योनी । मकर राशि । अंतरमान ५४ सागरोपम । सम्यक्त पाये वाद तीसरे भवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥

इति ५५ वोल गर्भित श्री श्रेयांस जिन अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (इनोंके वखतमें) त्रिपृष्ट नामें पहला वासुदेव, अचल नामें वलदेव हुवा (जिणोंनें) अपना वैरी, अश्वग्रीव प्रति वासुदेवकों मारके, भरत क्षेत्रके तीन खंडका राज करा ॥ (और) इनोंके समयमें, वैताढ्य पर्वतसें, श्रीकंठ नामा विद्याधरके पुत्रनें, पद्मोत्तर विद्याधरकी वेटीकों अप

हरण करके, अपना बहनोई राक्षसवंशी, लंकाका राजा, कीर्त्तिधवलके शरणमें गया (तब) कीर्त्तिधवलनें तीनसे जोजन प्रमाण, वानर द्वीप, उनके रहनेकों दिया। तिनके संतानोमेंसें चित्र, विचित्र, विद्याधरोनें, विद्यासें वंदरका रूप बनाया, (तब) वानरद्वीपके रहनेसें, और वानरका रूप बनानेसें, वानरवंशी प्रसिद्ध हुये। तिनोंकी औलादमें वाली, सुग्रीवादिक भए है॥

॥ ॥ १२ मा श्री वासुपूज्यस्वामी अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ चंपापुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, वसुपूज्यनामे राजा हुवा (उसके) जयानामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, प्राणतनामा १० मा देवलोकसें चवके, मिती ज्येष्टसुदि ९ के दिन, भगवान् उत्पन्न हुये। तब मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ते देखे। पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति फाल्गुनवदि १४, शतभिषानक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा (उसीवखत) ५६ दिशाकुमारीयों मिलके सूतिकामहोत्सव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्ममहोत्सव कीया (तिस पीछे) वसुपूज्य राजायें, १० दिनपर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकुं मनसाभोजन करायके, वासुपूज्य कुमरनाम स्थापन किया (नाम स्थापनका यह हेतु है) वासवनाम इंद्र, जब भगवान् माताके गर्भमे आये, तब इंद्रनें भगवान्की माताकों वारंवार पूज्या। इस्सें वासुपूज्यनाम (अथवा) वसुकहिये रत्न वासव कहिये वैश्रमण, जब भगवान गर्भमें आये। तब वैश्रमण देवनें राजाके घरमें वारंवार रत्नांकी वर्षा करी, इत्यादि कारणोसें, वासुपूज्य नाम दिया। पाडेका लंछनयुक्त, लालवर्ण, शरीरप्रमाण ७० धनुष हुवा। तीन ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावलीकर्म निर्जरार्थे विवाह किया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, कुमारावस्थामें संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, फाल्गुन सुदि १५ के दिन, चंपानगरीमें, छठतप करके, पाडलवृक्षके नीचे, ६०० पुरुषोंके साथ, दीक्षा ग्रहण करी। उसवखत चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो सुनंदके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। १ मास छद्मस्थपणें विहार करके, फेर चंपानगरीमें आये। वहां छठतप सहित, मिति माघसुदि २ के दिन, लोकालोक

प्रकाशक, केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न हुवा, तब चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें,१२पर्षदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ७२००० सर्व साधु हुये (जिसमें) सुभूम प्रमुख६६ गणधर पदधारक हुये॥ धारणी प्रमुख१०००००साधवियाँ हुई॥ १०००० वैक्रियलब्धि धारक हुये॥ ५४०० अवधि ज्ञानीभये॥ ६००० केवल ज्ञानीभये॥ ६५०० मनपर्यव ज्ञानीभये॥ १२०० चवदे पूर्वधारीभये॥ ४७०० वादी विरुदधारीभये॥ २१५००० श्रावक हुये॥ ४३६००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें चंपानगरीमें, ६०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, आषाढसुदि १४ के दिन, ७२००००० वर्षको आयुष्य पूरण करके। सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये। शासनदेव कुमारयक्ष। शासनदेवी चंडा। राक्षसगण अश्वयोनी। कुंभराशि। अंतरमान ३० सागरोपम। सम्यक्तपायेबाद तीसरे भवमें मोक्ष गये। इनोके वखतमें दूसरा द्विपृष्टनामा वासुदेव (अरु) अचल नामें बलदेव हुवा। इनका वेरी, तारक नामें दूसरा प्रतिवासुदेव हुवा। इति ५५ बोलगर्भित श्री वासुपूज्यस्वामी अधिकारः॥ १२॥ ※॥

॥※॥ अथ १३ मा विमलनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ कंपिलपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, कृतवर्मनामें राजा हुवा (तिसके) श्यामानामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, सहस्रारनामें८ मा देवलोकसें चवके, मिति वैशाखसुदि १२ के दिन भगवान उत्पन्न हुये, तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत१४स्वप्न,प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें,मिति माघसुदि ३के दिन, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा (उसीवखत) ५६ दिशा कुमारीयाँ मिलके, सूतिका महोत्सव किया पीछे६४इंद्र मिलके, मेरु पर्वतपर, भगवानकों लेजायके, जन्म महोत्सव कीया। तिस पीछे कृतवर्म राजायें, १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकुं मनसा भोजन करायके, विमल कुमर नाम स्थापन किया। (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि जब भगवान् माताके गर्भमें आये। तब माताकी बुद्धि, अरु शरीर, दोनुं निर्मल

हो गये (इस्सें) विमल कुमर नाम स्थापन किया। वाराहका लंछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ६० धनुष हुवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण किया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत वर्षो दान देके, मिति माघ सुदि ४ के दिन, कंपिलपुर नामा नगरमें, छठ तप करके, जंबू वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी। उस वखत चोथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, जय राजाके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो । दो मास छद्मस्थपणें विहार करके, कंपिलपुरी नगरीमें आये। छठ तप सहित, पोषसुदि ६के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान, केवल दर्शन उत्पन्न हुवा। (तब) चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा, समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ भगवान्के ६८००० सर्व साधु हुये (जिसमें) मंदर प्रमुख ५७ गणधर पद धारक हुये ॥ धरा प्रमुख १००८०० सर्व साध्वी हुई ॥ ९००० वैक्रिय लब्धि धारक भये ॥ ३६०० वादी विरुद धारक हुये ॥ ४८०० अवधिज्ञानी हुये ॥ ५५०० मनपर्यव ज्ञानी हुये ॥ ५५०० केवल ज्ञानी हुये ॥ ११०० चवदे पूर्वधारी हुये ॥ २०८००० श्रावक हुये ॥ ४२४००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वत ऊपर, ६०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण किया काउसग्ग मुद्रायें, आत्म गुणके ग्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, मिति आषाढ वदि ७ के दिन, ६०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धि स्थान कों प्राप्ति भये। शासन देव षन्मुख यक्ष। शासन देवी विदिता । मानवगण छागयोनि। मीन राशि। अंतर्मान ९ सागरोपम, सम्यक्त्त पायेबाद तीसरे भव मोक्ष गये॥ इनोंके वारे तीसरा स्वयंभू वासुदेव, भद्र नामा वलदेव तथा मेरक नामा प्रति वासुदेव हुवा ॥ ✱ ॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री विमल स्वामी अधिकारः संपूर्णम्॥ १३ ॥ ✱ ॥ ॥ ✱ ॥

॥✱॥ अथ १४ मा श्री अनंतनाथ स्वामी अधिकारः ॥✱॥

॥ ✱ ॥ अयोध्या नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, सिंहसेन नामें राजा हुवा

तिसके सुयशा नामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, प्राणत नामा, देवलोक सें चवके, मिति श्रावण वदि ७ के दिन, जगवान् उत्पन्न हुवा। तव मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुनिकृतमें, मिति वैशाख वदि १३ के दिन, रेवती नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा (उसी वखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्सव किया (पीछे) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर जगवान् कों ले जायके, जन्म महोत्सव कीया (तिस पीछे) सिंहसेन राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा जोजन करायके, सर्वके सन्मुख, अनंतनाथ नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि जगवान् गर्भमें आये, तव रत्नजमित चित्र विचित्र मोटी दाममाला, स्वप्नमें मातायें देखी। तिस कारणसें, अनंतनाथ नाम स्थापन किया सींचाणेंकालंछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ५० धनुष हुवा। तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, जोगावली कर्म निर्जरार्थे विवाह कीया, क्रमसें राज्यपद धारन कीया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, वैशाख वदि १४ के दिन, अयोध्या नगरीमें, छठ तप करके, अशोक वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ दीक्षा ग्रहण करी। उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो। प्रथम छठको पारणो, विजय राजाके घरे परमान्न क्षीरसें हुवो॥ ३ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, अयोध्या नगरीमें आये। वहां छठ तप सहित, वैशाख वदि १४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा। उस वखत चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें १२ परषदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। जगवान्के ६६००० सर्व साधु हुवे (जिसमें) जस प्रमुख ५० गणधर पद धारक जये। पद्मा प्रमुख ६२००० सर्व साध्वी हुई। ८००० वैक्रिय लब्धि धारक जये॥ ३२०० वादीविरुद धारक जये॥ ४३०० अवधिज्ञानीजये ५००० मनपर्यवज्ञानी जये॥ ५०० केवलज्ञानी जये॥ १००० चवदे पूर्वधारीजये॥ २०६००० श्रावक जये॥ ४१४००० श्राविकाजई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें, समेतशिखरजी पर्वतपर, ७०० साधु

वोंकेसाथ १ मासका अनशान ग्रहण कीया । काउसग्गमुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंकूं खपायके, मिति चैत्रसुदि ५ के दिन, ३०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भये ॥ शासनदेव पाताल यक्ष । शासनदेवी अंकुशा । देवगण । हस्तियोनि । मीनराशि । अंतर्मान ४ सागरोपम । सम्यक्तपायेवाद तीसरेभवमें मोक्षगये ॥ इनोंकेवारे, चोथा पुरुषोत्तमनामा वासुदेव (अरु) सुप्रभनामा वलदेव (तथा) मधुकैटभनामा प्रतिवासुदेव हुवा ॥ इति ५५ वोलगर्भित श्री अनंतनाथस्वामी अधिकारः ॥

॥ ॥ अथ १५ मा श्री धर्मनाथस्वामी अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ रत्नपुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, भानुनामें राजा हुवा (तिसके) सुव्रतानामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, विजयनामा अनुत्तर विमानसें चवके, मिति वैशाखसुदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न हुवा । तव मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, पुष्पनक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा ॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोछव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्म महोछव कीया । तिस पीछे भानुराजायें, १० दिवसपर्यंत बडो जन्ममहोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री धर्मनाथ नाम स्थापन किया ॥ नाम स्थापनाका यह हेतु है । कि परमेश्वरके गर्भमें आनेसें, माता दानादिक धर्ममें तत्पर भई (इस्सें) धर्मकुमर नामस्थापन कीया । वज्रका लांछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४५ धनुष हुवा । तीन ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन कीया । अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति माघसुदि १३ के दिन, रत्नपुरीनगरीमें, छठ्ठतप करके, दधिपर्णनामा वृक्षके नीचे, १००० पुरुषांकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी उसवखत चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठ्ठकोपारणो, धनसिंहके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो । दो वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, रत्नपुरी नगरीमें आये । छठ्ठतप सहित, पोष सुद १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक,

केवल ज्ञान.केवल दर्शन उत्पन्न हुवा(उसवखत)चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ६४००० सर्व साधु हुवे (जिसमे) अरिष्ट प्रमुख ४३ गणधर हुये॥ आर्यशिवा प्रमुख ६२४०० सर्व साधवीयों हुई॥ ७००० वैक्रिय लब्धि धारक हुवे॥२८०० वादी विरुद धारक हुवे॥ ३६०० अवधि ज्ञानी हुवे॥ ४५०० केवल ज्ञानी हुवे॥ ९०० चवदे पूर्वधारी हुवे॥ २०४००० श्रावक हुवा॥ ४१३००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतपर, १०८ साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया काउसग्ग मुद्राइं, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकुं खपायके, मिति ज्येष्ट सुदि ५ के दिन, १० लाख वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये॥ शासनदेव किन्नर यक्ष। शासन देवी कंदर्पा। देवगण। मंजार योनी। कर्कराशि। अंतरमान ३ सागरोपम। सम्यक्तपायेवाद तीसरेभवमें मोक्ष गये॥ (इनोंकेवारे) ५ मा पुरुष सिंहनामा वासुदेव (अरु) सुदर्शन नामा वलदेव (तथा) निशुंभ नामा प्रति वासुदेव हुवा॥ ※॥

॥ ※॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री धर्मनाथाधिकारः ॥ ※॥

॥※॥ १५ मा श्री धर्मनाथ स्वामीके पीछे, अरु १६ मा श्री शांतिनाथ स्वामीके पहिले, तीसरा मघवा नामा चक्रवर्त्ति (और) चोथा सनत्कुमार नामा चक्रवर्त्ति हुवा॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अथ १६ मा शांतिनाथ स्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※॥ हस्तनापुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, विश्वसेन नामें राजा हुवा (तिसके) अचिरा नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध नामा देवलोकसें चवके, मिति भाद्रवा वदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तव मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, ज्येष्ट वदि १३ के दिन, भरणी नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोछव कीया। (पीछे) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर, भगवानकों ले जायके, जन्म महोछव कीया (तिस पीछे) विश्वसेन राजायें १० दिवसपर्यंत, मोटो

जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख शांतिकुमर नाम स्थापन कीया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु है, कि गर्भमे भगवानूके उत्पन्न होनेसें, पूर्वे जो मरीआदिक रोगोपद्रव बहुतथा, वो शांति हो गया (इस कारणसें) शांति कुमर नाम दिया । हिरणका लांछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४० धनुष हुवा । ३ ज्ञान सहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावलीकर्म निर्जरार्थे, चक्र वर्त्तिपद धारण करके, ६४ हजार स्त्रियांकों परण्या (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति ज्येष्टवदि १४ केदिन, हस्तनापुर नगरमें, छठतप करके नंदीवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न हुवो । प्रथम छठको पारणो, सुमित्रके घरे परमान्नक्षीरसें हुवो । १ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये । वहां छठतप सहित, पोषसुदि ए के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । भगवानूके ६२ हजार सर्व साधु हुये (जिसमें) चक्रायुध प्रमुख ३६ गणधर पदधारक हुये ॥ सुचिप्रमुख ६१६०० साधवीयों हुई ॥ ६००० वैक्रिय लब्धिवंत भये ॥ २४०० वादी विरुद धारक भये ॥ ३००० अवधि ज्ञानीभये ॥ ४००० मनपर्यव ज्ञानी भए ॥ ४०० केवल ज्ञानी भये ॥ ८०० चवदे पूर्वधारी हुये ॥ १ लाख १ए हजार श्रावक हुवा ॥ ३ लाख ए३ हजार श्राविका हुई ॥ (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजीपर वतपर, ए०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशन ग्रहण कीया । काउसग्ग मुद्राइं आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति ज्येष्ट वदि १३ के दिन, १ लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये । शाशनदेव गरुम यक्ष । शासनदेवी निर्वाणी । मानव गण । हस्ति योनी । मेष राशि । अंतरमान अर्द्धपल्पोपम । सम्यक्त पायेबाद १२ मे भवमें मोक्ष गये ॥ ❋ ॥ इति ५५ बोल गर्भित ५ मा चक्रवर्त्ति, १६ मा श्रीशांतिनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥※॥ अथ १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ गजपुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सूरनामा राजा हुवा (तिसके) श्री नामा पट्टराणी। जिसकी कूखमें, सर्वार्थ सिद्धि नामा देवलोकसें चवके, मिति श्रावण वदि ९ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तव मातायें, गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्ष समें, वैशाख वदि १४ के दिन, कृत्तिका नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा। उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों ले जायके जन्म महोत्सव कीया (तिस पीछे) विश्वसेन राजायें १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्व के सन्मुख, श्री कुंथु कुमर नाम स्थापन कीया॥ नाम स्थापनका यह हेतु है कि भगवान् गर्भमें आया, तव माता रत्नमई कुंथुवोंकी राशि देखती भई। इससें, कुंथु कुमर नाम दिया॥ वकराका लंछनयुक्त, कनकवर्ण, शरीर प्रमाण ३५ धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत भोगावली कर्मनिर्जरार्थे, चक्रवर्त्ति पद धारण करके, ६४ हजार स्त्रियांकों परण्या (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति चैत्रवदि ५ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, छठ्ठतप करके, भीलक वृक्षके नीचे १०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठ्ठको पारणो, व्याघ्रसिंघके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। १६ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये। वहां छठ्ठतप सहित, चैत्रसुदि ३ के दिन लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया भया समोसरणमें १२ परपदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी॥ भगवानके ६० हजार सर्व साधु हुये (जिसमें) सांव प्रमुख ३५ गणधर पदधारक भये॥ दामिनी प्रमुख ६०६०० साध्वी हुई॥ ५००० वैक्रियलब्धिवंत भये॥ २००० वादीविरुदपद धारक भये॥ २५०० अवधि ज्ञानी भये॥३३४० मनपर्यव ज्ञानीभये॥३२०० केवल ज्ञानीभये॥ ६७० चवदे पूर्वधारीभये॥ १ लाख ७९ हजार श्रावक हुआ॥ ३ लाख ८१

हजार श्राविका हुई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंत समें समेतशिखरजी पर्वतऊपर,१००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन कीया। काउसग्ग मुद्राइं, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंकुं खपायके, मिति वैशाखवदि १ के दिन, ९५ हजार वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त भये। शासनदेव गंधर्वयक्ष। शासनदेवी वला। छागयोनी। वृषराशि। अंतरमान पावपल्योपम। सम्यक्त पायेवाद तीसरेभवमें मोक्षगये॥ ॥ इति ५५ वोलगर्भित ६ टा चक्रवर्त्ति, १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामीका अधिकार संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १८ मा श्री अरनाथस्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गजपुरनामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सुदर्शनाम राजा हुवा (तिसके) देवीनामें पटराणी हुई। जिसकी कूखमें सर्वार्थसिद्ध नामा देवलोकसें चवके, मिति फागणसुदि २ के दिन भगवान् उत्पन्न भये। तव मातायें गजादि अग्निसिखापर्यंत १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा। पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिगसर सुद १० के दिन, रेवतीनक्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा। उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्छव कीया पीछे ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्ममहोत्छव कीया। तिस पीछे सुदर्शनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोत्छव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसाभोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री अरनाथ कुमर नाम स्थापन कीया। नाम स्थापनाका यह हेतु है, कि भगवान् जब गर्भमें स्थित हुवा, तव मातायें स्वप्नमें, सर्व रत्नमई अरदेख्या (इसकारणसें) अरकुमर नाम दीया। नंद्यावर्त्तका लंछनयुक्त, कनकवर्ण, शरीरप्रमाण ३० धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, चक्रवर्त्ति पदधारण करके,६४ हजार स्त्रियांकोंपरणया (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, छठतप करके, आंवाका वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठकोपारणो, अपराजितके घरे परमान्नक्षीरसें हुवो। तीनवर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुरमें आये। वहां छठतप सहित, कार्त्तिकसुदि

१२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें १२ परिषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ५० हजार सर्व साधुभये (जिसमें) कुंभ प्रमुख ३३ गणधर पदधारक भये । रक्षिता प्रमुख ६० हजार साध्वी हुई। ७३०० वैक्रिय लब्धिवंत भये ॥ १६०० वादी विरुदपद धारकभये ॥ २५०० अवधि ज्ञानीभये ॥ २५५१ मनपर्यव ज्ञानीभये ॥ २८०० केवल ज्ञानीभये ॥ ६१० चवदे पूर्वधारी भये ॥ १ लाख ८४ हजार श्रावक हुये। ३ लाख ७२००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखर जी पर्वतपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन कीया। काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति मिगसरसुदि १० के दिन, ८४००० वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव यक्षराज । शासनदेवी धारणी । देवगण । हस्तियोनी । मीनराशि । अंतरमान १ हजार कोडवर्ष । सम्यक्त पायेबाद तीसरे भवमें मोक्ष गये ॥ इहां १८ मा, तथा १९ मा, तीर्थंकरके बीचमें, ६ ठा पुरुष पुंडरीक वासुदेव, तथा आनंदनामा बलदेव, बलिनामा प्रतिवासुदेव हुये इस पीछे ८ मा सुभूमनामें चक्रवर्त्ति हुवा। इसै पीछे, दत्तनामा ७ मा वासु देव, तथा नंदनामा बलदेव, और प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेव भये ॥ इति ५५ बोलगर्भित ७ मा चक्रवर्त्ति, १८ मा श्री अरनाथ स्वामीका अधिकार सं०

॥※॥ अथ १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ मथुरा नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, कुंभनामें राजा हुवा। तिसके प्रभावतीनामें पट्टराणी हुई । जिसकी कूखमें, जयंत विमानथी चवके, मिति फागुण सुदि ४ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये । तब मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता हुवा देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिगसर सुदि ११ के दिन, अश्विनीनक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा। उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोच्छव कीया। पीछे ६४ इंद्र, मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके, जन्ममहोच्छव कीया (तिस पीछे) सुदर्शनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोच्छव

करके, सर्व न्याती गौती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख श्री मल्लिकुमर नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि भगवान् जब गर्भमें आया तब भगवान्की माताकों सुगंधवाले फूल मालाकी सय्याऊपर, सोनेंका दोहद उत्पन्न भया। सो देवतानें पूरण कीया (इस कारणसें) मल्लिकुमर नाम दीया। कलशाका लंछनयुक्त, नीलवर्ण, शरीर प्रमाण २५ धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, विवाह कियेविगर, कुमार अवस्थामें रया (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, मथुरा नगरीमें, छठतप करके, अशोकवृक्षके नीचे, ३०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, विश्वसेनकेघरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। किंचित्काल छद्मस्थपणें रहके, फिर उसीदिन मथुरानगरीमें। छठ तपसहित, मिगसर सुदि ११ के दिन लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न हुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें १२ परिषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी। भगवानके ४० हजार सर्व साधु भये। (जिसमें) अभिक्षक प्रमुख २८ गणधर पदधारक हुवे॥ बंधुमती प्रमुख ५५ हजार सर्व साध्वी हुई॥ २९०० वैक्रियलब्धिवंत भये॥ १४०० वादी विरुद धारक भये॥ २२०० अवधिज्ञानी भये॥ १७५० मनपर्यव ज्ञानी भये॥ २२०० केवलज्ञानी भये॥ ६६८ चवदे पूर्वधारी हुये॥ १ लाख ८३ हजार श्रावक भये॥ ३७०००० श्राविका हुई, इत्यादिक बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतसिखरजी पर्वतऊपर, ५०० साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशन कीया। काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्माकों खपायके, मिति फागुणसुदि १२ के दिन, ५५ हजार वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये। शासनदेव कुबेरयक्ष। शासनदेवी धरणप्रिया। देवगण। अश्वयोनि। मेषराशि। अंतर मान ५४००००० वर्ष, सम्यक्तपायेवाद तीसरे भवमें मोक्ष गया॥ ※॥

॥ इति १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः १९॥ ※॥

॥श्री॥ अथ २० मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी अधिकारः ॥श्री॥

॥ ※ ॥ राजगृही नामा नगरीमें, हरिवंशी, सुमित्र नामें राजा हुवा (तिसके) पद्मावती नामें पटराणी भई। जिसकी कूखमें, अपराजित नामा अनुत्तर विमानसें चवके, मिति श्रावण सुदि १५ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया। तब मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता हुवा देखा, पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, ज्येष्ट वदि ८ के दिन, श्रवण नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा (उस वखत) ५६ दिशा कुमारीयाँ मिलके, सूतिका महोछव कीया (पीछे) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर भगवान् कों ले जायके, जन्म महोछव कीया। तिस पीछे, सुमित्र राजायें १० दिवसपर्यंत, बमो जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, मुनि सुव्रत कुमर नाम स्थापन कीया। (नाम स्थापनका यह हेतु हे) कि भगवान् गर्भमें स्थित हुवा, तब माता मुनिकी तरे, भले व्रतवाली होती भई (इस हेतुसें) मुनि सुव्रत नाम दीया। कछपके लंछनयुक्त। श्यामवर्ण, शरीर प्रमाण २० धनुष हुवा। ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १०८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरायें, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण कीया। पीछे अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति फागुण वदि १२ के दिन, राजगृही नगरीमें, छठ तप करके, चंपेका वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, ब्रह्मदत्तके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो। ११ मास छद्मस्थपणें विहार करके, फिर राजगृही नगरीमें आये। वहां छठ तप सहित, फागुण वदि १२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवानके ३० हजार सर्व साधु भये (जिसमें) मल्लि प्रमुख १८ गणधर हुये पुष्पवती प्रमुख ५० हजार सर्व साध्वी भई॥ २००० वैक्रिय लब्धिवंत भये॥ १२०० वादी विरुद धारक भये॥ १८०० अवधि ज्ञानी भये॥ १५०० मनपर्यव ज्ञानी भये॥ १८०० केवलज्ञानी भये॥ ५०० चवदे

पूर्वधारी भये । १ लाख ७२ हज़ार श्रावक भये ॥ ३ लाख ५० हज़ार श्राविका भई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजी पर्वतऊपर, १००० साधुवोंके साथ, १ मासका अनशन कीया॥ काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति ज्येष्ठ वदि ए के दिन, ३० हज़ार वर्षको आयुष्य मान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव वरुण यक्ष । शासनदेवी नर दत्ता । देवगण । वानर योनि । मकर राशि । अंतरमान ६ लाख वर्ष । सम्यक्त पायेबाद, तीसरे भवमें मोक्ष गये ॥※॥ इति ५५ बोल गर्भित १० मा श्री मुनि सुव्रत स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ २१ मा श्री नमिनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ मथुरा नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, विजय नामा राजा हुवा तिसके विप्रा नामें पट्टराणी भई । जिसकी कूखमें, प्राणत नामा देव लोकसें चवके, मिति आशोज सुदि १५ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया । (तब) मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता हुवा देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति श्रावण वदि ७ के दिन, अश्विनी नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा (उसी वखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोछव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर भगवानकों ले जायके जन्म महोछव कीया (तिस पीछे) विजय राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री नमीनाथ कुमर नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है कि) भगवान् माताके गर्भमें आये, तब वैरी राजायोंनेभी नमस्कार करा (इस कारणसें) नमी कुमर नाम दीया । कमलका लंछनयुक्त । पीतवर्ण । शरीरका प्रमाण १५ धनुष हुवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, राज्यपद धारन किया । पीछे अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति आषाढ वदि ए के दिन, मथुरा नगरीमें छठ तप करके, १ हज़ार पुरुषोंकेसाथ, बकुल वृक्षके नीचे, दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चोथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पार

णो, दिन्न कुमारके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो। ए मास छद्मस्थपणें विहार करके फिर मथुरा नगरीमें आये। वहां छठ्ठतप सहित, मिगसरसुदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवानुके २० हजार सर्व साधु भये (जिसमें) शुभ्रप्रमुख १७ गणधर हुये। अनिला प्रमुख ४१ हजार सर्व साध्वी भई॥ ५००० वैक्रियलब्धिवंत भये॥ १००० वादी विरुद धारक भये॥ १६०० अवधि ज्ञानी भये १२५० मनपर्यव ज्ञानी भये॥ १६०० केवल ज्ञानीभये॥ ४५० चवदे पूर्वधारीभये॥ १ लाख ७० हजार श्रावक भये॥ ३ लाख ४८ हजार श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतऊपर १००० साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशनकीया। काउसग्ग मुद्राइं आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति वैशाखवदि १० के दिन, १० हजार वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये। शासनदेव भृकुटीयक्ष। शासनदेवी गंधारी। देवगण। अश्वयोनि। मेषराशि। अंतरमान ५००००० वर्ष, सम्यक्त पायेबाद तीसरेभवमें मोक्षगये॥ इनोंके वारे हरिषेणनामा १० मा चक्रवर्त्ति हुवा॥ और २१ मा (तथा) २२ मा तीर्थंकरके अंतरमें, ११ मा जयनामा चक्रवर्त्ति हुआ॥ इति २१ मा श्री नमिनाथस्वामी अधिकार संपूर्णम्॥ ※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ २२ मा श्री नेमिनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ सोरीपुरनामा नगरमें, हरिवंशी, समुद्रविजयनामें राजा हुवा तिसके शिवादेवी नामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, अपराजितनामें देवलोकसें चयके, मिति कार्त्तिकवदि १२ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया। तव मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा। पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति श्रावणसुदि, ५ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा (उसीवखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्ममहोत्सव कीया। तिस पीछे समुद्रविजय राजायें १० दिन पर्यंत मोटो

जन्ममहोच्छव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन कराके, सर्वके सन्मुख, श्री अरिष्टनेमि कुमर नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है कि) भगवान् जव गर्भमें आया, तव मातानें अरिष्ट रत्नमय वमा मोटा नेमी (चक्रधारा) आकाशमें उत्पन्नमान स्वप्नमें देखा। तिस कारणसें अरिष्टनेमि नाम दिया। शंखके लंछनयुक्त, श्यामवर्ण, शरीरका प्रमाण १० धनुष ऊवा।, ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी,१००८ लक्षणालंकृत विवाहकिये विगर कुमारअवस्थामें रये (पीछे) काकेका वेटा श्रीकृष्ण, तथा, वलभद्रनें बहुत हठ करके, मनविगर राजीमतीके साथ विवाह ठहराया। जव जान लेके भगवान् सुसराके घरे तोरणकेपास आये। उहां मारणके निमत्त बहुतसे जानवर वाडा पींजरामें भरे हुवे देखे। तव दया करके सर्व जीवांकों बंधमेंसें छोडाए। और आप पीछा घिरके दिक्षा लेनेकों तैयार भए, फेर लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति श्रावणसुदि ६ के दिन, द्वारका नगरीमें, छठ तप करके, वेडसवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ, दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, वरदिन्नके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। ५४ दिन छद्मस्थपणें विहार करके, फिर गिरनार पर्वतपर आये वहां अठम तपसहित, आशोजवदि अमावसकेदिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्नभया। उसवखत चतुर्निकाय देवगणका कीया भया समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख, भगवान धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवानके १८ हज्जार सर्व साधुभये (जिसमें) वरदत्त प्रमुख ११ गणधर पदधारक हुये। यक्ष दिन्ना प्रमुख ४० हज्जार सर्व साध्वी हुई ॥ १५०० वैक्रियलब्धिवंत भये ॥ ८०० वादीविरुदपद धारक भये ॥ १५०० अवधि ज्ञानी भये ॥ १००० मनपर्यव ज्ञानी भये ॥ १५०० केवल ज्ञानी भये ॥ ४०० चवदे पूर्वधारी भये ॥ १ लाख ६४ हज्जार श्रावक भये ॥ ३ लाख ३६ हज्जार श्राविका भई (इत्यादिक बहुतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें गिरनारजी पर्वतपर, ५३६ साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशन कीया। पद्मासन मुद्राइं, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकू खपायके, मिति आषाढ सुदि ८ के दिन १ हज्जार वर्षको आयु

प्यमान पूरण करके; सिद्धि स्थानकों प्राप्ति नये। शासनदेव गोमेध यक्ष। शासनदेवी अंविका। राक्षस गण। महिष योनि। कन्या राशि। अंतर मान ८३ हजार ४ से ५० वर्ष, सम्यक्त पायेवाद नवमें नवमें मोक्ष गये॥ इनोंके वारे, इनोंके चाचेका वेटा, श्रीकृष्ण नवमा वासुदेव, तथा वलनद्र वलदेव नया॥ और बाईशमा नगवान पीछे, तेवीसमा नगवान पहले इस अंतरमें १२ मा ब्रह्मदत्त नामें चक्रवर्त्ति नया॥ इति॥ ※॥

॥※॥ अथ २३ मा श्री पार्श्वनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ वणारसी नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, अश्वसेन नामें राजा हुवा। जिसके वामा देवीनामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, प्राणतनामा देवलोकसें चवके, मिति चैत्र वदि ४ के दिन, नगवान् उत्पन्न नये। तव मातायें, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा। पीछे सर्व दिशा सुनिक्षसमें, मिति पोष वदि १० के दिन, विशाखा नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा। उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोछव कीया। पीछे ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर नगवानकों ले जायके, जन्म महोछव कीया। तिस पीछे अश्वसेन राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा नोजन करायके सर्वके सन्मुख श्री पार्श्व कुमर नाम स्थापन कीया। नाम स्थापनाका यह हेतु हे, कि नगवान जव गर्नमें आया, तव मातायें अंधारी रात्रीकों सर्प जाता हुवा देखा, इससें माता पितायें विचारा कि ए गर्नका प्रनाव हे॥ इस कारणसें पार्श्वनाथ नाम दिया। सर्पका लंछनयुक्त, नीलवर्ण, शरीरका प्रमाण ए हाथ हुवा। ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, नोगावली कर्म निर्जरार्थे विवाह कीया। राज्यपद नहिं धारण करके, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति पोष वदि ११ के दिन, वणारसी नगरीमें, छठ तप करके, धातकी वृक्षके नीचे, ३०० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी। उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न नयो। प्रथम छठको पारणो, धन्नाके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो। ८४ दिन छद्मस्थपणें विहार करके फिरवणारसी नगरीमें आये, वहां अठम तपसहित, चैत्रवदि ४के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न नया। उस वखत, चतुर्निकाय

देवगणका कीया हुवा, समोसरणमें, १२ परिखदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । भगवानुके १६ हज्जार सर्व साधु भये । जिसमें, आर्यदिन्न प्रमुख १० गणधर पद धारक हुये । पुष्पचूमा प्रमुख ३८ हज्जार सर्व साध्वी भई ॥ ११०० वैक्रिय लब्धिवंत भये ॥ ६०० वादी विरुद पद धारक भये ॥ १००० अवधि ज्ञानी भये ॥ ७५० मनपर्यव ज्ञानी भये ॥ १००० केवल ज्ञानी भये ॥ ३५० चवदे पूर्वधारी भये ॥ एक लाख ६४ हज्जार श्रावक भये ॥ ३ लाख ३९ हज्जार, श्राविका भई ॥ इत्यादिक वहुतसे जीवोंका उधार करके, अंतसमें समेत शिखरजी पर्वतऊपर, १ मासका अनशन कीया । काउसग्ग मुद्राई आत्म गुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोकों खपायके, मिति श्रावण सुदि ८ के दिन, ३३ साधुवोंकेसाथ, १०० वर्षका आयुष्य मान पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भए ॥ शासनदेव पार्श्व यक्ष, शासनदेवी पद्मावती, राक्षस गण, मृग योनी, तुल राशि, अंतरमान २५० वर्ष, सम्यक्त पायेवाद १० में भवे मोक्ष गया ॥ इति २३ मा श्री पार्श्वनाथ स्वामीका ५५ बोल गर्भित अधिकारः॥ ※ ॥

॥※॥ अथ २४ मा श्री वर्द्धमानस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ ब्राह्मण कुंभग्रामनामा नगरमें, कोमालश गोत्रका धरणहार ऋषभदत्त नामें ब्राह्मण हुवा, जिसके देवानंदानामें भार्या भई, जिसकी कूखमें प्राणतनामा देवलोकसें चवके, मिति आशाढ सुद ६ के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रकेविषे भगवान् उत्पन्न भया । तब देवानंदा ब्राह्मणीयें चउदै स्वप्न देखा (पीछे) सौधर्म इंद्र ब्राह्मणोंके कुलमें पूर्वकर्मकेयोग भगवान् कों उत्पन्न हुवा देखके, आश्चर्यभूत संबंध हुवा जानके, अपना आग्याकारी हरणेगमेषी देवताकों भेजा, सो हरणगमेषी देवता आयके देवमाया करके देवानंदाकी कूखसें भगवानूकों करसंपुटमें ग्रहण करके, क्षत्रियकुंभग्रामानगरकेविषे, इक्ष्वाकुवंशी, सिद्धार्थनामें राजा, जिसके त्रिशला नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें मिति आशोजवद १३ के दिन अवतारण किया । और त्रिशला माताकी कूखसें पुत्रीकों अपहरण करके, देवानंदा ब्राह्मणीकी कूखमें संक्रामण किया । इसीतरे हरणेगमेषी देवता इंद्रकी आग्या करके अपने स्थानक गया (और) जिसवखत देवतानें देवानंदाकी कूखसें त्रिश

ला क्षत्रियाणीकी कूखमें संक्रामण किया ,तब देवानंदायें तो अपना १४ स्वप्न त्रिशला क्षत्रियाणीकेपास जाता हुवा देखा, और त्रिशला क्षत्रिया णीनें प्रगटपणें १४ स्वप्न मुखमें प्रवेश होता देखा। पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति चैत्र वदि १३ के दिन, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा। उसी वखत, ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया। पीछे ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर भगवानकों ले जाय के, जन्म महोत्सव कीया। तिस पीछे सिद्धार्थ राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री वर्द्धमान कुमर नाम स्थापन कीया। नाम स्थापनका यह हेतु है, कि जब भगवान् गर्भमें आया, तब सिद्धार्थ राजा धनसें राज्यसें परिवारसें बहुत बधता रहा, इससें वर्द्धमान कुमर नामदिया। तथा इंद्रादिक देवतावोंनें मेरु पर्वतपर भगवानका जन्म महोत्सव करनेंके समय अनंत बली देखके, महावीर नाम स्थापन किया॥ केशरीसिंह लंछन, पीतवर्ण, शरीरका प्रमाण ७ हाथ हुवा। तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालं कृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह कीया। राज्यपद धारण न किया, अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगशर वदि ११ के दिन, क्षत्रीकुंड नामा नगरमें, छठ तप करके, साल वृक्षके नीचे, एकाकीपणें दीक्षा ग्रहण करी, उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, बहुल ब्राह्मणके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो। १२ वर्ष छद्म स्थपणें विहार करके, ऋजुवालका नदीपर आये, वहां छठ तप सहित, वैशाख सुदि १० के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न भया। उस वखत चतुर्निकाय देवगणका कीया भया समोसरणमें, १२ परिषदा के सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भग वान्के सर्व साधु १४ हजार भये। जिसमें इंद्रभूति प्रमुख ११ गणधर पद धारक भये॥ चंदनबाला प्रमुख ३६००० सर्व साध्वी भई॥ ७०० वैक्रिय लब्धिवंत भये॥ ४०० वादी विरुद धारक भये॥ १३०० अवधि ज्ञानी भये॥ ५०० मनपर्यव ज्ञानी भये॥ ७०० केवल ज्ञानी भये॥ ३०० चवदे पूर्वधारी भये॥ १ लाख ५९ हजार श्रावक भये॥ ३ लाख

१८००० श्राविका भई ॥ इत्यादिक बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अं तसमें पावापुरी नगरीमें, छठ तपका अनशन कीया ॥ पद्मासन मुद्राइं, आ त्मगुणकेध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति कार्त्तिकवदि अमावशके दिन, एकाकी, ७२ वर्षका आयुष्यमान पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये शासनदेव ब्रह्मशांति यक्ष । शासनदेवी सिद्धायिका । मानव गण । महिष योनि । कन्या राशि । सम्यक्त पायेवाद २७ में भव मोक्ष गये, श्री महावी रस्वामी मोक्ष गये पीछे, तीन वर्ष, साढी आठ महिना गए, चौथा आरा उतरा, और पांचमा आरा सरू हुवा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इति २४ श्री वर्द्धमान स्वामीका ५५ बोल गर्भित अधिकारः इसी तरै चोवीश भगवान्का नाम मात्र दृष्टांत कहा ॥ अव २४ भगवान् के, १२ चक्रवर्त्ति, ए वासुदेव, ए वलदेव, ए प्रति वासुदेवादि वम्हे १ उत्तम पुरष मोक्षगामी राजादिक भए, जिन सर्वका नाम मात्र दृष्टांत इहां लिखता हुं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १२ चक्रवर्त्ति अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पहला श्री भरत चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विनीता नयरीमें प्रथम भगवान् श्री ऋषभदेव नामें राजा हुवा जिनोंके सुमंगला नामें राणी, जिसका पुत्र भरत नामें पहला चक्रवर्त्ति हुवा इनके ६४ हजार स्त्रीयों हुई, जिसमें मुख्य स्त्रीरत्न सुदामा नामें भई । जब चक्ररत्नादिक १४ रत्न उत्पन्न हुवा, तब इस भरत क्षेत्रके छ खंड में राज्य किया । अंतमें आरीसा महलमें, शुद्ध भावनासें केवलग्यान पाय के चारित्र ग्रहण करके, ८४ पूर्व लाख वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुवा ॥ १ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूसरा सगर चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अयोध्या नगरीमें, सुमित्र नामें राजा हुवा, जिसके जस वती नामें पट्टराणी, जिनके पुत्र सगर नामें दूसरा चक्रवर्त्ति हुवा । इनकै भद्रा नामें स्त्रीरत्न भई । जब चक्ररत्नादिक, १४ रत्न उत्पन्न हुए, तव भरत क्षेत्रके ६ खंडकों साधके राज्य किया । अंतमें चारित्र ग्रहण करकै

७२ पूर्व लाख वरषको आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्त जवा ॥

॥ ※ ॥ तीसरा मघवा नामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सावत्थी नगरीमें, समुद्रविजय नामें राजा, जिसके सुनद्रवती नामें पट्टराणी जई, जिनके पुत्र मघवानामें तीसरा चक्रवर्त्ति जवा । इनके सुनद्रानामें स्त्रीरत्न जई । अंतमें शुन्नन्नावसें चारित्र लेके सर्व पांच लाख वरषको आयुष्य पूरण करके देवलोककों प्राप्त जवा ॥ इति ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चोथा सनत्कुमारनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥※॥ हथनापुरनामा नगरमें, अश्वसेननामें राजा, जिसके सहदेवीनामें पट्टराणी, जिनकेपुत्र सनत्कुमार नामें चोथा चक्रवर्त्ति जवा । इनके जया नामें स्त्रीरत्न नई । ६ खंमका राज्य किया, अंतमें शुन्नन्नावसें चारित्र ग्रहण करके, तीन लाख वरषका आयुष्य पूर्ण करके देवलोककों प्राप्त जवा॥ इति॥

॥ ※ ॥ अथ पांचमा, श्री शांतिनाथ चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, विश्वसेननामें राजा, जिसके अचिराना में पट्टराणी, जिनकेपुत्र शोलमा नगवान्, पांचमा चक्रवर्त्ति श्री शांतिनाथ स्वामी जवा, इनके विजयानामें स्त्रीरत्न नई, ७ खंमका राज्य किया, अव सर आये चारित्र लेके केवल ग्यानपायके सर्व एक लाख वरषको आयुष्य पूरण करके सिद्धिस्थानकों प्राप्त जवा ॥ इति ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ६ ठा, श्री कुंथुनाथचक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, सूरनामें राजा, जिसके श्रीनामें पट्टराणी जिनके पुत्र १७ मा नगवान, छठा चक्रवर्त्ति श्री कुंथुनाथस्वामी जवा । इनके कन्हसिरीनामें स्त्रीरत्न जई, ७ खंमका राज्य किया । अवसर आये चारित्र लेके केवल ग्यान पायके, ७५ हजार वरषका आयुष्य पूरन करके मोक्षकों प्राप्त जवा ॥ इति ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ७ मा श्री अरनाथनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, सुदर्शननामें राजा, जिसके देवीनामें पट्टराणी, जिनकेपुत्र १८ मा नगवान्, ७ मा चक्रवर्त्ति, श्री अरनाथस्वामी जवा । इनके पदमश्रीनामें स्त्रीरत्न जई । ७ खंममें राज्य किया, अंतमें

चारित्र लेके केवल ग्यान पायके ६० हज़ार वरषका आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ८ मा सुभूमनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, कीर्त्तिवीर्यनामें राजा जिसके तारानामें पट्टराणी, जिनके पुत्र सुभूमनामें आठमा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके सूरश्री नामें स्त्रीरत्न हुई । ७ खंडका राज्य किया । अंतमें ३० हज़ार वरषका आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमें उत्पन्न हुवा ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ※ ॥ ९ मा पद्मनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वणारसी नामें नगरीमें, पद्मोत्तर नामा राजा, जिसके ज्वाला नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र महापद्म नामें नवमा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके वसुंधरा नामें स्त्रीरत्न भई । अंतमें १९ हज्जार वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १० मा हरिषेण नामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कंपिलपुर नामा नगरमें, हरि नामें राजा, जिसके मेरा नामें पट्टराणी, जिनके पुत्र हरिषेण नामें दशमा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके देवी नामें स्त्रीरत्न भई । अंतमें दश हज़ार वरषको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ११ मा, जय नामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राजगृही नामें नगरीमें, विजय नामें राजा, जिसके विप्रा नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र जय नामें इग्यारमा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके वलछी नामें स्त्रीरत्न भई । अंतमें तीन हज़ार वरषको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ११ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १२ मा ब्रह्मदत्त नामें चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कंपिलपुर नामा नगरमें, ब्रह्म नामें राजा, जिसके चूलणी नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र ब्रह्मदत्त नामें बारमा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके कुरमती नामें स्त्रीरत्न भई । अंतमें १६ से वरषको आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमें नारकी पणें उत्पन्न हुवा ॥ इति ॥ १२ ॥ ※ ॥

॥※॥ १२ चक्रवर्त्ति समानऋद्धी अधिकारः॥※॥

॥ ※ ॥ ये १२ चक्रवर्त्ति काश्यपगोत्रमें ज्ञये, इन सर्वका कंचनसमान शरीरकावर्ण ज्ञवा। इस जरतक्षेत्रका ६ खंममें राज्य किया । नवनिधान १४ रत्न, १६ हज्जार यक्ष, ३२ हज्जार मुगट बद्धराजा, ६४ हज्जार अंतेउरी, एकेक राणीसाथे दोदो वरांगना होय, तव एक लाख ८२ हज्जार वरांगना, ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोमा, ८४ लाख रथ, ९६ कोटि प्यादा। ३२ हज्जार नाटक, ३२ हज्जार वमादेश, ३२ हज्जार वेला उल। १४ हज्जार जलपंथ। २१ हज्जार सन्निवेस। १६ हज्जार राजधानी ५६ अंतरद्वीप। ९९ हज्जार द्रोणमुख। ९६ कोटि ग्राम। ४९ हज्जार उद्यान। १८ हज्जार श्रेणि प्रश्रेणी। ८० हज्जार पंमित। ७ कोमि कौटंविक। १६ हज्जार आगर। ३२ कोमि कुल। १४ हज्जार महामंत्रवी, १४ हज्जार वुद्धिनिधान। १६ हज्जार म्लेछराज्य। २४ हज्जार कर्पट। २४ हज्जार संवाधन। १६ हज्जार रत्नाकर। २४ हज्जार खेमा सुन्य। १६ हज्जार द्वीप। ४८ हज्जार पाटण। ५० कोमि दीवमिया। ८४ लाख महानिसाण। १० कोमि धजापताका। ३६ कोमि अंगमर्दक। ३६ कोमि आजरण धारक। ३६ कोमि सूपकार। तीन लाख जोजन थानक। एक कोमि गोकुल। तीन कोमि हल। ३६० सुआर। ९९ कोमि माटंविक ९९ कोमि दासीदास। ९९ लाख अंगरक्षक। ९९ कोमि जोई। ९९ कोमि कावमिया। ९९ कोमि मसूरिया। ९९ कोमि थइयायत। ९९ कोमि पटतारक। ९९ कोमि मीठावोला, १ कोमि ८० हज्जार रासज। १२ कोमि सुखासण। ६० कोमि तंवोली, ५० कोमि पखालिया ॥ इत्यादि अनेक प्रकारकी ऋद्धी सर्व चक्रवर्त्तिके समान होती है ॥ इति ॥ ※॥

॥※॥ अथ नववासुदेव, बलदेवका दृष्टांत लि० ॥※॥

॥※॥ १ तृपृष्ठ वासुदेवः १ अचल बलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ ११ मा जगवान् श्री श्रेयांसनाथ स्वामीके वारे, शोजनपुरनामा नगरमें, प्रजापतिनामें राजा ज्ञवा, जिसके मृगावतीनामें पटराणी, जिसकी कूखसें सातमा देवलोकसें आयके, ७ स्वमासूचित तृपृष्टनामें पुत्र ज्ञवा ॥

और दूसरी भद्रानामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्न सूचित अचलनामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें वधता थका अपना वैरी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेवकों युद्धमें मारके, पहला वासुदेव हुवा। चक्रवर्त्तिसें आधा अर्थात् इस भरतक्षेत्रका तीन खंडमें राज्य किया। नीलवर्ण, देहमान ८० धनुषका हुवा, अंतमें ८४ पूर्व लाख वरषका आयुष्य पूरण करके तृपृष्ट वासुदेव सातमी पृथ्वीमें गया। और बलदेवका उज्जलवर्ण, शरीर प्रमाण ८० धनुष हुवा, अंतमें भाईका मरण देख वैराग्यसें चारित्र ग्रहण किया, क्रमसें केवलज्ञान पायके ८५ पूर्व लाख वरषका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ २ द्विपृष्ट वासुदेवः, २ विजय बलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ १२ मा तीर्थंकरके वारे, द्वारामतीनामा नगरमें, ब्रह्मनामें राजा, जिसके क्रमानामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें १० मा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्न सूचित, द्विपृष्टनामें पुत्र हुवा ॥ और दूसरी सुभद्रानामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्न सूचित विजयनामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें युवान अवस्थाकों प्राप्त हुवा, तब अपना वैरी तारकनामें प्रतिवासुदेवकों मारके, दूसरा वासु देव, बलदेव हुवा। तीन खंडमें राज्य किया, वासुदेवका नीला वर्ण, देहमान ७० धनुष हुवा। अंतमें ७२ पूर्वलाख वरषका आयुष्य पूरण करके, छठी नरक पृथ्वीमें गया। और विजयबलदेवका उज्जलवर्ण, शरीरप्रमाण ७० धनुष हुवा, अंतमें शुद्धभावसें चारित्र लेके केवलज्ञान पायके ७३ पूर्वलाख वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्षमें गया ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३ स्वयंभुः वासुदेवः ३ भद्र बलदेवः ॥ ※ ॥

॥※॥ १३ मा तीर्थंकरके वारे, कोई द्वारका नामा नगरीके विषे, रुद्र नामें राजा हुवा। जिसके पुहवी नामें पट्टराणी, जिसकी कूखसें, ६ ठा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्न सूचित स्वयंभू नामें पुत्र हुवा ॥ और सुप्रभा नामें दूसरी राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्न सूचित भद्र नामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें युवान अवस्थाकों प्राप्त भया, तब अपना वैरी मेरुक नामें प्रति वासुदेवकों मारके, तीसरा वासुदेव बलदेव हुआ। इस भरत क्षेत्रके तीन खंडमें राज्य किया। वासुदेवका नीलावर्ण, देहमान ६० धनुष हुआ।

अंतमें ६० पूर्व लाख वरषका आयुष्य पूरण करके, ठठी नरक पृथ्वीमें गया। और भद्र बलदेवका उज्जल वर्ण, शरीरप्रमाण ६० धनुषभया, अंत में चारित्र अंगीकार करके, केवल ग्यान पायके सर्व ६५ पूर्वलाख वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति तीसरा वासुदेव, बलदेव दृष्टांतम् ॥

॥ ※ ॥ अथ ४ पुरषोत्तम वासुदेवः, सुप्रभु बलदेवः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १४ मा तीर्थंकरके वारे, वारवई नामा नगरीमें, एक सोम नामें राजा ऊवा। जिसके सीता नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें ८ मा देव लोकसें आया ऊवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरषोत्तम नामें पुत्र ऊआ। और दूसरी सुदर्शना नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित सुप्रभु नामें पुत्र ऊआ। ये जव युवान अवस्थाकों प्राप्त भया, तव अपना वैरी, मधु नामें प्रति वासुदेवकों मारके, चोथा वासुदेव, बलदेव, इस भरत क्षेत्रमें ऊआ। तीन खंडमें अखंड राज्य किया। वासुदेवका नीलावर्ण, और शरीर प्रमाण ५० धनुषका ऊवा। और अंतमें ३० लाख पूरवको आयुष्य पूरण करके ठठी पृथ्वीमें गया॥ और बलदेवका उज्जलवर्ण शरीर प्रमाण ५० धनुष ऊवा। अंतमें ५५ पूर्व लाख वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया॥ इति चोथा वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव, दृष्टांतम् ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ५ मा पुरषसिंह वासुदेवः, सुदर्शन बलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ १५ मा तीर्थंकरके वारे, अश्वपुरी नामा नगरीमें, शिव नामें राजा ऊवा। जिसके अम्मा नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें, चोथा देवलोकसें आया ऊवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरषसिंह नामें पुत्र ऊवा। और दूसरी विजया नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित, सुदर्शन नामें पुत्र ऊवा। ये जव युवान अवस्थाकों प्राप्त ऊवा। तव अपना वैरी निसुंभ नामा प्रति वासुदेवकों मारके पांचमा वासुदेव, बलदेव इस भरत क्षेत्रमें भया। तीन खंडमें राज्य किया। इसमें वासुदेवका नीला वर्ण, सरीर प्रमाण ४५ धनुष ऊवा, अंतमें १. लाख वरषका आयुष्य पूरण करके, ठठी नरक पृथ्वीमें गया॥ और बलदेवका उज्जलवर्ण, शरीर प्रमाण ४५ धनुष ऊवा। अंतमें एक लाख ७० हजार वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया॥ इति पांचमा वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव दृष्टांतम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ६ पुरुषपुंडरीक वासु० आनंदबलदेवः ॥※॥

॥※॥ अठारमा उगणीसमा तीर्थंकरके अंतरमें, चक्रपुरीनामा नगरीमें महाशिवनामें राजा, जिसके लक्ष्मीनामें पट्टराणी, उसकी कूखसें पांचमा देवलोकसें आया हुवा, सात स्वप्न सूचित, पुरुष पुंमरीकनामें पुत्र हुवा। और दूसरी वैजयंतीनामें राणी, उसकी कूखसें, चार स्वप्न सूचित आनंद नामें पुत्र हुवा। ये दोनुं जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये। तब अपना वैरी, बलीनामा छठा प्रतिवासुदेवकों मारके छठा वासुदेव बलदेव हुये। तीन खंममें राज्य किया। इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुवा। अंतमें ६५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके, छठी नरक पृथ्वीमें गया। और बलदेवका उज्जलवर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुवा। अंतमें शुभभावसें चारित्र लेके, केवलग्यान पायके, सर्व ८५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके सिद्ध गतिमें गया॥ इति छठा वासुदेव बलदेव दृष्टांतम्॥

॥※॥ अथ ७ मा दत्त वासुदेवः नंदन बलदेवः॥※॥

॥※॥ १९ मा तीर्थंकरके वारे, वणारसीनामा नगरीमें, अग्निसिवनामें राजा हुवा। जिसके सेसवतीनामें पट्टराणी, उसकी कूखसें, पहला देवलोकसें आया हुवा, सात स्वप्न सूचित दत्तनामें पुत्र हुवा। और दूसरी जयंतीनामें राणी जिसकी कूखसें चार स्वप्न सूचित नंदननामें पुत्र हुआ, ये दोनुं जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये, तब अपना वैरी प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेवकों चक्ररत्नसें मारके, सातमा वासुदेव बलदेव, हुये। तीन खंममें राज्य किया॥ इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २६ धनुष हुवा। अंतमें ५६ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके, पांचमी नरक पृथ्वीमें गया॥ और नंदन बलदेव, अपना भाईका मरण देखके, वैराग्यसें सर्वे चारित्र ग्रहण किया। क्रमसें केवल ग्यान पायके सर्व ६५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया॥ इति सातमा वासुदेव बलदेव दृष्टांतम्॥

॥※॥ ८ मा लछमण वासुदेवः, रामचंद्र बलदेवः॥※॥

॥※॥ २० मा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामीकेवारे, अयोध्यानामा नगरीमें, दशरथनामें राजा हुवा, जिसके सुमित्रानामें पट्टराणी, उसकी

कूखसें तीसरा देवलोकसें आया हुवा, सात स्वप्न सूचित लछमणनामें पुत्र हुवा। और दूसरी अपराजिता नामें राणी जिसकी कूखसें चार स्वप्न सूचित रामचंद्र नामें पुत्र हुवा। ये दोनुं जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये। तब शीताकों अपहरण करनेवाला, अपना वैरी, लंकाका राजा, रावण प्रतिवासु देवकों मारके, आठमा वासुदेव बलदेव हुये। इस भरतक्षेत्रके ३ खंडमें राज्य किया, इसमें लछमण वासुदेवका नीलावर्ण, सरीर प्रमाण १६ धनुपका हुवा। अंतमें १२ हजार वरपका आयुष्य पूरण करके चोथी पृथ्वीमें उत्पन्न भया। और रामचंद्र बलदेव, अपना भाईका मरण देखके, वैराग्यसें चारित्र ग्रहण किया। क्रमसें केवल ज्ञान पायके, सर्व १५ हजार वरपका आयुष्य पूरण करके, सिद्धगिरी पर्वत ऊपर मोक्ष गया॥ इसी रामचंद्रजीकों बहुतसे हिंदू लोक, अपना ईश्वरावतार मानते हें॥ और रावणकों दशमुख वाला राक्षस कहते हें, तथा लोकीक रामायणमेंभी रावणके १० मुख लिखे हें, सो ठीक नहीं हे, क्योंकि मनुष्यके स्वाभाविकही दशमुख कदापि नहीं हो सक्ते हें, पद्म चरित्रादिकमें लिखा हे, कि रावणके बडे बडेरोंकी परंपराय सें, एक बडा नव माणिक रत्नका हार चला आता था, सो रावणनें बालाव स्थासें अपने गलेमें पहन लिया था। और वे नौही माणक बहुत बडे थे। चार चार माणक दोनुं स्कंध तरफ जडे हुये थे। एक बीचमेंथा, ऐसें नव माणकमें नव मुख दीखता था, और एक रावणका असली मुख था इसवास्ते दशमुखवाला रावण कहा जाता हे। और रावणके समयसेंही हिमालयके पहाडमें बद्री नाथका तीर्थ उत्पन्न हुआ हे। तिसकी उत्पत्ति जैन धर्मके शास्त्रोंसें ऐसे जानी जाती हे, कि यह असली पार्श्वनाथकी मूर्त्ति थी, तिसकाही नाम बद्रीनाथ रक्खा गया हे। इसका विशेष अधिकार देखना होय तो पद्म चरित्र पार्श्वचरित्रसें जाण लैना॥ इति आठमा वासुदेव, बलदेव दृष्टांतम्॥ ※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※॥ अथ ए मा कृष्ण वासुदेवः, बलभद्र, बलदेवः, ॥※॥

॥ ※ ॥ २२ मा श्री नेमिनाथ भगवान्के वारे, शोरीपुर नामा नगरमें, समुद्र विजयजी नामें राजा, जिसका छोटा भाई वसुदेवजी हुवा, जिसके पूर्व नियाणेके योगसें ७२ हजार स्त्रीयां हुई, जिसमें मुख्य देवकी नामें

राणी, जिसकी कूखसें सातमा देवलोकसें आया हुवा सात स्वप्न सूचित कृष्ण नामें पुत्र हुवा। और दूसरी रोहणी नामें राणी। जिसकी कूखसें चार स्वप्न सूचित बलभद्र नामें पुत्र हुवा, इन दोनुंकों कंसके भयसें वसुदेवजी अपना गोकुलमें, नंद गोवालियेके घरे, कितनेक वरष छिपे हुवे रक्खे। जब ये दोनुं युवानावस्थाकों प्राप्त भये। तब प्रथम तो अपना भाइयोंकों मारनेंवाला, कंसकों वैरी जानके मल्ल अखाडेमें आयके, कंसकों मारा, जब यादव लोक बहुतसे भयकों प्राप्त हुवे, कि कंसका सुसरा जरासिंध प्रति वासुदेव अभी सबमें मोटा राजा है, इससें कदास यादवोंको क्षय नहिं कर देवै, इस भयसें शोरीपुर, तथा मथुरा नगरीसें, यादव सर्व निकलके समुद्रके किनारै जायके, उहां द्वारका नगरी बसायके कितनेक वरष सुखसें रहा। पीछे जब जरासिंध अपनी सेना लेके युद्ध करनेंकों आया। तब कृष्ण बलभद्र युद्धमें जरासिंध प्रति वासुदेवकों मारके, नवमा वासुदेव, बलदेव हुवा। इसमें बासुदेवका श्यामवर्ण, सरीरप्रमाण १० धनुष हुवा। ये, श्री नेमनाथस्वामीका बडा भक्त अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक हुवा। अंतमें सर्व एक हजार वरषका आयुष्य पूरण करके तीसरी पृथ्वीमें उत्पन्न भया। और बलदेवका उज्वल वर्ण, सरीरप्रमाण१० धनुष हुवा। जब द्वारकानगरी, यादवोंका क्षय हुवा, और अपना भाई श्रीकृष्णका कुसंबीवनमें जराकुमरके हाथसें मरण हुवा देखके, वैराग्यसें संसारको असार जाणके, शुद्धभावसें चारित्र ग्रहण किया। क्रमसें सोवर्ष चारित्र पालके, सर्व १२०० वरषको आयुष्य पूरण करके, पांचमा ब्रह्मदेव लोकमें देवतापणें उत्पन्न भया। आवती चौवीसीमें बारमा, तेरमा तीर्थंकरहोके दोनुं मोक्ष जासी॥ ये कृष्ण, बलभद्र, जगतमें बहुत प्रसिद्ध है। क्योंकि बहुतसे लोक श्री कृष्ण वासुदेवकों साक्षात् ईश्वर, तथा ईश्वरका अवतार, जगत्का कर्त्ता मानते है। सो यह बात श्री कृष्ण वासुदेवके जीते हुये न हुई, किंतु उनके मरे पीछे लोक कृष्ण वासुदेवकों ईश्वरावतार माननें लगे हैं॥ तिसका हेतु श्री त्रेसठ सलाका पुरष चरित्रमें ऐसें लिखा है। किः जब कृष्ण वासुदेवनें कुसंबी वनमें शरीर छोडा, तब काल करके तीसरी बालु प्रभा पृथ्वी (पातालमें) गये, और बलभद्रजी एकसौ वर्ष जैन दिक्षा पालके पांचमा ब्रह्मदेवलोकमें देवता

ऊये, ऊहां अवधि ज्ञानसें अपना भाई श्री कृष्णकों पातालमें तीसरी पृथ्वी में देखा। तब भाईके स्नेहसें वैक्रिय शरीर बनाकर श्री कृष्णकेपास पोंहचा। और श्री कृष्णसें आलिंगन करके कहा। किमें बलभद्र नामा तेरे पिछले जन्मका भाई ऊं, में काल करके पांचमा देवलोकमें देवता ऊआ ऊं, और तेरे स्नेहसें इहां तेरेपास मिलनेंकों आया ऊं, सोमें तेरे सुखवास्ते क्या काम करुं॥ इतना कहकर जब बलभद्रजीनें आपनें हाथों ऊपर कृष्णजीकों लिया, तब कृष्णका शरीर पारेकी तरे हाथसें झरके भूमि ऊपर गिर पमा, फेर मिलकर संपूर्ण शरीर पूर्ववत् हो गया॥ इसीतरे प्रथम आलिंगन करनेंसें, फेर विरतांत कहनेंसें, और हाथोंपर ऊठानेंसें जान लिया। कि यह मेरे पूर्व भवका अति वल्लभ बलभद्र भाई है। तब श्री कृष्णजीनें संभ्रमसें ऊठके नमस्कार करा। तब बलभद्रजीनें कहा, हे भ्राता, जो श्री नेमिनाथ स्वामीनें कहा था। कि यह विषय सुख महा ऊःखदाई है सो प्रत्यक्ष तुमकों प्राप्ति ऊआ। और तुऊ कर्म नियंत्रितकों में स्वर्गमेंभी नहिं लेजा सक्ता ऊं। परंतु तेरे स्नेहसें तेरेपास में रहा चाहता ऊं। तब कृष्णजीनें कहा, हे भ्राता, तेरे रहनेंसेंभी मैनें करे ऊये कर्मका फल तो मुऊकों अवश्य भोगवनाही है। परंतु मुऊकों इस ऊःखसें वो ऊःख बऊत अधिक है। जोमें द्वारका, और सकल परिवारके दग्ध हो जानेसें, एकला कुशांव वनमें जरा कुमारके तीरसें मरा। और मेरे शत्रुवोंकों सुख, तथा मेरे मित्रोंकों ऊःख ऊआ, जगत्में सर्व यऊवंशी बदनाम ऊये, इसवास्ते हे भ्राता, तूं भरतखंममें जाकर, चक्र, शारंग, शंख, गदाका धरनेंवाला, और पीला वस्त्र, तथा गरुम ध्वजाका धरनेवाला, ऐसा मेरा रूप बनाकर विमानमें बैठा कर लोकोंकों दिखलाव। तथा नीला वस्त्र हल मूशल शस्त्रका धरनेंवाला ऐसा रूपसें तूं विमानसें बैठके अपना सागीरूप सर्व जगे दिखलाकर लोकोंकों कहो, कि रामकृष्ण दोनुं हम अविनाशी पुरुष हैं। और स्वेच्छा विहारी हैं। जब लोकोंकों यह सत्य प्रतीत हो जावेगा। तब अपना सर्व अपयश दूर हो जावेगा। यह श्रीकृष्णजीका कहना सर्व श्री बलभद्रजीनें अंगीकार किया। और भरतखंममें आकर कृष्ण, बलभद्र, दोनुंका रूप करके सर्व जगे विमानारूढ दिखलाया, और ऐसे कहनें लगा, कि भोलोको तुम कृष्ण,

बलभद्र, अर्थात् हमारे दोनोंकी सुंदर प्रतिमा बनाकर, ईश्वरकी बुद्धीसें बडे आदरसें पूजो, क्यों कि हमही जगत्के रचनेंवाले, और स्थिति संहारके कर्त्ता हें, और हम अपनी इच्छासें स्वर्ग (वैकुंठसें) चले आते है । और द्वारका हमनेंही रचीथी, तथा हमनेंही उसका संहार करा है, क्यों कि जब हम, वैकुंठमें जानेंकी इच्छा करते हें, तब अपना सर्व वंश द्वारका सहत दग्ध करके चले जाते हें । हमारै उपरांत और कोई अन्य कर्त्ता, हर्त्ता, नहीं है । ऐसा बलभद्रजीका कहना सुननेंसें प्राय केइग्राम, नगरके लोक कृष्ण बलभद्रजीकी प्रतिमा सर्व जगे बनाकर पूजनें लगे, तब अपनी प्रतिमाकी भक्ति करनेंवालांकों बलभद्रजीनें बहुत धनादिक सुख देके आनंदित किए । इसवास्ते बहुतसे लोक हरिभक्त हो गए । जबसें भक्त हुये तबसें पुस्तकोंमें श्री कृष्णजीकों पूर्णब्रह्म परमात्मा ईश्वरादि नामोंसें लिखादे लोकीकमें श्री कृष्ण होयेकों पांच हजार वरष कहते है, इससें क्या जानें जबसें बलभद्रजीनें कृष्णजीकी पूजा करवाई, तबसेंही लोकोंनें कृष्णकों ईश्वरावतार माना होय, और उस समयकों पांच हजार वरष हुआ होय, तो इस बातकों पांच हजार वरष हुआ होगा ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ इति नवमा श्री कृष्ण वासुदेव, बलभद्र बलदेवका दृष्टांत संपूर्णम् ॥

॥ ※ ॥ इसीतरे ६३ तेसठ शिलाका पुरषोंका दृष्टांत इहां नाममात्र लिखा है । इन सबेका विस्तारसें संबंध देखना होय, तो श्री हेमाचार्यजी महाराजकृत तेसठ शलाका पुरषोंका चरित्रादिकसें देख लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ और जितनें कालमें २४ भगवान् हुए हें, इतनें कालमें ११ ग्यारै रुद्र हुए हें, जिनका किंचित संबंध लिखता हुं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ११ रुद्र नाम, गति विचार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ श्री ऋषभदेव स्वामीके वारे, महारुद्र परणामका धरनेंवाला भीमबल नामें पहला रुद्र हुआ, अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ※ ॥ २ श्री अजितनाथ स्वामीके वारे जितशत्रु नामें दूसरा रुद्र हुवा, सो अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति २ ॥ ※ ॥ ए श्री सुविधिनाथ स्वामीके वारे, रुद्र बल नामें तीसरा रुद्र हुआ । अंतमें मरके छठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ※ ॥ १० मा श्री शीतलनाथ स्वामीके

वारे, विश्वानर नामें चोथा रुद्र हुआ। अंतमें छठी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ ११ मा श्री श्रेयांशनाथ स्वामीके वारे, सुप्रतिष्टनामें पांचमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके छठी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १२ मा श्री वासुपुज्य स्वामीके वारे, अचल नामें छठा रुद्र हुआ। अंतमें मरके छठी पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १३ मा श्री विमलनाथ स्वामीके वारे, पुंमरीक नामें सातमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके छठी पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ७॥ ※॥ १४ श्री अनंतनाथ स्वामीके वारे, अजितधर नामें आठमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके पांचमी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ७॥ ※॥ १५ मा श्री धर्मनाथ स्वामीके वारे, अजितबल नामें नवमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके चोथी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १६ मा श्रीशांतिनाथ स्वामीके वारे, पेढाल नामें दशमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके चोथी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति १०॥ ※॥ २४ मा भगवान् श्री महावीरस्वामीके वारे, सत्यकी नामें इग्यारमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके तीसरी पृथ्वीमें गया॥ ये इग्यारमा रुद्र लोकीकमें बहुत मान्यताकों प्राप्त हुआ थका है, इसमें इनका इहां किंचित विस्तारसें दृष्टांत लिखते हैं

॥ ※॥ अथ ११ मा रुद्र सत्यकी दृष्टांत लि० ॥ ※॥

॥ ※॥ विशाला नगरीके, चेटक राजाकी छठी पुत्री सुज्येष्टा नामा कुमारी कन्यानें दिक्षा लीनीथी, अर्थात् जैन मतकी साध्वी हो गई थी, वो किसी अवसरमें उपाश्रयके अंदर सूर्यके सन्मुख आतापना लेती थी, इस अवसरमें पेढाल नामा परिव्राजक अर्थात् संन्यासी विद्या सिद्ध था, सो अपनी विद्या देनेंकेवास्ते पात्र पुरपकों देखता था। और उसका विचार ऐसा था, कि यदि ब्रह्मचारणीका पुत्र होवे तो सुनाथ होवेगा। तब तिस संन्यासीनें, रात्रीमें सुज्येष्टाकों, नग्नपणें शीतकी आतापना लेतीकों देखा, तब धुंध विद्यासें अंधकारमें अचेत करके उसकी योनीमें अपनें वीर्य का संचार करा, तिस अवसरमें सुज्येष्टाकों ऋतु धर्म आ गया था इसवास्ते गर्भ रह गया, तब साथकी साध्वीयोंमें गर्भकी चर्चा होनें लगी, पीछे अतिशय ज्ञानीनें कहा कि, सुज्येष्टानें विषय भोग किसीसें नहीं करा, और तिस विद्याधरका सर्व वृत्तांत कहा, तब सर्वकी शंका दूर हो गई, पीछे

जब सुज्येष्ठाके पुत्र जन्मा, तव तिस लमकेकों श्रावकनें अपनें घरमें ले जाके पाला, तिसका नाम सत्यकी रक्खा, एकदा समय सत्यकी, साध्वीयों केसाथ श्री महावीर भगवान्के समवसरणमें गया, तिस अवसरमें एक काल संदीपक नामा विद्याधर श्री महावीर स्वामीकों वंदना करके पूछनें लगा, कि मुझकों किससें भय है, तब भगवंत श्री महावीर स्वामीनें कहा कि यह जो सत्यकी नामा लमका है, इससें तुझकों भय है। तव काल संदीपक सत्यकीके पास गया, अवज्ञासें कहनें लगा, कि अरे तूं मुझकों मारैगा, ऐसें कहकर जोरावरीसें सत्यकीकों अपनें पगोंमें गेरा, तव तिसके पिता पेढालनें सत्यकीका पालन करा, और अपनी सर्व विद्यायों सत्यकीकों देदई, पीछे जव सत्यकी महारोहणी विद्याका साधन करनें लगा, इस सत्यकीका यह सातमा भव रोहणी विद्या साधनमें लग रहा था, रोहणी विद्यानें इस सत्यकीके जीवकों पांच भवमें तो जीवसें मार गेरा, और छठे भवमें छे महिने शेष आयुके रहनेंसें, सत्यकीके जीवनें विद्याकी इच्छा न करी, परंतु इस सातमें भवमें तो तिस रोहणी विद्याकों साधनेका प्रारंभ करा तिसकी विधि लिखते हैं। अनाथ मृतक मनुष्यकों चितामें जलावे, और आले चममेकों शरीर ऊपर लपेटके पगके वामें अंगुठेसें खमा होकर जहां लग वो चिताका काष्ट जले, तहां लग जाप करे, इस विधिसें सत्यकी विद्या साध रहा था। उहां काल संदीपक विद्याधरभी आ गया, और चितामें काष्ट प्रक्षेप करके सात दिन रात्रीतक अग्नि वुझनें नदीनी, तब सत्यकी इसीतरे सात दिन वामें अंगूठेसें खमा रहा, ऐसा सत्यकीका सत्य देखके रोहणी देवी आप प्रगट होकर काल संदीपककों कहनें लगी कि मत विघ्नकरः—क्यों कि में इस सत्यकीके सिद्ध होनेंवाली हुं, इसवास्तेमें सिद्ध हो गई हुं, तब रोहणी देवीनें सत्यकीकों कहा, कि में तेरे शरीरमें किधरसें प्रवेश करुं, सत्यकीनें कहा मेरे मस्तकमें होकर प्रवेश कर, तब रोहणीनें मस्तकमें होकर प्रवेश करा, तिस्सें मस्तकमें खमा पम गया, तब देवीने तुष्ट मान होकर तिस मस्तककी जगों तीसरे नेत्रका आकार वना दिया, तव तो सत्यकी तीन नेत्रवाला प्रसिद्ध हुआ, पीछे सत्यकीनें सोचा कि पेढालनें मेरी माता राजाकी कुमारी वेटी साध्वीकों विग

मा हे । ऐसा शोचकर अपनें पिता पेढालकों मार दिया, तव लोकोंनें सत्यकीका नाम रुद्र (भयानक) रख दिया, क्यों कि जिसनें अपना पिता कों मार दिया उससें और भयानक कौन है ॥ पीछे सत्यकीनें विचारा कि काल संदीपक मेरा वैरी कहां है, जब सुना काल संदीपक अमुक जगा में है, तब सत्यकी तिसके पास पोंहचा । फेर काल संदीपक विद्याधर तहांसें भाग निकला, तोभी सत्यकी तिसके पीछे लगा, तब काल संदीपक हेठ ऊपर भागता रहा, परंतु सत्यकीनें उसका पीछा न छोडा, फेर काल संदीपकनें सत्यकीके भुलानेंवास्ते तीन नगर बनाये, तब सत्यकीनें विद्यासें तीनों नगरभी जला दीये, तब काल संदीपक डोडके पाताल कलशमें चला गया, सत्यकीनें तहां जाकर काल संदीपककों मार डाला, तिस पीछे सत्यकी विद्याधर चक्रवर्त्ति हुआ, तीन संध्यामें सर्व तीर्थंकरों कों वंदना करके नाटक करता हुआ, तब इंद्रनें सत्यकीका नाम महेश्वर दीया, तिस महेश्वरके दो शिष्य हुये, एक नंदीश्वर, दूसरा नांदिया, तिनमें नांदीया तो विद्यासें वैलका रूप बना लेता था, और तिस ऊपर महेश्वर चढके अनेक क्रीडा कुतूहल करता था, महेश्वर श्री महावीर भगवंतका अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक था, परंतु बडा भारी कामीथा, और ब्राह्मणों केसाथ उसके बडा भारी वैर हो गया था, इससें विद्याके बलसें सैकडों ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्यायोंकों विषय सेवन करके विगाडा, और लोक तथा राजा प्रमुखकी बहु बेटियोंसें काम क्रीडा करनें लगा, परंतु उसकी विद्यायोंके भयसें उसें कोई कुछ कह सक्ता नहीं था, और जो कोई मनाभी करता था सो मारा जाता था, महेश्वरनें विद्यासें एक पुष्पक नामा विमान बनाया तिसमें बैठके जहां इछा होती तहां चला जाता था, ऐसें उसका काल व्यतीत होता था, एकदा प्रस्तावें महेश्वर उज्जयन नगरमें गया तहां चंड प्रद्योतकी एक शिवानामा राणीकों छोडके, दूसरी सर्व राणीयोंके साथ विषयभोग करा, औरभी सर्व लोकोंके बहु बेटीयोंकों विगाडना शरू करा तब चंड प्रद्योत राजाकों बडी चिंता हुई, अरु विचारा कि कोई ऐसा उपाय करीयें कि जिस्सें इस महेश्वरका विनाश (मरणां) हो जावे । परंतु तिसकी विद्याके आगे किसीका कोई उपाय नहीं चलता था, पीछे तिस

उज्जइन नगरमें एक उमा नामें वेश्या बमी रूपवंत रहती थी, उसका यह कौल था कि जो कोई इतना धन मुझे देवे, सो मेरेसें भोग करे, जो कोई उसके कहेमुजब धन देता था सो उसके पास जाता था । एक दिन महेश्वर उस वेश्याके घर गया, तब तिस उमा वेश्यानें महेश्वरके सन्मुख दो फूल करे, एक विकशा हुआ, दूसरा मिचा हुआ, तब महेश्वरनें विकशे फूलकीतर्फ हाथ पसारा, तब उमा वेश्यानें मिचा हुआ कमल महेश्वरके हाथमें दीया, और कहा कि यह कमल तेरे योग्य है, तब महेश्वरनें कहा क्यों यह कमल मेरे योग्य है ॥ तब उमानें कहा, इस मिचे हुए कमल समान कुमारी कन्या है सो तुझकों भोग करनेंवास्ते वल्लभ है ॥ और में खिले हुए फूल समान हुं, तब महेश्वरनें कहा तूंभी मेरेकों बहुत वल्लभ है, ऐसा कहकर भोग भोगनें लगा, और तिसकेही घरमें रहनें लगा, तिस उमाने महेश्वरकों अपने वशमें कर लीया, उमाका कहना महेश्वर उल्लंघन नही कर सकता था, ऐसें जब कितनाककाल व्यतीत हुआ, तब चंद्र प्रद्योतने उमाकों बुलायके उसकों बहुत धन, और आदर सन्मान देकर कहा, कि तूं महेश्वरसें यह पूछे कि ऐसाभी कोई काल है कि जिसकालमें तुमारेपास कोइभी विद्या नही रहती ॥ तब उमाने महेश्वरकों पूर्वोक्त रीतिसें पूछा, तब महेश्वरनें कहा कि जब में मैथुन सेवता हुं तब मेरेपास कोइभी विद्या नही रहती अर्थात् कोई विद्या चलती नही तब उमानें चंद्र प्रद्योत राजाकों सर्व कथन सुना दीया, तब राजानें उमासें कहा कि जब महेश्वर तेरेसें भोग करैगा, तब हम उसकों मारेंगे, जब उमानें कहा कि मुझकोंमत मारना, तब चंद्रप्रद्योतनें कहा कि तुझकों नही मारेंगे ॥ पीछे चंद्रप्रद्योतनें अपने सुभटोकों छाना, उमाके घरमें छिपा रक्खा जब महेश्वर उमाकेसाथ विषय सेवनमें मग्न होके दोनोंका शरीर परस्पर मिलके एक शरीरवत् होगया, तब राजाके सुभटोनें दोनोंहीकों मार डाला और अपनें नगरका उपद्रव दूर करा, पीछे महेश्वरकी सर्व विद्यायोंनें उसके नंदीश्वर शिष्यकों अपना अधिष्ठाता बनाया, जब नंदीश्वरनें अपनें गुरुकों इस विटंबनासें मारा सुना, तब विद्यासें उज्जयन नगरके ऊपर शिला बनाई, और कहनें लगा कि हे मेरे दासो, अब तुम कहां जाउगे, में सबकों मा

रुंगा, क्यों कि मैं सर्व शक्तिमान् ईश्वर हुं, किसीका मारा मैं मरता नहिं हुं मैं सदा अविनाशी हुं, यह सुनकर बहुतसे लोक मरे, सर्व लोक वीनती करके पगोंमें पमे, अरु कहनें लगे, कि हमारा अपराध क्षमा करो, तब नंदीश्वरनें कहा कि, जो तुम उसी अवस्थामें (अर्थात्) उमाके जगमें महेश्वरका लिंग स्थापन करके पूजो तोमें तुमकों जीता गेमुंगा, तब लोकोंनें तैसेही बनाकर पूजा करी, पीछे नंदीश्वरनें इसीतरै प्राय केइ गाम नगरोंमें लोकोंको मरा मराके मंदर बनवाये, तिनमें पूर्वोक्त आकारे जगमें लिंगस्थापन कराके पूजा कराई ॥ यह श्री महावीरस्वामीजीका अविरति सम्यग्दृष्टी श्रावक, इग्यारमारुद्र सत्यकी महेश्वरका दृष्टांत कहा ॥ ✲ ॥ इसीतरे त्रेशठ शिलाका उत्तम पुरषोंका इहां संक्षेप मात्र अधिकार कहा ॥ विशेष अधिकार देखना होय तो, आवश्यक, कल्पसुत्र, त्रेशठ शिलाका पुरष चरित्रादिकमें देख लेना ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ इति श्री खरतरगच्छीय पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः तच्छिष्यमुनिः मोहनलाल मुक्तिकमल विरचिते, आचाररत्नाकर द्वितीयप्रकाशे त्रेशठ शिलाका पुरष संक्षिप्त अधिकारः संपूर्णम् ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ अब चोवीशमा जगवंत श्री महावीरस्वामीसें लेकर आज काल पर्यंत पट्टपरंपरा आचार्यादिकोंका किंचित् वृत्तांत लिखता हुं ॥

॥ ✲ ॥ श्री महावीरस्वामीके सर्व शिष्य साधुवर्ग चौदह हजार हुए जिन सर्वमें मुख्य वडे शिष्य इग्यारे गणधर जए ॥ तिन इग्यारे गणधरोंका नाम कहते है । १ इंद्रजूति अर्थात् श्री गौतमस्वामी, २ अग्निजूति, ३ वायुजूति, ४ व्यक्तस्वामी, ५ सुधर्मस्वामी, ६ मंडिकपुत्र, ७ मौर्यपुत्र, ८ अवकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मैतार्य, ११ प्रजास, और छत्तीस हजार सर्व साध्वी हुई, तथा श्रेणक, उदायन, कोणक, उदायी, चेटक, चंद्रप्रद्योतन, नवमल्लकी, नवलेछकी, दशार्णजद्रादि अनेक राजालोक श्रीमहावीर स्वामीके सेवक हुए, और शंख, पुष्कली, आनंद, कामदेव, सत्यकी महेश्वरादि वडे वमे श्रावक, तथा सुलसा, चेलणा, जयंती आदि श्राविका एयांतो लाखोंही हुए ॥ ऐसे श्री महावीर जगवंत विक्रमसंवतसें (४७०) वर्ष पहिले पावापुरी नगरीमें, हस्तपाल राजाकी पुराणी राजसजामें, बहुत्तर

वर्षका आयु भोगवके कार्त्तिक वदि अमावश्याकी रात्रिके पीछले प्रहरमें पद्मासन किये हुये शरीरादि चार कर्मकी सर्व उपाधी छेडके निर्वाण हुए (मोक्ष पहुंचे) तिस समयमें श्री गौतमस्वामी और श्रीसुधर्मस्वामी, यह दो वडे शिष्य जीते थे, शेष नववडे शिष्य तो श्री महावीरस्वामीके जीते हुये ही एक मासका अनशन करके केवल ज्ञान पायके मोक्ष चलेगये थे, यह इग्यारहही वडे शिष्य जातिके तो ब्राह्मण थे, चार वेद, और छै वेदांगादि सर्व शास्त्रोंके जानकार थे, इन इग्यारह पंडितोंके चौताली ससै (४४००) विद्यार्थी थे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनोंका संवंध असे है कि:—जव भगवंत श्रीमहावीरस्वामीकों केवलज्ञान हुआ, तिस अवसरमें मध्यपापा नगरीमें, सोमल नामा ब्राह्मण नें यज्ञ करनेंका आरंभ करा था, और सर्व ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ विद्वान् जान कर इन पूर्वोक्त गौतमादि इग्यारेही आचार्योंकों वुलाया था ॥ तिस समय तिस यज्ञ पाडाके ईशान कूणमें महासेन नामा उद्यानमें, श्रीमहावीर भगवंतका समवसरण, रत्न सुवर्ण रौप्यमय क्रमसें तीन गढ संयुक्त देवोनें वना या तिसके वीचमें बैठके भगवंत श्रीमहावीरस्वामी उपदेश करनें लगे, तव आकाश मार्गके रस्ते सैंकडो विमानोमें वैठे हूये चार प्रकारके देवता ओ भगवंत श्रीमहावीरके दर्शनकों और उपदेश सुननेकों आते थे, तव तिनों यज्ञ करनेंवाले ब्राह्मणोने जाना कि, यह देव सर्व हमारे करे हूये यज्ञकी आहुतीयों लेनें आये हैं, इतनेमें देवता तो यज्ञ पाडेकों छोडके भगवानके चरणोंमे जाकर हाजर हुये, तथा और लोकभी श्रीमहावीर भगवंतका दर्शन करकें और उपदेश सुनकें गौतमादि पंडितोंके आगें कहनें लगे, कि:—आज इस नगरके वाहिर सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान् आये है, नतो उसके रूपकी कोई तारीफ कर सक्ता है, अरु न कोई उसके उपदेशसें संशय रहता है, और लाखों देवता जिनोके चरणोंकी सेवा करते है इससें हमारे वडे भाग्योदय है, जो ऐसे सर्वज्ञ अरिहंत भगवंतका हमनें दर्शन पाया, ऐसा जव गौतमजीने सुना कि, सर्वज्ञ आया, तव मनमें ईर्षाकी अग्नि भडकी, अरु ऐसें कहने लगाकि:—मेरेसें अधिक और सर्वज्ञ कौन है ? मैं आज इसका सर्वज्ञपणा उडा देता हुं ? इत्यादि गर्व संयुक्त भग

वान् श्रीमहावीरकेपास पहुंचा, और भगवानकों चौतीस अतिशय संयुक्त देखा, तथा देवता, इंद्र, मनुष्योंसे, परिवृत देखा, तब बोलनेकी शक्तिसें हीन हुवा, भगवंतके सन्मुख जाके खडा हो गया, तब भगवंतने कहा किः– हे गौतम इंद्रभूति तुं आया, तब गौतमजीने मनमें विचारा कि, जो मेरा नामभी ये जानते हैं, तोभी मैं सर्व जगे प्रसिद्ध हूं मुझे कौन नहीं जानता हे इसें मेरा नाम लीया इस बातमें कुछ आश्चर्य और सर्वज्ञ इसकों नहीं मानता हूं, किंतु मेरे मनमें जो संशय है तिसकों दूर कर देवे तोमें इसकों सर्वज्ञ मानुं तब भगवंतनें कहा, हे गौतम! तेरे मनमें यह संशय हैः– जीव है कि नहीं? और यह संशय तेरेकों वेदोंकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसें हूवा है वो श्रुतियों यह है, सो कहते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ "विज्ञानघनएवै तेभ्योभूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्य संज्ञास्तीतीत्यादि" इस्सें विरुद्ध यह श्रुति हैः–सवैः अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि इन श्रुतियोंका अर्थ जैसा तेरे मनमें भासन होता है, तैसाही प्रथम श्रुतिका अर्थ कहते हैं। नीलादि रूप होनेसें विज्ञानही चैतन्य है चैतन्य विशिष्ट जो नीलादि तिस्से जो घन सो विज्ञानघन. सो विज्ञानघन इन प्रत्यक्ष परिछियमान रूप पृथ्वी, अप्प, तेज, वायु, आकाश, इन पांच भूतोंसें उत्पन्न होकर फेर तिनके साथही नाश हो जाता है अर्थात् भूतों के नाश होनेसें उनकेसाथ विज्ञानघनकाभी नाश हो जाता है, इस हेतुसें प्रेत्यसंज्ञा नहीं अर्थात् मरके फेर परलोकमें और कोई नर नारकका जन्म नहीं होता, इस श्रुतिसें जीवकी नास्ती सिद्ध होती है, और दूसरी श्रुति कहती है किः–यह आत्मा ज्ञान मय अर्थात् ज्ञान स्वरूप है इस्से आत्मा की सिद्धी होती है, अब ये दोनो श्रुतियों परस्पर विरोधी होनेसें प्रमाण नहीं हो शक्ती है और बहुत परस्पर आत्माके स्वरूपमें विरोधी मत है, कोई कहता है किः–"एतावानेवपुरुषो, यावानिंद्रियगोचरः ॥ भद्रेवृकपदं पश्य, यद्वदंत्य बहुश्रुता" ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ यहभी एक आगम कहता है तथा "न रूपं भिक्षवः पुद्गलः" अर्थात् आत्मा अमूर्त्ति है, यहभी एक आगम कहता है, तथा "अकर्त्तानिर्गुणोभोक्ता आत्मा, अर्थः– अकर्त्ता सत्व, रज, अरु तम, इन तीनों गुणोंसें सुख दुःखका भोगनेंवाला

आत्मा है, यहभी एक आगम कहता है, अब इनमेंसें किसकों सच्चा और किसकों झूठा मानें परस्पर विरोधी होनेसें, सर्व तो कुछ सच्चे होही नही शक्ते हैं तथा युक्ति प्रमाणसेंभी मरके परलोक जानेंवाली आत्मा सिद्ध नही होती है ऐसा हे गौतम तेरे मनमें संशय है, अब इसका उत्तर कहता हूं कि, तूं वेद पदोंका अर्थ नही जानता है इत्यादि कहके श्रीगौतमजीके संशयकों दूर करा, ये सर्व अधिकार मूलावश्यक और श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, मैंनें ग्रंथके भारी और गहन हो जानेके सबबसें यहां नही लिखा क्योंकि सर्व इग्यारह गणधरोंके संशय दूर करनेंका कथनके चार हजार श्लोक है, पीछे जब गौतमजीका संशय दूर हो गया, तब गौतमजी पांचसो अपनें विद्यार्थियोंके साथ दीक्षा लेके श्रीमहावीर भगवंतका प्रथम शिष्य हुवा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इसीतरे इंद्रभूतिकों दीक्षित सुनके, दूसरा भाई अग्निभूति बडे अभिमानमें भरकर चला और कहने लगाकिः, मेरे भाईकों इंद्रजाली येनें छलसें जीतके अपना शिष्य बना लीया, तो मैं अभी उस इंद्रजालीयेकों जीतके अपने भाईकों पीछा लाता हूं इस विचारसें भगवंत श्रीमहावीरजीकेपास पहुंचा, जब भगवानकों देखा, तब सर्व आड वाड भूल गया मुखसें बोलनेंकीभी शक्ती न रही, और मनमें बडा अचंभा हूआ, क्योंकि ऐसा स्वरूप न उसने कभी सुना था और कभी देखा था, तब भगवाननें उसका नाम लीया, अग्निभूतिनें विचारा कि यह मेरा नामभी जानते है, अथवा मैं प्रसिद्ध हूं मुझे कौन नही जानता है, परंतु मेरे मनका संशय दूर करे तो मैं इसकों सर्वज्ञ मानुं, तब भगवंतनें कहा हे अग्निभूति तेरे मनमें यह संशय है कि कर्म है किंवा नही यह संशय तेरेकों विरुद्ध वेदपदोंसें हूआ है क्योंकि तूं वेद पदोंका अर्थ नही जानता है, वे वेदपद यह हैः— "पुरुषएवेदंग्निंसर्वंयद्भूतं यच्च भाव्यं उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनाऽतिरोहति यदेजाति यन्नेजति यद्दूरे यदुअंतिके यदंतरस्य यदुत सर्वस्यास्य बाह्यत इत्यादि" इस्सें विरुद्ध यह श्रुति हैः— "पुण्यःपुण्येनेत्यादि" और इनका अर्थ तेरे मनमें ऐसा भासन होता है कि, पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारणके वास्ते है, सो अवधारण कर्म और प्रधानादिकोंके व्यवच्छेद

वास्ते है, "इदं सर्व" अर्थात् यह सर्व प्रत्यक्ष वर्त्तमान चेतन अचेतन वस्तु "ग्नि" यह वाक्यालंकारमें है यद्भूतं अर्थात् जो पीछे हूआ है और आगेको होवेगा, जो मुक्ति तथा संसार सो सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मही है तथा उतशब्द अतिशब्दके अर्थमें है, और अपिशब्द समुच्चय अर्थमें है अमृतत्वस्य अमरणभावका अर्थात् मोक्षका ईसानःप्रभुः अर्थात् स्वामी (मालक) है, यदिति यच्चेति च शब्दके लोप होनेसें यदिति बना इसका अर्थ जो अन्न करकें वृद्धिकों प्राप्त होता है, "यदेजति" जो चलता है ऐसे पशुआदिक और जो नहीं चलता है ऐसे पर्वतादिक और जो दूर है मेरु आदिक "यत्तुअंतिके" उ शब्दअवधारणार्थमें है, जो समीप अर्थात् नैमे है सो सर्व पूर्वोक्त पदार्थ पुरुष अर्थात् ब्रह्मही है, इस श्रुतिसें कर्मका अभाव होता है अरु दूसरी श्रुतिसें तथा शास्त्रांतरोंसें कर्म सिद्ध होते है, तथा युक्तिसें कर्मसिद्ध होते नहीं क्योंकि अमूर्त्त आत्माकों मूर्त्ति कर्म लगते नहीं, इसवास्ते मैं नही जानता कि कर्म है वा नही यह संशय तेरे मनमें है, ऐसा कह कर भगवाननें वेदश्रुतियोंका अर्थ बराबर करके तिसका पूर्वपक्ष खंमन करा, सो विस्तारसें मूलावश्यक तथा विशेषावश्यकसें जानलेना अग्निभूतिनेंभी गौतमवत् दीक्षा लीनी ॥ २ ॥

॥ ※ ॥ अग्निभूतिकी दीक्षा सुनके तीसरा वायुभूति आया, परंतु आगे दोनों भाईयोंके दीक्षा ले लेनेंसें इसकों विद्याका अभिमान कुछभी न रहा, मनमें विचार करा कि मैं जाकर भगवानकों वंदना (नमस्कार) करुंगा ऐसा विचारके आया आकर भगवंतकों वंदना (नमस्कार) करा। तब भगवंतने कहा तेरे मनमें संशयतो है परंतु क्षोभसें तूं पूछ नही शक्ता है, संशय यह है कि जो जीव है सो देहही है और यह संशय तेरेकों विरुद्ध वेदपद श्रुतिसें हूआ है, और तूं तिन वेदपदोंका अर्थ नहीं जानता है वे वेदपद ये हैः– "विज्ञानघन इत्यादि" पहिले गणधरकी श्रुति जाननी, इससें देहसें जीव (आत्मा) सिद्ध नहीं होता है, और इस श्रुतिसें विरुद्ध यह श्रुति है, (सत्येव लभ्यस्तपसा ह्येषब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयो हि शुद्धोयं पश्यंति धीरायतयः संयतात्मान इत्यादि) इस श्रुतिसें देहसें भिन्न आत्मा सिद्ध होती है, इसवास्ते तुझकों संशय है, पीछे भगवान्नें यह सर्व संशय दूर

करा, तव तीसरा वायुभूतिनेंभी अपने पांच सौ विद्यार्थीयोंकेसाथ दीक्षा लीनी ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वायुभूतिकी तरें शेष आठ गणधर क्रमसें आये, तिसमें चौथा अव्यक्तजी आया, तिनके मनमें यह संशय था कि पांचभूत है कि नही ए संशय विरुद्ध श्रुतियोंसें हुआ, वे परस्पर विरुद्ध श्रुतियों यह हैं—"स्वप्नोपम वै सकलमित्येव ब्रह्मविधरंजसाविज्ञेयइत्यादीनि" तथा इससें विरुद्ध यह श्रुति है "द्यावापृथिवी जनयन्देवइत्यादी" तथा पृथिवीदेवता, अप्पोदेवता, इत्यादीनि इनका अर्थ तेरे मनमें ऐसा भासन होता हैः—अर्थ, स्वप्न सरीखा वैनिपात अवधारणार्थे संपूर्ण जगत है "एष ब्रह्मविधि" अर्थात् यह परमार्थ प्रकार है, अंजसा सीधेन्यायसें जाननां योग्य है, यह श्रुति पंचभूतका अभाव कहती है, और श्रुतियों पांचभूतकी सत्ताकों कहती है इसवास्ते तेरेकों संशय है, तेरे मनमें यहभी है किः—युक्तिसें पांचभूत सिद्ध नहीं होते है, पीछे भगवाननें इसका पूर्वपक्ष खंडन करा वेद पदोंका यथार्थ अर्थ कराये, यह अधिकार उक्त ग्रंथोंसें जान लेनां ॥ यह सुनकर चौथा वायुभूतिनेंभी अपना पांचसै शिष्योंकेसाथ दीक्षा लीनी ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ तव पांचमां सुधर्म नामा पंडित आया, इसकाभी उसीतरे सर्वाधीकार जानलेना यावत् तेरे मनमें यह संशय है कि मनुष्यादि सर्व जैसें इस भवमें है तैसेंही अगले जन्ममें होते है कि, मनुष्य कुछ और पशुआ दिभी वन जाते है, यह संशय तेरेकों परस्पर विरुद्ध वेद श्रुतियोंसें हुआ है सो वेद श्रुतियों यह हैः—"पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादीनि" यह श्रुति जैसा इस जन्ममें पुरुष स्त्री आदि है वे पर जन्ममेंभी ऐसेही होवेंगे, इस्से विरुद्ध यह श्रुति है "श्रगालोवैएषजाहते यः सपुरुषोदह्यत इत्यादि इन सर्व श्रुतियोंका भगवानने अर्थ करके संशय दूर करा, तव अपनें पांचसे शिष्योंके साथ दीक्षा लीनी ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तीस पीछे छठा मंडिक पुत्र आया तिसके मनमें यह संशय था, कि बंध मोक्ष है, वा नहीं है यह संशयभी विरुद्ध श्रुतियोंसे हुवा है, सो श्रुतियों यह हैः "स एष विगुणोविभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा ॥ एष बाह्यमभ्यंतरं वा वेदइत्यादीनि" इस श्रुतिका ऐसा

अर्थ तेरे मनमें भासन होता है, "एषअधिकृतजीवः" अर्थात् यह जीव जिसका अधिकार है "विगुणः" अर्थात् सत्वादि गुण रहित सर्वगत सर्व व्यापक पुण्य पाप करके इसको बंध नहीं होता है, और संसारमें भ्रमण भी नहीं करता है, और कर्मोंसें छूटताभी नहीं है, बंधके अभाव होनेसें दूसरोंको कर्मबंधसें छोडाताभी नहीं है, इस कहनेसें आत्मा अकर्त्ता है, सोई कहता है, यह पुरुष अपणी आत्मासें बाहिर महत् अहंकारादि और अभ्यंतर स्वरूप अपना जानता नही, क्योंकि जानना ज्ञानसें होता है, और ज्ञानजो है, सो प्रकृतिका धर्म है, और प्रकृति अचेतन है, बंध मोक्ष नही इस श्रुतिसें बंध मोक्षका अभाव सिद्ध होता है। अब इस्से विरुद्ध श्रुति यह है सो कहते हैं "नही वैशरीरस्य प्रिया प्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसंतं प्रिया प्रिये नस्पृशत इत्यादीनि" इसका अर्थ कहते हैं:- सशरीरस्य, अर्थात् शरीर सहितको सुख दुःखका अभाव कदापि नहीं होता है, तात्पर्य यह है कि संसारी जीव सुख दुःखसें रहित नही होता है, और अमूर्त्ति आत्माको कारणके अभावसें सुख दुःख स्पर्श नहीं कर शक्ते हैं, इस श्रुतिसें बंध मोक्ष सिद्ध होते है, तथा तेरे मनमें यहभी वात है:- कि युक्तिसेंभी बंध मोक्ष सिद्ध नही होते है इत्यादि संशय कहकर भगवान्ने तिसके पूर्वपक्षको खंमन करके संशय दूर करा, तब मंमितपुत्र साढेतीनसौ विद्यार्थियोंके साथ दीक्षित भया ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ७ ॥ तिसके पीछे सातमा मोर्यपुत्र आया, तिसके मनमें यह संशय था कि:- देवता है किंवा नही हैं यह संशय परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसें हुआ वो श्रुतियो यह है: "सएषयज्ञायुधीयजमानोंज सास्वर्गलोकं गच्छति इत्यादि श्रुतियो स्वर्ग तथा देवताओंकी सिद्धि करतीयां है, इससें विरुद्ध श्रुति यह है:- अपामसोमं अमृता अभूम् अगमामज्योतिर्विदामदेवान् ॥ किंनूनमस्मान्तृणवदरातिः किमुधूर्त्ति रमुतमर्त्यस्येत्यादीनि "तथा को जानाति मायोपमान् गीर्वाणानि इंद्रवरुणकुबेरादीन् इत्यादि"- इनका ऐसा अर्थ तेरे मनमें भासन होता है, कि- पाणीकों पीते हुये एतावता सोमलताकारस पीते हूये अमृत (अमरण) धर्मवाले हम हुये हैं ज्योति स्वर्ग और देवताकों हम नही जानते हैं तथा देवता हम हूये हैं, यहभी

नहीं जानते देवता तृणेकी तरें हमारा क्या कर शक्ते है, यह श्रुति अभाव प्रतिपादन करती है, और यह भावकी प्रतिपादक है, "धूर्त्तिंजराअमृत मर्त्यस्य" अमृतत्व प्राप्तपुरुषकों क्या कर सक्ती है। इन श्रुतियोंका यथार्थ अर्थ करकें, और तिसका पूर्वपक्ष खंडन करके भगवंतनें इनका संशय दूर करा, तब यहभी साढेतीनसो छात्रोंके साथ दीक्षित भया ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ८ ॥ तिस पीछे आठमा अकंपिक आया उसके मनमेंभी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियेंाके पदोंसें, नरकवासी है कि नही। यह संशय उत्पन्न हूआ था, वो परस्पर विरुद्ध श्रुतियां लिखते हैं:— "नारको वै एष जायतेयः शुद्रान्नमश्नाति इत्यादि" इसका अर्थ— यह ब्राह्मण नारक होवेगा जो शूद्रका अन्न खाता है। इस श्रुतिसें नरक सिद्ध होता है, तथा "नह वैप्रेत्यनरके नारका संतीत्यादि सुगमार्थः। इस श्रुतिसें नरकका अभाव सिद्ध होता है। इनका अर्थ करकें और पूर्वपक्ष खंडन करकें भगवाननें तिसका संशय दूर करा तब अकंपिकनेंभी तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥८॥

॥ ※ ॥ ९ ॥ तिस पीछे नवमा अचलभ्राता आया, तिसकोंभी परस्पर वेदकी विरुद्ध श्रुतियेंाके पदोंसें, पुण्य पाप है कि नही। यह संशय था, सो वेद पद यह है— "पुरुषएवेदंग्निंसर्वंइत्यादि दूसरे गणधरवत्, इस्सें विरुद्धपद यह है:— "पुण्य पुण्येन कर्मणा भवति, पापं पापेन कर्मणा भवति इत्यादि" इस्सें पुण्यपाप सिद्ध होते है, यह संशयभी भगवाननें दूर करा तब यहभी तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षित भया ॥ ९ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १० ॥ तिस पीछे दशमा मेतार्य आया। उसकोंभी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियेंासें यह संशय हुवा था, कि परलोक है किंवा नही है वो श्रुतियां यह हैं:— विज्ञानघन, इत्यादि प्रथम गणधरवत् अभाव कथन श्रुति जाननी" तथा "सवैः अयं आत्मा ज्ञानमय इत्यादि" परलोक भाव प्रतिपादक श्रुति जाननी। इनका तात्पर्य भगवाननें कहा, तब मेतार्यजीनें निःशंक होकें तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ११ ॥ तिस पीछे इग्यारहवा प्रभास नामा गणधर आया तिसके मनमेंभी वेद श्रुतियांके परस्पर विरुद्ध होनेसें यह संशय था कि निर्वाण है कि नही है, वो श्रुतियां यह है:— "जरामर्यं वा एतत्सर्वं यदग्नि होत्रं"

इस्सें विरुद्ध श्रुति यह है:—"द्वेब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतंब्रह्मेति" इनका यह अर्थ तेरी बुद्धिमें भासन होता है कि:—अग्निहोत्र जो है सो जीव हिंसा संयुक्त है, और जरा मरणका कारण है, अरु वेदमें अग्निहोत्र निरंतर करणां कहा है, तब ऐसा कौनसा काल है, कि जिसमें मोक्ष जानेका कर्म करीयें, इसवास्ते आत्माकों मोक्ष (निर्वाण) कदापि नहीं हो शक्ता है, अरु दूसरी श्रुति मोक्ष प्राप्तिभी कहती है, इसवास्ते संशय हुआ है, इसका जब भगवाननें उत्तर देके निशंक करा तब तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ११॥ इसीतरे श्रीमहावीर भगवंतके वैशाख शुदि दशमीके दिन मध्यपापानगरीके महासेन वनमे (४४००) शिष्य हुये, तिस पीछे राजपुत्र, श्रेष्ठिपुत्रादि, तथा राजपुत्री, श्रेष्टिपुत्री, राजाकी राणीयां आदिकनें दीक्षा लीनी। तथा जब भगवंत श्रीमहावीरजी पावापुरीमें मोक्ष गये, तिसही रात्रिमें इंद्रभूति, अर्थात् गौतम गणधरकों केवल ज्ञान हुआ। तब इंद्रोंनें निर्वाण महोत्छव करके, ग्यानका उत्छव करा, और सुधर्मास्वामीजीकों श्रीमहावीर स्वामीजीकी गद्दीऊपर बैठाया। श्रीगौतमजीकों गद्दी इसवास्ते न हुई कि:, केवलज्ञानी पुरुष कोई पाट ऊपर नहीं बैठता है, क्योंकि केवली तो जो पूछे उसका उत्तर अपनें ज्ञानसेंही देता है, परंतु ऐसा नहीं कहता है, कि मैं अमुक तीर्थंकरके कहनेसें कहता हुं, इसवास्ते केवलज्ञानी पाट ऊपर नहीं बैठता है, जेकर बैठे तो तीर्थंकरका शासन दूर हो जावे, यह कभी हो नहि शक्ता, जो अनादि रीतिकों केवली भंग करे, इसवास्ते श्रीगौतमजी केवलज्ञानी था, इस्सें गद्दी ऊपर नही बैठे, और श्रीसुधर्म स्वामी बैठे ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ श्री सुधर्मस्वामी पचास वर्ष तो गृहस्थावास (घरमें) रहे, और तीस वर्ष श्रीमहावीर भगवंतकी चरण सेवा करी, जब श्रीमहावीर निर्वाण हुआ, तिस पीछे बारावर्ष तक छद्मस्थ रहे, और आठ वर्ष केवली रहे, क्योंकि श्रीमहावीर अर्हंतके पीछे केवली होकर बारावर्ष श्रीगौतमजी जीते रहे, और श्रीगौतमजीके निर्वाण पीछे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकों केवल ज्ञान हुआ। केवली होकर आठ वर्ष जीते रहे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकी सर्वायु एकसौ (१००) वर्षकी थी. सो श्रीमहावीरजीके वीशवर्ष पीछे मोक्ष

गये ॥ ३ श्रीसुधर्मस्वामीके पाट ऊपर, श्रीजंबूस्वामी बैठे। सो राजगृह नगर कावासी श्रीऋषभदत्त श्रेष्ठकी धारणी नामा स्त्रीनें जन्मेथे, निन्नानवे क्रोड सोनइये और आठ स्त्रीयोंकों छोडकर दीक्षा लेता भया, शोलेवर्ष गृहस्थ वासमें रहे, वीश वर्ष व्रतपर्याय, और चौतालीस वर्ष केवलपर्याय पालके श्रीमहावीरके निर्वाण पीछे चौशठमें वर्ष मोक्ष गये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ यह श्रीजंबूस्वामीके पीछे भरतक्षेत्रमें दश वातें विछेद होगई तिसका नाम लिखते हैं:—१ मनः पर्यायज्ञान, २ परमावधि ज्ञान, ३ पुलाक लब्धि ४ आहारकशरीर, ५ क्षपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पमुनिकी रीति, ८ परिहार विशुद्धिचारित्र, तथा सूक्ष्मसंपराय, और यथाख्यात यह तीन तरेंके संयम, ९ केवलज्ञान, १० मोक्ष होना, यह दश वस्तु विछेद हो गई, श्रीमहावीर भगवंतके केवली हुये पीछे जब चौदहवर्ष बीतेथे, तब जमाली नामा प्रथम निन्हव हुआ। और सोलावर्ष पीछे तिष्य गुप्त नामा दूसरा निन्हव हुवा। श्रीजंबूस्वामीकी आयु असी वर्षकी थी॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ ४ ॥ जंबूस्वामीके पाट ऊपर, प्रभवस्वामी बैठे । तिनकी उत्पत्ति ऐसें है, विंध्याचल पर्वतके पास जयपुर नामा पत्तन था, तिसका विंध्य नामा राजा था, तिसके दो पुत्र थे, एक बडा प्रभव, दूसरा छोटा प्रभु, विंध्यराजाने किसी कारणसें छोटे पुत्र प्रभुकों राज तिलक दे दीया, तब बडा बेटा प्रभव गुस्सें होकर जयपुर पत्तनसें निकलकर, विंध्याचलकी विषम जगामें गाम वसाकर रहने लगा, और खात्रखनन, वंदिग्रहण रस्ते लूटनादि, अनेक तरेंकी चोरीयोंसें अपनें परिवारकी आजीविका करता था, एक दिन पांचसौ चोरोंकों लेकर राजगृह नगरमें जंबूजीके घरकों लूटनें आया, तहां जंबूस्वामीनें तिसकों प्रतिबोध करा, तब तिसनें पांचसौ चोरोंके साथ दिक्षा श्रीजंबूजीके साथ लीनी. इत्यादि जंबूजीका और प्रभवजीका अधिकार जंबूचरित्र, तथा परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोंसें जान लेना. प्रभवस्वामी तीसवर्ष गृहस्थ पर्याय, चौतालीश वर्ष व्रतपर्याय, तथा एकादश वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व पंचाशी वर्षकी आयुपूरी करके श्री महावीरसें पंचहत्तर वर्ष पीछे स्वर्ग गया ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ५ ॥ श्रीप्रभवस्वामीके पाट ऊपर, श्रीशय्यंभव स्वामी बैठे, जि

नोनें मनक साधुकेवास्ते दशवैकालिक सूत्र वनाया, तिनकी उत्पत्ति ऐसें है: एकदा प्रस्तावें प्रभवस्वामीनें रात्रिमें विचार करा कि मैरे पाट ऊपर कौन बैठेगा, पीछे ज्ञान बलसें अपणे सर्वसंघमें पाट योग्य कोई न देखा, तब परदर्शनीयोंकों ज्ञान बलसें देखनें लगा, तब राजगृह नगरमें शय्यंभव भट्टकों यज्ञ करते हुयेकों अपने पाट योग्य देखा, पीछे प्रभवस्वामी विहार करकें, सपरिवारसें राजगृह नगरमें आये, उहां दो साधुओंकों आदेश दीया कि तुम यज्ञ पाडेमें जाकर भिक्षाके वास्ते धर्म लाभ कहो, और यज्ञ करने वालोंकों ऐसे कहो:—"अहोकष्ट महोकष्ट तत्वं विज्ञायते नहि" तब तिन साधुओनें पूर्वोक्त गुरुका कहना सर्व कीया। जब ब्राह्मणोनें "अहो कष्ट" इत्यादि सुना, और तिस यज्ञ वाडेमें शय्यंभव ब्राह्मणनें यज्ञ दीक्षा लीनी थी, तिसने यज्ञ वाडेके दरवाजेमें खडेथके, अहोकष्टं इत्यादि मुनियोंका कहना सुनके विचार करनें लगा, कि ऐसा उपशम प्रधान साधु होते हैं, इसवास्ते यह असत्य (झूठ) नही बोलते हैं, इसें मनमें संशय होगया, तब उपाध्यायकों पूछा कि तत्व क्या है, तब उपाध्यायनें कहा कि चार वेदमें जो कथन करा है सो तत्व है, क्योंकि वेदोंके शिवाय और कोई तत्व नहीं है, तब शय्यंभवनें कहा कि तूं दक्षिणाके लोभसें मुझकों तत्व नहीं बतलाया है, क्योंकि राग द्वेष रहित, निर्मम, निःपरिग्रह, शांत, दांत, महांत मुनियोंका कहनां झूठा नहीं होता है, और तूं मेरा गुरु नहीं तैनें तो जन्मसें इस जगत्कों ठगनाही सीखा है, इसवास्ते तूं शिक्षाके योग्य है, इसवास्ते यातो मुझे तत्व कह दे, नहीं तो तलवारसें तेरा शिरछेद करुंगा, ऐसें कहके जब मियानसें तलवार काढी, तब उपाध्यायने प्राणांत कष्ट देखकें कहा हमारे वेदोंमेंभी ऐसें लिखा है और हमारी आम्नायभी यही है, जब हमारा कोई शिरछेद किया चाहे तब तत्व कहनां नहीं तो नहीं कहनां तिस वास्तेमें तुझकों तत्व कह देताहूं कि इस यज्ञ स्थंभके हेठे अर्हंतकी प्रतिमा स्थापन करी है, और नीचेही तिसकों प्रछन्न होकर पूजते है, तिसके प्रभावसें यज्ञके सर्व विघ्न दूर हो जाते है, जेकर यज्ञस्थंभके नीचे अर्हतकी प्रतिमा न राखें तो महातपा सिद्धपुत्र, और नारद, ये दोनों यज्ञकों विध्वंस कर देते हैं, पीछे उपाध्यायने यज्ञस्थंभ उखाडके अर्हतकी

प्रतिमा दिखाई और कहा कि यह प्रतिमा जिस देवकी है, तिस अर्हंतका कहा हुआ धर्म जीवदया रूप तत्व है, और यह जो वेद प्रतिपाद्य यज्ञ हैं वे सर्व हिंसात्मक रूप होनेसें विडंबना रूप है, परंतु क्याकरें जेकर हम ऐसें न करें तो हमारी आजीविका नहीं चलती है, अब तूं तत्व जानले और मुझकों छोड दे, अरु तुं परमार्हत होजा, क्योंकि मैंनें अपने पेटकेवास्ते तुझकों बहुत दिन बहकाया है, तब शिय्यंभवने नमस्कार करके कहा तूं यथार्थ तत्वके कहनेसें सच्चा उपाध्याय है, ऐसा कहकर शिय्यंभवने तुष्टमान होकर यज्ञकी सामग्री जो सुवर्णपात्रादि थे, वे सर्व उपाध्यायकों दे दई, और प्रभवस्वामीके पास जाकर तत्वका स्वरूप पूछकर दीक्षा लेलीनी, शेष इनका वृत्तांत परिशिष्टपर्वादि ग्रंथसें जान लेना शिय्यंभवस्वामी अठाईस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, इग्यारह वर्ष सामान्य साधु व्रतमें रहे, और तेवीस वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु बाशठ वर्ष भोगवके श्रीमहावीर भगवंतके अठानवे वर्ष पीछे स्वर्ग गये ॥※॥

॥ ※ ॥ ६ ॥ श्रीशिय्यंभवस्वामीके पाट ऊपर यशोभद्र स्वामी बैठे, सो बावीश वर्ष गृहस्थावासमें रहे, और चौदहवर्ष व्रतपर्यायमें रहे, अरु पंचास वर्ष तक युगप्रधान पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु छ्यासी वर्षकी भोगके श्री महावीरसें (१४८) वर्ष पीछे स्वर्गमें गये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ७ ॥ श्रीयशोभद्रस्वामीके पाट ऊपर, श्री संभूतविजय स्वामी बैठे, सो बैतालीस वर्ष तक गृहस्थ रहे, और चालीश वर्ष व्रत पर्यायमें रहे, तथा आठ वर्ष युगप्रधान पदवीमें रहे, सर्वायु नव्वे वर्ष भोगके स्वर्गमें गये, ॥ ७ ॥—॥ ८ ॥ श्री संभूतिविजय स्वामीके पाट ऊपर, श्री भद्रबाहु स्वामी बैठे सो भद्रबाहु स्वामीने, १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारांगकी निर्युक्ति, ५ सूत्रकृदंग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति, ७ ऋषिभाषित निर्युक्ति, ८ कल्प निर्युक्ति, ९ व्यवहार निर्युक्ति, १० दशा निर्युक्ति, ये दशनिर्युक्तियो, और १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कंध, यह नवमे पूर्वसें उद्धार करके बनाये, और एक बहुत बडा भद्रबाहु नामें संहिता ज्योतिष शास्त्र बनाया, उपसर्गहर स्तोत्र बनाया, जैनमतीयों ऊपर बहुत उपकार

करा । इनही भद्रबाहुजीका सगाभाई वराहमेहर हूआ, वो पहिले तो जैनमतका साधु हुवा था, फेर साधुपणा छोडके वराही संहिता बनाई और जो वराह मिहर विक्रमादित्यकी सभाका पंडित था, वो दूसरा वराहमिहर था, संहिता कारक वो नहीं हूआ, इसका संपूर्ण वृत्तांत परिशिष्ट पर्वसें जान लेना, श्रीभद्रबाहुस्वामी गृहस्थावासमें पैंतालीश वर्ष रहे, सत्तरे वर्ष व्रतपर्याय, अरु चौदह वर्ष युगप्रधान, सर्व मिलकर छहत्तर वर्षकी आयु भोगके श्रीमहावीरसें एकसौसित्तर (१७०) वर्ष पीछे स्वर्ग गए ॥

॥ ※ ॥ ८ ॥ भद्रबाहु स्वामीके पाट ऊपर श्रीस्थूलभद्र स्वामी बैठे इनका बहुत वृत्तांत है सो परिशिष्ट पर्वग्रंथसें जान लेना, १ श्री प्रभवस्वामी, २ श्री शिय्यंभवस्वामी, ३ श्री यशोभद्रस्वामी, ४ श्री संभूत विजय, ५ श्रीभद्रबाहुस्वामी, ६ श्रीस्थूलभद्रस्वामी, यह छहों आचार्य चौदह पूर्वकेवेत्ता थे, श्रीथूलभद्रस्वामी तीस वर्ष गृहस्थावासमें रहें, चौवीश वर्ष व्रत पर्याय, अरु पैंतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु निन्नानवें वर्षकी भोगकें श्रीमहावीरके पीछे (२१५) वर्षं स्वर्ग गये, श्रीमहावीरसें दोसौ चौदह वर्ष पीछे आपाढा चार्यके शिष्य तीसरे निन्हव हूये ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीस्थूलभद्रस्वामीके वखतमें नवनंदोंका एकसौ पंचावन (१५५) वर्षका राज्य उछेद करकें चाणाक्य ब्राह्मणनें चंद्रगुप्तराजाकों राजसिंहासन ऊपर बैठाया, और चंद्रगुप्तके संतानोंनें एकसौ आठ वर्षतक राज्य कीया चंद्रगुप्त मोरपालका बेटा था, इसवास्ते चंद्रगुप्तका मौर्यवंश कहते हैं, यह चंद्रगुप्त जैनमतका धारक श्रावक राजा था, यह चंद्रगुप्त, तथा नवनंदका वृत्तांत देखना होवे, तदा परिशिष्ट पर्व, उत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यक वृत्तिसें देख लेनां ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री स्थूलभद्रस्वामीके पीछें ऊपरले चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान व्यवछेद हो गये, तथा श्रीमहावीरसें दोसौ बीस (२२०) वर्ष पीछे अश्वमित्र नामा चौथा क्षणिकवादि निन्हव हूआ, और श्रीस्थूलभद्रजीके समयमें बारा वर्षका दुर्भिक्ष (काल) पड़ा, उस समयमें चंद्रगुप्तका राज था, तथा श्री महावीरके पीछे (२२८) वर्ष व्यतीत हूए तब गंग नामा पांचमां निन्हव हुआ ॥ ※ ॥ ८ ॥

॥ ※ ॥ ९ ॥ श्रीस्थूलभद्रजीके पाट ऊपर श्रीआर्यमहागिरि बैठे, सो आर्यमहागिरिके शिष्य, १ बहुल, २ बलिस्सह हुआ, फेर बलिस्सहका शिष्य श्रीउमास्वातीजी भया जिसनें तत्वार्थादि सूत्र रचे है और उमास्वातीका शिष्य श्यामाचार्य, जिसनें प्रज्ञापना (पन्नवणासूत्र) बनाया, यह श्यामाचार्य श्रीमहावीरसें तीनसौ छिहत्तर वर्ष पीछे स्वर्ग गया, और आर्य महागिरजी तीस वर्ष गृहवासमें रहे, चालीस वर्ष व्रतपर्याय, अरु तीस वर्ष युगप्रधान पदवी सर्वायु एकसौ वर्षकी भोगके स्वर्ग गया ॥ ※ ॥९॥

॥ ※ ॥१०॥ श्रीआर्यमहागिरजीके पाट ऊपर श्रीसुहस्तिसूरि, जिसने एक भीखारीकों दीक्षा दीनी, वो भीखारी काल करकें चंद्रगुप्तका बेटा बिंदुसार और बिंदुसारका बेटा अशोक और अशोकका बेटा कुणाल, तिस कुणालका बेटा संप्रति राजा हुआ, तिस संप्रति राजानें जैनधर्मकी बहुत वृद्धि करी, क्यों कि कल्पसूत्रके प्रथम उद्देसेमें श्रीमहावीरके समयमें अबकी निसबत बहुत थोडे देशोमें जैनधर्म लिखा है, मारवाड, गुजरात, दक्षिण, पंजाब वगैरे देशोमें जो जैनधर्म है, सो संप्रति राजाहीसें फैला है, यद्यपि इस कालमें जैनी राजाके न होनेसें जैनधर्म सर्वजगे नही, परंतु संप्रति राजाके समयमें बहुत उन्नत्तिपर था, क्योंकि संप्रति राजाका राज्य मध्य खंड और गंगापार और सिंधु पारके सर्व देशोमें था, संप्रति राजानें अपने नौकरोंकों जैनके साधुओंका वेष बनाकर अपने सेवक राजाओंके जो शक, यवन, फारसादि, देशों थे, तिन देशोंमें भेजे, तिनोंने तिन राजाओंकों जैनके साधुओंका आहार विहार आचारादि सर्व बताया और समझाया पीछेसें साधुओंका विहार तिन देशोंमें कराकर लोकोंकों जैनधर्मी करा, और संप्रति राजानें (९९०००) निनानवें हजार जीर्ण (पुराने) जिनमंदिरोंका उद्धार कराया, अर्थात् पुराना टूटाफूटांकों नवा बनाया और छवीस हजार (२६०००) नवीन जिनमंदिर बनवाये और सोने, चांदी पीतल, पाषाण, प्रमुखकी सवा क्रोड प्रतिमा बनवाई, तिसके बनवाये मंदिर नडौल, गिरनार, शत्रुंजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थानोंमें खडे हमनें अपनी आंखोसे देखे हैं, और संप्रतिकी बनवाई जिनप्रतिमा तो हमनें सैंकडों देखीहै, इस संप्रति राजाका वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोंसें समग्र जान लेनां॥

॥ ※ ॥ श्रीसुहस्ती सूरि आचार्यनें उज्जयनकी रहनेवाली भद्रासेठानीका पुत्र अवंती सुकुमालकों दीक्षा दीनी, और जहां उस अवंती सुकुमालनें काल करा था, तिस जगे तिस अवंती सुकुमालके महाकाल नाम पुत्रनें जिनमंदिर बनवाया, और तिस मंदिरमें अपने पिताके नामसें अवंती पार्श्व नाथकी मूर्त्ति स्थापनकरी, कालांतरमें ब्राह्मणोनें अपना जोर पाकर तिस मंदिरमें मूर्त्तिकों हेठे दाबकर ऊपर महादेवका लिंग स्थापन करके महाकाल (महादेवका) मंदिर प्रसिद्धकर दीया, पीछे जब राजा विक्रम उज्जयनमें हुआ, तिस अवसरमें कुमुदचंद्र, अर्थात् सिद्धसेन दिवाकर नामा जैनाचार्यनें कल्याणमंदिर स्तोत्र बनाया, तब शिवका लिंग फटकर विचमेंसु पूर्वोक्त श्रीपार्श्वनाथकी मूर्त्ति फिर प्रगट हुइ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनका संबंध ऐसा है कि, विद्याधर गच्छमें, जब स्कंदिलाचार्यका शिष्य वृद्धवादि आचार्य था, तिस अवसरमें, उज्जयनका राजा विक्रमादित्य था, तिसका मंत्री कात्यायन गोत्री देवऋषिनामा ब्राह्मण, तिसकी देवसिका नामा स्त्री, तिनका पुत्र सिद्धसेन, सो, विद्याके अभिमानसें सारे जगतके लोकोंकों तृणवत् (घासफुसशमान) समझताथा, और ऐसा जानता था कि मेरे समान बुद्धिमान् कोइभी नही, और जो मुझकों वादमें जीत लेवे, तो मैं उसकाही शिष्य बन जाऊंगा, पीछे तिसने वृद्धवादीकी बहुत कीर्त्ति सुनी उनके सन्मुख जाने वास्ते सुखासन ऊपर बैठके भृगुकच्छ (भरोंच) कीतरफ चल्ला जाता था, तिस अवसरमें वृद्धवादीभी रस्तेमें सन्मुख आता हुआ मिला, तब आपसमें दोनोंका आलाप संलाप हूआ पीछे सिद्धसेनजीने कहा कि, मेरे साथ तुम वाद करो, तब वृद्धवादीने कहा कि वाद तो करुं, परंतु इस जंगलमें जीते हारेका कहनेवाला कोइ शाक्षी नही, तब सिद्धसेनजीने कहा कि, यह जो गौं चरानेवाले गोप हैं, येही मेरे तुमारे साक्षी रहे, ये जिसको कहदेंगे हारा सो हारा, तब वृद्धवादीनें कहा बहुत अच्छा येही साक्षी रहे, अब तुम बोलो, तबसिद्ध सेनजीने बहुत संस्कृत भाषा बोली और चुप करी, तब गोपांने कहा यह तो कुछभी नही जानता केवल ऊंचा बोलके हमारे कानोंकों पीडा देता है, तब गोप कहने लगे, हे वृद्ध तूं बोल? पीछे वृद्धवादी अवसर देखके

कछा बांधकर तिन गोपोंकी भाषामें कहनें लगे, और थोमे थोमे कूदनेंभी लगे, जो छंद उच्चार सो कहते हैं " नविमारिये नविचोरियें, परदारागमण निवारिये ॥ थोवाथोवंदाइयें, सग्गिमट्टेमट्टेजाइयें ॥ १ ॥ फेरभी बोले, और नाचनें लगे ॥ छंद ॥ कालो कंवल नीचोवट्ट, छठे भरिउ दीवड थट्ट ॥ एवम्‌ पडीउ नीले झाड, अवरकिसोछे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ यह सुनकर गोप बहुत खुशी हुये और कहनें लगे कि वृद्धवादी सर्वज्ञ है, इसनें कैसा मीठा कानोंको सुखदायी हमारे योग्य उपदेश कहा, और सिद्धसेन तो कुछ नहीं जानता, तब सिद्धसेनजीने वृद्धवादीको कहा कि हे भगवान्! तुम मुझको दीक्षा देके अपना शिष्य बनाउ, क्योंकि मेरी प्रतिज्ञा थी, के जो गोप मुझे हारा कहेंगे, तो मैं हारा और तुमारा शिष्य बनूंगा, यह सुनकर वृद्धवादीनें कहा, कि भृगुपुरमें राजसभाके बीच तेरा मेरा वाद होवेगा, परंतु यह गोपोंकी सभामें वादही क्या है, तब सिद्धसेन कहा, मैं अवसर नहीं जानता तुम अवसरके ज्ञाता हो इसवास्ते मैं हारा पीछें वृद्ध वादीने राजसभामें उसको पराजय करा, तब सिद्धसेननें दीक्षा लीनी, गुरुनें उनका नाम कुमुदचंद्रजी दीया, पीछे जब आचार्य पदवी दीनी, तब फिर सिद्धसेन दिवाकर नाम रक्खा, पीछे वृद्धवादी तो और कहीको विहार कर गये, और सिद्धसेन दिवाकरको सर्वज्ञ पुत्र ऐसा बिरुद दीया ऐसा बिरुद बोलते हूए अवंती नगरीके चौकमें लाये, तिस अवसरमें राजा विक्रमादित्य हाथी ऊपर चढा सन्मुख मिला तब राजानें सर्वज्ञ पुत्र ऐसा बिरुद सुनके तिनकी परीक्षा वास्ते, हाथी उपर बैठेहीनें मनसें नमस्कार करा तब आचार्यनें धर्मलाभ कहा, राजानें पूछा कि विनाही वंदना करे, आप मेरेको धर्मलाभ क्यों कर कहा, क्या यह धर्मलाभ बहुत सस्ता है, तब आचार्यनें कहा यह धर्मलाभ क्रोमचिंतामणि रत्नोंसेंभी अधिक है जो कोई हमको वंदना करता है उसको हम धर्मलाभ कहते हें और ऐसेंभी नहीं जो तुमने हमको वंदना नहीं करी तुमनेंभी अपनें मनसें वंदना करी, तो मनही सर्व कार्यमें प्रधान है, इस वास्ते हमनें धर्म लाभ कहा है, और तुमनें मेरी परीक्षा वास्तेही मनमें नमस्कार करा है, तब विक्रमराजा तुष्टमान होकर, हाथीसें नीचें उतरकर सर्वसंघकी

समक्ष वंदना करी, और एक क्रोम अशर्फी दीनी, परंतु आचार्यनें अशर्फीयां नही लीनी, क्योंकि वे त्यागी थे, और राजानी पीछा नहीं लेता, तब आचार्यकी आज्ञासें संघपुरुषोनें जीर्णोद्धारमें लगादीनी, राजाके दफतरमें तो ऐसा लिखा है ॥ श्लोक ॥ धर्मलाभ इतिप्रोक्ते, दूरा डुछ्रित पाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौकोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्री विक्रमराजाके आगें सिद्धसेन दिवाकरनें ऐसेंभी कहा था कि ॥ गाथा ॥ पुणे वास सहस्से। सयंमि वरिसाण नवनवइकए ॥ होई कुमार नरिंदो, तुहविक्कमराय सारिच्छो ॥ १ ॥ अन्यदा सिद्धसेन चित्रकूटमें गये, तहां बहुत पुराने जिनमंदिरमें एक बडा मोटा स्थंभ देखा, तब किसीकों पूछा कि यह स्थंभ किसतरांका है, यह सुनकर किसीनें कहा कि यह स्थंभ औषध द्रव्यमय जलादि करकें अभेद्य वज्रवत् है, इस स्थंभमें पूर्वाचार्योंनें बहुत रहस्य विद्याके पुस्तक स्थापन करे है, परंतु किसीसें यह स्थंभ खुलता नहीं यह सुनकर सिद्धसेन आचार्यनें तिस स्थंभकों सूंघा तिसकी गंधसें तिसकी प्रतिपक्षी औषधीयोंका रस, तिस्सें वो स्थंभ कमलकी तरें खिल गया तब तिसमें पुस्तक देखा, तिसमें सुं एक पुस्तक लेकर वांचा, तिसके प्रथम पत्रमें दो विद्या लिखी पाई, एक सरसों विद्या, और दूसरी सुवर्णविद्या, तिसमें सरसों विद्या उसकों कहते हैं कि, जो काम पडे तब मंत्रवादी जितने सरसोंके दाने जपके जलाशयमें गेरे, उतनेही अश्वार बैतालीश प्रकारके आयुधों सहित बाहिर निकलके मैदानमें खडे हो जाते हैं तिनोंसें शत्रुकी सेना भंग हो जाती है, पीछे जब वो कार्य पुरा हो जाता है तब अश्वार अदृश्य हो जाते हैं, और दूसरी हेमविद्यासें विनामेहनतके जितना चाहे, उतना सुवर्ण हो जाता है तब ये, दो विद्या सिद्धसेननें लेलीनी, पीछे जब आगे वांचने लगा, तब स्थंभ मिल गया सर्व पुस्तक बीचमें रह गये, और आकाशसें देव वाणी हुइ, कि तूं इन पुस्तकोंके वाचने योग्य नहीं आगे मत वांचना, वांचेगा तो तत्काल मर जायगा, तब सिद्धसेनने मनमें विचार करा कि दो विद्या मिली सोही सही, पीछे चित्रोडसें विहार करके पूर्वदेशमें कुमार पुरमें गये, तहां देवपाल राजा था तिसकों प्रतिबोधके पक्का जैन धर्मी करा, तहां वो राजा सिद्धांत श्रवण करता है, जब ऐसें कितनाक

काल व्यतीत हुआ, तब एकदा समय राजा गना आया, और आंसुसें नेत्र भरकर कहने लगा कि:— हे भगवन् हम बडे पापी हैं, क्यों कि आपकी ऐसी उत्तम गोष्टिका रस नहीं पीसक्ते हैं कारण कि हम बडे संकटमें पडे है, तब आचार्यने कहा तुमकों क्या संकट हुआ, राजा कहने लगा कि बहुत मेरे वैरी राजे एकठे होकर मेरा राज्य छीना चाहते हैं, तब फेर आचार्यने कहा, कि हे राजन् तूं आकुल व्याकुल मत हो, जब मैं तेरा साहाय करों तो फेर तुझे क्या चिंता है, यह बात सुनकर राजा बहुत राजी हुआ, पीछे आचार्यनें राजाकों पूर्वोक्त दोनों विद्यायोंसें समर्थ कर दीया, तिन विद्यायोंसें परदल भंग हो गया तिनका डेरा डंडा सर्व राजानें लूट लीया, तब राजा आचार्यका अत्यंत भक्त हो गया, उस्सें आचार्य सुखोंमें पडके शिथिलाचारी होगया, यह स्वरूप वृद्धवादी जीनें सुना, पीछे दया करके तिनका उद्धार करने वास्ते तहां आये दरवाजे आगें खडे होकर कहला भेजा कि एक बूढा वादी आया है, तब सिद्ध सेननें बुलाकर अपनें आगे बैठाया वृद्धवादी सर्व अपना शरीर वस्त्रसें ढांक कर बोले:—" अण फुल्लियफुल्लमतोडहिं " मारोवामोडिहिंमणुकुसुमेहिं ॥ अच्चिनिरंजणंजिण, हिंडहिकाइवणेणवणु ॥ १ ॥ इस गाथाकों सुनकर सिद्ध सेननें विचारभी करा परंतु अर्थ न पाया तब विचार करा कि क्या यह मेरे गुरु वृद्धवादी है जिनके कहेका मैं अर्थ नही जानता हूं पीछे जब वार वार देखने लगा तब जाना कि यह मेरा गुरु है पीछे नमस्कार करकें क्षमापन मांगा, और पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ पूछा तब वृद्धवादी कहनें लगे " अणफुल्लियेत्यादि " अणफुल्लियफुल्ल प्राकृतके अनंत होनेसें अप्राप्त फूल फलोंकों मत तोड, भावार्थ यह है कि योग जो है, सो कल्पवृक्ष है, किसतरे कि जिस योग रूप वृक्षमें तप नियम तो मूल है, और ध्यान रूप बडा स्कंध है, तथा समता पणां कविपणां, वक्तापणां, यश, प्रताप, मरण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरणादि सिद्धियों कि जो सामर्थ्य सो फूल है, अरु केवलज्ञान फल है, इससें अभी तो योगकल्पवृक्षके फूलही लगे हैं सो केवल ज्ञानरूप फल करकें आगे फलेंगे, इसवास्ते तिन अप्राप्त फल पुष्पोंकों क्यों तोडता है अर्थात् मत तोड ऐसा भावार्थ है, तथा " मारोव

मोम्हिहिं" जहां पांच महाव्रत आरोपा है तिनकों मत मरोम "म णुकुसुमे स्यादि" मनरूप फूलें करी निरंजनं जिनं पूजय (निरंजन जिनकों पूज) "वनात् वनंकिंहिंम्सि" राजसेवादि बुरे नीरस फल क्यों करता है इति पद्यार्थ, तब सिद्धसेन सूरिनें गुरु शिक्षाकों अपने शिर ऊपर धरके और राजाकों पूछके वृद्धवादी गुरुके साथ विहार कर,, और निर्विघ्न चारित्र धारण करा, अनेक आचार्योंसें पूर्वोका ज्ञान सीखा, एकदा सिद्धसेनजीनें सर्वसंघकों एकठे करकें कहा कि तुम कहोतो सर्वा गमोंकों में संस्कृत भाषामें कर देउं, तब श्रीसंघने कहा क्या तीर्थंकर गणधर संस्कृत नहीं जानते थे, जो तिनहोनें अर्द्धमागधी भाषामें आगम करे ऐसी बात कहनेसें तुमको पारांचिक नाम प्रायश्चित्त लागा हम तुमसें क्या कहें तुम आपही जानते हो, तब सिद्धसेनने गुरुका वचन प्रमाण करकें कहा कि, मैं मौन करकें बारावर्षका पारांचिक नाम प्राय श्चित्त लेकें गुप्त मुख वस्त्रिका, रजोहरणादि लिंग करकें और अवधूत रूप धारके फिरुंगा, ऐसें कह कर गच्छकों छोडके नगरादिकोंमें पर्यटन् करने लगे, बारा वर्षके पर्यंतमें उज्जयन नगरीमें महाकालके मंदिरमें शेफालि काके फूलों करकें वस्त्ररंगे पहने हुए सिद्धसेनजी जाके बैठा, तब पूजारी प्रमुख लोकोंने कहा तुम महादेवकों नमस्कार क्यों नही करता सिद्धसेन तो बोलतेही नहीं हैं ऐसें लोकोंकी परंपरासें सुनकर विक्रमादी त्यनेभी तहां आकर कहा "क्षीर लिलिक्षो भिक्षो किमिति त्वया देवोनवंद्यते" तब सिद्धसेननें कहा मेरे नमस्कारसें तुमारे देवका लिंग फट जायगा फेर तुमकों महादुःख होवेगा, मैं इस वास्ते नमस्कार नही करता हुं तब राजानें कहा लिंग तो फट जानेदो परंतु तुम नमस्कार करो पीछे सिद्ध सेनजी पद्मासन बैठके कहने लगा, तथाहि ॥ श्लोक इंद्रवज्रा वृत्त ।। स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्र, मनेकमेकाक्षरभावलिंगं ॥ अव्यक्तमव्याहत विश्व लोक, मनादिमध्यांतमपुण्यपापं ॥ १ ॥ इत्यादि प्रथमही श्लोक पढनेसें लिंगमेंसें धूंआ निकला, तबलोक कहने लगे शिवजीका तीसरा नेत्र खुला है, अब इस भिक्षुकों अग्निनेत्रसें भस्मकरेगा, तब तो बिजलीके तेजकी तरें तम्तमाट करता प्रथम अग्नि निकला, पीछे श्रीपार्श्वनाथजीका

बिंब प्रगट हूआ, तब वादी सिद्धसेननें कल्याणमंदिर नवीन स्तवन करकें क्षमापन मांगा, तब राजा विक्रमादित्य कहने लगा कि हे भगवन् यह क्या अदृश्यपूर्व देखनेमें आया यह कौनसा नवीन देव है और यह प्रगट क्यों कर हुआ, तब सिद्धसेनजीनें कहा, अवंतीसुकुमालका पुत्र महाकालनें पिताके नामसें अवंती पार्श्वनाथका मंदिर और मूर्त्ति बनाय स्थापन करी थी, तिसकी कितनेक वर्ष लोकोनें पूजा करी, अव सर पाकर ब्राह्मणोंने जिनप्रतिमाकों हेठ दाबके ऊपर यह शिवलिंग स्था पन करा इत्यादि सर्व वृत्तांत कहा, और हे राजन् इस मेरी स्तुतिसें शासन देवताने शिवलिंग फाडके वीचमेंसें यह प्रतिमा प्रगट कर दीनी, अब तूं सत्यासत्यका निर्णय कर ले, तब विक्रमादित्यनें एकसौ गाम मंदिरके खरच वास्ते दीये और देवके समक्ष गुरु मुखसें बारा व्रत ग्रहण करे, और सिद्धसेनकी बहुत महिमा करी अपने स्थानमें गया और वादींद्र (सिद्ध सेनदिवाकरकों) गुरुने जिनधर्मकी प्रभावनासें तुष्टमान होकर संघमें ली या, अरु पूर्ववत् आचार्य बनाया ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करते हुये मालवेके देशमें जो ॐकारनामें नगर है, तहां गये तिस नगरके भक्त श्रावकोनें आ चार्यकों विनती करी, जैसें हे भगवान् इसी नगरके समीप एक गाम था, तिसमें सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी था, तिसकी दो स्त्रीयां थी, एक स्त्रीके प्रथम पुत्री जन्मी वो स्त्री मनमें खीजी तिस अवसरमें उसकी सौकनभी प्रसूत होनेवाली थी, तब तिस बेटीवालोनें विचारा कि इसके पुत्र न होवे तो ठीक है, क्यों कि नही तो यह पतिकों वल्लभ हो जावेगी, तब दाईसें मिलके उस्सें पैदा हुआ पुत्रकों बाहिर गिरा दीया, और तत्कालका मरा हुआ लडका उसके आगें रख दीया, पीछे जो लडका बाहिर गेरा गया था, उसकों कुलदेवीनें गौकारूप करकें पाला जब आठ वर्षका हुआ तब इस ॐकार नगरके शिवभवनके अधिकारी भरटनें देखा और अपना चेला बना लीया, एकदा प्रस्तावे कन्यकुब्ज देशका आंखोंसें आंधा राजाने दिग् विजय कार्यसें तहां पडाव करा तब रात्रिमें उस छोटे चेलेकों शिवभक्त व्यंतर देवतानें कहा कि शेष भोगराजाकों देना उसकी आंख

अच्छी हो जावेगी तैसैंही करा तिस्सें राजाकी आंख अच्छी होगई तब राजाने सो गाम मंदिरके खरच वास्ते दीये और यह बमा ऊंचा जो शिव का मंदिर है सोभी उसीनें बनवाया, और हम इस नगरमें रहते हैं परंतु मिथ्या दृष्टियोंके बलवान् होनेंसें हम जिनमंदिर बनाने नही पाते हैं इस वास्ते आपसें वीनती करते है, कि इस मंदिरसें अधिक हमारा मंदिर यहां बने तो ठीक है, और आप सर्वतरेंसें सामर्थ हो तिनका वचन सुनकर वादिंद्रनें अवंतीमें आकर चार श्लोक हाथमें लेकर विक्रमादित्यके द्वार पास आये, दरवाजे दारके मुखसें राजाकों कहाया "दिदृक्षु भिक्षुरायात। स्तिष्ठति द्वारवारितः। हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः। उतागछतुगछतु ॥१॥ तिस श्लोक कों सुनकर विक्रमादित्यनें बदलेका श्लोक लिखकर भेजा" दत्तानिदशलक्षाणि, शासनानिचतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः ॥ उतागछतुगछतु ॥२॥ तिस श्लोककों सुनकर आचार्यनें कहा भेजा कि, भिक्षु तुमकों मिला चाहता है, परंतु धन नहीं लेता, तब राजाने सन्मुख बुलवाये और पिछानके कहने लगा, कि गुरुजी बहुत दिनों पीछे दर्शन दीया, तब आचार्य कहने लगे धर्मकार्यके करनेंसें बहुत दिन हुये चिरसें आना हुआ, अब चार श्लोक तुम सुनो ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवताशिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगंतरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थितावक्रे, लक्ष्मीकरसरोरुहे ॥ कीर्त्तिःकिंकुपिता राजन्। येन देशांतरेगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्तेजातजाड्येव, चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गतमार्त्तंममंडलं ॥ ३ ॥ सर्वदासर्वदोसीति, मिथ्या संस्तूयसेजनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठं। नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥ यह चारों श्लोक सुनके राजा बहुत खुश हुआ, और आचार्यकों कहने लगा, जो मेरा राज्यमें सार है, सो मांगो तो देदेउं, तब आचार्यनें कहा मुझेतो कुछभी नही चाहता, परंतु उँकार नगरमें चतुर्द्वार जैनमंदिर शिवमंदिरसें ऊंचा बनाउ, और प्रतिष्ठाभी कराउ, तब राजानें वैसेंही करा तब जिनमत प्रभावना देखके संघ तुष्टमान हुआ, इत्यादि प्रकारसें जैनधर्मकी प्रभावना करते हुए दक्षिणदेशमें प्रतिष्ठानपुरमें जाकर अनशन करके देवलोक गये, तब तहांसें संघने एक भट्टकों सिद्धसेनकी गछ पास खबर करनेंकों भेजा तिस भट्टनें सूरियोंकी सभामें आधा श्लोक

पढा और वार वार पढताही रहा, वो आधा श्लोक यह है:— स्फुरंति वादिखद्योता: । सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ जब वार वार यह अर्द्ध श्लोक सुना तब सिद्धसेनकी बहिन साध्वीनें सिद्ध सारस्वत मंत्रसें अर्द्ध श्लोक पूरा करा । नूनमस्तगतोवादी । सिद्धसेनोदिवाकर: ॥ १ ॥ पीछे तिस भट्टनें सर्व वृत्तांत सुनाया, तब संघकों बमा शोक हुआ ॥ इति सिद्धसेन दिवाकरका प्रसंगसें संबंध कथन करा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ यह श्रीआर्य सुहस्ति आचार्य तीस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, और चौवीसवर्ष व्रत पर्याय तथा छेतालीश वर्ष युगप्रधान पदवी सर्व मिलकर एकसौ वर्षकी आयु भोगके श्रीमहावीरसें दोसौ एकानवे (२ए१) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, ११ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १२ श्रीआर्य सुहस्तिसूरिके पाटऊपर, श्रीसुस्थित सूरि हुवा तिनोनें क्रोमोंवार सूरिमंत्रका जापकरा, इसवास्ते गच्छका कोटिक, ऐसा दूसरा नाम श्रीसंघनें रक्खा, क्योंकि श्री सुधर्मस्वामीसें लेकर दशपाटतक तो अनगार निर्ग्रंथगच्छ नाम था, पीछे दूसरा कोटिक गच्छनाम हुवा

॥ ※ ॥ १३ श्री सुस्थितसूरिके पाट ऊपर श्रीइंद्रदिन्नसूरि हुआ, इस अवसरमें श्री महावीरसें चारसौ त्रेपन (४५३) वर्ष पीछे गर्दभिल्लरा जाके उछेद करणेवाला, दूसरा कालिकाचार्य हुआ, इसकी कथा कल्प सूत्रमें प्रसिद्ध है, और श्रीमहावीरसें (४५३) वर्ष पीछे भृगुकच्छ (भरूं चमें) श्रीआर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्त्ती हुआ, इनका प्रबंध श्रीप्रबंध चिंतामणिग्रंथ, तथा हारिभद्री आवश्यककी टीकासें जान लेना, और (४६०) वर्ष पीछे आर्यमंगु, वृद्धवादी, पादलिप्त तथा कल्याण मंदिरका कर्त्ता ऊपर जिसका प्रबंध लिख आये सो सिद्धसेन दिवाकर हुआ, जिनोंने विक्रमादित्यकों जैनधर्मी करा सो विक्रमादित्य श्री महा वीरसें (४७०) वर्ष पीछे हुआ, सो (४७०) वर्ष ऐसें हुए है— जिस रात्रिमें श्रीमहावीरजी निर्वाण हुए, उस दिन अवंति नगरीमें पालक नामा राजाकों राज्याभिषेक हुआ, यह पालक चंद्रप्रद्योतका पोता था तिसका राज्य (६०) वर्ष रहा, तिसके पीछे श्रेणिकका बेटा कोणिक और कोणिकका बेटा उदायी जब विना पुत्रके मरा, तब तिसकी गद्दी ऊपर नंद

नामा नाइ वैठा, तिसकी गद्दीमें सर्व नंदनामा नव राजे हुए, तिनका राज्य (१५५) वर्ष तक रहा, नवमें नंदकी गद्दी ऊपर मौर्यवंशी चंद्रगुप्त राजा हुआ, तिसका बेटा बिंडुसार, तिसका बेटा अशोक, तिसका बेटा कुणाल तिसका बेटा संप्रति महाराजादि हुए, इन मौर्यवंशीयोंका सर्व राज (१०८) वर्ष तक रहा, यह पूर्वोक्त सर्व राजे प्रायें जैनमत वाले थे, तिनके पीछे तीस वर्ष तक पुष्पमित्र राजाका राज्य रहा, तिस पीछे बलमित्र भानुमित्र, यह दोनों राजाका राज्य (६०) वर्ष तक रहा, तिस पीछे नभवाहन राजाका राज्य (४०) वर्षतक रहा, तिस पीछे तेरा वर्ष गर्दभिल्लका राज्य रहा, और चार वर्ष शकोंका राज्य रहा, पीछे विक्रमादित्यनें शकांकों जीतके अपना राज्य जमाया, यह सर्व (४७०) वर्ष हुए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १४ श्री इंद्रदिन्न सूरिके पाट ऊपर श्रीदिन्नसूरि हुये ॥

॥ ※ ॥ १५ श्रीदिन्न सूरिके पाट ऊपर, श्री सिंहगिरी सूरि हुये ॥

॥※॥ १६ श्रीसिंहगिरिजीके पाट ऊपर श्री वज्रस्वामी हुये, जिनकों बाल्याव स्थासें जातिस्मरण ज्ञान था, और आकाशगामनी विद्याभी थी, जिनोंने दूसरे बारावर्षीकालमें संघकी रक्षा करी, तथा जिनोंनें दक्षिणपंथमें बौद्धोंके राज्यमें श्रीजिनेंद्रपूजा वास्ते फूल लाके दीये, बौद्धराजाकों जैनमती करा, यह आचार्य पीछला दश पूर्वका पाठक हुआ, जिनोंसें हमारी वज्री शाखा उत्पन्न हुई, इनका प्रबंध आवश्यक वृत्तिसें जान लेना, सो वज्रस्वामी श्रीमहावीरसें पीछे चार सौ छनवे, और विक्रमादित्यके संवत छब्बीसमें जन्मे, और आठ वर्ष घरमें रहे, चौतालीस वर्ष सामान्य साधुव्रतमें रहे, और छत्तीस वर्ष युगप्रधान पदवी में रहे, सर्वायु अठाशी वर्षकी भोगी, तथा इन आचार्यके समयमें जावड़ शाह सेठनें श्री शत्रुंजय तीर्थका विक्रम संवत् (१०८) में तेरहवा बड़ा उद्धार करा, तिसकी श्रीवज्रस्वामीनें प्रतिष्ठा करी, यह श्रीवज्रस्वामी श्रीमहावीरसें (५८४) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, इन श्री वज्रस्वामीके समयमें दशमा पूर्व, और चौथा संहनन, और संस्थान, व्यवच्छेद होगये, यहां श्री सुहस्ती सूरि सें लेके श्रीवज्रस्वामी तक अपर पट्टावलियोंमें १ श्रीगुणसुंदरसूरि, २ श्रीकालिकाचार्य, ३ श्रीस्कंधलाचार्य, ४ श्रीरेवतीमित्र, सूरि, ५ श्रीधर्मसूरि, ६ श्रीभद्रगुप्ताचार्य, ७ श्रीगुप्ताचार्य, यह सात क्रमसें

युगप्रधान आचार्य हुये, तथा श्रीमहावीरसें पांचसौ तेतीस (५३३) वर्ष पीछे श्रीआर्यरक्षितसूरिनें सर्व शास्त्रोंके अनुयोग पृथग् पृथग् कर दीये ये प्रबंध आवश्यक वृत्तीसें जान लेना, तथा श्रीमहावीरसें (५४७) में वर्ष त्रैराशिके जीतनेवाले श्रीगुप्त सूरि हुये, तिनका प्रबंध उत्तराध्यनकी वृत्ति, तथा श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, जिसनें त्रैराशिक मत निकाला तिसका नाम रोहगुप्त था, वो श्रीगुप्तसूरिका चेला था, जिसका उलूक गोत्र था जब रोहगुप्त गुरुके आगे हारा, और मत कदाग्रह न छोड़ा तब अंतरंजिका नगरीके बलश्रीराजानें अपने राज्यसें बाहिर निकाल दीया, तब तिस रोहगुप्तनें कणाद नामा शिष्यकरा, उसकों १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, इन षट् पदार्थोंका स्वरूप बतलाया, तब तिस कणादनें वैशेषिक सूत्र बनाये तहांसें वैशेषिक मत चला ॥

॥ ※ ॥ १७ श्रीवज्र स्वामीके पाट ऊपर श्रीवज्रसेन सूरि बैठे, वे दुर्भिक्षमें श्रीवज्रस्वामीके वचनसें सोपारक पत्तनमें गये, तहां जिनदत्तके घरमें ईश्वरी नामा तिसकी भार्यानें लाख रूपकके खरचनेसें एक हांमी अन्नकी रांधी, जिसमें विष (जहर) डालने लगी, क्योंकि उनोंनें विचारा था कि अन्न तो मिलता नहीं तिसवास्ते जहर खाके सर्व घरके आदमी मरजायेंगे तिस अवसरमें श्रीवज्रसेनसूरि तहां आये, वो उनकों कहनें लगे कि तुम जहर मत खाओ कलकों सुगाल हो जावेगा तैसेंही हुआ तब तिन शेठके चार पुत्रोंनें दीक्षा लीनी तिनके नाम लिखते हैं:— १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निर्वृत्त, ४ विद्याधर, तिन चारोंसें स्वस्व नामके चार कुलबने यह वज्रसेनसूरि नववर्ष तक गृहस्थावासमें रहे और (११६) वर्ष समान साधुव्रतमें रहे, तथा तीन वर्ष युग प्रधान पदवीमें रहे सर्वायु (१२७) वर्षकी भोगके श्री महावीरसें (६२०) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, तथा श्री वज्रस्वामी और वज्रसेन सूरिके बीचमें, आर्य रक्षित सूरि तथा श्रीदुर्बलिका पुष्यसूरि, यह दोनों युग प्रधान हुये, श्रीमहावीरसें (५८४) वर्ष पीछे गोष्ठा माहिल सातमां निन्हव हुवा, तथा श्रीमहावीरसें (६०९) वर्ष पीछे श्रीकृष्णसूरिका शिष्य शिवभूति नामें था, तिसनें दिगंबर मत प्रवृत्त करा, सो अधिकार विशेषावश्यकादिकोंसें जान लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १८-श्रीवज्रसेन सूरिके पाट ऊपर श्रीचंद्रसूरि बैठा, तिनके नामसें गच्छका तीसरा नाम चंद्रगच्छ हुआ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (१९) श्रीचंद्रसूरिके पाट ऊपर श्री सामंतभद्रसूरि हुये, सो पूर्वगत श्रुतिके जानकार थे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २० श्रीसामंतभद्र सूरिके पाट ऊपर, श्रीदेव सूरि हुये, तथा श्रीमहावीरसें (५९६) वर्ष पीछे कोरंट नगरमें तथा सत्यपुरमें नाहमंत्रीनें मंदिर बनवाया, प्रतिमाकी प्रतिष्ठा जज्जक सूरिनें करी, प्रतिमा श्रीमहावीरकी स्थापन करी जिसकों "जयउ वीरसच्चउरिमंडण कहते है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २१ श्रीवृद्धदेवसूरिके पाट ऊपर श्रीप्रद्योतनसूरि हुये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २२ श्री प्रद्योतन सूरिके पाट ऊपर, श्रीमानदेवसूरिहुये, इनके सूरिपद स्थापनावसरमें दोनों स्कंधोंपर सरस्वती और लक्ष्मी साक्षात् देख कें यह चारित्रसें भ्रष्ट हो जावेगा ऐसा विचार करकें खिन्न चित्त गुरुकों जानकें गुरुके आगे ऐसा नियम करा कि:— भक्तिवाले घरकी भिक्षा और दूध, दही, घृत, मीठा, तेल, अरु सर्व पक्वान्नका त्याग कीया, तब तिनके तपके प्रभावसें नाडोल पुर जो पालीके पास है तिसमें १ पद्मा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजिता, ए चार नामकी चार देवी सेवा करती देखी, कोइ मूर्ख कहने लगा कि ए आचार्य स्त्रीयोंका संग क्यों करता है तब तिन देवीयोंनें तिसकों सिक्षा दीनी, तथा तिसके समयमें तिक्षिला नगरीमें बहुत श्रावक थे तिनमें मरीका उपद्रव हुआ तिसकी शांतिकेवास्ते श्री मानदेव सूरिनें नाडोल नगरीसें शांतिस्तोत्र बनाकर भेजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २३ श्री मानदेवसूरिके पाट ऊपर श्री मानतुंगसूरि हुये, जिनोंने भक्तामर स्तवन करकें, बाण अरु मयूर पंडितोंकी विद्या करकें चमत्कृत हुआ जो वृद्ध भोजराजा तिनकों प्रतिबोधा, और भयहर स्तवन करकें नागराजाकों वश करा, तथा भत्तिब्भरेत्यादि स्तवन जिनोंनें करे है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २४ श्रीमानतुंगसूरिके पाट ऊपर श्री वीरसूरि बैठा सो वीरसूरिनें श्री महावीरसें (७७०) वर्षमें तथा विक्रम संवत्के तीनसौ वर्ष पीछे नागपुरमें श्रीनमि अर्हतकी प्रतिमाकी प्रतिष्टा करी, यदुक्तं ॥ आर्या ॥ ना

गपुरे नमिभवन, प्रतिष्ठयामहितपाणिसौभाग्यः ॥ अभवद्वीराचार्य, स्त्रिभिः शतैः साधिके राज्ञः ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २५ श्री वीरसूरिके पाट ऊपर श्री जयदेवसूरि बैठे, ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २६ श्रीजयदेवसूरिके पाट ऊपर श्री देवानंदसूरि बैठे, इस अवसरमें श्रीमहावीरसें (८४५) वर्ष पीछे वल्लभी नगरी भंग हुइ, तथा (८८२) वर्ष पीछे चैत्येस्थिति, तथा (८८६) वर्ष पीछे ब्रह्मद्वीपिका शाखा हुई ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २७ श्रीदेवानंदसूरिके पाट ऊपर श्री विक्रमसूरि बैठे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २८ श्रीविक्रमसूरिके पाट ऊपर श्री नरसिंहसूरि बैठे, यतः ॥ नरसिंहसूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथपारगोयेन ॥ यक्षोनरसिंहपुरे, मांसरतिंस्त्या जितास्वगिरा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २९ ॥ श्रीनरसिंहसूरिके पाट ऊपर श्रीसमुद्रसूरि हुए ॥ ॥श्लोकः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीणराज कुलजोपि समुद्रसूरि, र्गछं शशास किल यः प्रवणः प्रमाणी ॥ जित्वातदा क्षपनकान् स्ववशं वितेने नागहृदेभुजगनाथनमस्यतीर्थम् ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३० श्रीसमुद्रसूरिके पाट ऊपर श्रीमानदेवसूरि हुए ॥ श्लोकः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनींद्रमित्रं, सूरिर्बभूवपुनरेवहि मानदेवः ॥ मांद्या त्प्रयातमपियोनघसूरिमंत्रं, लेभेंबिकामुखगिरा तपसोज्जयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरसें एक हजार वर्ष पीछे सत्यमित्र आचार्यके साथ पूर्वोंका व्यवछेद हुआ, यहां १ श्री नागहस्ति, २ रेवतीमित्र, ३ ब्रह्मद्वीप, नागार्जुन, ५ भूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, ये छै युगप्रधान यथाक्रमसें श्रीवज्रसेनसूरि और सत्यमित्रके बीचमें हुए, इन पूर्वोक्त छै युगप्रधानोंमेंसें शक्राभिवंदित श्रीकालिकाचार्य श्रीमहावीरसें (९९३) वर्ष पीछे पंचमीसें चौथकी संवत्सरी करी, तथा श्री महावीरात् (९८०) वर्ष पीछे एक पूर्व विद्या धारक युगप्रधान श्री देवर्द्धिगणिः क्षमाश्रमण हुए जिणोंनें शाशन देवके सहायसें सर्व साधुवोंकों इकठा करके सर्व सिद्धांत पुस्तकोंमें लिखाया इससें यह बडे प्रवचन प्रभावीक हुए, तथा श्री महावीरात् (१०५५) वर्ष पीछे, और विक्रमादित्यसें (५८५) वर्ष पीछे, यकनी सा

धवीका धर्मपुत्र श्रीहरिन्नद्र सूरि स्वर्गवास जुए, ये आवश्यकजी मूलसुत्रादिककी बम्ी टीकाका, तथा (१४४४) प्रकरणोंका कर्त्ता जुए ॥ तथा (११९५) वर्ष पीछे श्री जिनन्नद्रगणि युगप्रधान हूआ,

॥ ※ ॥ ३१ श्री मानदेवसूरिके पाट ऊपर, श्रीविबुधप्रन्नसूरि जुआ॥※॥

॥※॥ ३२ श्रीविबुधप्रन्नसूरिके पाट ऊपर,श्री जयानंदसूरि जुआ ॥※॥

॥ ※ ॥ ३३ श्रीजयानंदसूरिके पाट ऊपर, श्रीरविप्रन्नसूरि जुआ, सो महावीरसें पीछे (११७०) वर्ष और विक्रमसंवतूसें (७००) वर्ष पीछे, नामोल नगरमें श्रीनेमिनाथका प्रासाद (मंदिरकी) प्रतिष्ठा करी, तथा श्रीवीरात् (११९०) वर्ष पीछे ऊमास्वाति युगप्रधान जुआ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३४ श्रीरविप्रन्नसूरिके पाट ऊपर, श्रीयशोदेवसूरि बैठे, यहां श्रीमहावीरसें (१२७२) वर्ष पीछे, और विक्रम संवतसें (८०२) के सालमें अणहल पुर पट्टन वनराज राजेने बसाया, वनराज जैनी राजा था, तथा श्रीवीरात् (१२७०) और विक्रमादित्यके संवत् (८००) के सालमें न्नाद्रपद शुक्ल तीजके दिन बप्पन्नट्ट आचार्यका जन्म जुआ, जिसनें गवालियरके आम नामा राजाकों जैनी बनाया, इनका विशेष चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथसें जान लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३५ ॥ श्रीयशोन्नद्र सूरिपट्टे, श्रीविमलचंद्र सुरि जुआ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३६ ॥ श्रीविमलचंद्र सूरिकेपाटऊपर श्रीदेवसूरिजुआ ये उपधान वाच्य ग्रंथकाकर्त्ता और तिसकाल आश्रय सिथलाचार मार्गकों त्याग करके शुद्धमार्ग धारन करनेंवाले न्नए इससें सुविहित पक्ष प्रसिद्ध न्नया

॥ ※ ॥ ३७ ॥ श्रीदेवसूरि पट्टे, श्रीनेमिचंद्र सूरि जुये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३८ ॥ श्रीनेमिचंद्र सूरिके पाट ऊपर, श्रीउद्योतन सूरि न्नए ॥ इणोंसें ८४ गच्छकी थापना न्नइ ॥ इसका स्वरूप किंचित लिखताऊं ॥ श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध क्रियापात्र बम्े विद्वान् जाणके उर ८३ साधुवोंका शिष्य आयके महाराजके पास पढनें लगे ॥ और तिस अवसरमें एक अंन्नोहरनामा देशमें जिनचंद्रनामें आचार्य शिथलाचारी चैत्यवासीथा, जिसके एक वर्द्धमानमुनि नामें शिष्य था, सो वर्द्धमान मुनि आगमकों पढते जहां (८४) चौराशी आशातनाका अधिकार

देखा कि भगवानके मंदरमें चौराशी आशातना न करनी, तब अपना गुरुसें पूछा कि हे स्वामी आशातनाका तो ऐसा विचार लिखा है, और आपां मंदरमें रहते हैं, मंदिरोंमें रहनेंसें कोई आशातना वचसक्ती नहीं है इससें ऐसा आचार तो मेरे दिलमें रुचता नहिं, तब गुरूनें अनेक युक्तिसें समझाया, परंतु वर्द्धमान मुनिका चित्त शिथलाचार छोडके शुद्ध मार्ग धारन करनेंका भया, सर्व स्थानके आचार्योंकी गवेषणा करी तब श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध मार्गानुसारी क्रियावंत सुना, इससें श्रीउद्योतन सूरिमहाराजकेपास आयके शिष्य होके रहा ॥ तब गुरूमाहाराज योग उपधान वहायके सर्व सिद्धांत पढाए, अनुक्रमें योग्य जाणके आचार्य पद दीया गछ्लाभादि जाणके उत्तराखंडके विषे विहार करनेंकों आज्ञादीवी, तब श्रीवर्द्धमानसूरि गुरूकी आज्ञा पाके उत्तराखंडमें विहार करनें लगे, और श्रीउद्योतनसूरि महाराज (८३) तयांशी साधुवोंका शिष्यादिकके साथ विहारकरता थका मालवादेशका संघकेसाथ सिद्धगिरी तीर्थकी यात्रा करनेंको आया ॥ उहां ऋषभादि सर्व चैत्य विंबोंकों वंदन करके पिछाडी पाजसें उतरके सिद्धवडनीचे रात्रीकों रहे, तब उहां आधी रात्रके समें गाडका आकार ऐसा रोहणीनक्षत्रमें वृहस्पतीका प्रवेश देखके गुरू महाराज कहनें लगे, कि यह समय ऐसा उत्तम है, कि जिसके मस्तकपर हाथ करें सो वडा प्रतापीक होय, तब (८३) साधुवोंका शिष्य बोला कि हमारै मस्तकपर वासचूर्ण करो, हम सर्व आपसें पढे हैं, इससें आपकेही शिष्य हैं तब गुरूनें कहा कि वासचूर्ण लावो तब शिष्य लोक उंतावलसें सूके छाणेंकाचूर्ण करके गुरू माहाराजकों दिया, तब गुरूमाहाराज पिण तिसचूर्णकों मंत्रके तयांशी (८३) शिष्योंके मस्तकपर कर दिया और अपना अल्प आऊखा जाणके उसी सिद्धवडनीचे अणशण करके देवलोक गए, और तयांसी शिष्य आचार्य पदकों पायके जूदे जूदे देशोंमें साधुवोंके साथ विचरनें लगे, इसीतरे १ निजशिष्य, और तयांसी साधुवोंका शिष्य आचार्य पदकों प्राप्त हुवा, इससें इहांसें चौरासी गछ प्रसिद्ध हुआ ॥ ये (८४) चौरासी आचार्य वडे प्रतापीक भए ॥ ३८ ॥ ※

॥※॥ ३९ श्री उद्योतनसूरिपट्टे, श्री वर्द्धमानसूरिः भए, ये आचार्य पद

कों प्राप्त होके, ६ महिनातक आंबिलकी तपश्या करी तब धरणेंद्र हाजर हुआ वंदन नमस्कार करके कहनें लगा, कि मेरे लायक कार्य होय सो कहो, तब महाराजनें श्री सीमंधर स्वामीकेपास भेजके सूरिमंत्र मंगवाया, पीछे उहांसें विहार करके सरसापत्तन गए, तिस अवसरमें सोमनामा एक ब्राह्मणके शिवदाश, बुद्धिसागर, नामें दोय पुत्र था, और कल्याणवती नामें एक पुत्री थी, यह तीनों सोमेश्वर महादेवकों बहुत ध्यावन किया इससें सोमेश्वर महादेवका अधिष्टाता आयके हाजर हुवा, कहा वर मांग तब तीनों वोला हमकों वैकुंठ देवो, तब देव कहनें लगा, कि अभी मुझकों वैकुंठ न मिली है तो तुमकों कहांसें देउं, परं जो तुमकों वैकुंठकी इछा होय तो इहां श्री वर्द्धमान सूरि आएहैं उणोंकेपास जावो, तुमकों वैकुंठ जाणेंका मार्ग वतावैगा, ऐसा कहकर देवता अदृश्य हो गया, तब तीनोंजणे स्नान करकै उपाशरै आके गुरू महाराजसें वैकुंठका मार्ग पूछा, तब उसवखत एक भाईके मस्तकपर चोटीमें छोटी मछी स्नान करते रह गई थी सो देखायके विनय, दयामूल जिनधर्मका उपदेश दिया, तब तीनोंजणे प्रतिवोध पायके दिक्षालीवी तब गुरूमहाराज योगादिक वहायके सर्वसिद्धांत पढायके शिवदाशका जिनेश्वर ऐसा नाम करा, एकदा जिनेश्वरनें कहा कि हे स्वामिन् जो आपकी आज्ञा होय तो गुजरात देशमें जावें, उहां जाणेंसें वहुत लाभ उत्पन्न होगा, तब श्री वर्द्धमानसूरि वोला कि गुजरातमें अभी हीनाचारी चैत्यवासियोंका वहोत प्रचार वध गया है, इससें वे लोक अनेक प्रकारसें उपद्रव करेंगे, तब श्री जिनेश्वर वोला कि जूंवांके भयसें क्या वस्त्र भाल देना चहिये, इससेती आप प्रसन्न चित्तसें आज्ञा देवो, तब गुरू महाराज श्री जिनेश्वर, वुद्धिसागरकों, आचार्यपद देके गुर्जर देशमें विहार करनेंकी आग्या दीवी, तब दोनों गुजरात देशमें विचरणें लगे, और कल्याणवती साधवीकों महत्तरापद देकर साधवीयोंकेसाथ विहार करनें की आग्यादीवी, पीछे श्रीवर्द्धमानसूरियें १३ तेरे वादशाहोंसें मान पाया हुआ चंद्रावती नगरी स्थापक, पोरवाड़ गोत्रीय, श्रीविमलमंत्रीकों प्रतिवोध देके जैनधर्मी अपना श्रावक किया, और विछिन्न हुवा आवूजी तीर्थकों प्रगट करनेंका उपदेश दिया, तब विमलमंत्री गुरूका वचन अंगीकार

करके गुरूकों साथ लेके आबूजी आया, तब उहांके रहीस ब्राह्मण लोक या बात सुनके विमलमंत्रीकों कहनें लगे कि यह हमारा तीर्थ है अन्नी हमारा मंदर है तुमारा मंदर नहिं है, इससें जिनमंदर नहिं होनें देवेंगे, तब गुरूमहाराज एक पुष्पमालामंत्रके विमलमंत्रीके हाथमें दीनी, और कहा कि ब्राह्मणोंनें कहो कि ये सदैवसें जैनका तीरथ है, जो न मानो तो तुमारी कोई कन्याके हाथमें ये पुष्पमाला देवो, और डुंगर ऊपर फिरो, जिस ठिकाणें तुमारी कन्याके हाथसें फूलमाला गिरपमे जहां ह मारा तीर्थ, देव है ॥ इसीतरे करा ॥ जहां फूलमाला पमी उहां पूजाका उपगरणसहित तीनप्रतिमा प्रगट भई ॥ १ श्री आदिनाथ स्वामी ॥ २ अंबिकादेवी ॥ ३ चवालीनाथ क्षेत्रपाल ॥ ऐसी तीनप्रतिमाकों प्रगट हुई देखके ब्राह्मण लोक बमे आश्चर्यकों प्राप्त भए, तथापि ब्राह्मण जातीपणा सें कहनें लगे तुमारा देव है तो देवकी पूजा करो, परंतु मंदर होनेंसें तो हम मरमिटेंगे, तब बमा दयाल उत्तम पुरुष विमलमंत्रीनें विचार किया कि ये कोण गिणतीमें है,अन्नी मंदर बना सक्ताऊं, परंतु ये भिक्षुक है इनकों क्या जोर देखाउं,इससें इनोंकों वहोतसा द्रव्य देके, राजी करके जिन मंदर तैयार कराउं, ऐसा विचारके ब्राह्मणोंकों बहुतसा धन देके राजी किये, पीछे बहुमोला मकराणेंका पत्थर मंगवायके, बमा १ बावन (५२) जि नाला मंदर बनाया, और सारे मंदरमें ऐसी झीणी कोरणी कराई, जिस मंदरका सर्व पत्थर कोरणी मजूरीका,अठारै (१८) क्रोम ५३ त्रेपन लाख आसरे द्रव्य खरच हुवा, विमलमंत्रीके करानेंसे विमलवसहि नाम प्रसिद्ध हुआ, पीछे सर्व तैयार होनेंसें सं० १०८८ श्री वर्द्धमानसूरिनें प्रतिष्ठाकरी पीछे अणशण करके उसी वरषमें देवलोकगए ॥ ३९ ॥ ✱ ॥

॥ ✱ ॥ ४० श्री वर्द्धमानसूरीके पाटऊपर श्री जिनेश्वरसूरि हुए सो सं० १०७९ आचार्य पदकों प्राप्त होके श्री बुद्धिसागरसूरिकेसाथ मरुस्थल देशमें विहार करके क्रमसें गुर्जर देशमें अणहल्लपुर पट्टण गए, उहां डुर्लभ राजाका प्रोहत शिवशर्मा नामें ब्राह्मण जो अपना मामाथा तिसके घरमें गए, उहां शिवशर्मा ब्राह्मण अपना लमकाकों वेद पदोंका अर्थ बताय रहा था उसमें कितनेक वेदपदोंका उलटा अर्थ बतानें लगा तब गुरुबोला इसमुजब नहीं

है,हम कहें जिसमुजब है, तब सच्चा अर्थ सुनके प्रोहत बोला कि आपकों इस माफक वेदका अर्थकों जाणपणो किसतरें हुवो, आपसंसारी अवस्थामें कौन नगरका, अरु किसका पुत्र हो, तब महाराजनें कहा कि, हम वणारसी नगरीका, सोम नामें ब्राह्मणका पुत्र हें, तब शिवशर्मा प्रोहतनें पिछाणा; कि येतो मेराभाणजा है, ऐसा जाणके बहुत भक्तीमान् हुआ, बहुमान पूर्वक अपनें मकानमें रक्खा, उहां रहते औरभी केई पदार्थोंमें प्रोहत के दिलमें संदेह था सो सर्व दूर किया, तब शिवशर्मा प्रोहत बहुत महाराजका रागी हुआ,तब उहांके चैत्यवासीयोंनें विचारा,कि श्री जिनेश्वर सूरिके इहां रहनेंसें अपना पमदा खुल जायगा, अपनेकों कोई न मानेंगा, सर्व लोक इनोंके रागी हो जायगें, इससें कोई उपाय करनाचाहिये, ऐसा विचारके डुर्लभ राजाकेपास जायके चुगली किया, कि दिल्लीसें ग्रंथ गेटक चोर आए हें, सो आपके प्रोहतके इहां रए हें, तब राजा ऐसा वचन सुनके प्रोहतकों बुलाकर पूछनें लगा, कि तेरे घरे चौर आया सुना है तब प्रोहत बोला कि, मेरै घरमें चोरतो कोई नहिं आए हें परंतु शुद्धक्रिया पात्र साधु आए हें जो उनोंकों चोर कहते होंगे सो आप चोर होवेंगे, तब राजा शुद्धाचार देखनेंकेलिये श्रीजिनेश्वर सूरीकों अपनेंपास बुलाया,और चैत्यवासियोंकों भी बुलाये, जब श्री जिनेश्वरसूरी राजाकी सभामें हाजर हुवा, तब राजायें नमस्कार करा, तब गुरूमहाराज पिण धर्मलाभ आशीर्वाद देके अपनें बैठवा योग्य स्थानके, कंवली बिछाके, इरियावही पमिक्कमके, जमीनकी पमिलेहणा करके, बैठे । तब राजायें विचारा, कि शुद्धआचार ऐसाही होता है ॥ और चैत्यवासी जो आए सो राजाकों आशीर्वाद देके, इसी तरै बिस्तरोंके ऊपर बैठ गये, तब राजायें चैत्यवासियोंका विरुद्ध आचार देखके श्री जिनेश्वरसूरी महाराजकों साधुका आचारपूछा तब, श्री जिनेश्वर सूरी महाराज बोला, कि आपका देवाधिष्ठित ग्यानका भंमार हे, उसमें सर्व मत स्वरूपनिवेदक पुस्तक हे, उसमेंसें आपके पंमितोंकेपास एक दोय पुस्तक मंगवावो, तब राजायें भंडारमेंसें पुस्तक मंगवाया, जब पंमितोंके प्रथम दशमी कालकजी पुस्तक हाथ लगा, सो राजसभामें लेके आये, तब गुरूमहाराज कहा, कि इस पुस्तककों चैत्यवासियोंके हाथमें

देके आप साधुका आचार सुनो, तब चैत्यवासी पुस्तक वाचते थके जहां बहुत साधुका आचार आनें लगा उहां गेरनें लगे, तब गुरूमहाराज बोला, कि राजसभामें दिनको चोरी होती है, तब राजायें पूछा किसतरेसें, गुरूनें कहा, कि इहां इणोंनें साधुके आचारका कई पन्ना गेर दिये हैं, तब राजा बोला कि, आप वाचो, गुरूमहाराजनें कहा, हमारे वाचनेंसें ये फेर कल्पित वात करेंगे, इससें आपके धर्म पंडितोंकेपास ये पुस्तक वचावो, तब राजायें अपनें पंडितोंकेपास उस पुस्तकमेंसें साधुका आचार सुना, तब उसी आचारमुजब श्री जिनेश्वरसूरीका सत्य आचार देखा, और चैत्यवासियोंका उस पुस्तकसें विरुद्ध आचार देखा, इससें सारी सभाके सामनें राजायें कहा ॥ अतिशय पणें करके श्री जिनेश्वरसूरी सच्चा हुवा, इससें ये खरतरा हे, और चैत्यवासी हारगया, इससेती ये कमला हे ॥ हारा सो कमला थया ॥ जीता खरतर जाणिया ॥ तिणीकाल श्री संघमें। गच्छदोयवखाणिया ॥१॥ इसी तरे सुविहित पक्षधारक श्री जिनेश्वर सूरि, वीरसंवत् १५५० ॥ विक्रम संवत् १०८० खरतर विरुदकों प्राप्त हुए। तबसें कोटिक गच्छ, चंद्रकुल, वयरी शाखा, खरतर विरुद, ऐसाभेद थिवर साधु, नवा साधुवोंनें कहनें लगे, इहांसे मूलकोटिक गच्छका नाम खरतर गच्छ प्रसिद्ध हुआ, अतिशयेन खरा सत्य प्रतिज्ञा येते खरतराः इत्यादि खरतर विरुदकों प्राप्त होनेंवाले श्री जिनेश्वरसूरी धर्म प्रभावीक हुए ॥४०॥

॥ तत्पट्टे ४१ मा ॥ श्री जिनचंद्र सूरी भये ॥

सो जब आचार्यपदकों प्राप्त होके विहार करते प्रथम दिल्ली सहरमें गए उहां एक पुरषकों भाग्यशाली देखके ऐसा कहा कि तुं दिल्लीका वादसाह होगा, जब वो पुरष बोला कि में जो वादशाह होउंगा तो आपमुके दरशण अवश्य देना, फेर दिल्लीके आसपासमें महाराज विहार करनें लगे, जब वो पुरष मोजदीन नामें वादशाह हुवा, तब गुरुमहाराज फेर दिल्ली नगरमें गए, तब दिल्लीके संघनें वादशाहकों अरज करी हमारे पुज्य श्री जिनचंद्रसूरि महाराज आये हैं, सो उनका प्रवेश उछव करनेकी इछा है, तब मोजदीन वादशाहभी पूर्वोक्त वर देनेंवाले अपना गुरूकों आया जानके, संपूर्ण वाजित्रसहत संघकेसाथमें, आपसामने गया, प्रवेशउछव

सहित शहरमें लायके धनपाल नामा श्रीमालके वम्हे मकानमें उतारा करवाया, उहां रहते धनपाल श्रीमाल प्रमुख वहुतसे श्रीमालोंकों प्रतिबोधके जैनीश्रावक किये, तवसें "श्रीमाल" जैनीश्रावक हुए, और कितनेक राज्याधिकारीयोंकों प्रतिबोधके जैनीश्रावक किये, उनोंकों वादशाहनें वहुत मान दिया इससें उनका "महतियाण" गोत्र हुआ, ये महतियाण गोत्रवाले कातो भगवानकों नमस्कार करै, का अपना धर्माचार्य जिन चंद्रसूरि गुरुकों नमस्कार करैं, और कोई देवगुरुकों नमस्कार न करै, फेर महाराजके उपदेशसें वादशाहभी वहुत सरल परिणामी हुआ, सारे देशमें पर्यूषणादिपर्व दिनोंमें, वहुत जीव हिंसा छोडाई, इसमाफक धर्मउद्योतक वम्हे प्रतापीक, संवेगरंगशालादि, अनेक प्रकरण कर्त्ता श्रीजिनचंद्र सूरिभए, अंतमें अणशण करके देवलोककों प्राप्त हुये ॥ ४१ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ४२ ॥ मा श्रीजिनचंद्र सूरिके पाट ऊपर, छोटा गुरुभाई, श्री अभयदेव सूरि भए ॥ इनका संवंध किंचिल्लिखताहुं ॥ धारापुरी नामा नगरमें, धनानामें सेठ, जिसके धनदेवी नामें स्त्री, जिनके अभय कुमार नामें पुत्र हुआ, क्रमसें सर्व कला शीखके युवान अवस्थाकों प्राप्त भया, तव एकदा प्रस्तावे श्रीजिनेश्वर सूरी विचरते भए धारापुरी नगरीमें आए, जव नगरका सर्व लोक महाराजकों वांदनेंकों गए, तव अभय कुमारभी अपनें पिताकेसाथ गया, श्रीजिनेश्वर सूरी महाराजके मुखसें धर्म उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त भया, संसारकों असार जाणके दिक्षा ग्रहण करी, क्रमसें वुद्धीके वलसें, सकलशास्त्र पढके आचार्यपदकों प्राप्त भया । एकदा व्याख्यानमें शृंगारादि नवरसकों वहुत पोषण करा, तव सारी सभा वहुत आनंदकों प्राप्त भई, परंतु श्रीजिनेश्वर सूरि महाराज एकांतमें ऐसा उलंभा दिया, कि आत्मार्थीकों शृंगारादिक रसका वहुत पोषन करना न चाहिये, ऐसा गुरूका वचन सुनके आत्मशुद्धीके अर्थ प्रायश्चित्तमांगा, तव गुरू कहा, छे मासतक आंविलकी तपस्या करे, और छाछकी आछ पीवै, जव शुद्धी हुवै, तव श्री अभयदेव सूरी गुरूका वचन तहत्ति करके इसी मुजव तपस्या करनें लगे । ऐसी कठन तपस्या करनेंसें, अंत प्रांत आहारखानेंसें, कोई पूर्वकृत कर्मके योग, सरीरमें गलत कोढरोग उत्पन्न

होगया, तथापि धर्मसें चलित चित्त न हुआ, शरीरकी शुश्रूषा मात्रभी न करै, जब क्रमसें बहुत रोग वढनें लगा, तब श्री अभयदेव सूरीके अणशण करनेंकी इच्छा उत्पन्न भई, संघके आग्रहसें धवलिका नामें नगर गए, उहां तेरसकेदिन आधी रात्रकेसमें शाशन देवी प्रगट होके कहा कि हे स्वामिन् ये नवसुत्र कोकभीकों सुलझावो, तब गुरु महाराज बोले " कि हाथोंकी आंगुली गलनेंसें सुलझावणेंकी समर्था रही नहीं, । तब शाशन देवी कहनें लगी, अभीतक आप बहुत कालतक श्रीवीर भगवानको शाशन दीपावोगे, अरु नवांग सुत्रकी टीका करोगे, इस्सें हे स्वामिन् आप रोग जानेंका उपाय सुनो ॥ स्थंभनपुरके नजीक, सेढिका नदीके तीरे, खंखर पलास वृक्षके नीचे, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी अतिशय युक्त प्रतिमाहे उहां निरंतर एक गाय आयके प्रतिमांके मस्तकपर सदा दूधकी धारा देके चली जावै है, उसी ठिकाणें सर्व संघकेसाथ आपजायके श्री पार्श्वप्रभुकी स्तवना करना जब उहांसें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा प्रगट होगा जिसके स्नात्रजलसें आपका रोग रहित दिव्य शरीर होवेगा, ऐसा स्वप्नमें कहके देवी अदृश्य होगई, जब प्रभात समय भया, तब उहांसें विहार करके स्थंभनपुर गए, उहांके सर्व संघकों साथमेंलेके पूर्वोक्त स्थानके गए, उहां जाके नमस्कार करके "जयतिहुअण" इत्यादि बत्तीस गाथाको नवीन स्तोत्र करके स्तवना करतां थकां " फणफण फार फुरंतिरयण० " इत्यादि शोलमाकाव्य बोलते, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा जमीनमेंसें प्रगट भई, फेर सारी स्तवना जब पूर्ण भई, तब सर्व संघ मिलके आनंदके साथ स्नात्र पूजा करके, भगवानका स्नात्रजल महाराजके सरीरपर सींचा । के ततूकाल रोग रहित कंचनवर्णा शरीर होगया, तब तो सर्व संघ, तथा नगरका लोक देखके वमे आश्चर्य मानभए, और जहां प्रतिमा प्रगट भई, तहां वहोत मनोहर उंचा सिखरबद्ध मंदर बनवाया, मंदर तैयार होनेंसें श्री अभय देवसूरि महाराजनें उसी प्रतिमाकों स्थापन करी, तहां स्थंभनक नामें महातीर्थ प्रशिद्ध हुवा, वहोत यात्री लोक आनें लगे, और जयतिहुअण स्तोत्र, गुरू महाराजनें किया, जिसके अंतके दो काव्योंमें धरणेंद्र पद्मावतीकों आकर्षणरूप बीज मंत्र गोपित रखाथा इससें उसकों हर

कोई कार्यमें अपवित्रपणें स्त्री पुरुष बालकादिक गुणें जब धरणेंद्रकों आयके हाजर होना पमे, इससें धरणेंद्र हाथ जोमके गुरूमहाराजनें क हनें लगा कि ये दो गाथा आप भंमार करो, जो शुद्धभावसें तीस काव्य सदा पमिकमणेंके आदमें गुणेंगे, तो ठिकाणे बेगाही उनका उपद्रव दूर क रुंगा, ऐसा धरणेंद्र पद्मावतीका वचनसें अंतका दो काव्य भंमार किया, संघकों बोलनेका मना किया, पीछे स्वप्नमें शाशन देवतायें नवक्रोकमा सूतका, सुलझावणें बावत कहा था, इसवास्ते भगवानके नवांग सुत्रोंकी टीका करी, वीर सं० १५८१, विक्रम सं० ११११, श्री स्थंभणा पार्श्व नाथ प्रगट किया ॥ और वीर सं० १५९० ॥ विक्रम सं० ११२०, में श्री नवांग सुत्रोंकी टीका करी ऐसे महाअतिशायी चारित्र पात्र चूमामणी निकेवल सर्व जीवोंके उपगारके अर्थ गांवनगरोंमें विहारकरते थके बहुत कालतक धर्मका उद्योत करते रहे एकदा श्री अभय देवसूरीके प्रतिबोधक दो श्रावक अणशण करके देवलोकगए जब देवलोकमें जातेही ग्यानके उपयोगसें जाना, कि हमारा धर्माचार्य श्री अभयदेव सूरि है, उनोंके प्र सादसें ये देवलोकका सुख मिला है, इससें अत्यंत रागी भया थका महा विदेहमें श्री सीमंधर स्वामीकेपास जाके हाथ जोडके ऐसा प्रश्ण किया कि हमारा धर्माचार्य श्री अभयदेवसूरी इहांसें कोन गतिमें जावेंगे, और कितना भवमें मोक्ष जांयगे, तब भगवान सीमंधरस्वामीनें कहा कि तुमारा गुरु इहांसे अणशण करके चोथे देवलोक जावेगा, उहांसे महाविदेह क्षेत्र में उपजके मोक्षजावेगा इस्सें ये भवसें तीसरे भवमें मोक्ष जावेगा ऐसा भ गवानका वचन सुणके आनंदित हुआ थका श्री अभयदेवसूरीके व्याख्या नावशरमें सारी सभाकेसामने दोनों देवता आयके कहा, ॥ भणियं तित्थय रेहिं । महाविदेहे भवंमितइयंमि, तुह्माणचेव गुरुणो ॥ मुरकेसिग्घं गमिछंति ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ इसमाफक शासन प्रभावीक श्री अभयदेवसूरि गुर्जर दे शमें कप्पडवाणिज्य नामाग्रामके विषे अंतमें अणशण करके वि. सं ११६७ कालकरके चोथे देवलोक गए ॥ ४२ ॥ ※ ॥

॥ ४३ ॥ श्री अभयदेवसूरिके पाटऊपर, श्रीजिनवल्लभसूरी भए ॥ तिके प्रथम कूर्चपूर गछीय चैत्यवासी श्रीजिनेश्वर सूरीकेशिष्य थे जब उनों

केपास दशमी कालकजी सुत्र पढनें लगे तब वैराग्यकों प्राप्त होके गुरुकों कहा, कि साधुका आचार तो ऐसा है, और आप ऐसा सिथलाचारकों क्युं धारण किया है, तब गुरूनें कहा अभी हमारा ऐसाही कर्मोदय है, तब श्रीजिनवल्लभसूरी गुरूकों पूछके शुद्ध क्रियानिधान, परम संवेगी, श्रीजिन अभयदेवसूरीका शिष्य होगया, शुद्धचारित्र पालताथका अनुक्रमें सकल शास्त्रकों पढके गीतार्थ हुआ, एकदा विहार करते चीतोड नगरमें आए, उहां चंडिकादेवीकों प्रतिबोधके जीवहिंसा छोडाई, चंडिकादेवी पिण शुद्ध क्रियापात्र साधुजाणके बडी भक्तिमान्हुई, फेर उहांके संघनें साधारण द्रव्यसें ७२ बहोत्तर जिनालयमंडित श्री महावीरस्वामीका मंदर बनाया, जिसकी प्रतिष्ठा करी, और पिंडविशुद्धिप्रकरण, षट्शीतिप्रकरण, संघपट्टा आदि अनेक ग्रंथ किये। तथा दस हजार १०००० प्रमाणें बागडी लोकोंकों प्रतिबोधके जैनी श्रावक किये॥ फेर उसी चित्रकूट नगरमें विक्रम सं। ११६७ श्री अभयदेवसूरीके वचनसें श्रीदेवभद्राचार्यजीनें श्रीजिनवल्लभ सूरिकों आचार्यपदमें स्थापन किये, छे महिनातक आचार्यपद भोगवके, अंतमें अणशण लेके कालकरके देवलोक गए, इस समय मधुकरा खरतर शाखा निकली ये प्रथम गछ भेद भया॥ ४३ ॥ ※॥

॥ ४४ मा ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिके पाट ऊपर, श्रीजिनदत्तसूरिः हुए॥ सो बडा दादाजीके नामसें सर्वलोकमें प्रशिद्ध भए॥ इनोंका किंचित् अधिकार लिखता हुं॥ धंधूका नाम नगरमें, हुंबडगोत्रिय, वाछिगनामें एक मंत्री हुवा, जिसके वाहड देवी नामें अस्त्री, उसकी कूखसें चंद्र स्वप्न करके सूचित सं। ११३२ जन्म हुआ, तब माता पितायें दश दिनका बहुत उछव करके सर्व स्वजनोंके सामनें सोमचंद्र ऐसा नाम दिया, शुभलक्षणों सूचित पांच धाय माय करके पालीजताथका जब पांच बरषका भया, तब माता पितायें अछा पंडितके पास पढानेंकों बैठाया, बुद्धीकेबलसें थोडा दिनोंमें बहोतसी कला विद्या शीखी, आठ बरषका हुये पीछे गुरूमहाराजके पास उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त भया, तब अपना माता पिताकी आग्या लेके सं। ११४१ वाचक धर्मदेवगणिःके पास दिक्षा ग्रहण करी, अर्थात् जैन साधु भया, पीछे गुरूकेपास संपूर्ण शास्त्रोंका अभ्यास

करनें लगा, इस अवसरमें गुरू महाराज सारंगपुरके विषे कुंअरपाल उपाध्यायकों अंतका अणशण दिराया, आराधना कराई, सो कुंवरपाल उपाध्याय मरके देवगतिकों प्राप्त जया, तब ग्यानके उपियोगसें पूर्वजवका संबंध जाणके गुरूकेपास आया, गुरूकों नमस्कार करके सोमचंद्र मुनिकों कहनें लगा, कि, जो सोमचंद्र तुम आचार्य पदकों प्राप्त ज्ञवोगे, परं तीन मज्जर्त देखनेंमें आवेगा, जिसमें पहले मज्जर्त्तमें मरणांत कष्टहे, अरु दूसरे मज्जर्त्तमें गच्छ जेद हे,इससें तीसरा मज्जर्त्त वज्जत अच्छा हे, तीसरा मज्जर्त्तमें आचार्यपद ग्रहण करना, ऐसा कहकर देव अदृश्य होगया,पीछे कथंचित् जावी प्रबलयोग दूसरा मज्जर्त्तमें सं । ११६९ मि । वै । वद६ के दिन श्री देव जद्राचार्यजीयें सूरी मंत्र देके श्रीसोमचंद्रजीकों आचार्यपदमें स्थापन किये, जब श्रीजिनदत्त सूरि असा नाम प्रशिद्ध करा, पीछे विहार करते प्रथम चित्रकूट नगरमें गए, उहां श्री चिंतामणिपार्श्वनाथके, मंदरके स्थंज्ञमें रही ज्ञई वियाम्नायकी पुस्तक विद्यावलसें प्रगटकरके ग्रहणकरी । फेर उज्जयणीनगरमें गए, उहां महाकालके मंदरके स्थंजमेंसे सिद्धसेन दिवाकरकी विद्याम्नाय पुस्तक वियावलसें आकर्षण करके ग्रहण करी फेर तीन क्रोम ह्रींकारजीका जाप किया, जाप करतां चोसठ योगणीयोंनें महाराजकों छलनेका विचार किया, तब कोई वीर आयके महाराजकों खवर दीनी । के आज व्याख्यानमें ६४ योगणी आवैगी, जब गुरूमहाराज श्रावकों पास ६४ पाटिया मंगायके, मंत्रके, श्रावकणयोंकों सोंपदिये, और कहा आज व्याख्यानमें ६४ स्त्रीयों नवी आवेगी उनोंको पाटियांऊपर वैठाणां,पीछे जब व्याख्यानमें श्रावकणयोंके रूपसें योगणयों आई, नमस्कार करके श्रावकणयोंमें पाटियां ऊपर वैठगई, व्याख्यान पूरण ज्ञए पीछे जब उठनें लगी तो उठनें नपाई कीलीजगई, तब तो अपनो अहंकार छोमके नमस्कार करके योगणियो कहनें लगी, कि हमे सर्व तो आपकों छलनें आईथी परंतु आप हम सर्वकों छललीनी, अब हम सर्व आपकी आग्याकारणियों होके रहसां, हमकों छोमो, जबगुरू महाराज कहा कि फेर कज्ञी कोई खरतर आचार्यकों छलनामति, तब योगणियोंनें ऐसा वचन अंगीकार किया और सात बर दिया ॥ १ प्रतिग्राममें खरतर श्रावक दीप्तिवंत होगा ॥ २ प्राय

करके खरतर श्रावक निर्द्धन नहिं होगा॥३ संघमें मरी आदिकसें कुमरण नहीं होगा॥ ४ अखंड शील पालक साधवीके ऋतु न आवेगा॥ ६ आपका नाम लेतां बीजली आदि कोईतरेका उपद्रव संघमें न आवेगा॥ ७ प्रायें खरतर श्रावक सिंधू देशमें गयां धनवंत होगा॥ ऐसा सात वर देके फेर योगणियों कहनें लगी कि १ खरतर आचार्य सिंधुदेश गयांथकां पंचनदीकों साधन करै॥ २ खरतर आचार्य दिनप्रति दो हजार (२०००) सूरिमंत्रको जाप करै॥ ३ खरतर साधु नित्य दो हजार नवकार मंत्रको जाप करै॥ ४ खरतर श्रावक दिनप्रति सवेर, सांझे, दोनों कालमें सात स्मरण शुद्ध अक्षरोंसें शुद्धचित्तसें गुणते रहै, वा सुनते रहै॥ ५ खरतर श्रावक दिन प्रति तीन खीचमीकी माला गुणते रहै, एक मणिका ऊपर एकनवकार १ उवसग्गहरं. स्तोत्र गुणें, उसकों खीचमी माला कहते हैं॥ ६ खरतर श्रावक मासमें दो आंबिल अवश्य करै, और दादाजीकी ध्यावनार रखे॥ ७ खरतर साधु उती सक्ति सदा एकाशणो करै॥ ये ७ वर पालनेंसें पूर्वोक्त ७ वर सफल होवेंगे॥ ऐसा कहके फेर योगणियों कहनें लगी कि, दिल्ली १ अजमेर २, भरुअछ ३, उज्जैण ४, मुलतान ५, उच्चनगर ६, लाहोर ७॥ इन नगरोंमें पूर्ण शक्ति रहित खरतर गछ नायक रात्रवासी न रहै ऐसा कहकै अपणें ठिकाणें गई, तथा फेर अजमेर नगरमें पाक्षिक पमिक्रमण करते थके श्रीगुरूमहाराज वेरवेरऊवत्कार करती थकी बीजलीकों मंत्रबल करकै पात्रकै अधोभाग में रक्खी, तब प्रतिक्रमण बाद पात्रके नीचेसें निकाली, जब उसनें कहाकि जिनदत्त नाम ग्रहण करणेंसें में नहिं पडूंगी ऐसा वर देकै अपनें ठिकाणें गई, फेर एकदा गुरू माहाराज विहार करते थके वृद्ध नगर गए, तहां जिन मत उन्नतीकों नहिं सहता थका ब्राह्मणलोक जिनमंदिरमें मरी भई गऊकों माल गए, उहां मरी गउ कों देखकै ब्राह्मण कहणें लगे, अहो जैनीयोंका देव गउ घातक है ऐसा वचन सुनकै खेदातुर भए थके श्रावक लोक गुरूमहाराजसें वीनती करी तब गुरूमहाराज मंत्रबलें व्यंतर प्रयोग करकै मरी थकी गउ कों अछी करी, तब तिका गउ अपणी इछासें उठकै, शिव मंदरमें शिव मूर्तिऊपर आकै पमगई, तब नगरमें ब्राह्मणांकों अत्यंत लज्जा उत्पन्न भई तब लज्जित भए थके ब्राह्मण गुरूमहाराजके चरणकमलमें पमकै ऐशा क

हते नए, अहो स्वामिन् आप महंतहो, अब आज पीछे इस नगरमें जो को ई आपकी परंपराके सूरि आवेंगे उनोंका प्रवेश उत्सव हम लोक करेंगे आप कृपाकरके हम लोकोंनें कोई नोकरी नोलावो, तब महाराज बोला, मंदरोंकी नक्ति करो, मंदिरोंमें पमिलेहण करो और चावल नेवेद्य, फल, जो खाणेंकी चीज चढै सो लेवो करो, तवसें वे ब्राह्मण मं दिरोंकी नक्तिकरनें लगे, सो गंध्रप, नोजक नामसें प्रसिध्द झुए उस वखतमें वहोतसी जैन मतकी प्रनावना नई, तथा फेर एकदा गुरूमहाराज उच्च नगरमें गए, उहां प्रवेस उत्सव समयें मनुष्योंके वाहुल्यसें उस नगरके मालक मुगलका पुत्र वाहनसें पमके मरगया तव श्रावक सर्व खेदातुर नया थका गुरूमहाराजकों वीनती करी, तव गुरूमाहाराज यह वात सुनकै जिन मत प्रनावनाकेवास्तै व्यंतर प्रयोग करकै छै मासतक मरेनए मुगलपुत्र कों जीवाया, तथा फेर नागदेव नामें श्रावक, अंवम इति दूसरा नामें, एकदा गिरनारपर्वतमें तीन उपवास करके अंबिकाकों आराधन करकै कहा कि हे माता इस समयमें नरतक्षेत्रकै विषै युग प्रधान धारक कोण सूरि है, जिनकों में अपनें गुरूपणें स्थापन करूं ऐसा पूछा, तव अंबिकादेवी तिसकै हाथ मे सुवर्ण अक्षरोंसे एक श्लोक लिखा ॥ दासानुदासाइवसर्वदेवा । यदीयपा दाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीयात् । युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः१॥ इसकाव्यकों जो वांचेगे उनकों युग प्रधान जाणना, अवतिको श्रावक ठिका णे २ वहोत सूरिकों हाथ दिखलावै, परंकोईनी अक्षर वाचणकों समर्थ नहिं नए पीछे एकदातिको पाटणनगरमें तांवावामा पामेकै विषै श्रीजिनदत्तसू रीकै पास आके हाथ दिखलाता नया, तब गुरूमाहाराज तिसकै हाथ लिखित स्वर्णाक्षर उपर वास चूर्णमालकै शिष्यनणी आज्ञादीनी तव शिष्यनें उनहरफोंकूं वांचे, जब नागदेव श्रावक परम नक्तिवंत नया । इस मुजब कलिकालमें युग प्रधान पद धारक श्रीगुरूमाहाराज नए एकदा व्याख्यान करते थके श्रीगुरूमाहाराजनें विद्यावलसें अपना स्मरण करता झुवा श्रावकका जहाज डूवता जानके तत्काल जहाजकों देववलसें समुद्रके पार उतारा, ये वात जवसंघकों मालुम नई तव वहुत महमा करनें लगे, तथा फेर एकदा श्रीगुरूमाहाराज प्रवल प्रवेश उत्सव करकै मुलतान नगरमें गए, तदा

चार मार्गमें रहा थका, पत्तनमें वसनेंवाला, परपक्षीय अंवमनामें श्रावक खरतर गछकी उन्नतीकों नहिं सहता थका बोला, कि इस नगरमें इस आम्बरसें आप आए हो, परं अणहिल्लपत्तनमें इसतरेंसें आवोगे जवमें जानोंगा, यह वात सुनकै गुरूमहाराज बोले कि हमतो इसी प्रकार करकै आवेंगे, परंतु तैल लवण आदि, चीज खांधे रखके सन्मुख मिलेगा, पीछे जव गुरूमाहाराज कितनें दिनवाद अणहलपुर पत्तन गए तव अंवम्म श्रावक दैववससें निर्द्धन भया थका मुलतान नगरसेती भागके पत्तन जाकै तैल लवणादि व्यापार करकै आजीवका करनें लगा, उहां गुरूके प्रवेश उत्सव समय सन्मुख मिला, गुरू उलख करकै वतलाया, तव गुरू ऊपर अतिद्वेष धारन करता थका कपट करकै खरतर श्रावक हो गया, एकदा श्रीगुरूमहाराजकों विष मिश्रित शाकरका जल पिलाया, तव गुरूमहाराज विष प्रयोग जांनकै, तहांका राय भणसालीगोत्रीय, आभूनामें मुख्य श्रावक प्रतें, ए स्वरूप कहा तव आभूनामें श्रावक धर्मीमें जोजन जावे ऐसा उंठ ऊपर नोंकरकों चढाकै, पाल्हणपुर सेती विष अपहारिणी जम्मी मंगवाकै निर्विष कीए, तववो अंवम्म लोकमें नंदीजता थका मरकै व्यंतर भया, व्यंतर होके फेर श्रावकोंमें उपद्रव करनें लगा, तव गुरूमाहाराज विद्यावलसें सर्व उपद्रव दूर किया, और व्यंतरभी भागके अपनें स्थानक गया, तथा फेर एकदा विक्रमपुरमें मरीका उपद्रव प्रगट भया, तव गुरूमाहाराज उस उपद्रवकों दूर करा, तव दुःखित भए थके महेश्वरीलोक बोले, कि हे स्वामिन् हमारे ऊपर कृपा करके हमारे कुटंवको उपद्रव दूर करो, तव गुरूमहाराजनें उनोंका वचन ग्रहण करकै उन लोकोंका उपद्रव दूर करते भए, तव महेसरी गोत्रका श्रावक भया, तथा कितनेक शिवमत वाले श्रावक नहिं भए, तव तिनमेंसें जिसकै चार पुत्र था उसका एक पुत्र ग्रहण करा, जिसके तीन पुत्रीथी तिससें एक पुत्री ग्रहण करी, ऐसें (५००) पांचसै शिष्य साधु हुए, ७०० सातसै साधवी हुई, इसीतरै श्रीजिनदत्तसूरिमहाराज वहोत नगरोंकै विषै विहार करते रजपूत ब्राह्मणादिककों प्रतिवोधके नाहटा, राखेचा, भणसाली, नवलखा, भांगा, वाफणा इत्यादि गोत्रअलंकृता "एक लाख पचीस हजार श्रावक करा," तथा

श्रीगुरूमाहाराज मुलतान नगरकै विषै लूंणीया गोत्रीय हाथी साहकै ऊपर कृपा करकै पडिक्कमणेमें तिसकों, अजियंजियसव्व भयं। यह स्तोत्र दीया, तथा अणहिल्लपत्तनकै विषै, बोथरा गोत्रीय श्रावकांकों जयतिहूअण वरक प्परुरकजयजिणधन्नंतरि। यहस्तोत्र दीया, फेर गुरूमाहाराज मेम्ता नग रकै विषै, गणधर चोपडा गोत्रीय श्रावकांकों उवसग्गहरं पासं। यह स्तवन दीया। फेर जलऊपर कंवलीतिरणादि प्रकार करकै पंचनदी पंचपीर साधक, संदेह दोलावली आदि अनेक ग्रंथकारक, नानाविद्यासहित, परम उपकारी परमयश सौभाग्यधारक महाप्रभावीक श्रीजिनदत्तसूरिः संवत् १२११ आषाढ सुदि एकादशीके दिन अजमेर नगरमें अणशणकरकै पह ला सौधर्मनामा देवलोकमें टक्कलनामा विमानमें ४ पल्योपमके आऊखे महर्द्धिक देवतापणें उत्पन्न भए॥ यदुक्तं॥ भणियं तित्थयरेहिं। महाविदेहे भवंमितइयंमि। तुह्माणंतेगुरुणो। मुरके सिग्घंगमिस्संति ॥ १ ॥ टक्कलयं मिविमाणे। संपइसोहम्मकप्पमझंमि। चउपलिउवमआउ। देवोजाउ मह ह्वीउ॥ २ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरि पट्ट प्रभाकर श्रीजिनदत्तसूरी महाराजके शिष्यादि सर्व संघके सामनें देवतायें आयके ऐसा वचनकहा, इसीतरें बडे प्रभावीक श्रीजिनदत्तसूरि महाराजकों बडादादाजीके नामसें सर्व संघपूज नें ध्यावनें लगे॥ ४४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ४५ मा। श्री जिनचंद्रसूरिः भए, पिता साहरासलक माता देल्हणदेवी तिसके पुत्र सं। ११९१ मि। भाद्रवा सुद ८ के दिन जन्म, सं। १२११ वैशाख सुदि ५ के रोज विक्रमपुरकै विषै रासलकृत नंदीमहोत्सव सहित श्रीजिनदत्तसूरियें आप आचार्यपदमें स्थापन कीए, ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि नरमणिमंडित भाल स्थल खोमीया क्षेत्रपाल सेवित भए, अथ अन्यदा श्रीगुरूमहाराज गुर्जर देश प्रति जाते थके,श्रीमालगोत्री मदनपाल श्रीचंद्रादिकके आग्रह करकै दिल्लीनगर गए, उहां वाद शाहकों अनेक चमत्कार देखाके अपना भक्तिवंत किया अरु बहुत सा धर्मका उद्योत किया, पीछे एकदा गुरूमहाराज अपनी अंत अ वस्था जानके मदनपालकों कहाकि हमारै मस्तकमें मणि है, तिसकों अग्नि संस्कारसमयमें दूधसें भराभया पात्र रक्षण करकै तुम ग्रहण कर

ना, मार्गमें विश्राम लेनेंकेवास्तै सेढीकों न रखना ऐसा कहके महा राज सर्व आयु २६ वरसको पालकै सं। १२२३ भाद्रवा वदि १४ चतुर्द शीके रोज अणशण करकै स्वर्ग गए ॥ तदा सर्व श्रावक मिलकै अग्नि सं स्कार करनेंकेवास्तै जाते थके भरवजार माणक चोकतक आए, तब कोई कार्यपणेंकरकै पहली कहा गुरूकावचन भूलके विश्रामकैवास्तै सेढिकोंनीचैं रखदीनी मणिग्रहण करनेंकैवास्ते, दुग्धपात्रभी न रखा,परं तहां एक विद्यावान् योगी मणिग्रहणकरनेंकी इछासें दुग्धपात्र भरके एकांत बैठ गया पीछे फेर वहोत यत्न करकै सीढीकों उगानें लगे तो पिण सीढी उठे नहीं,तब सर्व नगरकै विषै या वात फैली अनुक्रमसैं बादशाहनेंभी सुनी तहां बादशाह आप आयकै बहोत उगानेंका उपाय करा, परंसेढी उहांसें सिरकी नहिं, तब बा दशाह बोला कि सत्य है यह देव, ये जैनका सेवमा जीतांभी चमत्कारी था और मुवांभी चमत्कारी हुवा, इसका स्थान इहांईज हुवो, तब श्रावकोंनें तहांई अग्निसंस्कार करा,तिस अवसरमें गुरुके मस्तकसेती मणी फमाकशब्द करकै योगीनें रख्खा था सो दुग्धपात्रमें पमी, योगी उसकों ग्रहण करकै अ पनें ठिकाणें गया, तब मदनपालनें कहाकि गुरूमहाराज पहली मेरेसें कहा था, परंमें जलदीकै सबवसें भूल गया, तब सर्व साधु श्रावक तिसकों उलंभा दिया अरु तिसी ठिकाणें श्री जिनचंद्रसूरीकी छतरी वनवाई बादशाह प्रमुख सर्व लोकोंनें वहोत बहुमान करा, सर्व लोक जातदेनें लगे, तिस ठि काणेकी अभीतक यात्रियोंसें पूजा होती है, इसमाफक प्रभावीक श्रीगुरूम हाराज भए, इहांसेती चतुर्थपाटकै विषै अतिशयवंत जिनचंद्रसूरी नाम दे णा, ऐसा पद्मावतीनें वर दिया ॥ ४५ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनोंके समयमें श्री देवचंद्र सुरीका शिष्य तीन क्रोम ग्रंथका कर्त्ता कलिकालमें सर्वज्ञ विरुद धारक पाटणका कुमारपाल राजाकों प्रतिबो धक श्री हेमाचार्यजी भए सं। ११६६ सूरिपद, सं। १२२९ देवलोक, इनों का विशेष अधिकार कुमारपाल चरित्रसें जाणना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ४६ मा श्रीजिनपतिसूरि भए, तिके मालू गोत्रीय साह यशोवर्द्धन पिता, सूहवदेवी माता, सं। १२१० चैत्र वद ८ के दन मूलनक्षत्रे जन्म हुवा, सं। १२२८ फागुण वदि ८ अष्टमीके

दिन दिल्लीनगरकै विषै दिक्षा, सं। १२३३ सै कार्त्तिक सुदि १३ त्रयोदशीकेदिन श्रीजयदेवाचार्यै आचार्यपदमें स्थापन किये पीछे विहार करते श्रीजिनपतिसूरि एकदा बब्बर नामा पत्तनकै विषै गए,तहां ३६ छत्तीस वादियांकों जीतकै वहोत जिन शासनकी प्रभावना करी,तथा फेर एकदा आसापुरमें श्री मालज्ञाती हाजी साहनें मंदिर बनवाया, उसकी प्रतिष्टाकै अवसरमें मणिग्रह ण करनेंवाला योगीनें जिन प्रतिमाकों स्तंभन करदी तब चिंता सहित श्रीजि नपतिसूरिनें अपना गुरूकों आराधन किया, तब श्रीजिनचंद्रसूरि महाराज प्रगट होकै चूर्ण दिया, पीछे प्रभातसमय गुरू उन प्रतिमां ऊपर चूर्ण नाला तिस करकै प्रतिमा जलदी उठ गई,तब योगी प्रसन्न भयाथका मणिकों पीछी देदीवी, श्रीगुरूमहाराजकी महिमा वहोत फैली, तथा फेर एकदा श्री गुरूमहाराज, अजमेर नगरमें चतुर्मासी रहे, तब उहांके रहनेंवाले रामदेवादिक श्रावकोंकै अगाडी, खेमगामवासी छाजेड गोत्री मंत्री उद्धरण साहकी प्रसंसा करे, एकदा रामदेव श्रावक मंत्री ऊधरणसें जायके मिले, तब तिस मंत्रीयें रामदेवप्रतें वहोत आदर सहित अपनें घरलायके विधिसें भोजन करा कै भक्तिकरी, तिस अवसरमें मंत्रवीकी स्त्री देवमंदिरमें देववंदन करनेंकेवास्तैचली जब साडा, कंचूकी, अनेक वस्त्रसें भरी छावडीयां साथमें ग्रहण करी, तब रामदेवनें पूछा किसवास्ते इतना वस्त्रग्रहण कीएहैं तब सेवक लोक कहते भए, कि यह वस्त्र साधर्मिक स्त्रीयांकों देनेंकेवास्तै हमेसां लेजाते हैं तब रामदेव कहनें लगा कि श्रीजिनपतिसूरजी महाराज जो तुमारी प्रशंसा करी सो योग्य है, कि जिसकै घरमें ऐसे धर्मकार्य होते है, अथ एकदा ऊध रण मंत्रवीनें नागपुरमें देववर कराया, तब बिंब प्रतिष्टा निमत्त मंत्रीयें अपना कुलगुरुकों बुलवाए, परं कोई कारण करकै महुर्त्त ऊपर न आए और ऊधर णकी स्त्री खरतर गच्छकै श्रावककी पुत्री थी, तिसनें मंत्रवीके कुलगुरुप्रतेंही नाचारी मांनकै शुद्ध संवेग रंगधारी श्रीजिनपतिसूरि महाराजकों बुलवाए तिके महुर्त्तकै ऊपर तहां आए, तब तिनोंकेपास सेती प्रतिष्टा करवाई ऊध रण मंत्री कुटंब सहित खरतर गच्छीय श्रावक होगए, तिस मंत्रवीके कुलधर नामें पुत्र भया जिसनें वाहमेर नगरमें ऊंचा तोरण सहित मंदिर बनवाया तथा फेर मरोट नगरमें रहनेंवाले नेमिचंद्र भंडारीनें परिक्षा करकै शुद्ध सं

वेगवंत श्रीगुरूप्रतें जानकै चारित्रकी इच्छा करता थका अंबम्ह नामें अपणा पुत्र गुरूमाहाराजके भेट करा, इसमाफक श्रीजिनपतिसूरि सर्व आयु ६७ सम्सठ वरसको पालके सं । १२७७ पाल्हणपुर नगरमें स्वर्गगए ॥ ४६ ॥ इनोंके समयमें सं । १२१३ अंचलनाम गच्छ ऊवा, सं । १२२६ सार्द्ध पौर्णमीयक मत ऊवा, सं । १२५० आगमिया मत ऊवा सं । १२८५ चित्रवाल गच्छके चैत्यवासी जगच्चंद्राचार्यजीसें तपा नाम गच्छ प्रचलित भया,

श्रीजिनपतिसूरिपट्टे ४७ मा श्रीजिनेश्वरसूरि भए, तिणोंका सं । १२४५ मार्गशिर सुदि एकादशीके दिन भरणी नक्षत्रमें जन्मः तथा मरोटनगरके भंभारी नेमिचंद्र पिता लक्ष्मी माता, अंबम्ह ऐसा मूलनाम, सं । १२५५ खेम्ह नगरकै विषेदीक्षा देके वीरप्रभ नाम दिया फेर सं। १२७८ माघसुदि ७०के दिन जालोरनगरमें मालूगोत्री साह खीमसीनें १२ वारे हाजार रुपये खरच करकै नंदीमहोत्सव करा, सर्व देवाचार्यनें सूरिमंत्र करकै पद स्थापना करी, इस माफक श्रीजिनेश्वरसूरि सं । १३३१ आसोज वदि ६ ७०के दिन अणशण करकै स्वर्ग गए, इनोंके वारेमें सं । १३३१ जिन सिंहसूरिसेती लघू खरतर शाखा निकली, यह तीसरा गच्छभेद ॥ ४७ ॥ ॥ॐ॥

श्रीजिनेश्वरसूरि पट्टे ४८ मा श्रीजिनप्रबोधसूरि भए, साह श्रीचंद पिता, सिरिया देवी माता, तिनके पुत्र सं। १२५५ जन्म, पर्वत ऐसामूलनाम, सं । १२९६ फागुण वदि ५ पंचमीके दिन हस्त नक्षत्रमें थिराद नगरकै विषै दीक्षा ग्रहण करी, प्रबोधमूर्त्ति ऐसा दिक्षाका नाम भया अनुक्रमें वाचक पद प्राप्त भए, संवत् ॥१३३१॥ आसोज वदि पंचमीके दिन संक्षेप करकै पाट महोछव भया, पीछै संवत्॥१३३१॥ फागुण वदि ८ अष्टमीके दिन विस्तार करकै स्वाति नक्षत्रमें जालोर वसणेंवाले मालूगोत्रीय साहखीमशानें २५ हजार रुपया खरच करकै पाट महोछव करा, इसमाफक श्रीजिनप्रबोधसूरि निर्मल चारित्र आराधन करकै सं। १३४१ स्वर्ग गए ॥ ४८ ॥

तत्पट्टे ४९ मा श्रीजिन चंद्रसूरि भए ॥ तिके समियाणा गाममें रहणेंवाले छाजेहम्हगोत्रीय मंत्रीदेवराज पिता कमलादेवी माता, खंभराय मूलनाम सं। १३२६ मिगशिर सुदि ४ चोथकूं जन्म सं। १३३२ जालोर नगरके विषै दीक्षा सं। १३४१ वैशाख सुदि ३ तीज सोमवारके दिन मालू गोत्रीय साहखीम

सीनें १२ वारे हजार रुपया खरच करके महोछव करा इसमाफक गुरूमा हाराज देशोंमें विचरते थके वहोत राजस्थानमें मान्यनीक भए जिसमें मुख्य दिल्लीके वादशाह, तथा चीतोमगढका राजा, जेसलमेरका राजा, मंडोरका राजा, यह मोटे ४ राजे तो महाराजके परम भक्त भए, महाराजकै ध र्मोपदेशसें आपापणें राज्यादिकमें जीव दयादिक धर्म उन्नती करी,सर्वराजादिक खरतर गछकों राज गछ कहनें लगे, वादशाहनें आदि लेकै फुरमांणभी अ पनी २ मोहर छापका लिखके दीया, सो आजतक खरतर गछके प्राचीन भंमारोंमें है, ऐसे गुरूमाहाराज कलिकाल केवली विरुद विख्यात अनेक वादीयांकों जीतनेंवाले जिनशासनोन्नति करनेंवाले श्रीजिन चंद्रसूरजी सं। १३७६ कुसुमाण ग्राममें स्वर्ग गए ॥ तिस वखतमें खरतर गछकों राज गछ विरुद मिला ॥ ४९ ॥ ॥※॥

॥ तत्पट्टे ५० मा श्रीजिन कुशलसूरिजीमहाराज भए॥ तिके समियाणा गामके वसणेंवाले, छाजेहड गोत्रीय, मंत्री जिल्हागर पिता, जयतश्रीमाता, सं। १३३० जन्म, सं। १३४७ दीक्षा सं। १३७७ ज्येष्ट वदि एकादशीकै दिन श्रीराजेंद्राचार्यें सूरिमंत्र, दिया, तव पाटणके वसणेंवाले साहतेजपालनें नंदीमहोछव करा, २४०० चोवीससै साधू साधवी भणी, तथा७००सातसैं वेषधारी जैनपंमितादिककों वस्त्रादिक दीया, तथा तिस अवसरमें दिल्लीनगरके रहनेंवाले महतीयाण गोत्रीय, विजयसिंह श्रावक उहां जायकै वहोत द्रव्य खरच करके नंदीमहोछव करा, तथा सं। १३८० साहतेजपालनें निकाला संघकै साथ सेत्रुंजै तीर्थ गए, तहां गुरूमहाराज मानतुंग नामें खरतर वसीके मंदिरमें २७ सत्तावीसअंगुल प्रमाणें श्री आदिनाथ विंवकी प्रतिष्टा करी तथा भीमपल्हि नगरमें भुवनपालनें वनवाया ७२ वहोत्तर जिनालयमंमित श्रीवीरस्वामीके मंदिरकी प्रतिष्टाकरी, तथा जेशलमेर नगरमें, जस धवलनें मंदिर वनवाया श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथकी प्रतिष्टाकरी,तथा फेर जालोर नगरमें श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिष्टा करी, तथा आगरा नगरमें रहनेंवाले श्रीसंघकै आग्र हसें साथ होकै सेत्रुंजयकी यात्रा करकै आपाढ वदि ७ सप्तमीके दिन पाटण नगरमें आए तथा श्रीगुरुमहाराजकै १२०० वारेसै साधु संप्र दायमें भए, १०५ एकशो पांच साधवीयोंका संप्रदाय भया, तथा श्रीगुरु

महाराज विनयप्रभादिक शिष्यांकों उपाध्याय पद दीया, जिस विनय प्रभ उपाध्यायें निर्द्धन भया अपनें भाईकों संपत्तिके वास्तै मंत्र गर्भित गौतमरासवनायकै दिया, तिसकै गुणनेंसें अपनाभाई फेर धनवंत भया इसमाफक बहोत श्रावक प्रतिबोधक, परम जिनधर्म प्रभावक, श्रीजिन कुशलसूरि सं। १३८९ फागुण वदि अमावसके रोज, देराउर नगरमें ८ आठ दिनतक अणशण करकै स्वर्ग प्राप्त भए। तिके अभीतक दादोजी ऐसे नाम करकै सर्व जगत्रमें प्रसिद्ध है, प्रतिनगरमें गुरूमाहाराजके चरण कमल पूजीज रयेहें, सोमवती पूनमकों प्रथम दर्शन दिया, तिस कारणसें सोमवार पूनमकों विशेष करकै पूजा होती है ॥ ५० ॥

॥ तत्पट्टे ५१ मा श्रीजिनपद्मसूरि भए, तिके छाजेहड़वंश भूषण सं। १३८२ जन्म सं। १३८९ ज्येष्ट सुदि ६ छठके रोज श्रीदेराउर नगरमें साह हरपालनें नंदीमहोत्छव करा, तब आठमें वरसे तरुण प्रभ आचार्यैं सुरिमंत्र दीया, अथ एकदा श्रीगुरुमहाराज बाहड़मेर नगरमें श्रीमहावीरस्वामीके मंदिरमें देव वंदन करनेंवास्तै गए तहां देव मंदिरको दरवाजो छोटो, प्रतिमावडी देखकै, पंजाबदेशके रहनेंवालेथे तिसवास्तै तिस देशकी भाषा करकै कहा, बूहा नंढा, यानें दरवजा छोटा, वसही वड्डी यानें प्रतिमावडी, अंदर क्यूं माणित्ति यानें भीतर किस्तरेसें माई, ऐसे प्रगट बालभाव वचन सुनकै, श्रीगुरुमहाराजके पासमें रहा थका, विवेक समुद्र उपाध्यायें कहा, कि मौन करो, ततो व्याख्यान स्थिति प्रवर्त्तन करते थके, तिन उपाध्यायकेसाथ, श्रीगुरुमहाराज गुर्जर देशमें आए तहां पाटणके पास सरस्वती नदीके तट ऊपर रात्रवासी रहे परंतिस वखतमें गुरुमहाराजकों ऐसी चिंता उत्पन्न भई कै सवेरे संघके अगाडी इस भाषा करकै किस्तरै व्याख्यान करुंगा, ऐसी चिंता करते थके गुरु महाराजके भाग्यसें अर्द्ध रात्र समयमें सरस्वती नदीकी अधिष्टायका सरस्वती देवी प्रगट होके ऐसा वर दिया, अहो स्वामी प्रभात समयमें आप संघके अगाडी जो कुछ कहोगे, तिससें सकल संघ प्रसन्न होगा अब प्रभात समयमें संघके अगाडी गुरु महाराज अपणी इच्छासें अर्हँ तो भगवंत इंद्र महिता, इत्यादि नवीन काव्य वनायके उपदेश दिया तब

समस्त संघ श्री गुरु महाराजको व्याख्यान सुन करके वहोत प्रसन्न भए तहां गुरु महाराज वाल धवल कूर्चाल सरस्वती विरुद प्राप्तभए, इस माफक श्रीजिनपद्मसूरि सं. १४०० वैशाख सुदि १४ चतुर्दशीके रोज पाटण नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५१ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ५२ मा श्री जिनलब्धि सूरि भए, पाटण नगरके वसनें वाले, नवलखा गोत्रीय, साह ईस्वरदासनें नंदी महोत्छव करा, तरुण प्रभाचार्यें सूरि मंत्र दीय, अनुक्रमें गुरुमहाराज सर्व सिद्धांत सिरोमणि, अष्ट विधान साधक भए, तिके सं । १४०६ नागपुर नगरमें स्वर्ग गए ॥५२॥

॥※॥तत्पट्टे ५३ मा श्रीजिनचंद्रसुरि भए॥ तिके सं। १४०६ माघ सुदि १०दशमीके रोज, नागपुर निवासी, श्रीमाल साहहाथीनें नंदीमहोत्छवसहित पद स्थापना करी, तरुण प्रभाचार्यसूरि मंत्र दिया, ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि सं। १४१५आषाढ वदि१३ त्रयोदशीके रोज स्तंभन तीर्थविषै स्वर्ग गए॥५३॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ५४ मा श्री जिनोदय सूरि भए, तिके पाल्हणपुर वसनेंवाले, मालुगोत्रीय, साह रुद्रपाल पिता, धारल देवी माता, सं । १३७५ जन्म, समरो, ऐसा मूलनाम सं । १४१५ आषाढ सुदि २ दूजके दिन, स्तंभन तीर्थके विषै, लूणीया गोत्रीय साह जेशलकृत नंदि महोत्छव करके श्री तरुण प्रभाचार्यें पद स्थापना करी, तहां स्तंभन तीर्थ विषे श्री अजितनाथ मंदिरकी प्रतिष्टा करी, तथा सेत्रुंजयकी यात्रा करके तहां पांच प्रतिष्टा करी, इस माफक पांच तिथमें उपवास करनेंवाले फेर १२ वारे गांमके विषै अमारि डूंमी फिरानेंवाले २८ अठावीस साधु वांके परवार करके अनेक देश विहार करतेथके, श्री जिनोदय सूरि सं । १४३२ भाद्रवा वदि ११ एकादशीके रोज पाटण नगरमें स्वर्ग गए ॥ तिनोंके वारे सं । १४२२ वेगम खरतर शाखा निकली ॥ ५४ ॥

॥ ※ ॥ श्री जिनोदय सूरिपट्टे ५५ मा श्री जिनराज सूरि भए तिके सं । १४३२ फागुण वदि ६ छठके दिन, पाटण नगरमें साह धरणनें नंदी महोत्छव किया सूरि पदमें प्राप्त भए, तव गुरुमहाराज सवालक्ष प्रमाणें न्याय ग्रंथ पढे और सर्व सिद्धांतके पारंगामी भए ऐसे गुरुमहाराज सं । १४६१ देवलवाडा नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ५६ मा श्री जिनभद्र सूरि भए तत्प्रबंधोयथा ॥ प्रथम सं। १४६१ श्री सागर चंद्राचार्यें, श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरिकों स्थापन कीएथे, तिके एकदा जेशलमेरगढमें श्री चिंतामणि पार्श्व नाथके पासमें रही क्षेत्रपालकी मूर्त्ति देखकै स्वामी सेवकका बराबर बैठना अयुक्त है, ऐसा विचार करकै क्षेत्रपालकी मूर्त्तिकों उठायकै दरवज्जेके विषै स्थापन करी तब क्रोधायमान भया थका क्षेत्रपाल जहां तहां गुरूमहाराज का चतुर्थ व्रतका भंगपणा दिखलानें लगा, इसीतरे एकदा गुरूमहाराज चित्रकूटके विषै गए, तहां पिण देवता तिसी तरेसें करा, तब सर्व श्रावक चतुर्थ व्रतका भंग जानकै यह पूज्य पदके योग्य नहिं है ऐसा विचार करा क्रमसें वर्द्धमान सूरि व्यंतर प्रयोग करकै ग्रथलीभूत भए थके पिप्पलक ग्राममें जाकै रहे, कितनेक शिष्य पासमें रहे, तब सागर चंद्राचार्य प्रमुख समस्त साधु वर्ग एकत्र होकै, गछकी स्थिति रखणें वास्तै, नवीन आचार्य स्थापन करना, ऐसा विचार करा, तब नवीनगोरा नाम क्षेत्रपालकों आराधन करके, और सर्व देशके खरतर गछीय संघकी अनुमति हस्ताक्षर मंगवायके सर्व साधुमंडली एकठी करकै भाणसोल ग्राम आए, तहां श्रीजिनराजसूरियें एक अपणें शिष्यकों वाचक शीलचंद्रगणीकेपास पढनेंकेवास्ते रक्खा था सो समस्त शास्त्रका पारगामी भया, भणसाली गोत्रीय, भादोमूल नाम सं। १४५१दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें पंचवीस वर्षके भए, तब तिनकों योग्य जानके श्रीसागरचंद्राचार्यें सातभकाराक्षर मिलाय के सं। १४७५ माघसुदि पूर्णमासीकेदिन, भणशाली नालामाहनें सवा लक्ष रुपये खरच करकै नंदीमहोछव सहित सूरि पदमें स्थापन किए ॥ सप्त भकार लिखे हे ॥ १ भाणसोल नगर ॥२भणशालिक गोत्रीय ॥३भादो नाम ॥४भरणी नक्षत्र ॥५ भद्राकरण ॥ ६ भट्टारक पद ॥ ७ जिनभद्र सूरि ॥ इस माफक वर्म प्रभावीक श्री जिनभद्र सूरि विचरते थके, आबूजी, गिरनारजी, जेशलमेर प्रमुख ठिकाणोंके विषै बिंब तथा नवीन चैत्योंकी प्रतिष्टा करते भए, ठिका णें ठिकाणें पुस्तकोंके भंडार स्थापन किये, अंतमें सं। १५१४ मिगशर बदि नवमीके दिन कुंभल मेरु नगरमें देवलोककों प्राप्त भए, इनोंके वारे

सवत् १४७४ श्री जिनवर्द्धन सूरिसें, पिप्पलक खरतर शाखा निकली यह पांचमा गच्छ भेद भया ॥ ५६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ५७ ॥ श्री जिनभद्र सूरिके पाट ऊपर, श्री जिनचंद्र सूरि भए ॥ तिके जेशलमेर वासी, चम्म गोत्रीय, साह वच्छराज पिता, वाल्हा देवी माता सं। १४८७ जन्म सं। १४९२ दिक्षा सं। १५१४ वैशाख वदि २ द्वितियाके दिन कुंभल मेरु रहवासी कूकम चोपमा गोत्रीय साहस मरसिंहनें नंदी महोछव किया, श्री कीर्त्ति रत्नाचार्य पद स्थापना करी, फेर विचरते थके अर्बुदाचल ऊपर, नवफणा पार्श्वनाथ बिंवप्रतिष्टा कारक, श्री धर्मरत्नसूरि, गुणरत्नसूरि प्रमुख अनेक मंमलाचार्य पद स्थापक श्रीजिनचंद्र सूरि वि। सं। १५३० जेशलमेर नगरमें देवलोकको प्राप्त भए ॥५७॥※॥

॥ ※ ॥ इनोंके वारे वि। सं। १५०८ अहमदावादमें लौंके लेख कनें प्रतिमा उत्थापन करी। सं। १५२४ लुंपक मत प्रचलित भया, इनमें भेष धारक सं। १५३३ में भूणा नाम रिषि भया, इनकी किंचित् उत्पत्ति लिखता हुं, अहमदावादमें दशाश्रीमाली लौंका नामें एक लेखकथा, सो जतियोंकी पुस्तकों लिखता था, एक दिन तपगच्छका ग्यानजी जतीकी पुस्तक लिखी, जिसमें बहुत खोट रह गई, जव ग्यानजी कुछ कठोर वचन बोले, तव लौंका लमनें लगा, तव धक्का देके लौंकाको निकाल दिया, पीछे नींवडी जायके राजकारभारी लखमसी नाम वाणियेके सामनें कूका, तव लखमसीनें हकीकत पूछी, लौंकेनें कहा, सचा धर्म कहतां तपा जत्यां मनें मारयो, तव लखमसी वोला इहां तुं थारो मत चलाव, मैं तेरा पक्ष हुं, जव बहुत लोकानें कृपण दलद्री होता जानके, मंदर प्रतिमाका उत्थापन किया मन आए सो ग्रंथ माने, वत्तीस सुत्रको सचा करके मान्या, परंतु मेरी माथी सो वांक थी, इसी न्यायसें ३२ सुत्रको सचा मान्या, परंतु उनमें पंचांगी प्रमाणका, तथा प्रतिमा पूजनका अधिकारको कूठा मान्या, इससें मनोमती हुवा, २५ वरप गृहस्थपणें लुंपक मतकी प्ररूपणा करी, पीछे लौंकेके उपदेशसें एक भाणा नाम वाणियेके वेटेनें भेष धारण किया उस का भूणारिषि नाम हुवा पीछे परवारवधतां इसमें तीन गादी हुई नागोरी, गुजराती, उत्तरादि, इत्यादि इति लुंपकोत्पत्तिः ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ❋ ॥५८॥ श्री जिनचंद्र सूरीके पाट ऊपर, श्री जिनसमुद्र सूरि भए तिके वाहमेरवासी, पारख गोत्रीय, देको साह पिता, देवल देवी माता सं। १५०६ जन्म, सं। १५२१ दिक्षा। सं। १५३० माघसुदि तेरस के दिन जेशलमेरके वासी संघपति सोनपालनें नंदी महोछव किया, श्री जिनचंद्र सूरियें स्व हस्तसें पद स्थापना करी, फेर विहार करते पंचनदी सोम यक्षादि साधक, परम चारित्रवंत श्री जिनसमुद्र सूरिः वि। सं। १५५५ अहमदावाद नगरमें देवलोक गये ॥ ५८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥५९॥ श्रीजिनसमूद्रसूरिके पाटऊपर, श्रीजिनहंससूरिः भए॥ तिके सेत्रावा नगरवासी, चोपडा गोत्रीय, साह मेघराज पिता, कमला देवी माता, सं। १५२४ जन्म, सं। १५५६ वैशाख सुदि ३ के दिन रोहणी नक्षत्रे श्रीवीकानेर नगरमें करमसी मंत्रियें लक्ष द्रव्य खरच करके आचार्य पदका उछव किया, तथा भांडासरजीके मंदरकेपास, मोटा श्रीनमिनाथजीका बिंब चैत्यकी प्रतिष्ठा कराई, पीछे एकदा आगरा नगरमें रहनेंवाले सं। डुंगरसीजी मेघराजजी पोमदत्त प्रमुख संघने बहुत आग्रह करके वीनती भेजके महाराजकों बुलाया तब गुरूमहाराजभी उहां गए, तब बादशाहें भेजे हाथी घोडा पालखी वाजित्र चामरादि आडंबर करकै सहित, गुरूमहाराज का प्रवेश महोछव करा तहां संघनें गुरुभक्ति संघभक्त्यादिकमें, दोय लक्ष रुपिया खरच करा पीछे फेर कोई चुगलखोरके चुगली करनेंसें बादशाहनें फेर गुरुमहाराजकों बुलवाए, धवलपुरमें रखे, तब देवकासानिध सेती गुरुमहाराज बादशाहके चित्तकों प्रसन्न करकै, पांचसौ बंदीवानाकों छोडायकै अमारकुंमी पिटवायके उपासरे आए, तब समस्तसंघ बहुत हर्षित भए फेर गुरुमहाराज अति सौभाग्य धारक, तीन नगरकै विषै तीन प्रतिष्ठा कारक अनेक संघपति प्रमुखपद स्थापक पाटण नगरमें तीन दिनका अणशण करकै सं।१५८२ में स्वर्ग गए॥ तिस वखतमें सं। १५६४ मरुदेशकै विषै आचार्य शांतिसागरसेती,आचार्य खरतर शाखा निकली यह छठा गछ भेद भया तथा इनोंके वखतमें सं। १५६२ कडुआमत हुवा, सं।१५७० में लुंकामतसें निकलके बीजानामा भेषधरनेंबीजामत निकाला, सं। १५७२ नागपुरी तपांमेंसें निकलके पार्श्वचंद्रजीनें अपनें नामसें पार्श्वचंद्र मत निकाला॥ ५९॥ ❋ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६० मा श्रीजिन माणिक्य सूरि भए ॥ तिके कूकम चोपमा गोत्रीय साहजीवराज पिता, पद्मादेवी माता, सं। १५४९ जन्म सं। १५६० दीक्षा सं। १५८२ भाद्रवा वदि ९ नवमीके दिन साहदेवराजनें नंदी महोछव किया, श्री जिनहंस सूरियें अपणें हाथ करकै पद स्थापना करी फेर गुर्जर देश सिंधु देशादिकमें विहार कारक पंच नदीसाधक श्रीजिनमाणिक्यसूरि कितनेक वरषतक जेशलमेरगढमें रहे, तहांमुनि सर्व सिथलाचारी हो गए, प्रतिमा उत्थापक मत वहोत फैला, तव वीकानेरके वासी वछावत मंत्री संग्राम सिंहनें गछ स्थिति रखणेंवास्ते, श्रीगुरुमहाराजकों बुलवाए तवभावसेती क्रिया उद्धार करकै, श्रीगुरुमहाराजनें विचारा, कि पहले देराउर नगरमें श्री जिनकुशलसूरिजी महाराजकी यात्रा करकै पीछे सर्व परिग्रह त्यागकै विहार करुंगा, इसवास्ते गुरुमहाराज यात्राकेवास्ते देराउर गए, तहां गुरुदर्शन करकें जेशलमेर पीछा आतेवखतमें गुरुमहाराजकों मार्गमें जलअभावसें त्रिपा परीशह वहोत उत्पन्न भया, जलरातको मिला, तव गुरुमहाराज दिलमें विचार करा मैंनें इतनें वरषतक रात्रिकों चोविहार पच्चक्खाण करा जिसकों एक दिनकैवास्ते कैसें खंमन करुं, ऐसा विचारकै तहां हीज सं। १६१२ आषाढ सुदि पंचमीके दिन अणशण करकै काल प्राप्त होकै स्वर्ग गए ॥ ※ ॥ ६० ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ तत्पट्टे६१ मा श्री जिनचंद्रसूरि हुए तिके वम्मली गामवासी रीहम गोत्रीय, साह श्रीवंतपिता सिरियादेवी माता, सं।१५९५जन्म सं।१६०४दीक्षा सं। १६१२ भादवा सुदि ९ नवमीके दिन जेशलमेर नगरमें राउल मालदेव कारित नंदी महोछव करकै सूरिपदमें प्राप्त भए, तिसहीज रात्रकै विषै श्रीजिन माणिक्यसूरि प्रगट होकै सेवाकी पोथीमें रहा आम्नाय सहित सूरि मंत्र पत्र श्रीजिनचंद्रसूरिकों दिया, फेर श्री जिनचंद्रसूरि, संवेगरंगमें वासित चित्त भयाथका गछकैविषै शिथिलपणा देखकै, सर्व परिग्रहका त्याग करकै, वछावत मंत्रि संग्राम सिंहका पुत्र कर्मचंदकै आग्रह करकै, वीकानेरनगरमें गए, तहां प्राचीन उपाश्रयकों शिथलाचारी यति लोकोंके रोका भया देखकै मंत्रवीनें अपणी अश्वशाला महाराजकों दीवी, उन्नी वहोत गुरुकी भक्ति करी, गुरुमहाराज तहां क्रिया उद्धार करकै सुविहित साधु मार्ग अंगी-

कार करा, अपणें समान साधुवांकेसाथ विहार करकै, ठिकाणें २ प्रतिमा उत्थापक मत खंमन करतें थके, अपणी समाचारी दृढ करते थके अनुक्रमें गुर्जर देशमें गए, तहां अहमदावाद नगरमें, काकमी व्यापार करकै आजीवका करता थका, मिथ्यात्वी कुलोत्पन्न, पौरवाम ज्ञातीय सिवा सोमजी नामें दोनूं नाईकों प्रतिवोध देके सर्व कुटंब सहित धनवंत श्रावक करा, जिणोंनें सेत्रुंजयकी यात्रा करके सर्व देशोंके जैन लोककों एकेक मोहर, एकेक थालकी लहाणी दीनी, तथा पाटण नगरमें एकदा तप गछी विजय दान सूरीका शिष्य, धर्मसागर गणिः लोकोंकै अगामी श्री अनय देवसूरि खरतर गछमें नहिं नए इत्यादि कितनेक वचन उत्सुत्र कहा, तब गुरूमहाराज पाटण चौमास करके शास्त्रसंवाद करकै चोरासी गछीयमुनि लोकोंके सामनें धर्मसागरकों जीता, तब सर्व कहनें लगे, नवांगीटीका रचन करनेंवाले श्रीअनयदेवसूरि खरतर गछमें नए, ऐसा सर्वनें अंगीकार करा, फेर तिनके वनाया नया कुमति कुदालनामें ग्रंथकूं असुध करा, तथा फेर फलोधी पार्श्वनाथके मंदिरमें तपगछवालानें ताला लगाया नया हाथफरस करके उघामा, सर्व लोक आश्चर्यमान नए, पीछे फेर एकदा मंत्रि कर्मचंद्र प्रमुखसें गुरुमहाराजको अति महत्व सुनकै वादशाहनें दर्शनकै वास्तै वुलवाया, गुरुमहाराज लाहोर नगर जाकै, अकव्वरकों प्रतिवोध दिया तव अकव्वर वादशाह गुरुका सुध आचार व्यवहार देखकै अमृतकै समान अत्यंत मिष्ट वाणी सुन करकै, गुरूकै वचनसें पर्यूषणादिक सब पर्व तिथियोंमें कोइ सहरमें जीव हिंसा न करसकै ऐसी उदघोषणा अपणें राज्यमें दिरवाई, फेर एक वर्ष तक स्तंन नगरकै पास समुद्र नदीमें मछा दिक नहिं मारसकै ऐसा हुकम करिवाया इसीतरे जीव दयाधर्मको वहोत विस्तार कियो, गुरूका महा अतिशय देखकै, वादशाहनें युग प्रधान, राज गछ विरुद दिया, पहले परवन्नोंकी नकल देखकै उसी मुजव ए नवमो हुरा परवन्ना लिखकै दिया, जिस्में सारांस इतनांहे, कि महारे राज्यमें जहां श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराज पधारे उहां राजादिक सर्व लोक नक्ति साचवेंगे, और सिद्धाचलजी, गिरनारजी, शिखरजी प्रमुख सर्व तीर्थोंमें, तथा इनका ठिकाणें २ धर्म स्थानकोंमें कोइ जीव हिंसादि कार्य न करै, गुरुकी

आज्ञा मुजव कार्य करै, इत्यादि परवना खरतर गच्छके भंमारोंमें है, तथा अकब्बर वादशाहके आग्रहसें तिंस अवसरमें गुरुमहाराजनें जिन सिंहसूरिकों अपणें हाथसेती आचार्यपदमें स्थापन करा, तव अति प्रसन्न भया थका वच्छावत मंत्रीकर्मचंद्रनें महोत्सव करा, तहां नवग्राम ए, नवहस्ति ए, पांचसै ५०० घोमा जैन याचकादिककों दानमें दिया, इस्तरैसें सवाकोम द्रव्य खरच करा, फेर मंत्रवीनें अनेक प्रकारसें खरतर गच्छकी महिमा करी, तथा फेर सं। १६५२ श्री गुरूमहाराजनें पंचनदी साधन करी, तहां पांचपीर मानभद्र खोमीया क्षेत्रपालदेवादिककों साधन किये, इस माफक वहोत जिनशासन की उन्नती करणेंवाले भए, फेर गुरूमहाराजके समयराज १, महिमाराज २, धर्म निधान ३, रत्न निधान ४, ज्ञान विमल ५, इत्यादि ए५ पचाण वैशिष्य भए, ऐसे श्री जिनचंद्र सूरजी महाराज, सर्व आयु ७५ पचत्तर वरसको पाल करके सं। १६७० आसोजवदि २ दूजके दिन वेना तटमें स्वर्ग प्राप्त भए। तिस वखतमें सं। १६२१ भावहर्ख उपाध्यायसे ती भाव हर्षीय खरतर शाखा निकली, यह सातमा गच्छ भेद भया॥६१॥

॥※॥ श्रीजिनचंद्र सूरि पट्टे ६२ मा श्रीजिनसिंह सूरि भए, तिके गणधर चोपमा गोत्रीय, साह चांपसी पिता, चतुरंगीदेवी माता, सं। १६१५ मिगशिर सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन खेतासर गाममें जन्म, मानसिंह मूलनांम सं। १६२३ मिगशर वदि ५ पंचमीके दिन वीकानेरमें दिक्षा, सं। १६४० माघ सुदि ५ पंचमीके दिन जेशलमेरमें वाचकपद सं। १६४ए फागुण सुदि२ दूजके दिन,लाहोर नगरमें, वीकानेर रहनेंवाले वच्छावतमंत्रि कर्म चंदनें सवाकोम द्रव्य खरचके आचार्यपदका उत्सव किया सं।१६७० वेना तटमें सूरिपद, सं।१६७४ पोष वदि१३ तेरसके दिन मेमता नगरमें स्वर्ग गए६२

॥※॥ तत्पट्टे ६३ मा श्री जिनराज सूरि भए, तिके वोथरा गोत्रीय साह धर्मसीपिता, धारलदेवी माता, सं। १६४७ वैशाख सुदि ७ सातमके दिन जन्म, सं। १६५६ मिगशिर सुदि ३ तीजके दिन वीकानेरमें दिक्षा राजसमुद्र दिक्षानांम, सं। १६६० आसाउलिपुरमें श्री जिनचंद्र सूरियें वाचक पद दीया, सं। १६७४ फागुण सुदि ७ सातमके दिन मेमता नगरमें चोपमा गोत्रीय साह करणनें महोत्सव किया, सूरि पदकों प्राप्त भए

श्री जिनराज सूरिनाम हुवा ॥ फेर श्री जिनराज सूरि, लोद्रव पत्तनकै विषै श्री जेशलमेर निवासी, भणशाली थेरू साहनें उद्धार करा श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, तथा सं।१६७५ वैशाख सुदि १३ त्रयोदशी शुक्रवारके दिन श्री राजनगर निवासी पोरवाड़ ज्ञातीय संघपति सोमजीका पुत्र रूपजीनें बनवाया श्रीशत्रुंजय ऊपर चतुर्मुख देवालयमें श्रीरिखभादि चौमुखजिनकों आदलेके५०१ पांचसै एक प्रतिमाकी प्रतिष्टा करी, तथा फेर भानुवड़ ग्रामकै विषै साह चांपसीके बनवाया देवघर मंडन श्रीअमृत श्रावि पार्श्वनाथ प्रमुख ८० अशी बिंबकी प्रतिष्टा करी, तथा मेड़ता नगरमें गणधर चोपड़ा गोत्रीय संघपति श्री आशाकरण साहके करवाया श्रीशांति नाथ स्वामीके चेत्यकी प्रतिष्टा करी, इस तरेसें राजनगरादि अनेक नग रोंकै विषै श्रीजिन चैत्योंकी प्रतिष्टा करी, इस माफक श्री जिनमत उन्नती कारक, अंबिका प्रदत्त वरधारक, घंघाणी नगरमें चिरकालकी जमीनमें रही प्रतिमांकों प्रसस्तीका अक्षर देखकै प्रगट कारक, इत्यादिक महा प्रतापी, समस्त तर्क, व्याकरण, छंद, अलंकार, कोश, काव्यादि, विवधशास्त्र पारीण, नैषधी काव्य की, जैनराजी टीका प्रमुख, अनेक ग्रंथ रचन करणें वाले, श्रीवृहत् खरतर गछ नायक श्री जिनराज सूरि सं। १६९९ आषाढ सुदि ९ नवमीके दिन पत्तनमें स्वर्ग गए, ॥ इनोंकेवारे सं। १६८६ जिनसा गर सूरिसें लघु आचार्य खरतर शाखा निकली, यह ८ मा गछ भेद भया॥

॥*॥ तत्पट्टे ६४ मा श्रीजिनरत्नसूरि भये ॥ तिके सेरूणागाम निवासी लूणिया गोत्रीय साह तिलोकसी पीता, तारादेवी माता, रूपचंद्र मूलनाम निर्मल वैराग्य करके मातासहित दिक्षा ग्रहण करी, फेर सं। १६९९ आषाढ सुदि ७ सातमके दिन श्रीजिनराजसूरजी महाराजनें स्वहस्तसें सूरि मंत्र दिया, फेर शुद्धचारित्रपात्र श्रीजिनरत्नसूरि सं। १७११ श्रावण वदि ७ सातमके दिन आगरा नगरमें स्वर्ग गये ॥ ६४ ॥ ॥*॥

॥*॥ सं। १७०० में उपाध्याय श्रीरंग विजय गणिसें, रंगविजय खरतर शाखा निकली, यह ९ मा गछ भेद भया। फेर तिस वखतमें तिन मांयसें श्री सार उपाध्याय सेती, श्री सारीय खरतर शाखा निकली, यह १० मा गछ भेद भया ॥*॥ ॥*॥ ॥*॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे६५मा श्रीजिनचंद्रसूरि भए॥ तिकेगणधर चोपरा गोत्री य साहसहस करण पिता, सुपियारदेवी माता, हेमराज मूलनाम, हर्षलाभ दीक्षा नाम सं। १७११ भाद्रवा सुदि १० दशमीके दिन, श्री राजनगरमें, नाहटा गोत्री,साहजयमल्ल तेजसी,मातृकस्तूरवाईनें आचार्य पदका महोछव कीया, पीछे गुरूमहाराज योधपुरवासी साह मनोहरदासनें निकाला संघकेसाथ श्रीसत्रुंजयकी यात्रा करी, तथा मंमोवर नगरमें संघपति साह मनोहरदासनें बनवाया चैत्य शृंगार श्रीरिखभादि २४ चौवीस तीर्थंकर विंबोंकी प्रतिष्टा करी, इसमाफक नानादेशमें विहार करनेंवाले सर्व सिद्धांत पारगामी श्रीजिनचंद्रसूरि सं। १७६३ श्री सूरतबंदरमें स्वर्ग गए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनोंकेवारे ढुंढकमत प्रचलित भया, इनकी किंचित् उत्पत्ती लिखता हुं।।सूरत नगरमें एक वोहरावीरजी नामें दशा श्रीमाली भया जिस के फूलां नामें वालविधवा वेटी थी,उसनें लवजी नामें एक पुत्रकों गोदलिया सो लुंपकांके उपाशरे पढनेंकों जाताथा लुंपकांकी संगतसे वैराग्य पायके वज रंगजी लोंकेपासे दिक्षालीवी,दो वर्षपीछे गुरुकों कहनें लगा कि शास्त्रमुजब आचार नहिं क्युंपालते हो, गुरू कहा इस कालमें उत्कृष्ट दया नहिं होती हे तव लवजी वोला तुम भ्रष्टाचारी हो में तुमारा मत छोडके जुदी दिक्षा ले सुं, ऐसा कहके दो जती भूणाजी,सुखजीकों, लेकर तीन जिणां आपही भेष धारण किया, मुंहआगे मुहपत्ती वांधी, इनका नवीन मत देखके कोई घरमें उतरण नदिया, तव वहुत दिन उजडे हुए, टूटे फूटे ढुंढमकानमें रहे इससेती ढुंढिया नाम हुवा, तीनोंने मत चलानें वावत वहुत कष्ट किया तब बुगलेके माफक ऊपरकी ढुंग फुंफां देखके घणां लुंपक पक्षी गुजराती वणिया माननें लगे, क्युं कि अग्यांनी लोक ऊपरकी फुंफा देखते हैं जिसमें गुजराती प्रायें हठग्राही ऐसे होते हे, कि जिसका पक्ष करते हैं जो बात पकड लेते हैं, सो मुसकिलसें छोडते हैं, इसीवास्ते कईफिरके एकांति क मतवाले प्रायें गुजरात देशसेंही निकले हैं, ऐसा जैनतत्वादर्शमें, पीतां वरीमुनी आत्मारामजी लिखते हैं, ये ढुंढकमत उत्पत्ती कही, इसी ढुंढको मेंसें तेरे पंथी भीषमजी प्रमुख निकल्या, सो इनकों उथापके आ

पका फिरका जमानें लगे, इसमेंसुं फेर १४ पंथी निकला, इत्यादि मनोमती मंदिरप्रतिमाका उत्थापक मत हुवा ॥ ६५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६६ मा श्रीजिन सुक्खसूरि भए, तिके फोग पत्तन निवासी साहलेचा वोहरा गोत्रीय, साहरूपसी पिता, सुरूपा माता, सं। १७३९ मिगशिर सुदि १५ पूर्णमासीके दिन जन्म, सं। १७५१ माघ सुदि ५ पंचमीकै दिन पुण्यपालसर गाममें दिक्षा, सुखकीर्त्ति दीक्षा नाम सं। १७५६ आषाढ सुदि ११ एकादशीके दिन, सूरतवंदरमें रहवासी चोपडा गोत्रीय पारख सामीदासनें इग्यारै ११००० हजार रुपिया खरच करके पद महोत्छव करा, फेर एकदा गोगा वंदरके विषै, नवखंडा पार्श्वनाथ स्वामीकी यात्रा करके, श्रीगुरुमहाराज संघकेसाथ स्तंभन तीर्थ जानेंकेवास्तै जिहाज ऊपर चढे, तव मार्गमें समुद्रके मध्यभागमें, जिहाजके नीचेका पाटिया टूट गया, तहांजलसें भराभया जिहाज देखके गुरुमहाराजनें इष्टदेवका आराधन किया, तव दादाजी श्रीजिनकुशल सूरजी महाराजके साहाय्य करके अकस्मात नवीन जिहाज प्रगट होनेंसे समुद्रपार पहुंचे, तव फेर जिहाज अदृश्य होगया, फेर स्थंभना, सेत्रुंजयकी यात्रा करी, सकल शास्त्र पार गामी, अनेक वादीकों जीतनेंवाले श्री गुरूमहाराज तीन दिन अणशण करके सं। १७८० ज्येष्ठ वदि १० दशमीके दिन श्रीरिणी नगरमें स्वर्गकों प्राप्त भए, उसी रात्र देवतायें अदृष्ट वाजित्रवजाया, उस नगरके राजादिक सर्व लोक वाजित्र ध्वनि करके आश्चर्यवंत भये ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६७ मा श्री जिनभक्ति सूरि भए ॥ तिके इंद्रपाल नगर निवासी सेठगोत्रीय साह हरचंद्र पिता, हरिसुख देवी माता, सं। १७७० ज्येष्ठ सुदि २ द्वितीया दिन जन्म, भीमराज मूलनाम सं। १७६९ माघ सुदि ७ सप्तमीकूं दिक्षा, भक्तिक्षेम दिक्षा नाम सं। १७८० ज्येष्ठवदि ३ तृतीया दिन, रिणीपुरमें श्रीसंघकृतमहोत्छवसें, आचार्यपदकों प्राप्त भए, फेर नाना देशमें विहार करनेंवाले, सादडी नामा नगरकेविषै हस्ति चालनादि प्रकार करके, प्रतिपक्षीकों जीतके, विजय लक्ष्मीकों धारनेंवाले सर्वसिद्धांत पारगामी, श्रीसिद्धाचलादि सकल महातीर्थ यात्राकारी, श्री गूढा नगरके विषै श्रीअजितजिन चैत्य प्रतिष्ठाकारी, महातेजस्वी, सकल विद्व्ज्ज

न सिरोमणि, श्रीराजसोम उपाध्याय, श्रीरामविजय उपाध्याय, श्रीक्षमाप्र मोदउपाध्यायादि संसेवितचरण कमल ऐसे श्रीजिनभक्ति सूरि कछदेश मंमन श्रीमांमवी बंदरकेविषे सं। १८०४ ज्येष्टसुदि ४ चोथके दिन स्वर्ग गए,॥ उसरात्रीमें अग्निसंस्कार भूमिकेविषे देवतानें दीपमाला करी, ऐसे प्रभावीक गरुमहाराज भए ॥ ६७ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६८ मा श्रीजिनलाभ सूरि भए, तिके वीकानेरके रहनें वाले, वोथरागोत्रीय, साहपचायणदासपिता, पद्मादेवी माता, सं। १७७४ श्रावण सुदि ५ पंचमीके दिन, वापेउ गामकेविषे जन्म, लालचंद्र मूलनाम सं। १७८९ ज्येष्ट सुदि ६ छठके दिन जेशलमेरमें दिक्षा, लक्ष्मीलाभ दिक्षानाम, सं। १८०४ ज्येष्ट सुदि ५ पंचमीके दिन श्री मांमवी वंदरमें लाजेमगोत्रीय साह भोजराजकृत नंदीमहोत्सव करके पदस्थापन भया, फेर जेशलमेर, वीकानेर, आदि, अनेक पुरकेविषे विहार करके श्री गोडी पार्श्वनाथ, तथा धूलेवा, अर्बुदाचल, सिद्धाचलजी, गिरनारजी, प्रमुख तीर्थोंकी यात्रा करते थके, गुरूमहाराज सूरत बंदर गए, तहां सं। १८२७ वैशाख सुदि १२ द्वादशीके दिन, आदिगोत्रीय साह नेमी दास पुत्र, भाई दासनें वनवाया, नवीन चैत्यमंडन श्री शीतलनाथ, सहस्रफणा पार्श्वनाथ, श्री गोडी पार्श्वनाथ आदि १८१ विंवोकी प्रतिष्टा करी, तथा सं। १८२८ वैशाख सुदि १२ द्वादशी दिन, तिसीज देवघरमें श्री महावी रादि८२ वयासी विंवोकी प्रतिष्टा करी, प्रतिष्टा तथा संघभक्तीमें ३६००० छत्तीस हजार रुपिया खरच करा, सं। १८३४ आसोजवदि १० दशमी के दिन श्री गुढा नगरके विषे स्वर्ग गए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६९ श्री जिनचंद्र सूरि भए, तिके वीकानेरवासी वछा वत मुहता, रूपचंद्र पिता, केसर देवी माता, सं। १८०९ कल्याण सरगा ममें जन्म, अनूपचंद्र मूलनाम सं। १८२२ मंमोवरमें दिक्षा, उदयसार दिक्षा नाम, सं। १८३४ आसोज वदि १३ त्रयोदशीके दिन, शुभ लग्नमें, गूढा नगरके विषे, कूकम चोपमा गोत्रीय, दोसी लरका साहनें महोत्सव करा, सूरि पदमें प्राप्त भए, फेर अयोध्या, चंद्रावती, पाटलिपुर, चंपा मुर्शिदाबाद, समेत शिखर, पावापुरी, राजगृही, मिथिला, क्षत्रिय कुंमग्राम

काकंदी, हस्तिनागपुर आदि, तीर्थोंकी यात्रा करी, क्रमसें लखणेऊ नगर आए, उहां प्रतिमा उत्थापकका मत वढनेंसें, राजा वच्छराजनें, आग्रहके साथ रक्खा चौमासा करवाया, तव उहां वहुतसा प्रतिमा उत्थापक मत खंम्डन किया, फेर तिस नगरकै नजीक उद्यानमें राजा वच्छराजकों उपदेश देकै, श्रीजिन कुशलसूरजी महाराजका थुंभ वनवाया, उहांसें विहार करके, सर्व तीर्थोंकी यात्रा करते, श्री जिनचंद्रसूरिः सूरत वंदरमें, सं। १८५६ ज्येष्ट सुदि ३ तीजकों स्वर्ग गए ॥ ६९ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ७० मा श्री जिनहर्षसूरि भए, तिके वालेवागाम वासी मीठड्डिया वोहरा गोत्रीय, साहतिलोकचंद्र पिता, तारा देवी माता, हीरचंद्र मूल नाम, सं। १८४१ आउ गाममें दिक्षा, हितरंग दिक्षानाम सं। १८५६ ज्येष्ट सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन, श्री सूरत वंदरमें श्री संघका किया उच्छव सहित सूरिपदकों प्राप्त भए, तव तिसी नगरमें, श्री संघें चैत्य विंवोंकी प्रतिष्टा कराई, तथा सं। १८६० अक्षय तृतीयाके दिन देवीकोटके श्री संघनें वनवाया मंदरमें १५० विंवोंकी प्रतिष्टा करी, तथा फेर जालोर नगरमें मंत्री अखयराजनें वनवाया मंदिरकी प्रतिष्टा करी, तथा सं। १८६६ चैत्र सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन, गिम्भीया संघपति राजाराम, लूणीया साह तिलोकचंदनें, निकाला संघ, सवालक्ष श्रावक, ११०० इग्यारेंसै साधुवोंकै साथ, श्री सिद्धाचलजी गिरनारजीकी यात्रा करी, फेर गुरुमाहाराज अनेक देशोंमें विचरते सं। १८७० शम्मेत शिखर तीर्थ राजकी यात्रा करी, फेर सं। १८७६ श्री संघकै साथ शिखरजीकी यात्रा करी, फेर दक्षिण देशमें अंतरीक्ष पार्श्वनाथ, मगशी पार्श्वनाथ, धूलेवागढ, इत्यादि तीर्थोंकी यात्रा करते, सं। १८८७ आषाढ सुदि १० दशमीके दिन, श्रीवीकानेर नगरमें, श्री सीमंधर स्वामीके मंदिरमें २५ पचवीस विंवकी प्रतिष्टा करी, सं। १८८९ माघ सुदि १० दशमीके दिन, श्री वीकानेर नगरमें, सेठिया गोत्र साह अमीचंदनें वनवाया, शम्मेतशिखरगिरी भाव विराजित मंदिरकी प्रतिष्टा करी तिस अवसरमें, जेशलमेर निवासी, वाफणा साह वहादरमलजी, जोरावरमलजीके, मनमें संघ निकालके सिद्धगिरी जानेंका विचार हुआ, तव

परिवार सहत बीकानेर नगरमें आए, महामहोत्सवसें गुरूमहाराजकों वंदन नमस्कार किया, सात क्षेत्रमें बहुत द्रव्य खरच किया फेर गुरूमहाराज श्री संघके साथ श्रीसिद्धाचलकी यात्रा करनेंको चले, बीचमें वर्षाकाल आया, जब गुरूमाहाराज मंमोवर नगरमें चौमासा रहा, उहां सं।१८९२ कार्तिक वदि ९ के रोज, चार पहरका अणशण पालके देवलोक गए ७०

॥※॥ इस समय मंमोरिया खरतर शाखा भई, इसमें श्रीजिन महेंद्रसूरिः महाराज हुए यह ११ मा गछ भेद भया, इसीतरे मूल कोटिक गछ खरतर कल्पवृक्षकी इग्यारे शाखा भई ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री जिनहर्ष सूरिके पाटऊपर, श्रीजिनसौभाग्य सूरि भए, तिके मारवाडमें, स्वाई सेरमा गामवासी, कोगारी गोत्रीय, साहकरमचंद पिता, करुणादेवी माता, वि०। सं। १८६२ जन्म, सुरतराम मूलनाम, सं। १८७७ सिंधिया दोलतरावके लस्करमें दिक्षा ग्रहण करी, सोभाग्य विशाल दिक्षा नाम, सं। १८९२ मिगशर सुद ७ सातमकों गुरुवार शुभ लग्नमें श्री बीकानेर नगरमें आचार्यपदकों प्राप्त भए, खजानची साह लालचंद सालमसिंहनें बहुत द्रव्य खरचके नंदीमहोत्सव किया, जब श्री जिन सौभाग्यसूरि ऐसा नाम स्थापन भया, ये महाराज आचार्यपदकों प्राप्त होतेही जावज्जीव एकलठाणा करना, शाल दुशाला न ओढना, पावांविहार करना, इत्यादि बहोतसा प्रमाद शिथलतापना छोडके, कठन आचार धारण किया, इनोंके महात्मगुण देखके, बीकानेरका राजाधिराज श्री रत्नसिंहजी तथा सिरदारसिंहजी महाराज प्रमुखतो बहुतसे भक्तिरागकों धारण करनें वाले तथा स्वर्णमुद्रिकासें चरणकमलकों पूजन करनेंवाले भए, पीछे क्रमसें सर्वगांव नगरोंमें विहार करते मुर्शिदाबाद अजीमगंज नगरमें आए, उहां श्री संघके आग्रहसें चौमासे किये, श्रीनेमिनाथ स्वामीके मंदरमें बिंबप्रतिष्टा करी, फेर उहांसे दूगम्म बाबू प्रतापसिंहजी प्रमुखसंघकी प्रेरणासें विहार करते कलकत्ते गए, जब बाबू प्रतापसिंहजीनें महाराजकों दर्शन करानें निमत्त काती महोत्सवसें अधिक, श्री धर्मनाथ स्वामीका समोसरण निकालके दादावाडी ले गए, उहां तीन दिन उछवरहा फेर सहरमें आए, धर्मका बहुत उद्योत हुआ, उहां कितनेक दिन रहकार, फेर मुर्शिदाबाद बालूचर आए, उहां

दूगड़ बाबू इंद्रचंदजीकों सिद्धगिरीजाके निनाणों यात्रा करनेंका उपदेश दिया, तब इंद्रचंदजी पिण तत्काल संघ निकालके छहरीपालते थके गुरू महाराजके साथ हुए, उहांसें विहार करते चंपा नगरी गए, उहां बीकानेरके संघनें बनवाया भया, श्री जिनमंदरकी बड़े उछवकेसाथ प्रतिष्टा करी, फेर उहांसें विहार करके, शिखरजी, बनारस प्रमुख, सर्व तीर्थोंकी यात्रा करते हुए, जयपुर, कृष्णगढ, अजमेर, पाली, पंचतीर्थी, आबूजी, संखेश्वरापार्श्वनाथ, तारंगा, गिरनारजी प्रमुखकी यात्रा करते सं। १९०२ आषाढ मासमें श्री सिद्धगिरी गए उहां चौमास रहके निनाणों यात्रा करी, फेर गोगा, भावनगर, अैमदावाद, धूलेवादिककी यात्रा करके, बीकानेरका राजा श्री रत्नसिंहजी महाराज प्रमुख, सर्व संघके आग्रहसें सं। १९०२ मि। फागुण वद ७ दिन बीकानेर आये, सं। १९०४ मि। माघसुद १० के दिन श्री संघके बनाया भया श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीके मंदरकी प्रतिष्टा करी, सं। १९०५ वैशाख सुद ५ के दिन श्री चिंतामणजीके मंदरमे श्रीजिन बिंबोंकी प्रतिष्टा करी, सं। १९०६ मिगशर सुद १३ के दिन मंडोवर पुरमें खरतर गछ अधिष्टायक गोरानाम क्षेत्रपालकों प्रशन्न किया, फेर सं। १९१४ आषाढसुद १ दिन श्री बीकानेर नगरमें बिंब प्रतिष्टा करी, सं। १९१६ मि। वैशाख वद ६ के दिन नालगाम दादावाड़ीमें संघका बनवाया नवीन मंदरकी तथा जिनबिंबोंकी प्रतिष्टा करी, इत्यादि बहुत उपगारी धर्म उद्योतक, आचार्य गुणधारक, श्रीजिनसौभाग्य सूरिः सं। १९१७ माघसुद ३ रात्रकों चार प्रहरतक अणशण करके श्री बीकानेरमें देवलोककों प्राप्त भए ॥ ७२ ॥

॥ ✿ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरिकेपाटऊपर श्री जिनहंससूरि भए, तिके कुजटी गामवासीय गोताणी गोत्र, साहमनसुख पिता, जयादेवी माता, सं। १९०० जन्म हिमतराम जन्मनाम, सं। १०१७ फागुण वदि ५ पंचमीके दिन बीकानेर नगरमें दिक्षा लीनी, चोपड़ा कोठारी, गेंवरचंदजीनें दिक्षा महोछव करा, हितवल्लभ दिक्षा नाम भया, सं। १९१७ फागुणवदि ११ एकादशीके दिन आचार्य पदकों प्राप्त भये, तब बछावत अमरचंदजी तथा झालरापाटण निवासी, गजेड़ भूरा मलजी, तथा गोलछा ग्यानचंदादि

कर्नें बड़त द्रव्य खरच करके नंदीमहोछव किया, तथा वीकानेरका महाराज श्रीसिरदार सिंहजीनें दोयचार वेर गुरूमहाराजका दरशण किया, गजनेरा दिकमें गुरूमहाराजकी तथा सर्वसाधुमंमलीकी बड़त नक्ति करी, फेर वीकानेरका सत्तावीतसे गामनगरोंमे, तथा देशणोक, आगरा मिरजापुर, आदि देशोंमें विहार करते मुर्शिदावाद गए, उहां सं। १९२४ मि। फागुण वद ४ चौथके दिन दूगड़ प्रतापचंदजीका पुत्र रायवहादर लक्ष्मीपति सिंह, धनपति सिंहके, करायानया १ श्री ऋषभदेव, २ श्री वासुपुज्य, ३ श्रीनेमिनाथ, ४ श्रीमहावीर, ये चारमहाराजका पाडुका, श्रीसम्मेतसिखरजी पर्वत ऊपर जूदा जूदा चार ठिकाणें प्रतिष्टा करके स्थापन किये, सं। १९२६ मि। फागुण सुद सातमके दिन, अजीमगंजका समस्त श्रीसंघके वनाया ऊवा रामवागमें, श्रीअष्टापदजीकामंदर, तथा जिन विंवोंकी प्रतिष्टा करी, श्रीसंघनें बड़त द्रव्य खरचके अठाई महोछव किया, फेर क्रमसें दिल्ली, रिणी, राजगढ, चुरू, इत्यादि क्षेत्रोंमेंविहार करते सं। १९२९ मि। जेष्ट वद ९ नवमीके दिन वीकानेर नगरमें गए, सं। १९३१ मिति जेष्ट सुद १० दशमीके दिनमाण कचौंकमें उपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानजी गणिके उप देशसें तथा अंग मदतसें वनवाया ऊवा, नवीन श्रीकुंथुनाथ स्वामीका मंदर की प्रतिष्टा करी, सं। १९३२ श्रीचितामणजीके मंदरमें संघका किया उछ वेकसाथ श्रीजिनविंवोंकी प्रतिष्टा करी, इत्यादि शुभकार्य करनेंवाले सौम्य गुणधारक श्रीजिनहंससूरिः सं। १९३५ मिति कार्त्तिक वद १२ वारसकेदिन चार पहरका अणशण करके वीकानेर नगरमें देवलोकको प्राप्त नए। ॥७२॥

॥ ७३ ॥ श्री जिनहंससूरिके पाट ऊपर श्री जिनचंद्रसूरि नए, सो गोलछा गोत्रीय सं। १९३५ मि। माघसुद ११ के दिन आचार्य पद धारक, सोम्यगुणधारी वर्त्तमानकालमें विद्यमान विचरते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ग्रंथ प्रसिद्धकर्त्ता गुर्वावली ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीमहावीर स्वामीसें पूर्वोक्त कोटिक खरतरगच्छ आचार्योंके पॅरा ठमें पाटे, श्री जिनचंद्रसूरि ऊए, जिनोंके शिष्य पुज्य उपाध्याय पद धारक श्री उदय तिलकजी नए, सो वीकानेरका मुकीम अवीरचंदजी मरके देवता ऊवाथा उसकों प्रतिवोधके अपनें वश्यमें किया, और इसी देवताके मद

तसें दिल्लीमें वेठे, बीकानेरके राजाकों अनेक तरहके चमत्कार देखाके अपना आग्याकारी किया, तव राजानेंभी वङ्गतसा मान वधाया, अरु अपना गुरूपणें स्थापन किया, इत्यादि अनेक गुणधारक सर्व अंग उपांग कों जाणनेंवाले परम उपगारी धर्म उद्योतक ड्डए ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ २ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री अमरशीजी गणिः ड्डए ॥

॥ ३ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्यश्री लक्ष्मी चंद्रजी गणिः ड्डए ॥

॥ ४ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री विजमालजी गणिः ड्डए ॥

॥ ५ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री हाथी रामजी गणिः ड्डए ॥

॥ ६ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री विद्या विशालजी गणिः ड्डए ॥

॥ ७ ॥ तिनोंके शिष्य विद्यमान, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी गणिःके आग्यानुसार, बीकानेर, कलकत्ता, मुंबईमें, जैनपाठशाला स्थापक तथा ग्यानवृद्ध्यर्थ, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा दूसरा भागादि धर्म संग्रहके हजारों पुस्तक प्रशिद्धकारक, जैनका सेवक, में एक अल्पबुद्धिया, मुनिः मोहनलाल मुक्तिकमल नामकङ्कं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जो ये पुस्तककों विनय वङ्गमानयुक्त वाचेंगे, पढेंगे, सुनेंगे, जिनोंके परवारमें सदैव क्षेम, कुशल, जय, कल्याण, होते रहेंगे ॥

॥ ※ ॥ जबलग मेरु अडिग्गहै, जबलग ससिहर सूर ॥ तब लग या पोथी सदा, रहजो गुणभरपूर ॥ १ ॥ शुभंभवतु, श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ इतिश्री खरतरगच्छीय पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधान गणिः, तच्छिष्य पंम्डित मोहनलाल मुक्तिकमल मुनिः विरचिते आचाररत्नाकर द्वितीय प्रकाशे कोटिकगच्छ गुर्वावली संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ इति जैनइतिहासः समाप्तः ॥